मुराकामी

हार्ड-बोइल्ड
वंडरलैंड और दुनिया का अंत

वाणी प्रकाशन

अंतर्वस्तु
ढकना
लेखक के बारे में
हारुकी मुराकामी द्वारा भी लिखित।
शीर्षक पेज
मानचित्र
1. लिफ्ट, शांति, अधिक वजन
2. सुनहरे जानवर
3. बारिश से बचाव के उपकरण, इंकलिंग्स, कपड़े धोने का सामान
4. पुस्तकालय
5. सारणीकरण, विकास, यौन इच्छा
6. छाया
7. स्कल, लॉरेन बैकाल, लाइब्रेरी
8. कर्नल
9. भूख, निराशा, लेनिनग्राद
10. दीवार
11. ड्रेसिंग, तरबूज, अराजकता
12. दुनिया के अंत का नक्शा
13. फ्रैंकफर्ट, द्वार, स्वतंत्र ऑपरेटर
14. वुड्स
15. व्हिस्की, यातना, तुर्गेनेव
16. सर्दियों का आगमन
17. दुनिया का अंत, चार्ली पार्कर, टाइम बम
18. स्वप्न पठन
19. हैम्बर्गर, स्काईलाइन, डेडलाइन
20. जानवरों की मृत्यु
21. कंगन, बेन जॉनसन, डेविल
22. ग्रे स्मोक
23. छेद, जोंक, टावर

24. छाया मैदान
25. भोजन, हाथी कारखाना, जाल
26. विद्युत स्टेशन
27. विश्वकोश छड़ी, अमरता, पेपरक्लिप्स
28. संगीत वाद्ययंत्र
29. झील, मासाटोमी कोंडो, पेंटी होज़
30. छेद
31. किराया, पुलिस, डिटर्जेंट
32. मृत्यु की पीड़ा में छाया
33. बरसात के दिन कपड़े धोना, कार किराए पर लेना, बॉब डायलन
34. खोपड़ियाँ
35. नेल कटर, बटर सॉस, लोहे का फूलदान
36. अकॉर्डियन
37. प्रकाश, आत्मनिरीक्षण, स्वच्छता
38. भाग निकलना
39. पॉपकॉर्न, लॉर्ड जिम, विलुप्ति
40. पक्षी
कॉपीराइट

लेखक के बारे में

हारुकी मुराकामी का जन्म 1949 में क्योटो में हुआ था और अब वे टोक्यो के पास रहते हैं। वे कई उपन्यासों, लघु कथाओं और गैर-काल्पनिक रचनाओं के लेखक हैं। उनकी कृतियों में नॉर्वेजियन वुड, द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल, काफ्का ऑन द शोर, आफ्टर डार्क और व्हाट आई टॉक अबाउट व्हेन आई टॉक अबाउट रनिंग शामिल हैं। उनकी रचनाओं का चालीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, और उनके कई अंतरराष्ट्रीय सम्मानों में सबसे हालिया सम्मान जेरूसलम पुरस्कार है, जिसके पूर्व प्राप्तकर्ताओं में जे.एम. कोएत्ज़ी, मिलान कुंडेरा और वी.एस. नायपॉल शामिल हैं।

हारुकी मुराकामी की अन्य रचनाएँ

फिक्शन

आफ्टर डार्क

आफ्टर द क्रेक

ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन

डांस डांस डांस

द एलिफेंट वैनिशेस

काफ्का ऑन द शोर

नॉर्वेजियन वुड

साउथ ऑफ द बॉर्डर, वेस्ट ऑफ द सन

स्पुतनिक स्वीटहार्ट

ए वाइल्ड शीप चेज़

द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल

1Q84

गैर-काल्पनिक

भूमिगत: टोक्यो गैस हमला और जापानी मानसिकता

जब मैं दौड़ने के बारे में बात करता हूँ तो मैं किस बारे में बात करता हूँ

हारुकी मुराकामी

हार्ड-बॉयल्ड वंडरलैंड और दुनिया का अंत

जापानी से अनुवादित

अल्फ्रेड बिर्नबाम

VINTAGE BOOKS
London

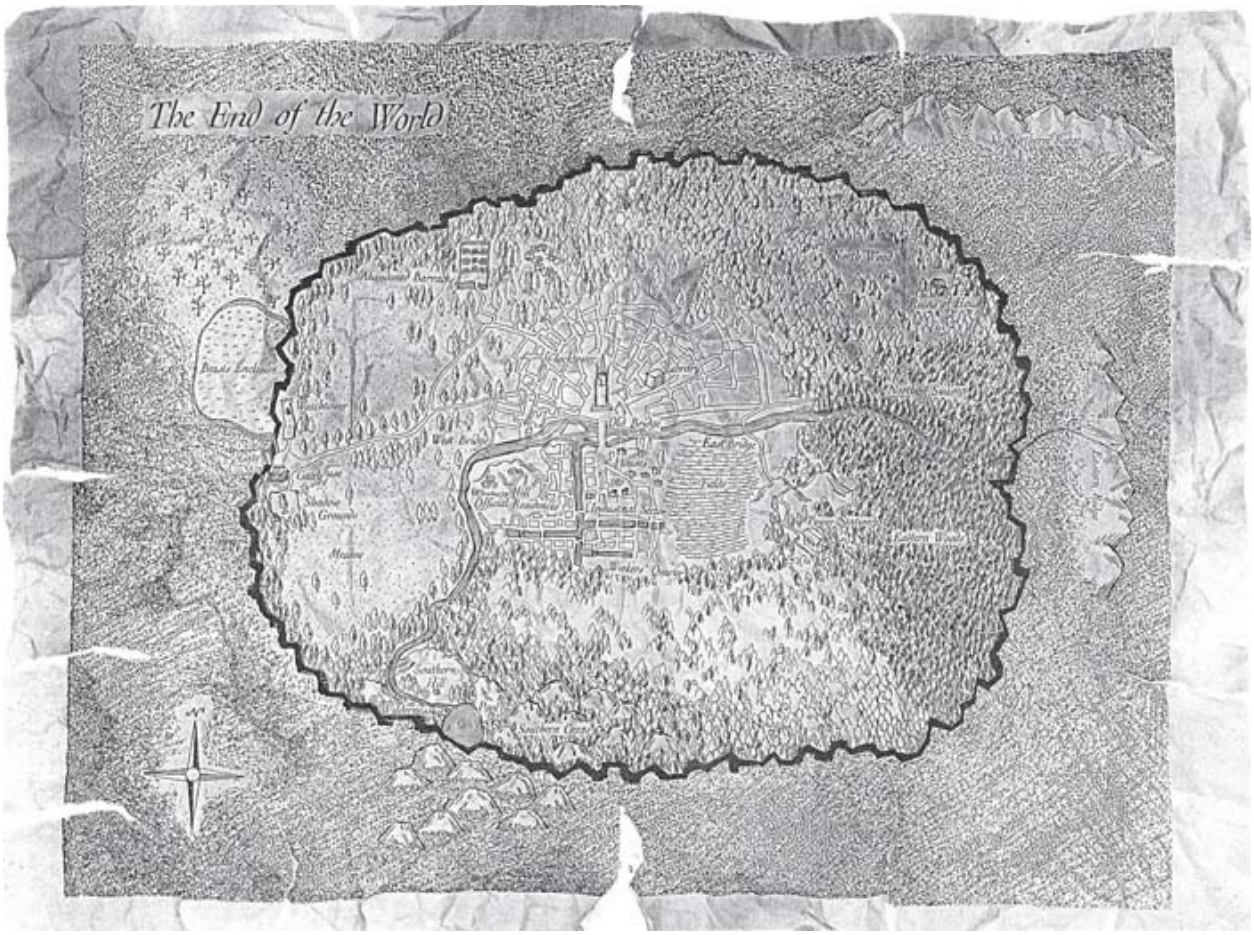
The End of the World

1

लिफ्ट, मौन, अधिक वजन

लिफ्ट अपनी अविश्वसनीय रूप से धीमी गति से ऊपर जा रही थी। या कम से कम मुझे ऐसा ही लग रहा था। निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता था: यह इतनी धीमी थी कि दिशा का सारा बोध ही गायब हो गया था। हो सकता है कि यह नीचे जा रही हो, या शायद यह बिल्कुल भी नहीं चल रही हो। लेकिन चलिए मान लेते हैं कि यह ऊपर जा रही थी। बस एक अनुमान। हो सकता है मैं बारह मंजिल ऊपर गया हूँ, फिर तीन मंजिल नीचे। हो सकता है मैंने पूरी दुनिया का चक्कर लगा लिया हो। मुझे कैसे पता चलेगा?

इस लिफ्ट की हर एक चीज़ मेरे अपार्टमेंट बिल्डिंग में लगी सस्ती, घिसी-पिटी लिफ्ट से बिलकुल अलग थी, जो विकास के क्रम में कुएं की बाल्टी से बस एक पायदान ऊपर थी। आपको विश्वास ही नहीं होगा कि इन दोनों मशीनों का नाम और उद्देश्य एक ही था। ये दोनों लिफ्ट के रूप में कल्पना की जा सकने वाली सीमाओं को पार कर रही थीं।

सबसे पहले, जगह पर गौर कीजिए। यह लिफ्ट इतनी विशाल थी कि इसे दफ्तर के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता था। एक डेस्क, एक अलमारी और एक लॉकर, एक छोटा सा रसोईघर भी जोड़ दीजिए, फिर भी जगह बच जाएगी। आप चाहें तो इसमें तीन ऊंट और एक मध्यम आकार का ताड़ का पेड़ भी रख सकते हैं। दूसरी बात, सफाई की बात करें तो, बिल्कुल नई ताबूत की तरह साफ-सुथरी। दीवारें और छत एकदम बेदाग पॉलिश किए हुए स्टेनलेस स्टील की थीं, और फर्श सुंदर काई-हरे रंग के कालीन से ढका हुआ था। तीसरी बात, एकदम सन्नाटा था। अंदर कदम रखते ही, दरवाजे बंद होते ही, एक भी आवाज नहीं सुनाई दी। गहरी नदियाँ शांत बहती हैं।

एक और बात, लिफ्ट में जो ज़रूरी उपकरण होने चाहिए, उनमें से ज़्यादातर गायब थे। उदाहरण के लिए, बटन और स्विच वाला पैनल कहाँ था? दबाने के लिए कोई फ्लोर नंबर नहीं, न ही दरवाज़ा खोलने और बंद करने का बटन, न ही इमरजेंसी स्टॉप का बटन। कुछ भी नहीं। इन सबने मुझे पूरी तरह से बेबस महसूस कराया। और बात सिर्फ बटन न होने की ही नहीं थी; न ही अगले फ्लोर का कोई संकेत, न ही क्षमता या चेतावनी का कोई बोर्ड, यहाँ तक कि निर्माता का नामपट्ट भी नहीं। इमरजेंसी एग्जिट ढूंढने की तो बात ही भूल जाइए। मैं यहाँ पूरी तरह से बंद हो गया था। इस लिफ्ट को फायर डिपार्टमेंट से मंज़ूरी तो मिल ही नहीं सकती थी। आखिर लिफ्ट के लिए भी कुछ नियम होते हैं।

इन चार खाली स्टेनलेस स्टील की दीवारों को घूरते हुए, मुझे हुडिनी के एक शानदार करतब की याद आ गई जो मैंने एक फिल्म में देखी थी। उसे कई रस्सियों और जंजीरों से बांधकर एक बड़े से बक्से में ठूंस दिया जाता है, जिसे एक और मोटी जंजीर से कसकर बांध दिया जाता है और फिर पूरे बक्से को नियाग्रा फॉल्स के ऊपर

से फेंक दिया जाता है। या शायद आर्कटिक महासागर में बर्फीली डुबकी। चूंकि मैं इस तरह बंधा हुआ नहीं था, इसलिए मैं ठीक था; क्योंकि मुझे इस ट्रिक के बारे में कुछ पता नहीं था, हुडिनी मुझसे कहीं बेहतर था।
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं चल रहा हूं या स्थिर खड़ा हूं।
मैंने खांसने की कोशिश की, लेकिन वो खांसी जैसी बिल्कुल नहीं निकली। एकदम सपाट सी आवाज थी, जैसे चिकनी कंक्रीट की दीवार पर मिट्टी फेंकी गई हो। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मेरे शरीर से इतनी धीमी सी आवाज निकली। मैंने एक बार फिर खांसने की कोशिश की। नतीजा वही रहा। खांसने का तो कोई फायदा ही नहीं।
मैं उस पूरी तरह से सीलबंद तहखाने में अनंत काल तक खड़ा रहा। दरवाज़ों के खुलने का कोई आभास नहीं था। अंतहीन सन्नाटे में स्थिर, एक स्थिर छवि: लिफ्ट में आदमी।
मुझे घबराहट होने लगी। क्या पता मशीनरी में कोई खराबी आ गई हो? या मान लीजिए कि लिफ्ट ऑपरेटर—अगर इमारत में कोई लिफ्ट ऑपरेटर हो—भूल गया हो कि मैं इस डिब्बे जैसी जगह में हूँ? लोग पहले भी मुझे खो चुके हैं।
मैंने कुछ सुनने की बहुत कोशिश की, कुछ भी, लेकिन कोई आवाज़ मेरे कानों तक नहीं पहुँची। मैंने अपना कान स्टेनलेस स्टील की दीवार से सटा दिया। वाकई, कोई आवाज़ नहीं थी। बस ठंडी धातु पर मेरे कान की एक हल्की सी आकृति ही बन पाई। लिफ्ट किसी चमत्कारिक धातु से बनी थी जो सारी आवाज़ सोख लेती थी।
मैंने डैनी बॉय की धुन सीटी से बजाने की कोशिश की, लेकिन वो अस्थमा से पीड़ित कुत्ते की घरघराहट जैसी निकली।
अब बस दीवार के सहारे खड़े होकर जेब में पड़े सिक्के गिनने के अलावा और कुछ नहीं बचा था। मेरे जैसे पेशे वाले व्यक्ति के लिए, समय बिताने का तरीका जानना उतना ही ज़रूरी है जितना किसी मुक्केबाज़ के लिए रबर की गेंदों को पकड़ना। हालांकि, सही मायने में देखा जाए तो इसे समय बिताना नहीं कहते। क्योंकि लगातार अभ्यास से ही विकृत प्रवृत्तियों को सुधारा जा सकता है।
मैं हमेशा अपनी जेबों में खुले पैसे भरकर तैयार रहता हूँ। अपनी दाहिनी जेब में मैं एक सौ और पाँच सौ येन के सिक्के रखता हूँ, बाईं जेब में पचास और दस के सिक्के। एक येन और पाँच येन के सिक्के मैं पीछे वाली जेब में रखता हूँ, लेकिन आमतौर पर इन्हें गिनती में शामिल नहीं करता। मैं क्या करता हूँ कि एक साथ दोनों जेबों में हाथ डालता हूँ, दाहिना हाथ सौ और पाँच सौ के सिक्कों को गिनता है और बायाँ हाथ पचास और दस के सिक्कों को जोड़ता है।
जिन लोगों ने पहले कभी इस प्रक्रिया को नहीं आजमाया है, उनके लिए इस तरह से गणना करना समझना मुश्किल है, और यह सच है कि शुरुआत में यह पेचीदा लगता है। दायाँ और बायाँ मस्तिष्क अलग-अलग हिसाब रखते हैं, जिन्हें फिर तरबूज के दो हिस्सों की तरह एक साथ मिलाया जाता है। जब तक आपको इसकी आदत नहीं हो जाती, तब तक यह आसान काम नहीं है।

मैं सचमुच अपने मस्तिष्क के दाएं और बाएं हिस्सों को अलग-अलग कामों में लगाता हूँ या नहीं, यह मैं ईमानदारी से नहीं कह सकता। तंत्रिका शरीर क्रिया विज्ञान का कोई विशेषज्ञ इस मामले पर कुछ जानकारी दे सकता है। हालाँकि, मैं तंत्रिका शरीर क्रिया विज्ञान का विशेषज्ञ नहीं हूँ। मुझे बस इतना पता है कि जब मैं गिनती कर रहा होता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपने मस्तिष्क के दाएं और बाएं हिस्सों का अलग-अलग उपयोग कर रहा हूँ। और गिनती खत्म होने पर जो थकान होती है, वह सामान्य गिनती से होने वाली थकान से बिल्कुल अलग होती है। सुविधा के लिए, मैं इसे इस तरह समझता हूँ: दायां मस्तिष्क दाएं जेब में जोड़ रहा है, बायां मस्तिष्क बाएं जेब में जोड़ रहा है।

कुल मिलाकर, मैं खुद को उन लोगों में से एक मानता हूँ जो दुनिया की मौजूदा परिस्थितियों, घटनाओं और आम तौर पर जीवन को सुविधा के नज़रिए से देखते हैं। ऐसा नहीं है कि मैं इतना लापरवाह और सुविधा-पसंद व्यक्ति हूँ—हालाँकि मुझमें उस दिशा में झुकाव ज़रूर है—लेकिन अक्सर मैंने देखा है कि सुविधाजनक अनुमान ही आपको चीजों की वास्तविक प्रकृति को समझने के सबसे करीब ले जाते हैं।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि पृथ्वी एक गोला न होकर एक विशालकाय कॉफी टेबल होती, तो रोजमर्रा की जिंदगी में कितना फर्क पड़ता? माना कि यह एक काफी काल्पनिक उदाहरण है; जीवन के तथ्यों को इतनी आसानी से बदला नहीं जा सकता। फिर भी, सुविधा के लिए पृथ्वी को एक विशालकाय कॉफी टेबल के रूप में कल्पना करने से अनावश्यक बातों को दूर करने में मदद मिलती है—जैसे गुरुत्वाकर्षण, अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा और भूमध्य रेखा, वे सभी छोटी-छोटी बातें जो गोलाकार दृष्टिकोण से उत्पन्न होती हैं। मेरा मतलब है, एक सामान्य जीवन जीने वाले व्यक्ति के लिए, जीवनकाल में कितनी बार भूमध्य रेखा एक महत्वपूर्ण कारक बनेगी?

लेकिन मुद्दे पर वापस आते हैं—या यूं कहें कि हाथों पर, दायां और बायां, दोनों अपने-अपने काम में लगे हुए हैं—एक साथ समानांतर गिनती करते रहना बिल्कुल भी आसान नहीं है। यहां तक कि मुझे भी इसे समझने में सबसे ज्यादा समय लगा। लेकिन एक बार जब आप इसे सीख लेते हैं, एक बार जब आपको इसकी कला आ जाती है, तो यह ऐसी चीज नहीं है जिसे आप भूल सकते हैं। जैसे साइकिल चलाना या तैरना। इसका मतलब यह नहीं है कि आप थोड़ा और अभ्यास नहीं कर सकते। बार-बार अभ्यास करने से आपकी तकनीक में सुधार होता है और आपकी शैली निखरती है। कम से कम इसी वजह से, मैं हमेशा अपने हाथों को व्यस्त रखता हूं।

इस बार मेरी एक जेब में तीन पाँच सौ येन के सिक्के और अठारह सौ येन के नोट थे, और दूसरी जेब में सात पचास येन के नोट और सोलह दस येन के नोट थे। कुल मिलाकर तीन हज़ार आठ सौ दस येन। इस तरह की गणना करना मेरे लिए बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। अपनी उंगलियों को गिनने से भी आसान। संतुष्ट होकर मैं स्टेनलेस स्टील की दीवार से टेक लगाकर बैठ गया और सीधे दरवाज़ों की तरफ देखने लगा। जो अब भी नहीं खुल रहे थे।

आखिर इतनी देर क्यों लग रही है? मैंने उपकरण में खराबी और ऑपरेटर की भूल, दोनों ही संभावनाओं को सिरे से खारिज कर दिया। दोनों ही संभावनाएं व्यावहारिक नहीं थीं। इसका मतलब यह नहीं था कि उपकरण में खराबी या ऑपरेटर की लापरवाही जैसी घटनाएं हो ही नहीं सकतीं। बल्कि, मैं जानता हूं कि ऐसी दुर्घटनाएं असल दुनिया में बहुत आम हैं। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि किसी असाधारण परिस्थिति में—जैसे कि यह शानदार लिफ्ट—सामान्य घटना को भी सुविधा के लिए असाधारण मान लिया जाता है। क्या टॉम स्विफ्ट जैसी इस लिफ्ट को डिजाइन करने में सक्षम कोई भी इंसान मशीनरी को ठीक से काम करने से रोक सकता है या किसी आगंतुक के अंदर कदम रखते ही उचित प्रक्रियाओं को भूल सकता है?

उत्तर स्पष्ट था। नहीं।

ऐसा कभी नहीं होगा।

अब तक तो उन्होंने इतनी सावधानी बरती थी, लेकिन ऐसा होना नामुमकिन था। उन्होंने हर छोटी से छोटी बात का ध्यान रखा था, मेरे हर कदम को लगभग मिलीमीटर तक नापा था। इमारत के प्रवेश द्वार पर दो गार्डों ने मुझे रोका, पूछा कि मैं किससे मिलने आया हूँ, आगंतुकों की सूची से मेरा मिलान किया गया, मुझसे ड्राइविंग लाइसेंस दिखाने को कहा गया, सत्यापन के लिए एक केंद्रीय कंप्यूटर में मेरा नाम दर्ज किया गया, और उसके बाद मुझे सीधे इस लिफ्ट में धकेल दिया गया। बैंक ऑफ जापान जाने पर इतनी बारीकी से जाँच नहीं होती। यह सोचना भी असंभव था कि इतनी सारी सावधानी बरतने के बाद वे अब चूक कर देंगे।

एक ही संभावना थी कि उन्होंने जानबूझकर मुझे इस विशेष स्थिति में डाला था। वे चाहते थे कि लिफ्ट की गति मुझे दिखाई न दे। वे चाहते थे कि लिफ्ट इतनी धीमी गति से चले कि मैं यह न बता पाऊं कि वह ऊपर जा रही है या नीचे। शायद वे अब मुझे किसी छिपे हुए टीवी कैमरे से देख रहे थे।

ऊब से बचने के लिए, मैंने कैमरे का लेंस ढूंढने के बारे में सोचा। लेकिन फिर सोचा, अगर मुझे वो मिल भी गया तो मुझे क्या फायदा होगा? इससे तो उन्हें पता चल जाएगा, वे लिफ्ट रोक देंगे, और मैं अपने तय समय पर और भी देर हो जाऊंगी।

इसलिए मैंने कुछ न करने का फैसला किया। मैं यहाँ अपने कर्तव्यों का उचित निर्वाह कर रहा था। चिंता करने की कोई बात नहीं, घबराने की कोई वजह नहीं।

मैं लिफ्ट की दीवार से टिक गया, अपने हाथ जेब में डाले और एक बार फिर अपने खुले पैसे गिने। तीन हज़ार सात सौ पचास येन। कोई मुश्किल नहीं। पलक झपकते ही हो गया।

तीन हजार सात सौ पचास येन?

कुछ गड़बड़ थी।

मैंने कहीं कोई गलती कर दी थी।

मेरी हथेलियों में पसीना आने लगा। तीन साल के हिसाब से मैंने कभी कोई गलती नहीं की थी। यह एक बुरा संकेत था।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने दाएँ और बाएँ दिमाग को बिल्कुल खाली कर दिया, जैसे आप अपने चश्मे को साफ करते हैं। फिर दोनों हाथों को जेब से निकालकर, मैंने पसीना पोंछने के लिए उंगलियाँ फैलाईं। ठीक वैसे ही जैसे हेनरी फोंडा फिल्म 'वॉरलॉक' में बंदूक की लड़ाई से पहले खुद को तैयार करते हैं।
हथेलियों और उंगलियों के पूरी तरह सूख जाने के बाद, मैंने दोनों हाथों को जेबों में डाला और तीसरी बार गिनती की। अगर तीसरी गिनती बाकी दोनों गिनती से मेल खाती, तो मुझे तसल्ली होती। हर किसी से गलती होती है। इन अजीब परिस्थितियों में, शायद मैं थोड़ा चिंतित था, और साथ ही थोड़ा अतिआत्मविश्वासी भी। यही मेरी पहली गलती थी। खैर, स्थिति को सुधारने और सब कुछ ठीक करने के लिए मुझे बस एक सटीक गिनती की ज़रूरत थी।
लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, लिफ्ट के दरवाजे खुल गए। कोई चेतावनी नहीं, कोई आवाज़ नहीं, वे बस दोनों तरफ सरक कर खुल गए। मैं उस महत्वपूर्ण घटना को दोबारा लिखने में इतना मग्न था कि मुझे पता ही नहीं चला। या यूँ कहूँ, मेरी आँखों ने खुलते हुए दरवाजे तो देखे, लेकिन मैं उस घटना के महत्व को पूरी तरह समझ नहीं पाया। ज़ाहिर है, दरवाजों के खुलने का मतलब था दो ऐसे स्थानों का जुड़ना, जिनके बीच पहले कोई संपर्क नहीं था। और साथ ही, इसका मतलब यह भी था कि लिफ्ट अपनी मंज़िल तक पहुँच चुकी थी।
मैंने अपना ध्यान दरवाज़ों के बाहर की ओर मोड़ा। वहाँ एक गलियारा था और उस गलियारे में एक महिला खड़ी थी। एक युवती, गुलाबी सूट और गुलाबी ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए। सूट बढ़िया कपड़े का बना था, उसका चेहरा भी उतना ही सुंदर था। महिला ने मेरी उपस्थिति पर गौर किया, फिर संक्षेप में सिर हिलाया। मानो वह इशारा कर रही हो, "इधर आइए।" मैंने उस बात को दोहराने की सारी उम्मीद छोड़ दी और जेब से हाथ निकालकर लिफ्ट से बाहर निकल गया। तभी लिफ्ट के दरवाज़े मेरे पीछे बंद हो गए, मानो वे मेरे जाने का इंतज़ार कर रहे हों।
गलियारे में खड़े होकर मैंने चारों ओर गौर से देखा, लेकिन मुझे अपनी वर्तमान परिस्थितियों के बारे में कोई संकेत नहीं मिला। मैं किसी इमारत के भीतरी गलियारे में तो था, लेकिन कोई भी स्कूली बच्चा यह बात आसानी से बता सकता था।
अंदर का हिस्सा उदास और नीरस था। लिफ्ट की तरह। हर जगह बढ़िया सामग्री का इस्तेमाल हुआ था; कहीं भी टूट-फूट का कोई निशान नहीं था। संगमरमर के फर्श को खूब चमकाया गया था; दीवारें हल्के सफेद रंग की थीं, बिल्कुल मेरे नाश्ते में खाए जाने वाले मफिन की तरह। गलियारे के दोनों ओर लकड़ी के ऊंचे दरवाजे थे, हर दरवाजे पर धातु के कमरे के नंबर लगे थे, लेकिन क्रम से नहीं। <936> के बगल में <1213> और उसके बगल में <26> था। कुछ तो गड़बड़ थी। कोई भी कमरों को इस तरह नंबर नहीं देता।
वह युवती लगभग कुछ बोली ही नहीं। "इधर आइए, कृपया," उसने बस इतना ही कहा, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसके होंठ शब्द बना रहे हों, क्योंकि कोई आवाज़ नहीं निकली। इस काम को शुरू करने के बाद से दो महीने से मैं होंठ पढ़कर समझने का अभ्यास कर रहा था, इसलिए मुझे उसकी बात समझने में कोई

दिक्कत नहीं हुई। फिर भी, मुझे लगा कि मेरे कानों में कुछ गड़बड़ है। लिफ्ट की खामोशी, दबी हुई खांसी और बेजान सी सीटी की आवाज़ के बाद, मुझे लग रहा था कि मेरी सुनने की शक्ति कम हो रही है।
तो मैंने खांसा। आवाज़ सामान्य थी। मुझे अपनी सुनने की क्षमता पर थोड़ा भरोसा वापस आ गया। मेरे कानों को कुछ नहीं हुआ है। समस्या ज़रूर उस महिला के मुंह में होगी।
मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी नुकीली ऊँची एड़ियों की खटखटाहट खाली गलियारे में ऐसे गूंज रही थी मानो किसी खदान में दोपहर बिताई गई हो। उसके मोज़े पहने हुए भरे-पूरे पैर संगमरमर में साफ दिखाई दे रहे थे।
वह महिला थोड़ी गोल-मटोल थी। जवान और खूबसूरत, सब कुछ वैसा ही था, लेकिन गोल-मटोल। भला एक जवान, खूबसूरत महिला जो थोड़ी गोल-मटोल हो, कुछ अजीब सी लगती है। उसके पीछे चलते हुए, मेरी निगाहें उसके शरीर पर टिक गईं।
जवान, खूबसूरत, और थोड़ी मोटी महिलाओं के आसपास मैं अक्सर उलझन में पड़ जाता हूँ। पता नहीं क्यों। शायद इसलिए कि उनके खान-पान की आदतों की छवि अपने आप मेरे दिमाग में बन जाती है। जब मैं किसी अच्छी-खासी कद-काठी वाली महिला को देखता हूँ, तो मेरे मन में ये तस्वीर उभरती है कि वो ब्रेड से क्रीम सॉस की आखिरी बूँदें चाट रही है, अपनी प्लेट से जलकुंभी की आखिरी टहनी चट कर रही है। और एक बार ये तस्वीर उभरने लगती है, जैसे तेजाब धातु को गला रहा हो: उसके खाने के दृश्य मेरे दिमाग में फैल जाते हैं और मैं अपना आपा खो बैठता हूँ।
सामान्य मोटी महिला ठीक है। मोटी महिलाएं आकाश में बादलों की तरह होती हैं। वे बस तैरती रहती हैं, मेरा उनसे कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन जवान, खूबसूरत, मोटी महिला की बात अलग है। मुझसे अपेक्षा की जाती है कि मैं उसके प्रति एक विशेष भाव धारण करूँ। हो सकता है कि मैं उसके साथ सो जाऊँ। शायद यहीं से सारी उलझन शुरू होती है।
इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे मोटी महिलाओं से कोई शिकायत है। उलझन और घृणा दो अलग-अलग बातें हैं। मैं पहले भी मोटी महिलाओं के साथ सो चुका हूँ और कुल मिलाकर अनुभव बुरा नहीं रहा। अगर आपकी उलझन आपको सही दिशा में ले जाए, तो परिणाम बेहद सुखद हो सकते हैं। लेकिन ज़ाहिर है, चीज़ें हमेशा सही दिशा में नहीं जातीं। सेक्स एक बेहद सूक्ष्म प्रक्रिया है, रविवार को डिपार्टमेंट स्टोर जाकर थर्मस खरीदने जैसा नहीं। यहाँ तक कि युवा, खूबसूरत, मोटी महिलाओं में भी अंतर होता है। एक तरह से, वे आपको सही दिशा में ले जाएंगी; दूसरी तरह से, वे आपको खोया हुआ, तुच्छ और उलझन में छोड़ देंगी।
इस लिहाज से, मोटी महिलाओं के साथ सोना एक चुनौती हो सकता है। मानव वसा के भी उतने ही रास्ते होने चाहिए जितने मानव मृत्यु के।
जब मैं इस युवा, खूबसूरत, मोटी महिला के पीछे गलियारे से गुजर रहा था, तो मेरे मन में लगभग यही विचार चल रहे थे।

उसके स्टाइलिश गुलाबी सूट के कॉलर के चारों ओर एक सफेद स्कार्फ लहरा रहा था। उसके कानों की लोबों से चौकोर सोने की बालियां लटक रही थीं, जो उसके हर कदम के साथ चमक रही थीं। असल में, अपने वजन के हिसाब से वह काफी फुर्तीली चल रही थी। हो सकता है उसने कमरबंद या कुछ और पहना हो ताकि वह देखने में और भी आकर्षक लगे, लेकिन इससे यह बात नहीं बदलती कि उसकी अदाएं चुस्त और प्यारी थीं। बल्कि, मुझे तो वो बहुत पसंद आईं। वो मुझे बिल्कुल पसंद आई।

अब मैं बहाने नहीं बना रहा, लेकिन सच कहूँ तो मुझे ज़्यादा औरतें आकर्षित नहीं करतीं। बल्कि, मैं खुद को ही आकर्षण से अप्रभावित रहने वाला मानता हूँ। इसलिए जब कभी आकर्षण होता भी है, तो मुझे उस पर भरोसा नहीं होता; मुझे उसके स्रोत की जाँच करनी पड़ती है।

मैं उसके पास सरक कर बैठ गई और अपॉइंटमेंट के लिए आठ-नौ मिनट देर से आने के लिए माफी मांगी। मैंने कहा, "मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि प्रवेश प्रक्रिया में इतना समय लगेगा। और फिर लिफ्ट भी बहुत धीमी थी। मैं इमारत में दस मिनट पहले ही पहुंच गई थी।"

उसने मुझे एक हल्की सी 'मैं जानती हूँ' वाली मुस्कान के साथ सिर हिलाया। उसके गले से इत्र की हल्की सी खुशबू आ रही थी। एक ऐसी खुशबू जो गर्मियों की सुबह तरबूज़ के खेत में खड़े होने की याद दिलाती थी। इसने मुझे एक अजीब सी मनोदशा में डाल दिया। पुरानी यादों से भरी, लेकिन असंभव सी भावनाओं का मिश्रण, मानो दो बिल्कुल अलग-अलग यादें किसी अनजान कोने में आपस में जुड़ गई हों। कभी-कभी मुझे ऐसे ही एहसास होते हैं। और अक्सर कुछ खास खुशबुओं की वजह से।

“लंबा गलियारा है, है ना?” मैंने बातचीत शुरू करने की कोशिश की। उसने मेरी तरफ देखा, लेकिन चलती रही। मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह बीस या इक्कीस साल की होगी। सुस्पष्ट चेहरे की बनावट, चौड़ा माथा, साफ़ रंग।

तभी उसने कहा, "प्रूस्ट।"

या यूँ कहें कि उसने "प्रूस्ट" शब्द का उच्चारण नहीं किया, बल्कि अपने होंठों को हिलाकर "प्रूस्ट" जैसा कुछ बनाने की कोशिश की। मुझे अभी तक उसकी कोई सच्ची आवाज़ सुनाई नहीं दी थी। ऐसा लग रहा था मानो वह मुझसे किसी मोटी कांच की चादर के दूसरी तरफ से बात कर रही हो।

प्रॉस्ट?

“मार्सेल प्राउस्ट?” मैंने उससे पूछा।

उसने मुझे एक नज़र देखा। फिर उसने दोहराया, "प्रूस्ट।" मैंने कोशिश करना छोड़ दिया और उसके पीछे लाइन में लग गया, मानो मैं अपने होंठों की ऐसी हरकतें सोच रहा था जो "प्रूस्ट" से मेल खाती हों। ट्रूएस्ट? ... ब्रूव्हिस्ट? ... ब्लू इज़ इट? ... एक के बाद एक, चुपचाप अपने आप से, मैंने अर्थहीन अक्षरों की कतारें बोलीं, लेकिन कोई भी मेल नहीं खा रही थी। मैं बस यही निष्कर्ष निकाल सका कि उसने सचमुच "प्रूस्ट" कहा था। लेकिन जो बात मुझे समझ नहीं आ रही थी, वह यह थी कि इस लंबे गलियारे और मार्सेल प्रूस्ट के बीच क्या संबंध था?

शायद उसने गलियारे की लंबाई के लिए मार्सेल प्राउस्ट का उदाहरण दिया हो। लेकिन अगर ऐसा ही हो, तो क्या यह अभिव्यक्ति का थोड़ा चंचल—बल्कि असावधान—चुनाव नहीं है? अगर उसने इस लंबे गलियारे को मार्सेल प्राउस्ट की रचनाओं के लिए एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया होता, तो मैं इसे मान सकता था। लेकिन इसका उल्टा तो विचित्र था।

क्या गलियारा मार्सेल प्राउस्ट की रचनाओं जितना लंबा होगा?

खैर, मैं उस लंबे गलियारे में उसके पीछे-पीछे चलता रहा। सचमुच, एक लंबा गलियारा। मोड़ लेते हुए, छोटी-छोटी सीढ़ियों से ऊपर-नीचे जाते हुए, हम पाँच-छह आम इमारतों के बराबर दूरी तय कर चुके थे। हम गोल-गोल घूम रहे थे, मानो एशर की किसी पेंटिंग में हों। लेकिन हम चाहे जितना भी चलते रहे, आसपास का नजारा बदलता ही नहीं लग रहा था। संगमरमर के फर्श, मफिन जैसी सफेद दीवारें, बेतरतीब ढंग से कमरों के नंबर वाले लकड़ी के दरवाजे। स्टेनलेस स्टील के दरवाज़ों के हैंडल। दूर-दूर तक कोई खिड़की नहीं दिख रही थी। और इन सबके बीच, उसकी ऊँची एड़ी के जूतों की वही लयबद्ध आवाज, जिसके बाद मेरे जॉगिंग जूतों की पिघली हुई रबर जैसी आवाज़ आती थी।

अचानक वह रुक गई। मैं अपने जॉगिंग शूज़ की आवाज़ में इतना खो गया था कि सीधे उसके पीछे जा टकराया। वह बहुत नरम था, मानो बारिश का बादल हो। उसकी गर्दन से तरबूज़ की खुशबू आ रही थी। मेरे टकराने से वह आगे की ओर झुक रही थी, इसलिए मैंने उसके कंधे पकड़कर उसे सीधा खड़ा किया।

मैंने कहा, "माफ़ कीजिए। मैं अपने विचारों में कहीं और खोया हुआ था।"

गोल-मटोल युवती शरमा गई। मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकती, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा हो। "टोज़ुम'स्ता," उसने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा। फिर उसने कंधे उचकाए और बोली, "सेला।" उसने सचमुच ऐसा नहीं कहा, लेकिन क्या मुझे दोहराने की ज़रूरत है, उसके होंठों ने यही शब्द बनाए थे।

“टोज़ुम’स्ता?” मैंने मन ही मन कहा। “सेला?”

“सेला,” उसने दृढ़ विश्वास के साथ कहा।

शायद तुर्की भाषा? समस्या यह थी कि मैंने तुर्की का एक शब्द भी नहीं सुना था। मैं इतना घबरा गया था कि मैंने उससे बातचीत करने का विचार ही छोड़ दिया। होंठ पढ़ना बहुत ही नाजुक काम है और दो महीने की वयस्क शिक्षा कक्षाओं में इसे सीखना मुमकिन नहीं है।

उसने अपने सूट की जेब से एक लॉज़ेंज के आकार की इलेक्ट्रॉनिक चाबी निकाली और उसे क्षैतिज रूप से, ठीक उसी तरह, <728> नंबर वाले दरवाजे के खांचे में डाला। एक क्लिक की आवाज़ के साथ दरवाजा खुल गया। एकदम बढ़िया।

उसने दरवाजा खोला, फिर मुड़कर मुझे कहा, "सौमते, सेला।"

और, बेशक, मैंने ठीक वैसा ही किया।

2

सुनहरे जानवर

शरद ऋतु के आगमन के साथ ही उनके शरीर पर सुनहरे रंग के लंबे-लंबे बाल उग आते हैं। ये बाल शुद्धतम रूप में सुनहरे होते हैं, जिनमें किसी अन्य रंग का कोई अंश नहीं होता। उनका सुनहरा रंग ऐसा होता है जो इस संसार में सोने के रूप में ही आता है और सोने के रूप में ही इस संसार में विद्यमान रहता है। वे आकाश और पृथ्वी के बीच स्थिर खड़े होकर सोने में सराबोर प्रतीत होते हैं।

जब मैं पहली बार इस कस्बे में आया था—वसंत ऋतु में—वहाँ के जानवरों के शरीर पर अलग-अलग रंगों के छोटे-छोटे बाल थे। काले और हल्के भूरे, सफेद और गहरे भूरे। कुछ जानवर चितकबरे और कुछ चमकीले रंग के थे। हर रंग के ये जानवर नए हरे-भरे मैदानों पर चुपचाप ऐसे तैर रहे थे मानो हवा के झोंके से बह रहे हों। मानो वे ध्यानमग्न अवस्था में थे, उनकी साँसें सुबह की धुंध की तरह धीमी थीं, वे बिना कोई आवाज़ किए नई घास चर रहे थे। फिर, थककर, वे थोड़ी देर आराम करने के लिए अपने पैर मोड़ लेते थे।

बसंत बीत गया, ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो गई, और अब जब प्रकाश एक पारदर्शी चमक बिखेर रहा है और शरद ऋतु की पहली हवाएँ नदियों के पानी में लहरें बना रही हैं, तो जानवरों में परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं। सुनहरे बाल उगने लगते हैं, पहले तो कुछ-कुछ जगहों पर, किसी बेमौसम जड़ी-बूटी के आकस्मिक अंकुरण की तरह। धीरे-धीरे छोटे बालों के बीच से नर्म-नर्मुद्रों के पूरे क्षेत्र निकल आते हैं, और अंत में पूरा शरीर सुनहरे रंग का हो जाता है। इस प्रक्रिया को शुरू से अंत तक पूरा होने में एक सप्ताह से अधिक समय नहीं लगता। वे लगभग एक ही समय में अपना रूपांतरण शुरू करते हैं; और लगभग तुरंत ही पूरा कर लेते हैं। एक सप्ताह के भीतर हर जानवर पूरी तरह से सुनहरे रंग के जानवर में बदल जाता है। जब सुबह का सूरज उगता है और दुनिया पर नई सुनहरी रोशनी बिखेरता है, तो शरद ऋतु पृथ्वी पर आ जाती है।

उनके माथे के मध्य से निकला हुआ वह लंबा, अकेला सींग ही जड़ से लेकर पतले सिरे तक सफेद रहता है। यह सींग से ज़्यादा किसी टूटी हुई हड्डी जैसा लगता है जो त्वचा को भेदकर वहीं अटक गई हो। अपने सींगों की सफेदी और आँखों के नीले रंग को छोड़कर, ये जानवर सोने के समान हैं। वे अपना सिर हिलाते हैं, मानो कोई नया सूट पहन रहे हों, और शरद ऋतु के ऊँचे आकाश में अपने सींग लहराते हैं। वे नदियों में उतरते हैं; वे अपनी गर्दनें फैलाकर शरद ऋतु में मिलने वाले लाल बेरों का स्वाद लेते हैं।

जैसे ही कस्बे पर शाम ढलती है, मैं पश्चिमी दीवार पर बने पहरेदार बुर्ज पर चढ़ जाता हूँ ताकि द्वारपाल को पशुओं को झुंड में लाने के लिए तुरही बजाते हुए देख सकूँ। एक लंबी ध्वनि, फिर तीन छोटी ध्वनियाँ—यही निर्धारित पुकार है। जब भी मैं तुरही की आवाज़ सुनता हूँ, मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और उस कोमल स्वर को अपने भीतर फैलने देता हूँ। वह अद्वितीय है। अंधेरी गलियों में एक फीकी पारदर्शी मछली की तरह,

पत्थरों से बने गलियारों से गुज़रते हुए, घरों की चारदीवारी और नदी के किनारे बने रास्तों के बीच से, वह पुकार गूंजती है। सब कुछ उस पुकार में डूब जाता है। यह समय के अदृश्य हवा में तैरते बादलों को चीरती हुई, चुपचाप कस्बे के दूर-दूर तक पहुँच जाती है।

जब बिगुल बजता है, तो जानवर ऊपर की ओर देखते हैं, मानो आदिम यादों का जवाब दे रहे हों। हज़ारों या उससे अधिक सभी जानवर एक साथ एक ही मुद्रा में आ जाते हैं, और आवाज़ की दिशा में अपना सिर उठाते हैं। कुछ श्रद्धापूर्वक झाड़ू के पेड़ों की पत्तियाँ चबाना बंद कर देते हैं, कुछ पत्थरों पर अपने खुर रोकते हैं, और कुछ सूरज की आखिरी किरण में झपकी से जाग जाते हैं; हर कोई अपना सिर हवा में उठाता है।

उस एक पल के लिए, सब कुछ थम जाता है, सिवाय उनके सुनहरे बालों के जो शाम की हवा में लहराते हैं। इस क्षण उनके मन में क्या चल रहा है? वे किसे निहार रहे हैं? सभी के चेहरे एक ही कोण पर हैं, वे अंतरिक्ष में टकटकी लगाए खड़े हैं, जानवर अपनी जगह पर जम गए हैं। उनके कान ध्वनि पर टिके हुए हैं, बिना हिले-डुले, जब तक कि धीमी होती गूंज गोधूलि में विलीन नहीं हो जाती। फिर अचानक, मानो कोई स्मृति उन्हें पुकार रही हो, जानवर उठते हैं और एक ही दिशा में चलने लगते हैं। सन्नाटा टूट जाता है और गलियाँ अनगिनत खुरों की आवाज़ से गूंज उठती हैं। मैं कल्पना करता हूँ कि ज़मीन के नीचे से झाग की धाराएँ उठ रही हैं, गलियों को भर रही हैं, घरों की दीवारों पर चढ़ रही हैं, यहाँ तक कि क्लॉकटावर को भी डुबो रही हैं।

लेकिन आँखें खोलते ही वह प्रवाह तुरंत गायब हो गया। केवल घोड़ों के खुरों की आहट सुनाई दे रही थी, और शहर में कोई बदलाव नहीं आया था। जानवर पत्थरों से बनी सड़कों पर नदी की तरह कतारों में इधर-उधर बहते हुए जा रहे थे। कोई जानवर आगे नहीं था, कोई नेतृत्व नहीं कर रहा था। जानवर अपनी आँखें झुकाए, कंधे काँपते हुए अपने अनकहे रास्ते पर चल रहे थे। फिर भी, जानवरों के बीच एक अटूट आंतरिक बंधन, उनकी आँखों से ओझल हो चुकी यादों की एक अमिट आत्मीयता झलक रही थी।

वे उत्तर से नीचे की ओर आते हैं, पुराने पुल को पार करके दक्षिणी तट पर पहुँचते हैं, जहाँ उनकी मुलाकात पूर्व से आ रहे अपने जैसे अन्य लोगों से होती है। फिर वे औद्योगिक क्षेत्र से होते हुए नहरों के किनारे आगे बढ़ते हैं, पश्चिम की ओर मुड़ते हैं और एक फाउंड्री के नीचे बने रास्ते से होकर पश्चिमी पहाड़ी की तलहटी से आगे निकल जाते हैं। वहाँ ढलानों पर वे बूढ़े और जवान जानवरों को कतार में खड़ा कर देते हैं, जो द्वार से ज्यादा दूर नहीं जा सकते, और जुलूस के आने की प्रतीक्षा करते हैं। यहाँ समूह दिशा बदलता है और पश्चिमी पुल को पार करते हुए उत्तर की ओर बढ़ता है, जब तक कि वे द्वार तक नहीं पहुँच जाते।

पहले कुछ जानवर जैसे ही द्वार तक पहुँचते हैं, द्वारपाल उसे खुलवा देता है। मोटी क्षैतिज लोहे की पट्टियों से मजबूत किए गए ये द्वार कठोर और भारी हैं। लगभग पंद्रह फीट ऊँचे, नुकीले कांटों से सजे हुए। द्वारपाल इन विशाल द्वारों में से दाहिने द्वार को सहजता से अपनी ओर घुमाता है, फिर इकट्ठे हुए जानवरों को द्वार से बाहर निकाल देता है। बायाँ द्वार कभी नहीं खुलता। जब सभी जानवर बाहर निकल जाते हैं, तो द्वारपाल दाहिने द्वार को फिर से बंद कर देता है और कुंडी लगा देता है।

मेरी जानकारी के अनुसार, यह पश्चिमी द्वार कस्बे में आने-जाने का एकमात्र रास्ता है। पूरा इलाका लगभग तीस फीट ऊंची एक विशाल दीवार से घिरा हुआ है, जिसे केवल पक्षी ही पार कर सकते हैं।
सुबह होते ही, द्वारपाल एक बार फिर द्वार खोलता है, सींग बजाता है और जानवरों को अंदर आने देता है। जब वे वापस अपने क्षेत्र में आ जाते हैं, तो वह दरवाजा बंद कर देता है और कुंडी लगा देता है।
“बेहद कुंडी लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है,” द्वारपाल ने मुझे समझाया। “मेरे सिवा कोई इतना ताकतवर नहीं है कि इतना भारी गेट खोल सके। चाहे लोग मिलकर ही क्यों न कोशिश करें। लेकिन नियम तो नियम होते हैं।”
द्वारपाल अपनी ऊनी टोपी को भौंहों तक खींच लेता है, और उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता। द्वारपाल एक विशालकाय आदमी है, मोटी चमड़ी वाला और बलिष्ठ, इतना बड़ा जितना मैंने पहले कभी नहीं देखा। उसकी कमीज़ उसकी मांसपेशियों के खिंचाव से फट सकती है। कभी-कभी वह अपनी आँखें बंद कर लेता है और गहरी चुप्पी में डूब जाता है। मैं नहीं समझ पाता कि वह उदासी से घिरा है या यह किसी आंतरिक तंत्र का आवेग मात्र है। एक बार जब चुप्पी उसे घेर लेती है, तो मैं तब तक कुछ नहीं कह पाता जब तक वह होश में नहीं आ जाता। जैसे ही वह धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलता है, वह मुझे खाली निगाहों से देखता है, उसकी उंगलियाँ उसकी गोद में अस्पष्ट रूप से हिलती हैं मानो यह जानने की कोशिश कर रही हों कि मैं उसके सामने वहाँ क्यों मौजूद हूँ।
"शाम होते ही तुम जानवरों को इकट्ठा करके दीवारों के बाहर क्यों भेज देते हो, और फिर सुबह उन्हें वापस अंदर क्यों आने देते हो?" मैंने द्वारपाल से उसके होश में आते ही पूछा।
द्वारपाल बिना किसी भाव के मेरी ओर घूरता रहता है।
“हम इसे इसी तरह करते हैं,” वह कहते हैं, “और यही सच्चाई है। ठीक वैसे ही जैसे सूरज पूरब से उगता है और पश्चिम में अस्त होता है।”
द्वार खोलने और बंद करने के अलावा, द्वारपाल अपना समय औजारों को तेज करने में व्यतीत करता प्रतीत होता है। द्वारगृह में हर प्रकार की कुल्हाड़ी, छेनी और चाकू रखे हुए हैं, इसलिए वह अपने खाली समय का प्रत्येक क्षण उन्हें सान पर तेज करने में व्यतीत करता है। तेज किए गए ब्लेड एक अप्राकृतिक चमक प्राप्त कर लेते हैं, जमे हुए सफेद, भीतर से दमकते हुए।
जब मैं ब्लेडों की कतारों को देखता हूं, तो द्वारपाल संतुष्टि से मुस्कुराता है, और ध्यान से मेरी निगाहों का पीछा करता है।
“सावधान, एक स्पर्श से भी चोट लग सकती है,” द्वारपाल ने अपने हथियारों के जखीरे की ओर इशारा करते हुए कहा। “ये खिलौने नहीं हैं। मैंने इन्हें खुद बनाया है, हथौड़े से पीटकर आकार दिया है। मैं लोहार था, और ये मेरी कारीगरी है। मज़बूत पकड़, उत्तम संतुलन। ब्लेड के साथ हैंडल का सही मिलान करना आसान नहीं होता। लो, एक को पकड़ो। लेकिन ब्लेड से सावधान रहना।”

मैंने मेज पर रखे औजारों में से सबसे छोटी कुल्हाड़ी उठाई और उसे हवा में घुमाया। सचमुच, कलाई के हल्के से झटके से—बिना मेरे सोचे-समझे—तेज धार वाली धातु एक प्रशिक्षित शिकारी कुत्ते की तरह प्रतिक्रिया करती है। द्वारपाल को गर्व करने का पूरा हक है।

"मैंने हैंडल भी खुद बनाया है। इसे दस साल पुरानी राख की लकड़ी से तराशा है। कुछ लोगों को दूसरी तरह की लकड़ी पसंद होती है, लेकिन मेरी पसंद दस साल पुरानी राख की लकड़ी है। न इससे कम, न इससे ज़्यादा। दस साल पुरानी लकड़ी की बनावट सबसे अच्छी होती है। मज़बूत और नमीयुक्त, भरपूर लचीलापन। मैं ईस्टर्न वुड्स से राख की लकड़ी लेता हूँ।"

आपको इतने सारे चाकूओं की क्या जरूरत है?

"अलग-अलग चीजें," द्वारपाल कहता है। "मैं इनका सबसे ज्यादा इस्तेमाल सर्दियों में करता हूँ। सर्दियों का इंतज़ार करो, मैं तुम्हें दिखा सकता हूँ। यहाँ सर्दियाँ बहुत लंबी होती हैं।"

द्वार के बाहर जानवरों के लिए एक जगह है। एक बाड़ा जहाँ वे रात में सोते हैं, और एक छोटी सी धारा बहती है जिससे उन्हें पानी मिलता है। उसके आगे दूर-दूर तक सेब के पेड़ फैले हुए हैं, विशाल वन क्षेत्र जो अंतहीन रूप से फैले हुए हैं।

"जानवरों की देखभाल तुम्हारे सिवा कोई नहीं करता," द्वारपाल कहता है। "वैसे तुम अभी-अभी यहाँ आए हो। तुम्हें यहाँ रहने की आदत पड़ जाएगी और सब कुछ ठीक हो जाएगा। फिर तुम्हारी उनमें रुचि कम हो जाएगी। सबके साथ ऐसा ही होता है। बसंत ऋतु की शुरुआत में एक सप्ताह को छोड़कर।"

द्वारपाल ने मुझे बताया कि वसंत ऋतु की शुरुआत में एक सप्ताह के लिए लोग जानवरों की लड़ाई देखने के लिए निगरानी मीनार पर चढ़ जाते हैं। यह वह समय होता है जब नर जानवरों की सहज प्रवृत्ति उन्हें आपस में भिड़ने के लिए प्रेरित करती है—सर्दियों के अपने ऊन को उतारने के बाद, मादाओं के बच्चे पैदा करने से एक सप्ताह पहले। वे इतने उग्र हो जाते हैं और एक-दूसरे को बुरी तरह घायल कर देते हैं कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे आमतौर पर कितने शांत स्वभाव के होते हैं।

शरद ऋतु के ये जानवर चुपचाप एक-दूसरे के पास दुबके बैठे हैं, सूर्यास्त के समय उनके लंबे सुनहरे बाल चमक रहे हैं। स्थिर, मानो किसी जगह पर स्थापित मूर्ति हों, वे सिर उठाकर तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक दिन की अंतिम किरणें सेब के पेड़ों में समा न जाएँ। अंततः जब सूर्य अस्त हो जाता है और रात का अंधकार उन पर छा जाता है, तो जानवर अपना सिर नीचे कर लेते हैं, अपना एक सफेद सींग धरती पर टिका देते हैं और अपनी आँखें बंद कर लेते हैं।

इस तरह एक दिन कस्बे में सब कुछ समाप्त हो जाता है।

3

बारिश के कपड़े, इंकलिंग्स, कपड़े धोने का सामान

मुझे एक बड़े, खाली कमरे में ले जाया गया। दीवारें सफेद थीं, छत सफेद थी, कालीन मोचा ब्राउन रंग का था—ये सभी सजावटी रंग थे। हाँ, सफेद रंग में भी, कुछ शालीन सफेद होते हैं और कुछ भद्दे, कुछ ऐसे जो सफेद के समान ही लगते हैं।

अपारदर्शी खिड़कियों ने बाहर की दुनिया का सारा नज़ारा रोक दिया था, लेकिन जो रोशनी छनकर अंदर आ रही थी, वह केवल सूरज की रोशनी ही हो सकती थी। इससे हमें लगा कि हम ज़मीन से ऊपर कहीं हैं। यानी लिफ्ट ऊपर जा रही थी। यह जानकर मुझे राहत मिली: आखिरकार यह वैसा ही था जैसा मैंने सोचा था।

उस महिला ने मुझे कमरे के बीच में रखे चमड़े के सोफे पर बैठने का इशारा किया। मैंने उसकी बात मान ली और पैर मोड़कर बैठ गया, जिसके बाद वह दूसरे दरवाजे से बाहर चली गई।

कमरे में बहुत कम फर्नीचर था। सोफे के सामने एक छोटी सी कॉफी टेबल थी जिस पर एक सिरेमिक ऐशट्रे, लाइटर और सिगरेट का डिब्बा रखा था। मैंने सिगरेट का डिब्बा खोला; वह खाली था। दीवारों पर न कोई पेंटिंग थी, न कोई कैलेंडर, न कोई तस्वीर। एकदम उदास माहौल था।

खिड़की के बगल में एक बड़ी मेज थी। मैं सोफे से उठा और खिड़की की ओर चला गया, रास्ते में मेज का निरीक्षण करता हुआ। मोटी पैनल वाली मजबूत मेज, जिसके दोनों ओर पर्याप्त दराजें थीं। मेज पर एक लैंप, तीन बॉलपॉइंट पेन और एक अपॉइंटमेंट बुक रखी थी, जिसके बगल में कुछ पेपरक्लिप बिखरी पड़ी थीं। अपॉइंटमेंट बुक आज की तारीख पर खुली हुई थी।

कमरे के एक कोने में तीन बेहद साधारण स्टील के लॉकर रखे थे, जो अंदरूनी सजावट से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे। एकदम साधारण, औद्योगिक स्तर के बने हुए। अगर मेरी मर्ज़ी चलती, तो मैं कुछ ज़्यादा सुरुचिपूर्ण चीज़ें चुनता—जैसे कि डिज़ाइनर अलमारियाँ। लेकिन मुझसे कोई पूछ नहीं रहा था। मैं यहाँ काम करने आया था, और धूसर स्टील के लॉकर या हल्के गुलाबी रंग का ज्यूकबॉक्स मेरे बस की बात नहीं थी।

मेरे बाईं ओर की दीवार में एक अंतर्निर्मित अलमारी थी जिसमें एकॉर्डियन दरवाज़ा लगा हुआ था। कमरे में बस यही एक चीज़ थी। न कोई किताबों की अलमारी थी, न घड़ी, न फ़ोन, न पेंसिल शार्पनर, न चिट्ठी रखने की ट्रे, न पानी का जग। आखिर ये किस तरह का कमरा था? मैं सोफे पर वापस बैठा, फिर से पैर मोड़े और जम्हाई ली।

दस मिनट बाद, वह महिला फिर प्रकट हुई। और मेरी ओर देखे बिना ही, उसने एक लॉकर खोला और उसमें से कुछ चमकदार काले रंग का कपड़ा निकाला, जिसे वह कॉफी टेबल पर ले आई।

वह काला कपड़ा असल में रबर का रेनकोट और बूट निकला। और सबसे ऊपर चश्मे की एक जोड़ी थी, बिल्कुल वैसे ही जैसे प्रथम विश्व युद्ध में पायलट पहना करते थे। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि इन सब का क्या मतलब है।

उस महिला ने कुछ कहा, लेकिन उसके होंठ इतनी तेजी से हिले कि मैं उसे समझ नहीं पाया।

“ए... माफ कीजिए? मैं होंठ पढ़ने में अभी शुरुआती दौर में हूँ,” मैंने कहा।

इस बार उसने अपने होंठ धीरे-धीरे और सोच-समझकर हिलाए: "कृपया इन्हें अपने कपड़ों के ऊपर पहन लीजिए।"

सच कहूँ तो, मैं ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन शिकायत करना ज़्यादा झंझट भरा होता, इसलिए मैं चुप रहा और जैसा कहा गया वैसा ही किया। मैंने अपने जॉगिंग के जूते उतारे और बूट पहन लिए, फिर रेनकोट ओढ़ लिया। रेनकोट का वज़न बहुत ज़्यादा था और बूट दो साइज़ बड़े थे, लेकिन क्या मेरे पास कोई और चारा था? वह महिला मेरे सामने घूमी और मेरे रेनकोट के बटन बंद करते हुए हुड को मेरे सिर पर खींच दिया। ऐसा करते समय उसका माथा मेरी नाक की नोक से छू गया।

मैंने उसके इत्र की तारीफ करते हुए कहा, "अच्छी खुशबू है!"

“शुक्रिया,” उसने होंठ हिलाते हुए कहा और हुड के बटन मेरी नाक के ठीक नीचे तक बंद कर दिए। फिर हुड के ऊपर चश्मा पहना दिया। और बस, मैं पूरी तरह तैयार था और कहीं जाने को नहीं था—या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा।

तभी उसने अलमारी का दरवाजा खोला, मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अंदर धकेल दिया। उसने लाइट जलाई और दरवाजा बंद कर दिया। अंदर, वह किसी भी आम अलमारी जैसी थी—बस उसमें कपड़े नहीं थे। सिर्फ कोट टांगने वाले हैंगर और कपूर की गोलियां थीं। शायद वह अलमारी थी ही नहीं। वरना, मुझे इस तरह लपेटकर अलमारी में ठूंसने का क्या कारण हो सकता था?

महिला ने कोने में लगे एक धातु के फिटिंग को हिलाया, और देखते ही देखते सामने वाली दीवार का एक हिस्सा अंदर की ओर खुलने लगा, मानो किसी छोटी कार के ट्रंक का दरवाजा खुल रहा हो। उस खुले हिस्से में घोर अंधेरा था, लेकिन मुझे ठंडी, नम हवा महसूस हो रही थी। साथ ही पानी की गहरी गड़गड़ाहट भी सुनाई दे रही थी।

“वहाँ एक नदी है,” ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो। पानी की आवाज़ में ऐसा लग रहा था मानो उसकी आवाज़ दब गई हो। फिर भी, मुझे किसी तरह उसकी बात समझ आ गई। अजीब बात है।

"ऊपर की ओर, नदी के उद्गम स्थल की तरफ एक बड़ा झरना है जिसके ठीक नीचे से आप गुजरेंगे। उसके आगे दादाजी की प्रयोगशाला है। वहाँ पहुँचने पर आपको सब कुछ पता चल जाएगा।"

“जब मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा? क्या तुम्हारे दादाजी मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे?”

“जी हाँ,” उसने कहा और मुझे एक बड़ी वाटरप्रूफ टॉर्च थमा दी, जिसमें एक पट्टा भी लगा था। घोर अंधेरे में कदम रखना मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन मैंने हिम्मत जुटाई और एक पैर उस बड़े छेद में

डाल दिया। मैं झुककर अपना सिर और कंधे अंदर डालने लगा और दूसरे पैर को भी धीरे-धीरे आगे बढ़ाया। भारी बारिश के कपड़ों के साथ यह काम आसान नहीं था। मैंने पीछे मुड़कर गॉगल्स से उस गोल-मटोल महिला को देखा जो अलमारी के अंदर खड़ी थी। वह बहुत प्यारी लग रही थी।

“सावधान रहना। नदी से दूर मत जाना और न ही किसी संकरे रास्ते पर जाना,” उसने झुककर मेरी ओर देखते हुए चेतावनी दी।

“सीधे आगे, झरना?” मैंने चिल्लाकर पूछा।

“सीधे आगे, झरना,” उसने दोहराया।

एक प्रयोग के तौर पर, मैंने "सेला" शब्द को होंठों से बोला। इससे उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई और उसने "सेला" कहा, फिर उसने दीवार का पैनल जोर से बंद कर दिया।

अचानक ही मैं घोर अंधेरे में डूब गया, सचमुच, रोशनी की एक किरण भी नहीं थी। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यहाँ तक कि मैं अपने चेहरे तक उठा हुआ अपना हाथ भी नहीं देख पा रहा था। मैं वहाँ अवाक खड़ा था, मानो किसी भारी वस्तु से चोट लगी हो, अपनी पूर्ण लाचारी के भयावह अहसास से व्याकुल। मैं काले प्लास्टिक में लिपटा हुआ एक बचा हुआ टुकड़ा था जिसे कूलर में ठूंस दिया गया था। एक पल के लिए मेरा शरीर बेजान हो गया।

मैंने टॉर्च का बटन ढूंढा और रोशनी की एक किरण सीधे दूर तक फैला दी। मैंने रोशनी अपने पैरों पर डाली, फिर धीरे-धीरे स्थिति का जायजा लिया। मैं एक तीन मीटर चौकोर कंक्रीट के चबूतरे पर खड़ा था जो अथाह खालीपन के ऊपर निकला हुआ था। न कोई रेलिंग, न कोई घेरा। काश उसने मुझे इसके बारे में बताया होता, मैंने थोड़ा नाराज़ होकर कहा।

प्लेटफ़ॉर्म के किनारे एक एल्युमिनियम की सीढ़ी टिकी हुई थी, जिससे नीचे उतरने का रास्ता दिख रहा था। मैंने टॉर्च को तिरछे अपने सीने पर बाँधा और एक-एक फिसलन भरी सीढ़ी से नीचे उतरना शुरू किया। जैसे-जैसे मैं नीचे उतरता गया, पानी की आवाज़ तेज़ और साफ़ होती गई। यहाँ क्या हो रहा था? एक ऑफिस की इमारत में एक कोठरी जिसके तल में नदी की गहरी खाई हो? और वो भी टोक्यो के ठीक बीचोंबीच!

जितना ज़्यादा मैं इसके बारे में सोचती, उतना ही ज़्यादा परेशान होती जाती। पहले वो डरावनी लिफ़्ट, फिर वो औरत जो बिना कुछ कहे ही बोलती थी, और अब ये आरामदेह सफ़र। शायद मुझे नौकरी ठुकराकर घर चले जाना चाहिए था। लेकिन नहीं, मैं यहीं थी, खाई में उतर रही थी। और किसलिए? पेशेवर स्वाभिमान के लिए? या फिर गुलाबी सूट वाली उस मोटी औरत के लिए? ठीक है, मैं मानती हूँ: उसका मुझ पर असर हो चुका था, और अब मुझे ये सब बकवास झेलनी ही थी।

सीढ़ी के बीस पायदान नीचे उतरकर मैं थोड़ी देर रुका, फिर अठारह पायदान और नीचे ज़मीन पर पहुँच गया। नीचे पहुँचकर मैंने सावधानी से टॉर्च की रोशनी अपने पैरों के नीचे बिछी समतल पत्थर की पटिया पर डाली और सामने नदी दिखाई दी। टॉर्च की रोशनी में पानी की सतह पर लहरें उठ रही थीं। धारा तेज़ थी,

लेकिन मुझे पानी की गहराई या रंग का कोई अंदाज़ा नहीं लग रहा था। मैं बस इतना ही बता सकता था कि वह बाएँ से दाएँ बह रही थी।

अपने पैरों के नीचे ज़मीन पर रोशनी बिखेरते हुए, मैं धीरे-धीरे नदी के ऊपर की ओर बढ़ने लगा। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था जैसे आस-पास कुछ हिल रहा हो, पर मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। नदी के दोनों ओर केवल खड़ी चट्टानों की दीवारें थीं। शायद मैं अंधेरे के कारण घबरा गया था।

पांच-छह मिनट चलने के बाद, छत एकदम नीचे चली गई—कम से कम गूंज से तो ऐसा ही लगा। मैंने टॉर्च की रोशनी ऊपर की ओर डाली, लेकिन ऊपर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर, जैसा कि उस महिला ने चेतावनी दी थी, मुझे दोनों ओर सुरंगें जाती हुई दिखाई दीं। वे पगडंडियाँ कम और चट्टान की दरारें ज़्यादा लग रही थीं, जिनसे पानी की धाराएँ रिसकर नदी में मिल रही थीं। मैं आगे बढ़ा और एक दरार में टॉर्च की रोशनी डाली। एक काला गड्ढा जो अंदर जाते-जाते बड़ा होता जा रहा था। बहुत लुभावना।

अपने दाहिने हाथ में टॉर्च को कसकर पकड़े हुए, मैं एक मछली की तरह तेज़ी से नदी के विपरीत दिशा में बढ़ने लगा। पत्थर की पटिया गीली थी, इसलिए मुझे संभलकर कदम रखने पड़े। अगर मैं अब फिसल गया या मेरी टॉर्च टूट गई, तो बस बात खत्म।

मेरा सारा ध्यान अपने पैरों पर था। जब मैंने गलती से ऊपर देखा, तो मुझे सात-आठ मीटर की दूरी पर एक रोशनी करीब आती हुई दिखाई दी। मैंने तुरंत टॉर्च बंद कर दी। मैंने रेनकोट में हाथ डालकर चाकू निकाला और उसकी धार खोल ली; अंधेरा और पानी की गर्जना ने मुझे छिपने के लिए एकदम सही आवरण प्रदान किया।

जैसे ही मैंने अपनी टॉर्च बंद की, पीली रोशनी एक बिंदु पर स्थिर हो गई। फिर वह एक चाप में घूमकर हवा में दो बड़े वृत्त बनाने लगी। यह एक संकेत प्रतीत हुआ: "सब ठीक है—चिंता मत करो।" फिर भी, मैं सतर्क खड़ा रहा और उनके हिलने का इंतजार करने लगा। थोड़ी देर बाद, रोशनी मेरी ओर आने लगी, मानो किसी विशाल जुगनू की तरह खाली जगह में लहरा रही हो, मानो किसी उच्च बुद्धि से जुड़ी हो। मैं उसे घूरता रहा, दाहिना हाथ चाकू से और बायां हाथ बंद टॉर्च पर था।

रोशनी मुझसे मुश्किल से तीन मीटर की दूरी पर रुक गई। वह ऊपर-नीचे हिल रही थी। रोशनी बहुत कमज़ोर थी। आखिरकार मुझे समझ आया कि वह किसी चेहरे को रोशन करने की कोशिश कर रही थी। एक ऐसे आदमी का चेहरा जिसने मेरे जैसे ही अजीबोगरीब चश्मे और रेनकोट पहन रखे थे। उसके हाथ में एक छोटी सी लालटेन थी, वैसी ही जैसी कैंपिंग के सामान की दुकानों में मिलती हैं। वह पानी के शोर के बीच मुझे कुछ पुकार रहा था, लेकिन मैं उसे सुन नहीं पा रहा था; और क्योंकि बहुत अंधेरा था, मैं उसके होंठ भी नहीं पढ़ पा रहा था।

“... सिवाय इसके कि... समय। या आप... उस संबंध में...,” ऐसा लग रहा था जैसे वह आदमी कह रहा हो। उसकी बात समझ में नहीं आ रही थी। लेकिन वह किसी खतरे का संकेत नहीं दे रहा था, इसलिए मैंने अपनी

टॉर्च फिर से चालू की और उसे अपने चेहरे पर चमकाया, और कान पर उंगली रखकर इशारा किया कि मैं उसे मुश्किल से सुन पा रहा हूँ।
उस आदमी ने कई बार सिर हिलाया, फिर उसने अपनी लालटेन नीचे रख दी और दोनों हाथों से अपनी जेबों में कुछ टटोलने लगा। अचानक, मेरे चारों ओर से गर्जना शांत हो गई, जैसे कोई ज्वार उतर रहा हो। मुझे लगा कि मैं बेहोश हो रहा हूँ। बेहोशी की आशंका से—हालांकि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं बेहोश क्यों हो रहा हूँ—मैंने गिरने के लिए खुद को तैयार किया।
कुछ सेकंड बीत गए। मैं अब भी खड़ा था। वास्तव में, मैं बिल्कुल ठीक महसूस कर रहा था। हालांकि, पानी की आवाज धीमी पड़ गई थी।
“मैं आपसे मिलने आया था,” उस आदमी ने कहा। बिलकुल स्पष्ट।
मैंने सिर हिलाया, टॉर्च को बगल में दबाया, चाकू को मोड़कर जेब में रख लिया। मुझे लग रहा था कि आज का दिन कुछ बुरा ही होने वाला है।
मैंने उस आदमी से पूछा, "आवाज कहाँ गई?"
“ओह हाँ, वो आवाज़। बहुत तेज़ थी, है ना? मैंने आवाज़ कम कर दी। माफ़ कीजिएगा। अब ठीक है,” उस आदमी ने बार-बार सिर हिलाते हुए कहा। नदी की गर्जना अब एक छोटी सी धारा की कलकल ध्वनि में बदल गई थी। “तो चलें?” उसने अचानक मुड़कर कहा और फिर बड़े आराम से पक्के कदमों से नदी के ऊपर की ओर चलने लगा। मैं उसके पीछे-पीछे चला और अपनी टॉर्च उसकी कदमों की रोशनी में चमकाता रहा।
“आपने आवाज़ कम कर दी? तो फिर, मेरा मतलब है कि यह कृत्रिम है?”
“बिल्कुल नहीं,” उस आदमी ने कहा। “यह तो प्राकृतिक ध्वनि है।”
“लेकिन प्राकृतिक ध्वनि को कम कैसे करते हैं?” मैंने पूछा।
“सच कहूं तो, मैं इसे मना नहीं करता,” उस आदमी ने जवाब दिया। “मैं इसे खुद निकालता हूं।”
खैर, मुझे लगता है, अगर उसने ऐसा कहा हो तो ठीक है। मैं चुपचाप चलती रही। अब सब कुछ बहुत शांत था, क्योंकि उसने पानी की आवाज़ को कम कर दिया था। मुझे अपने रबर के जूतों की हल्की-हल्की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। ऊपर से एक अजीब सी घिसने की आवाज़ आई, जैसे कोई कंकड़ों को आपस में रगड़ रहा हो। दो-तीन बार, फिर रुक गई।
“मुझे कुछ संकेत मिले कि वे इंकलिंग्स चुपके से यहाँ घुस रहे थे। मुझे चिंता हुई, इसलिए मैं तुम्हें लेने आया। नियम के अनुसार इंकलिंग्स को इतनी दूर तक नहीं आना चाहिए था, लेकिन कभी-कभी ऐसी चीजें हो जाती हैं। यह एक गंभीर समस्या है,” उस आदमी ने कहा।
“क्या तुम्हें कुछ समझ आ रहा है?” मैंने कहा।
"तुम्हारे जैसे आदमी को भी, शर्त लगाता हूँ कि तुम यहाँ किसी इंकलिंग से टकराना पसंद नहीं करोगे, है ना?" उस आदमी ने जोर से ठहाका लगाते हुए कहा।

“मुझे नहीं लगता,” मैंने कहा। चाहे मुझे शक हो या चीख-चीख, मैं इस तरह की अंधेरी जगह पर मिलने के लिए तैयार नहीं था।
“इसीलिए तो मैं तुम्हें लेने आया हूँ,” उस आदमी ने दोहराया। “ये इंकलिंग्स बहुत खतरनाक हैं।”
मैंने कहा, "बहुत आभारी हूँ।"
हम चलते रहे, तभी हमें नल के पूरी तेज़ी से बहने जैसी आवाज़ सुनाई दी। झरना। टॉर्च की एक हल्की रोशनी से ही मैं समझ गया कि यह कोई आम झरना नहीं था। अगर आवाज़ कम न की गई होती, तो यह बहुत तेज़ गड़गड़ाहट पैदा करता। मैं आगे बढ़ा, मेरी गॉगल्स पानी की बूंदों से भीगी हुई थीं।
“यहीं से हमें डूबना होगा, है ना?” मैंने पूछा।
“जी हाँ, बेटे,” उस आदमी ने कहा। और बिना कुछ और बताए, वह सीधे झरने में चला गया और गायब हो गया। मेरे पास भी झरने में जाने के अलावा कोई चारा नहीं था।
सौभाग्य से, हमारा रास्ता झरने के एक ऐसे हिस्से से होकर गुजरा जो "सूखा" साबित हुआ, लेकिन यह बात हद से ज़्यादा परेशान करने वाली थी। बारिश से बचने के लिए पूरी तरह से रेनकोट पहने होने के बावजूद, मैं पानी की मोटी धार में भीग रहा था। और सोचिए, उस बूढ़े आदमी को प्रयोगशाला में आते-जाते हर बार यही करना पड़ता था। बेशक यह सूचना सुरक्षा के लिए था, लेकिन इसका कोई और बेहतर तरीका तो होना ही चाहिए था।
झरने के अंदर, मैं ठोकर खाकर गिर पड़ा और मेरा घुटना एक चट्टान से टकरा गया। आवाज़ धीमी होने के कारण, मैं उन आवाज़ों और वास्तविक ध्वनि के बीच के अंतर को देखकर भ्रमित हो गया था जो सुनाई देने पर उत्पन्न होतीं। कहने का तात्पर्य यह है कि झरने में झरने के अनुरूप ध्वनि होनी चाहिए।
झरने के दूसरी ओर एक गुफा थी जो मुश्किल से एक आदमी के लिए पर्याप्त थी। ठीक बीच में एक लोहे का दरवाजा था। उस आदमी ने अपनी जेब से एक छोटा सा कैलकुलेटर जैसा उपकरण निकाला, उसे खांचे में डाला और थोड़ा सा घुमाने के बाद दरवाजा चुपचाप अंदर की ओर खुल गया।
“ठीक है, हम यहाँ पहुँच गए। आपके बाद,” उस आदमी ने कहा। वह मेरे पीछे अंदर आया और दरवाजा बंद कर दिया। “मुश्किल भरा सफर रहा, है ना?”
नहीं, उह... ऐसा नहीं था...
वह आदमी हँसा, उसके गले में रस्सी से लटकी लालटेन थी, चश्मा और हुड अभी भी अपनी जगह पर थे। एक हंसमुख, खिलखिलाती हंसी।
जिस कमरे में हम दाखिल हुए थे, वह किसी स्विमिंग पूल के लॉकर रूम जैसा था, अलमारियों पर हमारे जैसे ही लगभग आधा दर्जन सामान के सेट रखे हुए थे। मैंने अपने गॉगल्स उतारे और रेनकोट से बाहर निकलकर उसे हैंगर पर टांग दिया, फिर अपने बूट्स भी शेल्फ पर रख दिए। टॉर्च को मैंने हुक पर टांग दिया।

“आपको हुई परेशानी के लिए क्षमा करें,” उस व्यक्ति ने माफी मांगते हुए कहा, “लेकिन हम सुरक्षा में ढिलाई नहीं बरत सकते। आवश्यक सावधानियां बरतनी ही होंगी। बाहर ऐसे लोग छिपे हुए हैं जो हमारा इंतजार कर रहे हैं।”

“क्या ये संकेत हैं?” मैंने पूछा।

“जी हाँ। और अगर आप सोच रहे थे तो बता दूं कि वे इंकलिंग्स अकेले नहीं हैं,” उस आदमी ने खुद की ओर सिर हिलाते हुए कहा।

फिर वह मुझे लॉकरों के आगे बने स्वागत कक्ष में ले गया। अपने रेनकोट से बाहर निकलते ही, मेरा मार्गदर्शक एक दयालु बूढ़ा व्यक्ति निकला। कद में छोटा और मोटा; मोटा नहीं, बल्कि मजबूत कद-काठी का। उसका रंग साफ था और जब उसने बिना फ्रेम का चश्मा लगाया, तो वह युद्ध-पूर्व के किसी प्रमुख राजनीतिक व्यक्ति की हूबहू छवि बन गया।

उन्होंने मुझे चमड़े के सोफे पर बैठने का इशारा किया, जबकि वे खुद डेस्क के पीछे बैठ गए। यह कमरा बिल्कुल दूसरे कमरे जैसा ही था। कालीन, दीवारें, रोशनी, सब कुछ एक जैसा था। सोफे के सामने कॉफी टेबल पर सिगरेट का एक जैसा सेट था, डेस्क पर एक जैसी अपॉइंटमेंट बुक और कागज की क्लिपों का एक जैसा बिखराव था। क्या मुझे घुमा-फिराकर उसी कमरे में वापस लाया गया था? शायद हाँ; शायद नहीं। हर बिखरी हुई कागज की क्लिप की सटीक जगह याद रखना मुश्किल था।

उस बूढ़े आदमी ने मुझे गौर से देखा। फिर उसने एक पेपरक्लिप उठाई और उसे सीधा करके अपनी बाईं तर्जनी उंगली के नाखून के क्यूटिकल को खुरचा। क्यूटिकल खुरचने के बाद उसने सीधी की हुई पेपरक्लिप को ऐशट्रे में फेंक दिया। मेरे मन में ख्याल आया, अगर मेरा कभी पुनर्जन्म हुआ, तो मैं यह सुनिश्चित कर लूँ कि मैं पेपरक्लिप बनकर वापस न आऊँ।

“मेरी जानकारी के अनुसार, वे इंकलिंग्स सेमियोटेक्स के साथ कुछ इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं,” बूढ़े आदमी ने कहा। “ऐसा नहीं है कि वे आपस में मिले हुए हैं। इंकलिंग्स बहुत सतर्क हैं, और आपके सेमियोटेक ने तो आगे की योजना पहले से ही बना रखी है। इसलिए सहयोग बहुत कम लोगों तक ही सीमित है। फिर भी, यह अच्छा संकेत नहीं है। यह तथ्य कि इंकलिंग्स यहाँ आस-पास मंडरा रहे हैं, जहाँ उन्हें बिल्कुल नहीं होना चाहिए, यह दर्शाता है कि हालात कितने खराब हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो यह जगह दिन-रात इंकलिंग्स से भर जाएगी। और इससे मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाएगी।”

“बिल्कुल,” मैंने सहमति जताते हुए कहा, “बिल्कुल।” मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि ये इंकलिंग्स किस तरह के ऑपरेटर थे, लेकिन अगर किसी भी कारण से उन्होंने सेमियोटेक्स के साथ हाथ मिला लिया था, तो मेरे लिए भी हालात अच्छे नहीं थे। कहने का तात्पर्य यह था कि हमारे और सेमियोटेक्नीशियनों के बीच का मुकाबला पहले से ही नाज़ुक था, और ज़रा सी भी गड़बड़ी सब कुछ उलट सकती थी। सबसे पहले तो, मैं इन इंकलिंग्स के बारे में कुछ नहीं जानता था, जबकि वे मेरे बारे में जानते थे। इससे पलड़ा पहले ही उनके पक्ष में झुक गया

था। बेशक, मेरे जैसे निचले स्तर के स्वतंत्र कार्यकर्ता के लिए इंकलिंग्स के बारे में न जानना कोई बड़ी बात नहीं थी, जबकि शीर्ष पर बैठे बड़े अधिकारी शायद सदियों पहले से ही उनके बारे में जानते होंगे।
“ठीक है, अगर आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो चलिए चलते हैं,” बूढ़े आदमी ने कहा।
“बिल्कुल,” मैंने कहा।
मैंने उनसे कहा कि वे अपना सबसे बेहतरीन कैलकुटेक भेजें, और लगता है कि आपकी यही प्रतिष्ठा है। हर कोई आपकी बहुत प्रशंसा करता है। आपमें हुनर है, हिम्मत है, आप शानदार काम करते हैं। टीम भावना की थोड़ी कमी को छोड़कर, आपमें कोई खामी नहीं है।
मैंने कहा, "मुझे यकीन है कि यह अतिशयोक्ति है।"
बूढ़ा आदमी फिर ठहाका लगाकर हँसा। “और टीम भावना कोई खास बात नहीं है। असली सवाल तो हिम्मत का है। बिना जोश के कोई भी कैलकुटेक का मुख्य खिलाड़ी नहीं बन सकता। इसी से तो इतनी ऊंची तनख्वाह मिलती है, है ना?”
एक और ठहाका। फिर उस बूढ़े आदमी ने मुझे बगल के एक कार्यशाला में ले गया।
“मैं एक जीवविज्ञानी हूँ,” उन्होंने कहा। “लेकिन जीवविज्ञान शब्द मेरे काम को पूरी तरह से बयां नहीं करता। तंत्रिका शरीरक्रिया विज्ञान से लेकर ध्वनिकी, भाषाविज्ञान से लेकर तुलनात्मक धर्म तक, सब कुछ। अगर मैं खुद कहूँ तो, यह कोई सामान्य कार्यक्षेत्र नहीं है। आजकल मैं स्तनधारियों के स्वाद पर शोध कर रहा हूँ।”
“स्वाद?”
“बेटा, मुँह। मुँह की बनावट। मुँह कैसे काम करता है, कैसे आवाज़ देता है, और इससे जुड़े कई विषय। यहाँ देखो।”
फिर उसने दीवार पर लगे स्विच को दबाया और लैब की बत्तियाँ जल उठीं। कमरे का पूरा पिछला हिस्सा अलमारियों से भरा हुआ था, हर अलमारी खोपड़ियों से सजी थी। जिराफ़, घोड़ा, पांडा, चूहा, हर तरह के स्तनधारी जीव। वहाँ तीन सौ या चार सौ खोपड़ियाँ रही होंगी। ज़ाहिर है, वहाँ इंसानी खोपड़ियाँ भी थीं। कोकेशियाई, नीग्रोइड, एशियाई, भारतीय, हर प्रजाति का एक नर और एक मादा।
“नीचे स्टोररूम में व्हेल और हाथी रखे हैं। वे बहुत जगह घेरते हैं,” बूढ़े आदमी ने कहा।
“ठीक है, मुझे लगता है,” मैंने कहा। कुछ व्हेल की खोपड़ियाँ और फिर पूरा इलाका तबाह हो जाएगा।
सभी खोपड़ियों के मुंह खुले हुए थे, मानो निरीक्षण के लिए तैयार हों; सभी खाली आँखों से सामने वाली दीवार को घूर रही थीं। चाहे ये शोध के नमूने हों या न हों, कमरे का माहौल बिल्कुल भी सुखद नहीं था। अन्य अलमारियों पर, हालांकि खोपड़ियों जितनी संख्या में नहीं, जीभ, कान, होंठ और ग्रासनली से भरे जार रखे थे।
“क्या सोचते हो? बढ़िया संग्रह है ना?” बूढ़े आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा। “कुछ लोग डाक टिकटें इकट्ठा करते हैं, कुछ लोग रिकॉर्ड इकट्ठा करते हैं। मैं खोपड़ियाँ इकट्ठा करता हूँ। दुनिया में हर तरह के लोग होते हैं, है ना?”
"हां हां।"

“बचपन से ही मुझे स्तनधारियों की खोपड़ियों में दिलचस्पी रही है, और मैं धीरे-धीरे अपना संग्रह बढ़ा रहा हूँ। लगभग चालीस साल से इस काम में लगा हुआ हूँ। खोपड़ियों को सुलझाने में मुझे उम्मीद से कहीं ज़्यादा समय लग गया। जीवित, हाड़-मांस के इंसानों को समझना ज़्यादा आसान होता। मुझे तो ऐसा ही लगता है। हाँ, ज़ाहिर है, तुम्हारे जैसे युवा को शायद सिर्फ़ मांस में ही दिलचस्पी होगी, है ना?” बूढ़े ने हंसते हुए कहा।
“मुझे तो हड्डियों की आवाज़ सुनने लायक बनने में तीस साल लग गए। तीस साल, वाकई बहुत लंबा समय है।”
“आवाजें?” मैंने कहा। “हड्डियाँ आवाजें पैदा करती हैं?”
“बेशक, वे बोलती हैं,” बूढ़े आदमी ने कहा। “हर हड्डी की अपनी एक अनोखी आवाज़ होती है। यह हड्डियों की छिपी हुई भाषा है। और मेरा मतलब लाक्षणिक रूप से नहीं है। हड्डियाँ सचमुच बोलती हैं। मैं जिस शोध में लगा हूँ, उसका उद्देश्य उस भाषा को समझना है। फिर, उसे कृत्रिम रूप से नियंत्रित करना है।”
मुझे सारी बातें ठीक से याद नहीं रहीं, लेकिन अगर उस बूढ़े आदमी की बातें सच थीं, तो उसके सामने बहुत बड़ा काम था। मैंने कहा, "बहुत ही महत्वपूर्ण शोध है।"
“सचमुच,” बूढ़े ने सिर हिलाते हुए कहा। “इसीलिए उन सभी लोगों की नज़र मेरे शोध पर है। मुझे डर है कि यह बात फैल चुकी है। वे सब मेरे शोध को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप हड्डियों में दबी यादों को निकाल सकते हैं; तो यातना देने की कोई ज़रूरत नहीं होगी। आपको बस अपने शिकार को मारना होगा, खोपड़ी से मांस पूरी तरह अलग करना होगा, और जानकारी आपके हाथ में होगी।”
“बहुत सुंदर,” मैंने कहा।
"मान लीजिए, चाहे अच्छा हो या बुरा, शोध अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचा है। इस स्तर पर, मस्तिष्क को बाहर निकालकर आप एक स्पष्ट स्मृति लॉग प्राप्त कर सकते हैं।"
“ओह।” खोपड़ी हटा दो, दिमाग हटा दो, कुछ फर्क तो होगा ही।
“इसीलिए मैंने आपकी सेवाएँ माँगी हैं। ताकि वे सेमिओटेक मेरे प्रयोगों के डेटा को चुरा न सकें। सभ्यता,” बूढ़े व्यक्ति ने कहा, “गंभीर संकटों का सामना कर रही है क्योंकि विज्ञान का उपयोग बुराई—या अच्छाई—के लिए किया जा रहा है। मैं शुद्ध विज्ञान के लिए विज्ञान पर भरोसा करता हूँ।”
मैंने कहा, “मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। मैं यहाँ पूरी तरह से व्यावसायिक काम से आया हूँ। लेकिन मेरे आदेश सिस्टम सेंट्रल से नहीं आए हैं और न ही किसी आधिकारिक एजेंट से। ये सीधे आपसे आए हैं। यह बहुत ही अनियमित है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, शायद पेशेवर नियमों का उल्लंघन है। अगर इसकी रिपोर्ट की गई, तो मेरा लाइसेंस रद्द हो सकता है। आशा है आप इसे समझेंगे।”
“जी हां,” बूढ़े आदमी ने कहा। “आपकी चिंता जायज़ है। लेकिन निश्चिंत रहिए, यह अनुरोध सिस्टम के उचित माध्यम से स्वीकृत हो गया है। केवल व्यावसायिक प्रक्रियाओं को छोड़ दिया गया है। मैंने आपसे सीधे संपर्क किया ताकि सब कुछ गुप्त रहे। आपका लाइसेंस रद्द नहीं होगा।”
"क्या आप इसकी गारंटी दे सकते हैं?"

उस बूढ़े आदमी ने एक फ़ोल्डर निकाला और मुझे थमा दिया। मैंने उसे पलटकर देखा। आधिकारिक सिस्टम अनुरोध प्रपत्र थे, इसमें कोई शक नहीं। कागज़ात, हस्ताक्षर, सब कुछ सही था।
“ठीक है,” मैंने फ़ोल्डर लौटाते हुए कहा। “आपको पता है, मुझे मेरे पद के हिसाब से डबल-स्केल मिलता है। डबल-स्केल का मतलब है—”
“मानक शुल्क से दुगुना, है ना? मुझे कोई आपत्ति नहीं है। असल में, बोनस के तौर पर, मैं तिगुने शुल्क पर भी भुगतान करने को तैयार हूँ।”
मुझे कहना होगा, मुझे आप पर बहुत भरोसा है।
“यह एक महत्वपूर्ण काम है। साथ ही, मैंने तुम्हें पहले ही झरने के नीचे भेज दिया है। हो-हो-हो।”
“तो क्या मैं आंकड़े देख सकता हूँ?” मैंने कहा। “आंकड़े देखने के बाद हम गणना की विधि तय कर सकते हैं। हममें से कौन कंप्यूटर स्तर पर गणना करेगा?”
मैं यहां अपना कंप्यूटर इस्तेमाल करूंगा। आप बस पहले और बाद की तैयारी कर लीजिए। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो।
“यह तो बहुत अच्छी बात है। इससे मेरी बहुत सारी परेशानी बच गई।”
बूढ़ा आदमी अपनी कुर्सी से उठा और अपने पीछे की दीवार पर एक निर्देशांक दबाया। एक साधारण दीवार —जब तक कि वह खुल नहीं गई। एक के अंदर एक चाल। बूढ़े आदमी ने एक और फ़ोल्डर निकाला और दीवार को बंद कर दिया। दोबारा बंद होने पर, वह किसी भी दूसरी सादी सफेद दीवार जैसी दिख रही थी। कोई विशिष्ट निशान या जोड़ नहीं, कुछ भी नहीं।
मैंने आंकड़ों के सात पन्नों पर सरसरी नजर डाली। सीधा-सादा डेटा था।
मैंने कहा, "इसे साफ करने में ज़्यादा समय नहीं लगना चाहिए। इस तरह की दुर्लभ संख्या श्रृंखलाओं में अस्थायी जोड़-तोड़ की संभावना लगभग न के बराबर होती है। सैद्धांतिक रूप से, बेशक, इसकी संभावना हमेशा रहती है। लेकिन इससे वाक्य-रचना की वैधता साबित नहीं हो पाएगी, और बिना सबूत के आप गलती का टैग नहीं हटा पाएंगे। यह रेगिस्तान को बिना कंपास के पार करने जैसा है। शायद मूसा ऐसा कर सकते थे।"
“मूसा ने तो समुद्र भी पार कर लिया था।”
"प्राचीन इतिहास। मेरी जानकारी के अनुसार, इस स्तर पर, आज तक किसी भी सेमिओटेक ने अवैध रूप से प्रवेश प्राप्त करने में सफलता नहीं पाई है।"
"आप कह रहे हैं कि एक सिंगल-कन्वर्जन ट्रैप ही काफी है, है ना?"
“दोहरा रूपांतरण जाल बहुत जोखिम भरा है। इससे अस्थायी जुड़ाव की संभावना लगभग शून्य हो जाएगी, लेकिन फिलहाल यह एक अजूबा ही है। जाल बिछाने की प्रक्रिया ठोस आधार पर स्थापित नहीं है। शोध अभी पूरा नहीं हुआ है।”

“डबल-कन्वर्जन ट्रैपिंग के बारे में किसने कुछ कहा?” बूढ़े आदमी ने अपनी उंगली के नाखून में एक और पेपरक्लिप चुभोते हुए कहा। इस बार दाहिनी तर्जनी उंगली में।
तो फिर आप क्या कहना चाह रहे हैं?
“गुस्से में काम करो, बेटे। मैं सचमुच में गुस्से में काम करने की बात कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम सफाई करो और फिर से काम करो। इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया है। अगर यह सिर्फ़ दिमागी तौर पर धोए गए कचरे को धोना होता, तो तुम्हें बुलाने की कोई ज़रूरत ही नहीं होती।”
मैंने पैर मोड़ते हुए कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा। आपको पैरों को घसीटकर चलने के बारे में कैसे पता चला? यह गोपनीय जानकारी है। किसी बाहरी व्यक्ति को इसके बारे में पता नहीं होना चाहिए।"
“हाँ, बिल्कुल। सिस्टम के शीर्ष तक मेरी सीधी पहुँच है।”
“ठीक है, तो इसे अपनी पाइपलाइन से गुजारें। फिलहाल फेरबदल की प्रक्रिया पूरी तरह से रोक दी गई है। मुझसे इसका कारण मत पूछिए। जाहिर है, कोई समस्या है। कारण चाहे जो भी हो, अब फेरबदल प्रतिबंधित है।”
उस बूढ़े आदमी ने मुझे अनुरोध वाला फोल्डर एक बार फिर थमा दिया।
"आखिरी पृष्ठ को ध्यान से देख लीजिए। उसमें कहीं न कहीं प्रक्रिया संबंधी मंजूरी के बारे में जानकारी होनी चाहिए।"
मैंने फ़ोल्डर का आखिरी पन्ना खोला और दस्तावेज़ों पर सरसरी नज़र डाली। वाकई, फेरबदल की मंज़ूरी मिल चुकी थी। मैंने उसे कई बार पढ़ा। आधिकारिक। पाँच हस्ताक्षर, कम नहीं। आखिर बड़े अधिकारी क्या सोच रहे हैं? आप एक गड्ढा खोदते हैं और अगली ही बात कहते हैं उसे भर दो; भर देते हैं और फिर कहते हैं एक और गड्ढा खोदो। ये लोग हमेशा फील्ड में काम करने वाले आदमी को परेशान करते रहते हैं।
"क्या आप कृपया इस अनुरोध के सभी पृष्ठों की रंगीन प्रतियां बना सकते हैं? इनके बिना मैं मुश्किल में पड़ सकता हूँ।"
“ठीक है,” बूढ़े आदमी ने कहा। “मुझे आपकी प्रतियां बनाकर खुशी हुई। चिंता की कोई बात नहीं है। सब कुछ ठीक चल रहा है। मैं आपको आपकी आधी फीस आज दे दूंगा, बाकी आधी अंतिम रसीद मिलने पर। ठीक है?”
ठीक है। अब कपड़े धोने का काम शुरू करते हैं। धोने के बाद, मैं धुले हुए कपड़े घर ले जाऊँगा और वहीं उनका फेरबदल करूँगा। फेरबदल के लिए विशेष सावधानियों की आवश्यकता होती है। काम पूरा होने पर मैं फेरबदल किया हुआ डेटा लेकर वापस आऊँगा।
"चार दिन बाद दोपहर के समय। इससे ज्यादा देर नहीं हो सकती।"
"बहुत समय।"
“बेटा, मैं तुमसे विनती करता हूँ, चाहे कुछ भी हो जाए, देर मत करना,” बूढ़े व्यक्ति ने गिड़गिड़ाते हुए कहा। “अगर देर हुई तो कुछ भयानक हो जाएगा।”

“क्या दुनिया खत्म होने वाली है?” मैंने मजाक किया था।
“एक तरह से,” बूढ़े आदमी ने कहा, “हाँ।”
“इस बार नहीं। मैं कभी देर से नहीं आती,” मैंने कहा। “अब, अगर आपको बुरा न लगे तो क्या आप कृपया थोड़ा ठंडा पानी और एक थर्मस में गर्म काली कॉफी ला सकते हैं? और हो सके तो एक छोटा सा नाश्ता भी। कृपया। मुझे लग रहा है कि यह काम लंबा चलेगा।”
मुझे अंदर से सही आभास हुआ। यह एक लंबा और कठिन काम था। संख्याएँ तो देखने में बहुत आसान थीं, लेकिन इतने सारे केस-डिटरमिनेंट स्टेप-फंक्शन के कारण, सारणीकरण में जितना आसान लग रहा था, उससे कहीं अधिक मेहनत लगी। मैंने दिए गए डेटा को सीधे अपने दाएँ मस्तिष्क में डाला, फिर उसे एक पूरी तरह से असंबंधित साइन-पैटर्न के माध्यम से परिवर्तित करके अपने बाएँ मस्तिष्क में स्थानांतरित किया, जहाँ से मैंने उसे पूरी तरह से पुनर्गठित संख्याओं के रूप में निकाला और कागज पर टाइप किया। इसे ही डेटा लॉन्ड्रिंग कहते हैं। बेशक, यह बहुत सरलीकृत है। कैलकुटेक के अनुसार रूपांतरण कोड अलग-अलग होता है। यह कोड एक यादृच्छिक संख्या सारणी से पूरी तरह भिन्न है क्योंकि यह आरेखीय है। दूसरे शब्दों में, दाएँ और बाएँ मस्तिष्क के विभाजन का तरीका (जो कि एक सुविधाजनक कल्पना है; बाएँ और दाएँ वास्तव में कभी विभाजित नहीं होते) ही मुख्य बात है। चित्र में यह कुछ इस तरह दिख सकता है:

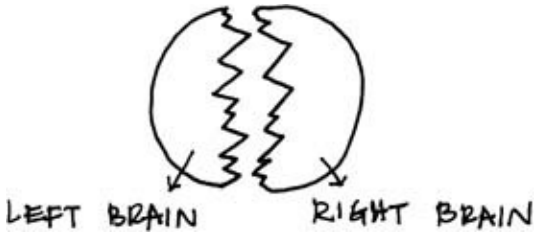

खास बात यह है कि टेढ़े-मेढ़े किनारे ठीक से मेल नहीं खाते, जिसका मतलब है कि डेटा को उसके मूल रूप में वापस बदलना नामुमकिन है। फिर भी, सेमिओटेक्स कभी-कभी एक अस्थायी पुल की मदद से चोरी किए गए डेटा को डिकोड कर लेते हैं। यानी, वे प्राप्त डेटा के विश्लेषण से टेढ़े-मेढ़े किनारों को होलोग्राफिक रूप से पुनः प्रस्तुत करते हैं। कभी-कभी यह काम करता है, कभी-कभी नहीं। हम कैलकुटेक्स जितनी ज़्यादा अपनी तकनीकें बेहतर करते हैं, वे उतनी ही ज़्यादा अपनी जवाबी तकनीकें बेहतर करते हैं। हम डेटा की सुरक्षा करते हैं, वे उसे चुरा लेते हैं। यह पुलिस और चोर के खेल का जाना-माना खेल है।
सेमियोटेक संगठन अवैध रूप से प्राप्त डेटा और अन्य सूचनाओं का काला बाजार में व्यापार करते हैं, जिससे उन्हें भारी मुनाफा होता है। और इससे भी बुरी बात यह है कि वे सबसे महत्वपूर्ण सूचनाओं को अपने पास और अपने संगठन के लाभ के लिए सुरक्षित रखते हैं।
हमारे संगठन को आम तौर पर सिस्टम कहा जाता है, जबकि उनके संगठन को फैक्ट्री। सिस्टम मूल रूप से एक निजी समूह था, लेकिन जैसे-जैसे इसका महत्व बढ़ा, इसने अर्ध-सरकारी दर्जा प्राप्त कर लिया। ठीक

उसी तरह जैसे अमेरिका में मा बेल है। हम आम कैलकुटेक कर्मचारी कर लेखाकार या वकीलों की तरह स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, लेकिन हमें राज्य से लाइसेंस की आवश्यकता होती है और हम केवल सिस्टम से या सिस्टम द्वारा नियुक्त आधिकारिक एजेंटों के माध्यम से ही काम कर सकते हैं। इस व्यवस्था का उद्देश्य फैक्ट्री द्वारा प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग को रोकना है। इसका उल्लंघन करने पर आपका लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा। मैं वास्तव में यह नहीं कह सकता कि ये निवारक उपाय तर्कसंगत हैं या नहीं। इसका कारण यह है कि योग्यता से वंचित कोई भी कैलकुटेक अंततः फैक्ट्री में समाहित हो जाता है और भूमिगत होकर सेमिओटेक बन जाता है।

जहां तक फैक्ट्री की बात है, इसके बारे में बहुत कम जानकारी है। ऐसा लगता है कि इसकी शुरुआत एक छोटे पैमाने के उद्यम के रूप में हुई और इसने तेजी से विस्तार किया। कुछ लोग इसे डेटा माफिया कहते हैं, और निश्चित रूप से, इसकी व्यापक पैठ अन्य गुप्त संगठनों से काफी मिलती-जुलती है। अंतर सिर्फ इतना है कि यह माफिया केवल सूचना का कारोबार करता है। सूचना साफ-सुथरी होती है और सूचना से पैसा कमाया जा सकता है। फैक्ट्री किसी कंप्यूटर पर नजर रखती है, उसे हैक करके उसकी सारी जानकारी निकाल लेती है और फिर भाग जाती है।

कपड़े धोते समय मैंने एक पूरी केतली कॉफी पी ली। एक घंटा काम, तीस मिनट आराम—बिल्कुल नियमित। नहीं तो दाएँ-मस्तिष्क-बाएँ-मस्तिष्क का तालमेल बिगड़ जाता है और परिणामस्वरूप गणना में गड़बड़ी हो जाती है।

उन तीस मिनट के अंतरालों के दौरान, मैं उस बूढ़े आदमी से हल्की-फुल्की बातें करता था। बस मुंह चलाने के लिए कुछ भी। थके हुए दिमाग को तरोताज़ा करने का यही सबसे अच्छा तरीका है।

मैंने पूछा, "ये सभी आंकड़े क्या हैं?"

“प्रयोग के आंकड़े,” बूढ़े आदमी ने कहा। “एक साल के निष्कर्ष। विभिन्न जानवरों की खोपड़ियों और तालुओं के त्रि-आयामी ग्राफिक-सिम्युलेटेड वॉल्यूम मैपिंग का संख्यात्मक रूपांतरण, साथ ही उनकी आवाज़ों का त्रि-तत्व विश्लेषण। मैं आपको बता रहा था कि प्रत्येक हड्डी की तरंग को समझने में मुझे तीस साल लग गए। खैर, जब यह गणना पूरी हो जाएगी, तो हम अंततः उस ध्वनि को निकाल पाएंगे—अनुभवजन्य रूप से नहीं, बल्कि सैद्धांतिक रूप से।”

"तो फिर चीजों को कृत्रिम रूप से नियंत्रित करना संभव हो जाएगा?"

“बिल्कुल सही,” बूढ़े आदमी ने कहा।

"तो हमारे पास कृत्रिम नियंत्रण है—इससे हमें क्या हासिल होता है?"

बूढ़े आदमी ने अपने ऊपरी होंठ को चाटा। कुछ देर बाद उसने कहा, “हर तरह की चीजें हो सकती हैं। सचमुच हर तरह की चीजें। मैं उनके बारे में अभी नहीं बता सकता, लेकिन ऐसी चीजें जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।”

"क्या ध्वनि निष्कासन उनमें से केवल एक है?"

बूढ़ा आदमी फिर से ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। “ओह-हो-हो, बिलकुल सही कहा बेटा। इंसानी खोपड़ी के सिग्नल को सुनकर हम आवाज़ को कम या ज़्यादा कर सकते हैं। हालांकि, हर इंसान की खोपड़ी का आकार अलग होता है, इसलिए हम उसे पूरी तरह से खत्म नहीं कर सकते। लेकिन हम उसे काफी कम कर सकते हैं, है ना? हो-हो-हो। हम ध्वनि-सकारात्मक को ध्वनि-ऋणात्मक से मिलाते हैं और उन्हें एक साथ प्रतिध्वनित करते हैं। ध्वनि हटाना तो बस एक हानिरहित प्रयोग है।”

हानिरहित? वॉल्यूम के साथ छेड़छाड़ करना ही काफी गड़बड़ था। बाकी का क्या हाल होगा?

“बोलने और सुनने, दोनों से आवाज़ को हटाया जा सकता है,” बूढ़े आदमी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। “दूसरे शब्दों में, हम सुनने से पानी की आवाज़ को मिटा सकते हैं—जैसे मैंने अभी किया—या हम बोलने की आवाज़ को मिटा सकते हैं।”

"क्या आप इन निष्कर्षों को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने की योजना बना रहे हैं?"

“टॉश,” बूढ़े आदमी ने अपने हाथ पोंछते हुए कहा, “अब मैं इस तरह के मज़ेदार खेल में दूसरों को क्यों शामिल करना चाहूँगा? मैं इसे अपने निजी आनंद के लिए रख रहा हूँ।”

बूढ़ा आदमी और जोर से हंसने लगा। हो-हो-हो।

उसने मुझे हंसा भी दिया।

“मेरा शोध पूरी तरह से विशेषज्ञों के लिए है। वैसे भी ध्वनिकी में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं है,” बूढ़े आदमी ने कहा। “दुनिया के सारे मूर्ख विद्वान भी कोशिश करने पर भी मेरे सिद्धांतों को समझ नहीं पाएंगे। केवल विज्ञान जगत ही मेरी बात सुनता है।”

“ऐसा हो सकता है, लेकिन आपके सेमिओटेक लोग बेवकूफ नहीं हैं। जब गूढ़ भाषा को समझने की बात आती है, तो वे सभी प्रतिभाशाली होते हैं। वे आपके निष्कर्षों को आखिरी अंक तक सुलझा लेंगे।”

“मुझे पता है, मुझे पता है। इसीलिए मैंने अपने सारे डेटा और प्रक्रियाओं को छुपा रखा है, ताकि कोई उनमें दखल न दे। शायद इसका मतलब यह है कि विज्ञान जगत भी मुझे गंभीरता से नहीं लेता, पर इससे क्या फर्क पड़ता है? खैर, सौ साल बाद तो मेरे सारे सिद्धांत साबित हो चुके होंगे। इतना काफी है, है ना?”

"हम्म।"

"ठीक है बेटे, सब कुछ धोकर इधर-उधर कर दो।"

“जी हाँ,” मैंने कहा, “जी हाँ।”

अगले एक घंटे तक मैंने गणनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। फिर थोड़ी देर आराम किया।

मैंने कहा, "अगर मैं पूछ सकता हूँ तो एक सवाल है।"

“यह क्या है?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

“प्रवेश द्वार पर खड़ी वह युवती। आप जानते हैं ना, गुलाबी सूट वाली, थोड़ी मोटी सी...?”

“यह मेरी पोती है,” बूढ़े आदमी ने कहा। “बेहद होशियार बच्ची है। छोटी उम्र में ही वह मेरे शोध में मेरी मदद करती है।”

"अच्छा, मेरा सवाल यह है कि... क्या वह जन्म से ही मूक थी?"
“धत् तेरे की,” बूढ़े आदमी ने अपनी जांघ पर हाथ मारते हुए कहा। “प्लम भूल गई। वो अभी भी उस प्रयोग से पूरी तरह अलग है। धत् तेरे की, धत् तेरे की, धत् तेरे की। मुझे अभी जाकर इसे ठीक करना होगा।”
"ओह।"

4

पुस्तकालय

शहर का केंद्र पुराने पुल के ठीक उत्तर में स्थित एक अर्धवृत्ताकार चौक के चारों ओर बसा है। इसका दूसरा अर्धवृत्ताकार भाग, यानी वृत्त का निचला आधा हिस्सा, नदी के पार दक्षिण में स्थित है। इन दोनों अर्धवृत्तों को क्रमशः उत्तरी और दक्षिणी चौक के नाम से जाना जाता है। एक जोड़ी के रूप में देखने पर, ये दोनों एक-दूसरे से इतने भिन्न हैं कि बिल्कुल विपरीत प्रतीत होते हैं। उत्तरी चौक रहस्य से भरा है, आसपास के क्षेत्र की खामोशी से सराबोर है, जबकि दक्षिणी चौक में मानो कोई वातावरण ही नहीं है। यहाँ आकर कैसा महसूस किया जाए? सब कुछ एक अस्पष्ट हानि की भावना में डूबा हुआ है। यहाँ पुल के उत्तर की तुलना में अपेक्षाकृत कम घर हैं। फूलों की क्यारियाँ और पत्थर की सड़कें अच्छी तरह से रखरखाव नहीं की गई हैं।

नॉर्थ प्लाज़ा के बीचोंबीच एक विशाल घंटाघर आसमान की ओर ऊँचा उठता हुआ दिखाई देता है। सटीक कहें तो, यह घंटाघर कम और घंटाघर का आकार बनाए रखने वाली एक वस्तु ज़्यादा है। घड़ी ने समय बताने वाले यंत्र के रूप में अपनी मूल भूमिका बहुत पहले ही खो दी है।

यह एक वर्गाकार पत्थर का टावर है, जो ऊंचाई बढ़ने के साथ संकरा होता जाता है, और इसके फलक कम्पास की तरह चारों दिशाओं की ओर उन्मुख हैं। शीर्ष पर चारों ओर डायल हैं, जिनकी सुइयां दस बजकर पैंतीस मिनट पर स्थिर हैं। नीचे, छोटे द्वार एक खोखले आंतरिक भाग में खुलते हैं। कोई कल्पना कर सकता है कि अंदर सीढ़ी से चढ़ा जा सकता है, लेकिन आधार पर कोई प्रवेश द्वार नहीं है। टावर चौक से इतना ऊंचा है कि घड़ी देखने के लिए भी दक्षिण की ओर स्थित पुराने पुल को पार करना पड़ता है।

उत्तरी चौक से पत्थर और ईंटों से बनी इमारतों के कई घेरे फैले हुए हैं। किसी भी इमारत में कोई खास विशेषता नहीं है, न कोई सजावट है और न ही कोई पट्टिका। सभी दरवाजे बंद हैं; किसी को अंदर आते-जाते नहीं देखा जा सकता। क्या यह मृत पत्रों का डाकघर है? क्या यह कोई खनन कंपनी है जो बिना खनिकों को काम पर रखे है? क्या यह कोई श्मशान घाट है जहाँ जलाने के लिए शव ही नहीं हैं? सन्नाटा छाया हुआ है और इमारतें वीरान सी लगती हैं। फिर भी, जब भी मैं इन गलियों से गुजरता हूँ, मुझे इन इमारतों के पीछे अजनबी लोगों की मौजूदगी का एहसास होता है, जो अपनी सांसें थामे किसी ऐसे काम में लगे हैं जिसके बारे में मुझे कभी पता नहीं चलेगा।

यह पुस्तकालय इसी इलाके के एक ब्लॉक में स्थित है। पुस्तकालय होने के नाते इसमें कोई खास विशेषता नहीं है; यह एक साधारण पत्थर की इमारत है। इसे पुस्तकालय कहने का कोई कारण नहीं है। इसकी पुरानी पत्थर की दीवारें, जो धुंधली पड़ चुकी हैं, लोहे की जाली वाली खिड़कियों पर बनी छोटी-छोटी छज्जियाँ और

भारी लकड़ी के दरवाज़े, इसे देखकर लगता है जैसे यह कोई अनाज का गोदाम हो। अगर मैंने चौकीदार से वहाँ जाने का रास्ता विस्तार से न पूछा होता, तो मैं इसे कभी पुस्तकालय के रूप में पहचान ही नहीं पाता।
“जैसे ही आप यहाँ व्यवस्थित हो जाएँ, पुस्तकालय चले जाना,” शहर में मेरे पहले दिन द्वारपाल ने मुझसे कहा। “यहाँ एक लड़की अकेले ही पुस्तकालय की देखभाल करती है। उसे बताना कि शहर ने तुम्हें पुराने सपनों के बारे में पढ़ने के लिए कहा है। वह तुम्हें बाकी सब बता देगी।”
“पुराने सपने?” मैंने कहा। “पुराने सपनों से तुम्हारा क्या मतलब है?”
द्वारपाल एक गोल खूंटी तराशते हुए रुकता है, अपना कलम चाकू नीचे रखता है और मेज से लकड़ी के बुरादे साफ करता है। “पुराने सपने... पुराने सपने ही होते हैं। पुस्तकालय जाओ। तुम्हें वहाँ इतने सपने मिलेंगे कि तुम्हारी आँखें घूम जाएँगी। जितने चाहो उतने सपने निकाल लो और उन्हें अच्छे से, देर तक पढ़ो।”
द्वारपाल अपने तैयार खूंटी के नुकीले सिरे का निरीक्षण करता है, उसे संतुष्ट पाता है और अपने पीछे वाली शेल्फ पर रख देता है। वहाँ, लगभग बीस गोल खूंटियाँ कतार में लगी हुई हैं।
“जो भी सवाल पूछना चाहो पूछ लो, लेकिन याद रखना, मैं जवाब देना ज़रूरी नहीं समझता,” द्वारपाल ने सिर के पीछे हाथ मोड़ते हुए कहा। “कुछ बातें ऐसी हैं जो मैं नहीं कह सकता। लेकिन अब से तुम्हें रोज़ पुस्तकालय जाना होगा और सपनों के बारे में पढ़ना होगा। यही तुम्हारा काम होगा। शाम छह बजे वहाँ जाना। रात दस या ग्यारह बजे तक वहीं रहना। वहाँ की लड़की तुम्हारे लिए रात का खाना बनाएगी। बाकी समय तुम जो चाहो कर सकते हो। समझे?”
“समझ गया,” मैंने उससे कहा। “मुझे यह नौकरी कब तक करनी होगी?”
“कितना समय लगेगा? मैं नहीं बता सकता,” द्वारपाल ने उत्तर दिया। “जब तक सही समय नहीं आ जाता।” फिर उसने जलाने वाली लकड़ियों के ढेर में से एक और टुकड़ा उठाया और उसे तराशना शुरू कर दिया।
“यह एक गरीब कस्बा है। यहाँ आवारा घूमने वालों के लिए कोई जगह नहीं है। हर किसी का अपना घर है, हर किसी का अपना काम है। तुम्हारा काम तो पुस्तकालय में सपने पढ़ते हुए बिताना है। तुम यहाँ हमेशा खुश रहने के लिए तो नहीं आए थे, है ना?”
“काम करना कोई मुश्किल काम नहीं है। कुछ न करने से तो बेहतर है,” मैं कहता हूँ।
“लो, तुम यहाँ हो,” द्वारपाल ने अपनी छुरी की नोक पर नज़र गड़ाते हुए सिर हिलाया। “तो जितनी जल्दी तुम काम पर लग जाओ, उतना ही अच्छा है। अब से तुम स्वप्न-पाठक हो। तुम्हारा अब कोई नाम नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे मैं द्वारपाल हूँ। समझे?”
“समझ गया,” मैंने कहा।
“जिस प्रकार इस शहर में केवल एक ही द्वारपाल है, उसी प्रकार केवल एक ही स्वप्नपाठक है। केवल एक ही व्यक्ति स्वप्नपाठक बनने के योग्य हो सकता है। मैं अब आपके लिए यह करूँगा।”
द्वारपाल अपनी अलमारी से एक छोटी सफेद ट्रे निकालता है, उसे मेज पर रखता है और उसमें तेल डालता है। वह माचिस जलाकर तेल में आग लगा देता है। फिर वह अपने चाकू रखने वाले स्टैंड से एक कुंद, गोल

धार वाला चाकू निकालता है और उसकी नोक को दस मिनट तक गर्म करता है। वह आग बुझा देता है और चाकू को ठंडा होने देता है।

“इसके साथ, मैं तुम्हें एक संकेत दूंगा,” द्वारपाल कहता है। “इससे कोई नुकसान नहीं होगा। डरने की कोई जरूरत नहीं है।”

वह अपनी उंगलियों से मेरी दाहिनी आंख को चौड़ा करता है और चाकू को मेरी आंख की पुतली में घुसा देता है। फिर भी, जैसा कि द्वारपाल ने कहा था, मुझे न तो दर्द होता है और न ही डर लगता है। चाकू मेरी आंख की पुतली में धीरे और चुपचाप ऐसे समा जाता है, मानो जेली में डूब रहा हो।

वह मेरी बाईं आंख के साथ भी ऐसा ही करता है।

“जब तुम स्वप्न-पाठक नहीं रहोगे, तो ये निशान गायब हो जाएँगे,” द्वारपाल ने ट्रे और चाकू रखते हुए कहा। “ये निशान स्वप्न-पाठक होने की निशानी हैं। लेकिन जब तक तुम पर ये निशानी है, तुम्हें प्रकाश से सावधान रहना होगा। मेरी बात ध्यान से सुनो, तुम्हारी आँखें दिन का प्रकाश नहीं देख सकतीं। अगर तुम्हारी आँखें सूरज की रोशनी देखेंगी, तो तुम्हें पछतावा होगा। इसलिए तुम्हें केवल रात में या धुंधले दिनों में ही बाहर निकलना चाहिए। जब आसमान साफ हो, तो अपने कमरे में अँधेरा कर लो और घर के अंदर ही सुरक्षित रहो।”

फिर द्वारपाल मुझे काले रंग का एक चश्मा देता है। मुझे इसे सोते समय को छोड़कर हर समय पहनना है।

तो इस तरह मैंने दिन का उजाला खो दिया।

कुछ दिनों बाद शाम को मैं पुस्तकालय की ओर चल पड़ा। भारी लकड़ी का दरवाजा खोलते ही एक अजीब सी आवाज़ आई। मेरे सामने एक लंबा सीधा गलियारा था। हवा धूल भरी और बासी थी, मानो समय का साया मिट गया हो। फर्श पर जगह-जगह घिसावट थी, प्लास्टर की दीवारें बल्बों के रंग की तरह पीली पड़ गई थीं।

गलियारे के दोनों ओर दरवाजे हैं, हर दरवाजे के हैंडल पर सफेद धूल की एक परत जमी है। केवल एक दरवाजा खुला है, जो अंत में है, एक नाजुक फ्रॉस्टेड ग्लास पैनल के पीछे, जिस पर लैंप की रोशनी पड़ रही है। मैं इस दरवाजे पर दस्तक देता हूँ, लेकिन कोई जवाब नहीं मिलता। मैं अपना हाथ फीके पीतल के हैंडल पर रखता हूँ और उसे घुमाता हूँ, जिस पर दरवाजा अंदर की ओर खुल जाता है। कमरे में कोई नहीं है। एक विशाल खाली जगह, किसी रेलवे स्टेशन के प्रतीक्षालय का बड़ा रूप, बेहद सादा, बिना किसी खिड़की के, बिना किसी विशेष सजावट के। वहाँ एक सादी मेज और तीन कुर्सियाँ, कोयले से जलने वाला लोहे का चूल्हा, और एक सीधी घड़ी और एक काउंटर के अलावा कुछ खास नहीं है। चूल्हे पर एक भाप निकलता हुआ, टूटा हुआ काला एनामेल का बर्तन रखा है। काउंटर के पीछे एक और फ्रॉस्टेड ग्लास का दरवाजा है, जिसके पार लैंप की रोशनी है। मैं सोचता हूँ कि दस्तक दूँ या नहीं, लेकिन किसी के आने का इंतजार करने का फैसला करता हूँ।

काउंटर पर पेपरक्लिप बिखरी पड़ी हैं। मैंने मुट्ठी भर पेपरक्लिप उठाईं और फिर मेज पर बैठ गई।

मुझे नहीं पता कि लाइब्रेरियन काउंटर के पीछे वाले दरवाजे से कब प्रकट होती है। उसके हाथ में कई कागजातों से भरी एक फाइल है। जब वह मुझे देखती है, तो आश्चर्य से उसके गाल लाल हो जाते हैं।

“मुझे माफ कीजिए,” वह मुझसे कहती है। “मुझे पता नहीं था कि आप यहाँ हैं। आप दरवाजा खटखटा सकते थे। मैं पीछे वाले कमरे में, किताबों के ढेर के बीच थी। सब कुछ इतना अव्यवस्थित है।”
मैं उसे देखता हूँ और कुछ नहीं कहता। उसका चेहरा मानो एक याद बनकर उभर आता है। उसकी कौन सी बात मुझे छू जाती है? मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरी चेतना की कोई गहरी परत सतह पर आ रही हो। इसका क्या अर्थ हो सकता है? रहस्य दूर अंधेरे में छिपा है।
“जैसा कि आप देख सकते हैं, यहाँ कोई नहीं आता। ड्रीमरीडर के अलावा कोई नहीं।”
मैं हल्का सा सिर हिलाता हूँ, लेकिन उसकी शक्ल से अपनी नज़रें नहीं हटाता। उसकी आँखें, उसके होंठ, उसका चौड़ा माथा और सिर के पीछे बंधे काले बाल। जितना करीब से मैं देखता हूँ, मानो कुछ समझने की कोशिश कर रहा हूँ, उतना ही मेरा समग्र प्रभाव धुंधलाता जाता है। खोया हुआ, मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ।
“माफ़ कीजिए, शायद आपने इसे किसी दूसरी इमारत समझ लिया है? यहाँ की इमारतें बहुत मिलती-जुलती हैं,” वह पेपरक्लिप के पास अपना बाइंडर रखते हुए कहती है। “यहाँ केवल स्वप्न पाठक ही आ सकते हैं और पुराने सपने पढ़ सकते हैं। किसी और को यहाँ आने की अनुमति नहीं है।”
मैं कहता हूँ, "मैं यहाँ सपने पढ़ने आया हूँ, क्योंकि शहर ने मुझे ऐसा करने को कहा है।"
"मुझे माफ कीजिए, लेकिन क्या आप कृपया अपना चश्मा उतार देंगे?"
मैंने अपना काला चश्मा उतार दिया और उस महिला की ओर देखा, जो स्वप्न-पाठक की पहचान माने जाने वाली मेरी दो फीकी, रंगहीन पुतलियों में झाँक रही थी। मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरे अस्तित्व के मूल में झाँक रही हो।
“अच्छा। अब आप अपने चश्मे पहन सकते हैं।”
वह मेरे सामने वाली मेज पर बैठती है।
“आज मैं तैयार नहीं हूँ। क्या हम कल से शुरू करें?” वह कहती है। “क्या यह कमरा आपके लिए आरामदायक है? अगर आप चाहें तो मैं बाकी रीडिंग रूम्स के ताले खोल सकती हूँ।”
“यहाँ ठीक है,” मैंने उससे कहा। “क्या तुम मेरी मदद करोगी?”
"हां, पुराने सपनों की देखभाल करना और स्वप्न पाठक की मदद करना मेरा काम है।"
"क्या मैं आपसे पहले कहीं मिल चुका हूँ?"
वह मेरी ओर देखती है और अपनी याददाश्त खंगालती है, लेकिन अंत में सिर हिला देती है। "जैसा कि आप जानते होंगे, इस शहर में याददाश्त भरोसेमंद नहीं होती और अनिश्चित होती है। कुछ बातें हमें याद रहती हैं और कुछ नहीं। आप भी उन्हीं बातों में से एक हैं जो मुझे याद नहीं हैं। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए।"
“बिल्कुल,” मैंने कहा। “यह महत्वपूर्ण नहीं था।”
"शायद हम पहले भी मिल चुके हैं। यह एक छोटा सा शहर है।"
मैं कुछ ही दिन पहले यहाँ आया हूँ।

“कितने दिन पहले?” वह आश्चर्य से पूछती है। “तो आप किसी और के बारे में सोच रहे होंगे। मैं इस शहर से कभी बाहर नहीं गई। क्या वह कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो मेरे जैसा दिखता हो?”
“शायद,” मैं कहती हूँ। “फिर भी, मुझे ऐसा लगता है कि कहीं और हम सबने बिल्कुल अलग तरह की जिंदगी जी होगी, और किसी तरह हम उस समय को भूल गए हैं। क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया है?”
“नहीं,” वह कहती है। “शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि आप स्वप्न पाठक हैं। स्वप्न पाठक आम लोगों से बहुत अलग तरह से सोचते हैं।”
मुझे उस पर विश्वास नहीं हो रहा है।
"या आपको पता है कि यह कहाँ था?"
“काश मुझे याद होता,” मैंने कहा। “एक जगह थी, और तुम वहाँ थे।”
पुस्तकालय की छतें बहुत ऊंची हैं, कमरा समुद्र तल की तरह शांत है। मैं हाथ में पेपरक्लिप लिए इधर-उधर खाली निगाहों से देखता हूँ। वह बैठी रहती है।
मैंने कहा, "मुझे भी नहीं पता कि मैं यहाँ क्यों हूँ।"
मैं छत को निहारता हूँ। पीले प्रकाश के कण गिरते हुए फूलते और सिकुड़ते प्रतीत होते हैं। क्या मेरी क्षतिग्रस्त पुतलियों के कारण ही मुझे ये असाधारण चीज़ें दिखाई देती हैं? दीवार पर लगी सीधी घड़ी बिना आवाज़ किए समय बताती है।
मुझे बताया गया है कि मैं यहां एक उद्देश्य से आया हूं।
वह कहती हैं, "यह बहुत ही शांत कस्बा है, अगर आप शांति की तलाश में आए हों तो।"
मुझे नहीं पता।
वह धीरे से खड़ी होती है। “आज आपको यहाँ कुछ नहीं करना है। आपका काम कल से शुरू होगा। कृपया घर जाकर आराम करें।”
मैं फिर से छत की ओर देखता हूँ, फिर उसकी ओर। यह निश्चित है: उसका चेहरा मेरे भीतर किसी चीज़ से घातक रूप से जुड़ा हुआ है। लेकिन यह जुड़ाव बहुत धुंधला है। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और अंधाधुंध खोजता हूँ। सन्नाटा मुझ पर बारीक धूल की तरह छा जाता है।
“मैं कल शाम छह बजे लौट आऊंगा,” मैंने कहा।
“अलविदा,” वह कहती है।
पुस्तकालय से निकलते ही मैं पुराने पुल को पार करता हूँ। मैं रेलिंग पर झुककर नदी की आवाज़ सुनता हूँ। कस्बे में अब कोई जानवर नहीं दिखते। घंटाघर और कस्बे को घेरने वाली दीवार, नदी किनारे की इमारतें और उत्तर की ओर स्थित दाँतेदार पहाड़, सब शाम के नीले-भूरे धुंध में डूबे हुए हैं। पानी की हल्की आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ मेरे कानों तक नहीं पहुँचती। यहाँ तक कि पक्षी भी जा चुके हैं।
अगर तुम शांति की तलाश में आए हो—तो मुझे उसके शब्द सुनाई दे रहे हैं।

चारों ओर अंधेरा छाने लगता है। नदी किनारे की स्ट्रीटलाइट्स के जलने के साथ ही, मैं सुनसान सड़कों पर पश्चिमी पहाड़ी की ओर चल पड़ता हूँ।

5

सारणीकरण, विकास, यौन इच्छा

जब बूढ़ा आदमी अपनी पोती को ध्वनि-रहित स्थिति में छोड़कर जाने के बाद उसे सुधारने के लिए वापस जमीन के ऊपर चला गया, तब मैं चुपचाप अपनी गणनाओं में लगा रहा।

मुझे ठीक से पता नहीं था कि वह बूढ़ा आदमी कितने समय से गायब था। मैंने अपनी डिजिटल अलार्म घड़ी को एक घंटा तीस मिनट के चक्र पर सेट कर रखा था, जिसके अनुसार मैं काम करता और आराम करता, फिर काम करता और फिर आराम करता। घड़ी का डायल ढका हुआ था, इसलिए मैं उसे पढ़ नहीं पा रहा था। समय हिसाब-किताब में बाधा डालता है। अभी जो भी समय हो, उसका मेरे काम से कोई लेना-देना नहीं था। मेरा काम हिसाब-किताब शुरू करते ही शुरू हो जाता है और काम बंद करते ही खत्म हो जाता है। मुझे बस एक घंटा तीस मिनट के चक्र के बारे में जानना ज़रूरी है।

बुज़ुर्ग के न रहने के दौरान मैंने दो-तीन बार आराम किया होगा। इन आराम के पलों में मैं शौचालय गया, बाहें मोड़कर डेस्क पर चेहरा टिकाया और सोफ़े पर लेट गया। सोफ़ा सोने के लिए एकदम सही था। न ज़्यादा नरम, न ज़्यादा सख्त; यहाँ तक कि तकिये भी मेरे सिर को आराम दे रहे थे। अलग-अलग हिसाब-किताब के काम करते हुए मैंने बहुत सारे सोफ़ों पर सोया है, और सच कहूँ तो, आरामदायक सोफ़े बहुत कम मिलते हैं। आमतौर पर, वे सस्ते और बोझिल होते हैं। यहाँ तक कि सबसे आलीशान दिखने वाले सोफ़े भी जब आप उन पर सोने की कोशिश करते हैं तो निराशाजनक साबित होते हैं। मुझे कभी समझ नहीं आता कि लोग सोफ़ा चुनते समय इतने लापरवाह कैसे हो सकते हैं।

मैं हमेशा कहता हूँ—यकीनन यह मेरी अपनी राय है—कि किसी व्यक्ति के सोफे की पसंद से उसके चरित्र के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। सोफे अपने आप में एक अलग ही दुनिया होते हैं। लेकिन यह बात सिर्फ वही लोग समझ सकते हैं जिन्होंने अच्छे सोफे पर बैठकर अपना बचपन बिताया हो। यह ठीक वैसे ही है जैसे बचपन में अच्छी किताबें पढ़ना या अच्छा संगीत सुनना। एक अच्छा सोफा दूसरे अच्छे सोफे को जन्म देता है; एक खराब सोफा तीसरे खराब सोफे को जन्म देता है। यही नियम है।

कुछ लोग लग्जरी कारें चलाते हैं, लेकिन उनके घरों में घटिया सोफे होते हैं। मुझे ऐसे लोगों पर ज़रा भी भरोसा नहीं है। एक महंगी कार अपनी कीमत के लायक तो हो सकती है, लेकिन वह सिर्फ एक महंगी कार है। अगर आपके पास पैसा है, तो आप उसे खरीद सकते हैं, कोई भी खरीद सकता है। दूसरी ओर, एक अच्छा सोफा

खरीदने के लिए स्टाइल, अनुभव और सोच की ज़रूरत होती है। पैसा तो लगता ही है, साथ ही एक बेहतरीन सोफे की कल्पना भी होनी चाहिए। ऐसा सोफा जो सोफों में सबसे ऊपर हो।

जिस सोफे पर मैं लेटा हुआ था, वह निस्संदेह बेहतरीन था। इसी बात ने मुझे उस बूढ़े आदमी के प्रति एक गर्मजोशी भरा एहसास दिलाया। सोफे पर आंखें बंद करके लेटे-लेटे मैं उसके बारे में, उसकी अजीब आदतों के बारे में, उसके अटपटे लहजे के बारे में, उसकी अनोखी हंसी के बारे में सोच रहा था। और उसकी ध्वनि-निवारण तकनीक के बारे में क्या? वह ज़रूर एक उच्च कोटि का वैज्ञानिक रहा होगा। ध्वनि-निवारण जैसी तकनीक तो किसी आम शोधकर्ता के दिमाग में भी नहीं आती। और एक और बात—हमेशा ऐसे सनकी वैज्ञानिकों के बारे में सुनते ही हैं, लेकिन कौन सा सनकी या एकांतप्रिय व्यक्ति जिज्ञासु निगाहों से बचने के लिए भूमिगत झरने के पीछे एक गुप्त प्रयोगशाला बनाएगा? वह वाकई एक अजीब इंसान था।

व्यावसायिक उत्पाद के रूप में, उनकी ध्वनि परिवर्तन तकनीकों के अनेक उपयोग हो सकते थे। कल्पना कीजिए, कॉन्सर्ट हॉल के पीए उपकरण बेकार हो जाएंगे—बड़े-बड़े एम्पलीफायर और स्पीकर की ज़रूरत नहीं रहेगी। फिर शोर कम करने की बात आती है। हवाई अड्डों के पास रहने वाले लोगों के लिए ध्वनि-निवारण उपकरण आदर्श होगा। ज़ाहिर है, ध्वनि परिवर्तन का सैन्य या आपराधिक दुरुपयोग भी संभव होगा। मैं अब इसकी कल्पना कर सकता हूँ: मूक बमवर्षक विमान और शोर रहित बंदूकें, दिमाग हिला देने वाली आवाज़ में फटने वाले बम, विनाश के लिए तरह-तरह के उपकरण, जो सामूहिक नरसंहार में नई पीढ़ी के परिष्कार की शुरुआत करेंगे। उस बूढ़े व्यक्ति ने भी शायद यह सब देख लिया था, जिससे उसे अपने शोध को दुनिया से छिपाने का और भी बड़ा कारण मिल गया था। मैं उस बूढ़े व्यक्ति के प्रति सम्मान बढ़ता जा रहा था।

मैं काम के चक्र में पाँचवीं या छठी बार चक्कर लगा रहा था जब वह बूढ़ा आदमी एक बड़ी टोकरी लेकर लौटा।

“आपके लिए ताज़ी कॉफ़ी और सैंडविच लाया हूँ,” उसने कहा। “खीरा, हैम और पनीर। उम्मीद है आपको ठीक लगेगा।”

“धन्यवाद। इससे ज्यादा और क्या चाहिए,” मैंने कहा।

“क्या आप अभी खाना चाहते हैं?”

नहीं, अगले टैब-साइकिल के बाद।

अलार्म बजने तक, मैंने संख्यात्मक डेटा सूचियों के सात पन्नों में से पाँच पन्ने धोकर साफ कर लिए थे। बस एक और काम बाकी था। मैंने थोड़ा आराम किया, जम्हाई ली और खाने की तरफ ध्यान दिया।

कुछ लोगों के लिए पर्याप्त सैंडविच थे। मैंने उनमें से आधे से ज़्यादा खुद ही खा लिए। लंबी यात्रा के दौरान भूख बहुत बढ़ जाती है। खीरा, हैम, पनीर, मैंने इन्हें एक-एक करके खाया और साथ में कॉफी भी पी ली।

मेरे द्वारा खाए गए हर तीन के बदले, वह बूढ़ा आदमी एक को कुतरता हुआ, एक बेहद सभ्य झींगुर की तरह दिख रहा था।

“जितने चाहो खा लो,” बूढ़े ने कहा। “मेरी उम्र में पहुँचने पर खाने-पीने की क्षमता कम हो जाती है। न ज़्यादा खा सकते हैं, न ज़्यादा काम कर सकते हैं। लेकिन एक जवान को तो खूब खाना चाहिए। खूब खाओ और खूब मोटे हो जाओ। आजकल लोग मोटे होना पसंद नहीं करते, लेकिन अगर मुझसे पूछो तो वे मोटापे को गलत नज़रिए से देखते हैं। वे कहते हैं कि इससे आप अस्वस्थ या बदसूरत हो जाते हैं, लेकिन अगर आप सही तरीके से मोटे हों तो ऐसा कभी नहीं होगा। आप एक भरपूर जीवन जीते हैं, आपकी यौन इच्छा बढ़ती है, आपकी बुद्धि तेज़ होती है। मैं जवानी में खूब मोटा था। अब मुझे देखकर यकीन नहीं होगा। हा हा हा।” बूढ़ा अपनी हंसी मुश्किल से रोक पाया। “कैसा लगा? शानदार सैंडविच हैं, है ना?”

“जी हाँ, बिल्कुल। बहुत स्वादिष्ट,” मैंने कहा। सैंडविच सचमुच बहुत स्वादिष्ट थे। और मैं सैंडविच का उतना ही कड़ा आलोचक हूँ जितना सोफे का।

“इन्हें मेरी पोती ने बनाया है। आपकी तारीफ की हकदार तो वही है,” बूढ़े आदमी ने कहा। “बच्ची को सैंडविच बनाने की बारीकियां पता हैं।”

“उसे इसमें महारत हासिल है। शेफ भी इतने अच्छे सैंडविच नहीं बना सकते।”

मुझे यकीन है कि बच्ची यह सुनकर बहुत खुश होगी। हमारे यहाँ ज़्यादा मेहमान नहीं आते, इसलिए किसी के लिए खाना बनाने का मौका ही नहीं मिलता। जब भी बच्ची खाना बनाती है, तो बस मैं और वो ही खाते हैं।

“क्या आप दोनों अकेले रहते हैं?”

जी हाँ। हम दोनों अकेले रहना पसंद करते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह उसके लिए ठीक है। वह बहुत बुद्धिमान और मजबूत है, लेकिन बाहरी दुनिया से घुलने-मिलने की कोशिश भी नहीं करती। यह किसी युवा के लिए अच्छा नहीं है। अपनी यौन इच्छाओं को किसी रचनात्मक तरीके से बाहर निकालना चाहिए। सच कहूँ तो, उस बच्ची में स्त्रीत्व के गुण तो हैं ही, है ना?

“हाँ, ठीक है, इसी वजह से,” मैंने हकलाते हुए कहा।

"यौन इच्छा एक अच्छी ऊर्जा है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता। अगर आप यौन इच्छा को दबाकर रखते हैं, तो आप मंदबुद्धि हो जाते हैं। इससे आपका पूरा शरीर असंतुलित हो जाता है। यह बात पुरुषों और महिलाओं दोनों पर लागू होती है। लेकिन महिलाओं में, उनका मासिक चक्र अनियमित हो सकता है, और जब उनका चक्र बिगड़ जाता है, तो इससे उनका संतुलन बिगड़ सकता है।"

"जी हां।"

“उस बच्ची को जल्द से जल्द सही तरह के पुरुष से संबंध बनाना चाहिए। मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ, उसके अभिभावक होने के नाते और एक जीवविज्ञानी होने के नाते भी,” बूढ़े व्यक्ति ने खीरे पर नमक डालते हुए कहा।

“क्या आप उसके साथ... उह... क्या आप उसकी आवाज वापस लाने में कामयाब हुए?” मैंने पूछा। मुझे लोगों की यौन इच्छाओं के बारे में सुनने का बिल्कुल मन नहीं था, खासकर तब जब मैं अभी भी काम के बीच में था।

“ओह हाँ, मैं आपको बताना भूल गया था,” बूढ़े आदमी ने कहा। “मैंने उसकी आवाज़ ठीक कर दी है, कोई परेशानी नहीं हुई। मुझे खुशी है कि आपने मुझे याद दिलाया। पता नहीं उसे कितने और दिन बिना आवाज़ के रहना पड़ता। एक बार जब मैं यहाँ छिप जाता हूँ, तो मैं आमतौर पर कुछ दिनों तक ऊपर नहीं जाता। बेचारी बच्ची, बिना आवाज़ के जी रही है।”
"मैं कल्पना कर सकता हूँ।"
"जैसा कि मैं कह रहा था, बच्चा लगभग पूरी तरह से समाज से कटा हुआ है। वैसे तो इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ना चाहिए, लेकिन अगर फोन बज रहा हो तो परेशानी हो सकती है।"
अगर वह बोल नहीं पाती तो उसे खरीदारी करने में बहुत मुश्किल होती।
“टॉश, शॉपिंग करना इतना बुरा नहीं होगा,” बूढ़े आदमी ने कहा। “वहाँ सुपरमार्केट हैं जहाँ आप बिना कुछ बोले खरीदारी कर सकते हैं। बच्ची को सुपरमार्केट बहुत पसंद हैं, वह हमेशा वहीं जाती रहती है। ऑफिस से सुपरमार्केट, सुपरमार्केट से ऑफिस। यही उसकी पूरी जिंदगी है।”
क्या वह घर नहीं जाती?
“बच्ची को ऑफिस पसंद है। इसमें किचन और शॉवर है, उसकी ज़रूरत की हर चीज़ मौजूद है। ज़्यादा से ज़्यादा वह हफ्ते में एक बार घर जाती है।”
मैंने अपनी कॉफी पी ली।
“लेकिन मान लो, तुमने उससे बात करने में कामयाबी हासिल कर ली,” बूढ़े आदमी ने कहा। “तुमने यह कैसे किया? टेलीपैथी से?”
“होंठों को पढ़ना। मैंने इसे अपने खाली समय में सीखा।”
“होंठों को पढ़कर बात समझना, बिलकुल,” बूढ़े आदमी ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा। “यह एक बहुत ही कारगर तकनीक है। मुझे भी थोड़ी बहुत आती है। क्या कहते हो, हम दोनों बिना बोले बातचीत करने की कोशिश करें?”
“अगर हम न जाएं तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?” मैंने तुरंत जवाब दिया।
"मानते हैं, होंठ पढ़ना एक बेहद पुरानी तकनीक है। इसमें कई खामियां भी हैं। अंधेरा होने पर कुछ समझ नहीं आता। साथ ही, आपको अपनी आंखें सामने वाले के मुंह पर गड़ाए रखनी पड़ती हैं। फिर भी, एक कामचलाऊ उपाय के तौर पर यह ठीक है। आपको होंठ पढ़ना सीखने का अद्भुत दूरदर्शितापूर्ण निर्णय लेना चाहिए।"
"क्या यह आधा-अधूरा उपाय है?"
“ठीक है,” बूढ़े ने एक और बार सिर हिलाते हुए कहा। “अब ध्यान से सुनो, बेटे। मैं यह बात सिर्फ तुमसे कह रहा हूँ: हमारे सामने आने वाली दुनिया ध्वनि-मुक्त होगी।”
“ध्वनि-मुक्त?” मैंने अचानक कहा।

"जी हाँ। बिल्कुल ध्वनि-मुक्त। क्योंकि ध्वनि मानव विकास के लिए किसी काम की नहीं है। वास्तव में, यह बाधा उत्पन्न करती है। इसलिए हम सुबह से रात तक ध्वनि को पूरी तरह से मिटा देंगे।"
“हम्म। आपका मतलब है कि न तो पक्षी गाएंगे और न ही नदियाँ कलकल करेंगी। कोई संगीत नहीं होगा?”
"बिल्कुल नहीं।"
"अगर आप मुझसे पूछें तो यह एक बेहद निराशाजनक दुनिया होने वाली है।"
“मुझे दोष मत दो। यही विकास है। विकास हमेशा कठिन होता है। कठिन और निराशाजनक। खुशहाल विकास जैसी कोई चीज़ नहीं होती,” बूढ़े आदमी ने कहा। वह खड़ा हुआ और अपनी मेज के चारों ओर घूमकर दराज से नाखून काटने वाला यंत्र ले आया। वह सोफे पर वापस आया और अपने दसों नाखूनों को काटने लगा। “शोध चल रहा है, लेकिन मैं आपको विवरण नहीं दे सकता। फिर भी, इसका सामान्य सार यह है कि... खैर, यही होने वाला है। आपको इसके बारे में किसी को एक शब्द भी नहीं कहना है। जिस दिन यह बात सेमिओटेक लोगों के कानों तक पहुँचेगी, चारों ओर अफरा-तफरी मच जाएगी।”
“चिंता मत कीजिए। हम कैलक्यूटेक्स अपने रहस्यों की अच्छी तरह रक्षा करते हैं।”
“यह सुनकर बहुत राहत मिली,” बूढ़े आदमी ने कहा और अपने नाखूनों के टुकड़े एक कागज से समेटकर कूड़ेदान में फेंक दिए। फिर उसने एक और खीरे का सैंडविच खाया। “सच में, ये बहुत स्वादिष्ट हैं।”
क्या उसका सारा खाना इतना ही स्वादिष्ट होता है?
"हम्म, खास तौर पर नहीं। सैंडविच बनाने में तो वो माहिर है। वैसे, उसका खाना बनाना भी बुरा नहीं है, लेकिन उसके सैंडविच के सामने वो कुछ भी नहीं है।"
मैंने कहा, "यह एक दुर्लभ उपहार है।"
“हाँ,” बूढ़े व्यक्ति ने सहमति जताते हुए कहा। “मुझे कहना पड़ेगा, मेरा मानना है कि बच्ची की अहमियत को पूरी तरह समझने के लिए आप जैसे व्यक्ति की ही ज़रूरत है। मैं उसे आप जैसे नौजवान के भरोसे सौंप सकता हूँ और मुझे पूरा भरोसा है कि मैंने सही काम किया है।”
“मैं?” मैंने चौंककर पूछा। “सिर्फ इसलिए कि मैंने कहा कि मुझे उसके सैंडविच पसंद हैं?”
“तुम्हें उसके सैंडविच पसंद नहीं हैं?”
मुझे उसके सैंडविच बहुत पसंद हैं।
"मेरी राय में, आपमें कोई खास गुण है। वरना, आपमें किसी चीज की कमी है।"
"कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
“हम वैज्ञानिक मानव लक्षणों को विकास की प्रक्रिया में देखते हैं। देर-सवेर आप भी इसे स्वयं देखेंगे। विकास बहुत कठिन प्रक्रिया है। आपके विचार से विकास की सबसे कठिन बात क्या है?”
“मुझे नहीं पता। मुझे बताओ,” मैंने कहा।

“यह चुनने और छांटने की क्षमता न होने जैसा है। कोई भी विकास को अपनी मर्जी से नहीं चुनता। यह बाढ़, हिमस्खलन और भूकंप की तरह है। जब तक ये आते नहीं, तब तक आपको पता नहीं चलता कि क्या होने वाला है, और तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।”

मैंने इस बारे में थोड़ी देर सोचा। “यह विकास,” मैंने कहना शुरू किया, “इसका उस बात से क्या लेना-देना है जिसका आपने पहले जिक्र किया था? आपका मतलब यह है कि मैं अपनी बोलने की शक्ति खो दूंगा?”

“यह पूरी तरह से सही नहीं है। यह बोलने या न बोलने का सवाल नहीं है। यह तो बस एक कदम है।”

“मुझे समझ नहीं आया।” सच कहूँ तो, मुझे समझ नहीं आया। मैं आम आदमी हूँ। जब मुझे समझ आता है तो मैं कहता हूँ कि मुझे समझ आ गया है, और जब समझ नहीं आता तो मैं कहता हूँ कि मुझे समझ नहीं आया। मैं अपनी बात साफ़-साफ़ कहने की कोशिश करता हूँ। मुझे लगता है कि इस दुनिया में बहुत सी परेशानियों की जड़ अस्पष्ट वाणी में है। ज़्यादातर लोग जब साफ़-साफ़ नहीं बोलते, तो कहीं न कहीं अपने अवचेतन मन में मुसीबत को न्योता दे रहे होते हैं।

“क्या कहते हो, इस विषय को यहीं छोड़ दें?” बूढ़े आदमी ने कहा। “बहुत जटिल बातें हो रही हैं। इससे तुम्हारी गणनाएँ गड़बड़ हो जाएँगी। अभी के लिए यहीं छोड़ देते हैं।”

इस विभाग से कोई शिकायत नहीं है। थोड़ी देर बाद, अलार्म बजा और मैं काम पर लौट गया। तभी उस बूढ़े आदमी ने एक दराज खोला और उसमें से स्टेनलेस स्टील के चिमटे जैसी कोई चीज़ निकाली। वह खोपड़ियों की अलमारियों के पास गया और, जैसे कोई माहिर वायलिन वादक अपने स्ट्रैडिवेरियस संग्रह की जाँच कर रहा हो, उसने एक-एक खोपड़ी उठाई और चिमटे से थपथपाकर उनकी ध्वनि सुनने लगा। उनसे तरह-तरह की ध्वनियाँ और स्वर निकले, व्हिस्की के गिलास की खनक से लेकर बड़े गमले की धीमी धमक तक। यह सोचकर हैरानी होती है कि हर खोपड़ी पर कभी त्वचा और मांस था और उसमें अलग-अलग मात्रा में धूसर पदार्थ भरा हुआ था, जो भोजन, कामुकता और प्रभुत्व के विचारों से भरा हुआ था। अब सब कुछ गायब हो गया।

मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि मेरा सिर चमड़ी और मांस से रहित है, दिमाग निकाल कर एक शेल्फ पर रखा है, और तभी एक बूढ़ा आदमी आता है और मुझे स्टेनलेस स्टील के चिमटे से मारता है। कमाल है! मेरी खोपड़ी की आवाज़ से उसे क्या पता चलेगा? क्या वह मेरी यादें पढ़ पाएगा? या वह स्मृति से परे किसी चीज़ को जानने की कोशिश कर रहा होगा?

मुझे मृत्यु से विशेष भय नहीं था। जैसा कि शेक्सपियर ने कहा था, इस वर्ष मर जाओ तो अगले वर्ष नहीं मरना पड़ेगा। अगर आप इस नज़रिए से देखें तो सब कुछ बहुत सरल है। जीवन कोई आसान काम नहीं है, लेकिन इसे जीने का तरीका मेरा अपना है। इसलिए मैं इसे स्वीकार कर सकता हूँ। लेकिन मरने के बाद, क्या मैं शांति से नहीं लेट सकता? उन मिस्र के फ़राओओं की बात सही थी, जो खुद को पिरामिडों के अंदर बंद करना चाहते थे।

कई घंटों बाद, आखिरकार कपड़े धुल गए। मैं यह तो नहीं कह सकती कि कितने घंटे लगे, लेकिन अपनी थकान को देखते हुए मैं अंदाज़ा लगा सकती हूँ कि कम से कम आठ या नौ घंटे लगे होंगे। मैं सोफे से उठी और अपनी थकी हुई मांसपेशियों को स्ट्रेच किया। कैलक्यूटेक मैनुअल में छब्बीस मांसपेशियों को लचीला बनाने के लिए चित्र दिए गए हैं। अगर आप टैबलेट लेने के बाद इन तनावग्रस्त हिस्सों को आराम देते हैं, तो मानसिक थकान अपने आप दूर हो जाती है और आपके कैलक्यूटेक की कार्यक्षमता भी बढ़ जाती है।
कैलकुटेक पेशे की शुरुआत हुए अभी दस साल भी नहीं हुए हैं, इसलिए कोई ठीक से नहीं जानता कि इसकी जीवन प्रत्याशा कितनी होनी चाहिए। कुछ लोग दस साल कहते हैं, कुछ बीस; चाहे जो भी हो, आप मरने तक इसे करते रहते हैं। क्या मैं सच में यह जानना चाहता था कि यह कितना लंबा चलेगा? अगर यह सिर्फ समय की बात है कि आप थककर चूर हो जाएंगे, तो मैं बस इतना ही कर सकता हूं कि अपनी मांसपेशियों को ढीला रखूं और दुआ करूं कि सब ठीक हो जाए।
शरीर की सारी अकड़न दूर करने के बाद, मैं सोफे पर वापस बैठ गया, आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे अपने दाएँ और बाएँ दिमाग को फिर से सक्रिय किया। इस तरह दिन का सारा काम समाप्त हो गया। शारीरिक श्रम एकदम सही था।
उस बूढ़े व्यक्ति ने अपनी मेज पर एक बड़े कुत्ते की खोपड़ी रखी हुई थी और वह स्लाइड कैलिपर्स से माप ले रहा था, तथा नमूने की एक तस्वीर पर आंकड़ों को नोट कर रहा था।
“काम खत्म हो गया?” बूढ़े आदमी ने पूछा।
"सब कुछ कर दिया।"
उन्होंने कहा, "आपने आज बहुत मेहनत की।"
अब मैं घर जाकर सोऊंगा। कल या परसों मैं डेटा को व्यवस्थित कर लूंगा और दो दिन बाद दोपहर तक आपको वापस भेज दूंगा। बिना किसी चूक के। क्या यह संतोषजनक है?
“ठीक है, ठीक है,” बूढ़े आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन याद रखना, समय बेहद महत्वपूर्ण है। अगर तुम दोपहर से देर से आए, तो मुसीबत हो जाएगी। बहुत बड़ी मुसीबत हो जाएगी।”
"मैं समझता हूँ।"
और मैं आपसे विनती करता हूँ, सुनिश्चित करें कि कोई भी उस सूची को न चुराए। अगर वह चोरी हो गई, तो हम दोनों की गर्दनें फँस जाएँगी।
“चिंता मत करो। हमें इस संबंध में काफी गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। सारणीबद्ध आंकड़ों में अनजाने में कोई गड़बड़ी नहीं होगी।”
मैंने अपने बाएं घुटने के पीछे की जेब से एक लचीली धातु से बना दस्तावेज़ कैश निकाला, उसमें डेटा सूची डाली और उसे लॉक कर दिया।
“इसे सिर्फ मैं ही खोल सकता हूँ। अगर कोई ताले से छेड़छाड़ करता है, तो अंदर रखी चीजें नष्ट हो जाएंगी।”
“बहुत ही चतुर,” बूढ़े आदमी ने कहा।

मैंने दस्तावेजों का बंडल वापस अपने घुटने के पीछे सरका दिया।
“सच कहिए, क्या आप वाकई अब और नहीं खाएंगे? कुछ सैंडविच बचे हैं। शोध में व्यस्त होने पर मैं ज्यादा नहीं खाता। इन्हें बर्बाद होने देना दुख की बात होगी।”
मुझे अभी भी भूख लगी थी, इसलिए मैंने बचे हुए सैंडविच भी खा लिए। बूढ़े आदमी ने मेरे लिए एक कप ताज़ी कॉफ़ी डाली।
मैंने दोबारा बारिश से बचाव वाले कपड़े पहने, चश्मा लगाया, टॉर्च हाथ में ली और भूमिगत रास्ते की ओर चल पड़ा। इस बार वह बूढ़ा आदमी मेरे साथ नहीं आया।
“मैंने पहले ही उन इंकलिंग्स को भगाने के लिए अल्ट्रासोनिक तरंगें छोड़ दी हैं, इसलिए फिलहाल उनमें से कोई भी इधर-उधर नहीं घूम रहा होगा,” बूढ़े आदमी ने मुझे आश्वस्त किया।
ज़ाहिर तौर पर, ये इंकलिंग्स किसी तरह की भूमिगत जीव थीं, जिसकी वजह से मुझे अंधेरे में अकेले बाहर निकलने में थोड़ी घबराहट हो रही थी। ऊपर से मुझे इंकलिंग्स के बारे में कुछ भी पता नहीं था, न उनकी आदतें, न उनका रूप-रंग, और न ही उनसे अपना बचाव कैसे करना है। बाएं हाथ में टॉर्च और दाएं हाथ में चाकू लिए, मैंने वापसी की तैयारी शुरू कर दी।
जब मैंने गुलाबी सूट पहने उस गोल-मटोल युवती को टॉर्च लहराते हुए अपनी ओर आते देखा, तो मुझे लगा जैसे मैं बच गया। मैं उसकी ओर बढ़ा। नदी की गड़गड़ाहट के कारण वह कुछ कह रही थी, जो मुझे सुनाई नहीं दे रही थी। अंधेरे में उसके होंठ भी दिखाई नहीं दे रहे थे।
हम लंबी एल्युमिनियम की सीढ़ी से ऊपर चढ़े, जहाँ रोशनी थी। मैं पहले चढ़ी, वह मेरे पीछे आई। नीचे आते समय मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, इसलिए डरने की कोई बात नहीं थी, लेकिन वापस ऊपर चढ़ना बिल्कुल अलग बात थी। मुझे ऊंचाई का अंदाज़ा अच्छी तरह से हो रहा था—दो या तीन मंज़िल नीचे गिरने जैसा। मैं रुककर थोड़ा संभलना चाहती थी, लेकिन वह मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। सुरक्षा सबसे पहले, मैं हमेशा यही कहती हूँ, इसलिए मैं चढ़ती रही।
हम कोठरी से होते हुए वापस पहले कमरे में पहुंचे और अपने बारिश से बचाव वाले कपड़े उतार दिए।
“काम कैसा चल रहा है?” उसने पूछा। उसकी आवाज़, जो अब पहली बार सुनाई दे रही थी, कोमल और स्पष्ट थी।
"ठीक है, धन्यवाद।"
"आपने दादाजी को मेरी आवाज़ हटाने की प्रक्रिया के बारे में बता दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। नहीं तो मैं पूरे एक हफ्ते तक इसी हालत में रहता।"
“आपने मुझे यह बात लिखित में क्यों नहीं बताई? आप बहुत पहले ही सुधर सकते थे, और मैं इतना भ्रमित नहीं होता।”
उसने बिना कुछ कहे मेज के चारों ओर तेजी से चक्कर लगाया, फिर अपनी दोनों बालियों को ठीक किया। उन्होंने कहा, "नियम तो नियम होते हैं।"

“क्या आप लिखित रूप में संवाद करने के खिलाफ हैं?”
"यह उनमें से एक है।"
“हम्फ।”
"ऐसा कुछ भी जिससे सत्ता का विकेंद्रीकरण हो सकता है।"
“ओह,” मैंने कहा। सावधानियों की तो बात ही क्या करें।
"तुम्हारी उम्र कितनी है?" उसने अचानक पूछा।
“पैंतीस। और आप?”
“सत्रह। तुम पहले कैलकुटेक हो जिनसे मैं कभी मिला हूँ। लेकिन फिर, मैं कभी किसी सेमिओटेक से भी नहीं मिला हूँ।”
मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्या तुम सचमुच सिर्फ सत्रह साल के हो?"
“हाँ, मैं झूठ क्यों बोलूँ? मैं सचमुच सत्रह साल की हूँ। वैसे, मैं सत्रह साल की दिखती नहीं हूँ, है ना?”
नहीं, तुम लगभग बीस साल के लगते हो।
“क्योंकि मैं सत्रह साल की नहीं दिखना चाहती,” उसने कहा। “बताओ, कैलकुटेक होना कैसा लगता है?”
हम भी बाकी सब लोगों की तरह सामान्य लोग हैं।
"हर कोई साधारण हो सकता है, लेकिन वे सामान्य नहीं हैं।"
“हाँ, ऐसा विचार तो है,” मैंने कहा। “लेकिन सामान्य भी कई तरह का होता है। मेरा मतलब है, वो सामान्य जो ट्रेन में आपके बगल में बैठ जाए और आपको पता भी न चले। सामान्य। हम खाना खाते हैं, बीयर पीते हैं—और हाँ, सैंडविच बहुत बढ़िया थे।”
"सचमुच?" उसने मुस्कुराते हुए कहा।
मुझे अक्सर ऐसे बढ़िया सैंडविच नहीं मिलते। मैंने लगभग सारे सैंडविच खुद ही खा लिए।
"कॉफी कैसी रहेगी?"
कॉफी भी बुरी नहीं थी।
“सच में? क्या आप अभी कुछ लेना चाहेंगे? इससे हम थोड़ी देर और बैठकर बातें कर सकेंगे।”
“नहीं धन्यवाद, मैंने पहले ही बहुत कुछ पी लिया है,” मैंने कहा। “मुझे नहीं लगता कि मैं एक बूंद भी और पी सकता हूँ। और वैसे भी, मुझे जल्दी से घर जाकर सोना है।”
"यह बहुत बुरा है।"
"मेरे लिए भी यह बहुत बुरा हुआ।"
"चलो, कम से कम मैं तुम्हें लिफ्ट तक छोड़ देता हूँ। गलियारे बेहद जटिल हैं। मुझे यकीन है कि तुम खुद रास्ता नहीं ढूंढ पाओगे।"
मुझे खुद इस पर संदेह है।

लड़की ने एक गोल टोपी रखने वाले डिब्बे जैसी दिखने वाली चीज उठाई, जो चौड़े चिपकने वाले टेप से कई बार सील की हुई थी, और उसे मुझे दे दिया।
मैंने पूछा, "यह क्या है?"
“दादाजी की तरफ से तुम्हारे लिए एक तोहफा। इसे घर ले जाओ और खोलो।”
मैंने डिब्बे को अपने हाथों में तौला। यह मेरे अनुमान से कहीं हल्का था, और टोपी तो बहुत बड़ी ही रही होगी।
मैंने डिब्बे को हिलाया। कोई आवाज़ नहीं आई।
"यह नाजुक है, इसलिए कृपया इसके साथ सावधानी बरतें," लड़की ने चेतावनी दी।
"कोई स्मृति चिन्ह?"
मुझे नहीं पता। जब आप इसे खोलेंगे तो आपको पता चल जाएगा, है ना?
फिर उस लड़की ने अपना गुलाबी पर्स खोला और मुझे एक लिफाफा दिया जिसमें एक बैंक चेक था। चेक पर मेरी उम्मीद से थोड़ी ज़्यादा रकम लिखी थी। मैंने उसे अपने पर्स में रख लिया।
"रसीद?"
“कोई ज़रूरत नहीं,” उसने कहा।
हम कमरे से बाहर निकले और उसी लंबे गलियारों के भूलभुलैया से होते हुए वापस लिफ्ट की ओर चल पड़े। उसकी ऊँची एड़ियों से फर्श पर वही सुखद क्लिक की आवाज़ आ रही थी, लेकिन उसका मोटापा अब उतना ज़ोरदार असर नहीं डाल रहा था जितना पहले डाल रहा था। जैसे-जैसे हम साथ चलते गए, मैं लगभग उसके वज़न के बारे में भूल ही गया था। समय के साथ, शायद मैं इसकी आदत भी डाल लूँगा।
"क्या आप शादीशुदा हैं?" उसने मेरी ओर मुड़कर पूछा।
“नहीं, मैं नहीं हूँ,” मैंने कहा। “मैं पहले हुआ करता था, लेकिन अब नहीं।”
“क्या कैलकुटेक बनने की वजह से आपका तलाक हो गया? मैं हमेशा सुनता रहता हूँ कि कैलकुटेक लोगों का परिवार नहीं होता।”
“यह सच नहीं है। कुछ कैलकुटेक कर्मचारी अच्छे पारिवारिक व्यक्ति होते हैं। हालांकि, निश्चित रूप से, अधिकांश लोग अपने करियर को घर-परिवार से परे रखकर आगे बढ़ते हैं। यह एक तनावपूर्ण और कभी-कभी बेहद जोखिम भरा काम है। आप अपनी पत्नी और बच्चों को खतरे में नहीं डालना चाहेंगे।”
"क्या आपके साथ भी ऐसा ही था?"
“तलाक के बाद मैं कैलकुटेक बन गई। इन दोनों बातों का आपस में कोई संबंध नहीं था।”
"माफ़ करना, मैं दखल दे रहा हूँ। बात बस इतनी सी है कि आप मेरे पहले कैलकुटेक हैं और मुझे बहुत सी चीज़ें नहीं पता हैं।"
मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
"अच्छा, तो मैंने यह भी सुना है कि कैलकुटेक्स, जब वे कोई काम पूरा कर लेते हैं, तो उनकी यौन इच्छा बहुत बढ़ जाती है।"

“मैं...उम्म...सच में कुछ नहीं कह सकता। शायद ऐसा हो। काम के दौरान हम खुद को एक बहुत ही अजीब मानसिक स्थिति में डाल लेते हैं।”
“ऐसे समय में आप किसके साथ सोते हैं? किसी खास व्यक्ति के साथ?”
"मेरी जिंदगी में कोई 'खास शख्स' नहीं है।"
तो फिर, आप किसके साथ सोते हैं? आप उन लोगों में से तो नहीं हैं जिन्हें सेक्स में कोई दिलचस्पी नहीं होती। आप समलैंगिक तो नहीं हैं ना?
“नहीं, मैं नहीं हूँ,” मैंने कहा।
तो तुम किसके साथ सोते हो?
मुझे लगता है कि मैं अलग-अलग महिलाओं के साथ सोता हूँ।
"क्या हम - तुम साथ सोएंगे?"
नहीं। शायद नहीं।
"क्यों नहीं?"
“मैं ऐसी ही हूँ। मुझे जान-पहचान वालों के साथ सोना पसंद नहीं है। इससे मामला और पेचीदा हो जाता है। और मैं अपने कारोबारी संपर्कों के साथ भी नहीं सोती। जिस तरह से मैं दूसरों के राज़ों से निपटती हूँ, उसमें कहीं न कहीं तो हद खींचनी ही पड़ती है।”
"क्या आपको यकीन है कि यह मेरे मोटे होने या बदसूरत होने की वजह से नहीं है?"
मैंने कहा, "सुनो, तुम्हारा वजन इतना ज्यादा नहीं है, और तुम बिल्कुल भी बदसूरत नहीं हो।"
उसने मुंह फुलाते हुए कहा, "अगर तुम्हें ऐसा ही लगता है, तो क्या तुम बस किसी को उठाकर उसके साथ बिस्तर पर चले जाते हो?"
"पूर्ण रूप से हाँ।"
"या फिर आप सीधे एक लड़की खरीद लेते हैं?"
मैंने भी ऐसा किया है।
"अगर मैं तुम्हें पैसों के बदले तुम्हारे साथ सोने का प्रस्ताव दूं, तो क्या तुम इसे स्वीकार करोगी?"
मैंने जवाब दिया, "मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरी उम्र आपकी उम्र से दोगुनी है। यह उचित नहीं होगा।"
मेरे साथ मामला अलग होता।
"हो सकता है, लेकिन मेरा इरादा किसी को ठेस पहुंचाने का नहीं है, मैं सच में ऐसा नहीं करना चाहूंगा। मुझे लगता है कि यही सबसे अच्छा है।"
“दादाजी कहते हैं कि जिस पहले आदमी के साथ मैं सोऊं, उसकी उम्र तीस साल से अधिक होनी चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि अगर यौन इच्छा एक निश्चित स्तर तक बढ़ जाती है, तो यह आपकी मानसिक स्थिरता को प्रभावित करती है।”
"हां, मैंने यह बात तुम्हारे दादाजी से सुनी थी।"

“क्या आपको लगता है कि यह सच है?”
मुझे अफसोस है कि मैं जीवविज्ञानी नहीं हूं।
"क्या आप सुगठित हैं?"
"माफ़ कीजिए?" मैं लगभग अटक गया।
“दरअसल, मुझे अपनी यौन इच्छा के बारे में अभी कुछ भी पता नहीं है,” उसने समझाया। “इसलिए मैं कई अलग-अलग चीजें आजमाना चाहूंगी।”
हम लिफ्ट तक पहुँच गए। उसके दरवाजे खुले हुए थे। कितनी राहत मिली!
“तो फिर अगली बार मिलते हैं,” उसने कहा।
मैं लिफ्ट में चढ़ा और दरवाजे बिना किसी आवाज के बंद हो गए। मैं स्टेनलेस स्टील की दीवार से टिक गया और एक गहरी सांस ली।

6

छाया

मेज पर रखी गई उसकी पहली पुरानी स्वप्न दृष्टि से मेरे लिए किसी पुरानी स्वप्न दृष्टि से ज्ञात नहीं है। मैं अपने सामने रखी वस्तु को घूरता हूँ, फिर उसकी ओर देखता हूँ। वह मेरे बगल में खड़ी होकर उसे नीचे देख रही है। यह कैसी "पुरानी स्वप्न" है? "पुरानी स्वप्न" शब्द सुनकर मुझे कुछ और ही उम्मीद थी—शायद कोई पुरानी रचना, कुछ धुंधला, अस्पष्ट सा।

“यहाँ एक पुराना सपना है,” लाइब्रेरियन कहती हैं। उनकी आवाज़ दूर और दिशाहीन है; उनका लहजा मुझे कुछ समझाने से ज़्यादा खुद को आश्वस्त करने जैसा है। “या यूँ कहें कि पुराना सपना इसके भीतर समाया हुआ है।”

मैं सिर हिलाता हूँ, लेकिन समझ नहीं पाता।

“इसे अपने हाथों में लो,” वह कहती है।

मैं इसे उठाता हूँ और इस पर नज़र दौड़ाकर देखता हूँ कि क्या मुझे किसी पुराने सपने का कोई निशान मिल सकता है। लेकिन कोई सुराग नहीं मिलता। यह महज़ एक जानवर की खोपड़ी है, और वह भी कोई बहुत बड़ा जानवर नहीं। सूखी और भंगुर, मानो सालों तक धूप में पड़ी रही हो, हड्डियों का रंग पूरी तरह से फीका पड़ चुका है। उभरा हुआ जबड़ा थोड़ा खुला हुआ है, मानो बोलने ही वाला हो कि अचानक जम गया हो। आँखों के गड्ढे, जिनमें लंबे समय से कुछ भी नहीं है, पीछे की ओर गुफा जैसे गड्ढों की ओर खुलते हैं।

खोपड़ी असामान्य रूप से हल्की है, मानो उसमें कोई भौतिक उपस्थिति ही न हो। न ही यह उस प्रजाति का कोई संकेत देती है जिसने कभी इसमें सांस ली थी। यह मांस, गर्मी और स्मृति से रहित है। माथे के बीचोंबीच एक छोटा सा गड्ढा है, जो छूने पर खुरदुरा लगता है। शायद यह किसी टूटे हुए सींग का अवशेष है।

मैंने उससे पूछा, "क्या यह कस्बे के किसी यूनिकॉर्न की खोपड़ी है?"

“हाँ। पुराना सपना अंदर ही बंद है।”

"क्या मुझे इससे कोई पुराना सपना पढ़ना है?"

“यह ड्रीमरीडर का काम है,” लाइब्रेरियन ने कहा।

और मैं उन सपनों का क्या करता हूँ जिन्हें मैं पढ़ता हूँ?

कुछ नहीं। आपको बस उन्हें पढ़ना है।

“ऐसा कैसे हो सकता है?” मैंने कहा। “मुझे पता है कि मुझे इससे एक पुराना सपना पढ़ना है। लेकिन फिर उसका कुछ भी न करना, मेरी समझ से बाहर है। इसका क्या मतलब हो सकता है? काम का कोई उद्देश्य होना चाहिए।”

वह अपना सिर हिलाती है। "मैं समझा नहीं सकती। शायद स्वप्न अध्ययन से पता चल जाए। मैं बस आपको यह दिखा सकती हूँ कि यह कैसे किया जाता है।"

मैंने खोपड़ी को मेज पर रख दिया और उसे देखने के लिए पीछे झुक गया। खोपड़ी एक गहरे सन्नाटे में डूबी हुई थी, मानो वह शून्यता ही हो। यह सन्नाटा सतह पर नहीं, बल्कि भीतर धुएँ की तरह समाया हुआ था। यह अथाह, शाश्वत, शून्य में एक बिंदु पर गिरी हुई एक निराकार दृष्टि थी।

इसमें एक उदासी है, एक अंतर्निहित करुणा है। मेरे पास इसे व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं।

“कृपया मुझे दिखाओ,” मैं कहता हूँ। मैं खोपड़ी को एक बार फिर मेज से उठाता हूँ और अपने हाथों में उसका वजन महसूस करता हूँ।

हल्की सी मुस्कान के साथ, वह मुझसे खोपड़ी लेती है और बड़ी सावधानी से उस पर जमी धूल को पोंछती है। फिर वह एक सफेद खोपड़ी को मेज पर वापस रख देती है।

“पुराने सपनों को पढ़ने का यही तरीका है,” लाइब्रेरियन ने बोलना शुरू किया। “ध्यान से देखिए। लेकिन कृपया यह जान लीजिए कि मैं केवल नकल कर सकता हूँ, मैं सचमुच पढ़ नहीं सकता। सपने केवल आप ही पढ़ सकते हैं। पहले, खोपड़ी को इस तरह अपनी ओर घुमाइए, फिर धीरे से अपने हाथ दोनों तरफ रखिए।”

वह अपनी उंगलियों के सिरों से खोपड़ी की कनपटी को छूती है।

“अब माथे को देखो। घूरने की कोशिश मत करो, बल्कि धीरे से ध्यान केंद्रित करो। खोपड़ी से अपनी निगाहें मत हटाओ। चाहे वह कितनी भी चमकदार क्यों न हो, उससे नज़रें मत हटाओ।”

"शानदार?"

“जी हां, शानदार। आपकी आंखों के सामने खोपड़ी चमक उठेगी और गर्मी उत्पन्न करेगी। अपनी उंगलियों से उस रोशनी का पता लगाएं। इसी तरह पुराने सपनों को पढ़ा जाता है।”

मैं मन ही मन पूरी प्रक्रिया का जायज़ा लेता हूँ। यह सच है कि मैं यह कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ कि वह किस तरह की रोशनी की बात कर रही है या वह कैसी महसूस होगी, लेकिन मैं तरीका समझ गया हूँ। उसकी पतली उंगलियों के नीचे खोपड़ी को देखते हुए, मुझे अचानक से ऐसा लगा जैसे मैंने यह पहले भी देखी हो। क्या मैंने यह खोपड़ी पहले भी देखी है? फीका पड़ा रंग, माथे पर गड्ढा। मुझे एक झनझनाहट महसूस होती है, ठीक वैसे ही जैसे पहली बार उसका चेहरा देखते समय हुआ था। क्या यह किसी वास्तविक स्मृति का अंश है या समय अपने आप में लौट आया है? मैं बता नहीं सकता।

“क्या गड़बड़ है?” वह पूछती है।

मैंने अपना सिर हिलाया। "कुछ नहीं। मुझे लगता है कि मुझे समझ आ गया है। चलो कोशिश करते हैं।"

“शायद हमें पहले खाना खा लेना चाहिए,” वह कहती हैं। “एक बार काम शुरू कर दिया तो समय नहीं बचेगा।”

वह सब्जी की सब्ज़ी का एक बर्तन निकालती है और उसे चूल्हे पर गर्म करती है। मिनस्ट्रा (सब्जी का सूप) धीमी आंच पर पकता है, जिससे पूरा कमरा एक मनमोहक खुशबू से भर जाता है। वह उसे दो कटोरियों में निकालती है, अखरोट की रोटी काटती है और इस साधारण भोजन को मेज पर परोस देती है।

हम आमने-सामने बैठकर खाना खाते हैं और एक शब्द भी नहीं बोलते। मसाला इतना स्वादिष्ट है कि मैंने पहले कभी ऐसा मसाला नहीं चखा था। खाना खत्म करते-करते मुझे अंदर से गर्माहट महसूस होने लगी। फिर वह हमारे लिए गर्म चाय के प्याले लाती है। यह जड़ी-बूटियों से बनी चाय है, हल्की कड़वी और हरी।

स्वप्न-पाठ करना उतना आसान नहीं है जितना उन्होंने बताया है। प्रकाश की किरणें इतनी सूक्ष्म हैं कि चाहे मैं अपनी उंगलियों में ऊर्जा को कितना भी केंद्रित कर लूँ, दृष्टि के इस अराजक जाल को सुलझाना मेरे लिए असंभव है। फिर भी, मैं अपनी उंगलियों पर स्वप्नों की उपस्थिति को स्पष्ट रूप से महसूस कर सकती हूँ। यह एक गतिशील धारा है, छवियों का एक अंतहीन प्रवाह। मेरी उंगलियाँ अभी तक कोई स्पष्ट संदेश नहीं समझ पा रही हैं, लेकिन मैं वहाँ एक गहनता अवश्य अनुभव कर सकती हूँ।

जब तक मैं आखिरकार दो सपने निकालने में कामयाब हुआ, तब तक दस बज चुके थे। मैंने उसे सपनों से भरी खोपड़ी लौटा दी, अपना चश्मा उतारा और अपनी आँखें मल लीं।

“क्या तुम थके हुए हो?” वह पूछती है।

“थोड़ा,” मैंने जवाब दिया। “मेरी आँखें इसकी आदी नहीं हैं। पुराने सपनों की रोशनी में देखने से मेरी आँखों में दर्द होता है। दर्द के मारे मैं ज़्यादा देर तक नहीं देख सकती।”

“मुझे बताया गया है कि शुरुआत में ऐसा ही होता है,” वह कहती हैं। “आपकी आंखें रोशनी की आदी नहीं होतीं; रीडिंग मुश्किल होती हैं। कुछ समय तक धीरे-धीरे काम करें।”

पुराने सपने को तहखानों में लौटाकर, लाइब्रेरियन घर जाने की तैयारी करती है। वह चूल्हे का ढक्कन खोलती है, एक छोटी सी फावड़ी से लाल कोयले निकालती है और उन्हें रेत से भरी बाल्टी में डाल देती है।

“थकान को हावी मत होने दो,” वह चेतावनी देती है। “मेरी माँ भी यही कहती थीं। अपने शरीर को तब तक काम करने दो जब तक वह थक न जाए, लेकिन अपना दिमाग शांत रखो।”

"अच्छी सलाह।"

सच कहूँ तो, मुझे ‘मन’ नाम की इस चीज़ के बारे में कुछ नहीं पता, यह क्या करता है और इसका उपयोग कैसे किया जाता है। यह तो बस एक शब्द है जो मैंने सुना है।

मैं कहता हूँ, “मन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप इस्तेमाल करते हों। मन बस मौजूद है। यह हवा की तरह है। आप बस इसकी हलचल को महसूस करते हैं।”

वह चूल्हे का ढक्कन बंद करती है, तामचीनी का बर्तन और प्याला धोने के लिए ले जाती है, और मोटे कपड़े के नीले कोट में लिपटी लौट आती है। मानो आसमान से गिरे किसी टुकड़े का अवशेष हो, इतने वर्षों तक घिसा-पिटा कि उसे भी अपनी उत्पत्ति का पता नहीं। वह बुझे हुए चूल्हे के सामने खड़ी होकर सोच में डूबी हुई है।

"क्या तुम किसी दूसरे देश से आए हो?" वह पूछती है, मानो यह विचार अभी-अभी उसके मन में आया हो।
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
और वह भूमि कैसी थी?
“मुझे कुछ याद नहीं,” मैं कहती हूँ। “मुझे एक भी बात याद नहीं आ रही। ऐसा लगता है जैसे मेरी परछाई के साथ-साथ वे मेरी पुरानी दुनिया की सारी यादें भी ले गए हों। मुझे बस इतना पता है कि वह बहुत दूर थी।”
"लेकिन क्या आप मन की इन बातों को समझते हैं?"
"थोड़ा।"
“मेरी माँ में भी बुद्धि थी,” वह कहती हैं। “लेकिन जब मैं सात साल की थी तब मेरी माँ गायब हो गईं। शायद इसका कारण यही था कि उनमें भी तुम्हारी ही तरह बुद्धि थी।”
"गायब हुआ?"
“हाँ, वह गायब हो गई। मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहता। गायब हो चुके लोगों के बारे में बात करना गलत है। मुझे उस कस्बे के बारे में बताओ जहाँ तुम रहते थे। तुम्हें कुछ तो याद होगा।”
“मुझे सिर्फ दो बातें याद हैं,” मैंने कहा। “कि जिस कस्बे में मैं रहती थी, उसके चारों ओर कोई दीवार नहीं थी, और हम जहां भी चलते थे, हमारी परछाईं हमारा पीछा करती थी।”
हाँ, हम सबकी परछाईं होती थी। वो हमेशा हमारे साथ रहती थी। लेकिन जब मैं इस शहर में आया, तो मेरी परछाईं गायब हो गई।
“तुम इसे पहनकर शहर में नहीं आ सकते,” द्वारपाल ने कहा। “या तो अपनी परछाई हटाओ या अंदर आने का विचार छोड़ दो।”
मैंने अपनी परछाई का समर्पण कर दिया।
द्वारपाल ने मुझे द्वार के बगल में एक खुली जगह पर खड़ा कर दिया। दोपहर के तीन बजे की धूप ने मेरी परछाई को ज़मीन पर स्थिर कर दिया।
“अब शांत रहो,” द्वारपाल ने मुझसे कहा। फिर उसने एक चाकू निकाला और बड़ी कुशलता से उसे परछाई और ज़मीन के बीच में घुसा दिया। परछाई ने प्रतिरोध में छटपटाना शुरू कर दिया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसका काला रूप बड़ी सफाई से हट गया।
शरीर से अलग होने पर, यह पूरी तरह से कमजोर हो गया था। इसने अपनी शक्ति खो दी थी।
द्वारपाल ने अपनी तलवार रख ली। “इसका क्या मतलब है? काटने के बाद तो यह अजीब सी चीज बन जाती है,” उसने कहा। “परछाइयाँ तो वैसे भी बेकार होती हैं। बोझ।”
मैं परछाई के पास गया। “माफ़ कीजिए, मुझे अभी आपको छोड़कर जाना होगा,” मैंने कहा। “यह मेरा विचार नहीं था। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। क्या आप कुछ समय के लिए अकेले रहना स्वीकार कर सकते हैं?”
“कुछ देर? कब तक?” परछाई ने पूछा।
मुझे पता नहीं था।

"क्या तुम्हें बाद में इसका पछतावा नहीं होगा?" परछाई ने दबी आवाज़ में कहा। "यह गलत है, मैं तुम्हें बता रही हूँ। इस जगह में कुछ गड़बड़ है। लोग अपनी परछाई के बिना नहीं रह सकते, और परछाई लोगों के बिना नहीं रह सकती। फिर भी वे हमें अलग कर रहे हैं। मुझे यह पसंद नहीं है। यहाँ कुछ तो गड़बड़ है।"
लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। मेरी परछाई और मैं पहले ही अलग हो चुके थे।
मैंने कहा, “एक बार जब मैं यहाँ व्यवस्थित हो जाऊँगा, तो तुम्हारे लिए वापस आऊँगा। यह केवल अस्थायी है, हमेशा के लिए नहीं। हम फिर से साथ होंगे।”
परछाई ने धीमी सी आह भरी और मेरी तरफ देखा। सूरज हम दोनों पर तेज चमक रहा था। मैं अपनी परछाई के बिना, मेरी परछाई मेरे बिना।
"ये तो बस कोरी कल्पना है," परछाई ने कहा। "मुझे ये जगह पसंद नहीं है। हम दोनों को यहाँ से भागकर वापस वहीं जाना होगा जहाँ से हम आए थे।"
“हम वापस कैसे लौट सकते हैं? हमें वापस जाने का रास्ता ही नहीं पता।”
“अभी नहीं, लेकिन मैं पता लगाऊंगा, चाहे कुछ भी हो जाए। हमें नियमित रूप से मिलना और बात करना चाहिए। तुम आओगे ना?”
मैंने सिर हिलाया और अपनी परछाई के कंधे पर हाथ रखा, फिर द्वारपाल के पास लौट आया। जब मैं और मेरी परछाई बात कर रहे थे, तब द्वारपाल इधर-उधर बिखरे पत्थरों को इकट्ठा करके फेंक रहा था।
जैसे ही मैं पास पहुँचा, द्वारपाल ने अपने हाथों से धूल झाड़कर अपनी कमीज़ के पिछले हिस्से पर लगाई और मुझे गले लगा लिया। यह स्वागत का संकेत था या अपनी ताकत की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने का, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता था।
“मुझ पर भरोसा रखो। तुम्हारी परछाई सुरक्षित हाथों में है,” द्वारपाल ने कहा। “हम उसे दिन में तीन बार भोजन देते हैं और दिन में एक बार व्यायाम के लिए बाहर निकालते हैं। चिंता की कोई बात नहीं है।”
"क्या मैं उससे समय-समय पर मिल सकता हूँ?"
"शायद," द्वारपाल ने कहा। "अगर मेरा मन हुआ तो।"
और अगर मुझे अपनी परछाई वापस चाहिए तो मुझे क्या करना होगा?
“मैं कसम खाता हूँ, तुम अंधे हो। चारों ओर देखो,” द्वारपाल ने मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा। “इस कस्बे में किसी की परछाई नहीं दिखती, और जिसे हम अंदर आने देते हैं, वह कभी बाहर नहीं जाता। तुम्हारा सवाल बेमानी है।”
तो इस तरह मैंने अपनी परछाई खो दी।
लाइब्रेरी से निकलते हुए, मैंने उसे घर तक छोड़ने की पेशकश की।
“मुझे मेरे दरवाजे तक छोड़ने की कोई जरूरत नहीं है,” वह कहती है। “मुझे रात से डर नहीं लगता, और आपका घर तो विपरीत दिशा में काफी दूर है।”
मैं कहती हूं, "मैं तुम्हारे साथ चलना चाहती हूं। अगर मैं सीधे घर भी चली जाऊं, तो भी मुझे नींद नहीं आएगी।"

हम कंधे से कंधा मिलाकर दक्षिण की ओर पुराने पुल पर चलते हैं। नदी के बीचोंबीच रेतीले टीले पर, बसंत की ठंडी हवा में विलो के पेड़ झूम रहे हैं। हमारे पैरों के पास बिछे पत्थरों पर चाँद की तीखी रोशनी पड़ रही है। हवा नम है, ज़मीन फिसलन भरी है। उसके लंबे बाल रस्सी से बंधे हैं और कोट के अंदर छुपे हुए हैं।
“आपके बाल बहुत खूबसूरत हैं,” मैंने कहा।
“क्या सच में?” वह कहती है।
क्या इससे पहले कभी किसी ने आपके बालों की तारीफ की है?
“नहीं,” वह मेरी ओर देखते हुए, अपने हाथों को जेब में डाले हुए कहती है। “जब आप मेरे बालों की बात करते हैं, तो क्या आप अपने अंदर की किसी बात की भी बात कर रहे होते हैं?”
“क्या मैं हूँ? यह तो बस एक साधारण सा बयान था।”
वह हल्की सी मुस्कान देती है। "मुझे माफ करना। शायद मुझे आपके बोलने का तरीका समझ नहीं आया।"
उसका घर औद्योगिक क्षेत्र के दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित जर्जर हालत वाले श्रमिक क्वार्टर में है। यह पूरा इलाका बेहद वीरान है। निस्संदेह, नहरों में कभी नावों और नौकाओं का चहल-पहल रहती थी, जहाँ अब बंद पड़े जलमार्ग सूखे जलमार्गों को उजागर करते हैं, और कीचड़ किसी प्रागैतिहासिक जीव की त्वचा की तरह सिकुड़ता जा रहा है। लोडिंग डॉक की दरारों में खरपतवार उग आए हैं, और चौड़ी पत्थर की सीढ़ियाँ उस जगह तक उतरती हैं जहाँ कभी जलस्तर हुआ करता था। कीचड़ में से पुरानी बोतलें और जंग लगे मशीन के पुर्जे निकले पड़े हैं; पास ही एक चपटी तल वाली नाव धीरे-धीरे सड़ रही है।
नहरों के किनारे खाली कारखानों की कतारें खड़ी हैं। उनके द्वार बंद हैं, खिड़कियों के शीशे गायब हैं, आग से बचने के लिए बनी सीढ़ियों की रेलिंग जंग खाकर उखड़ गई हैं, और दीवारें लताओं से लिपटी हुई हैं।
इन कारखानों की कतारों के पार मज़दूरों का इलाका है। कभी समृद्ध रहे इस इलाके में छोटे-छोटे कमरे हैं, जिनमें गरीब मज़दूरों का एक बड़ा समूह रहता है। वह बताती हैं कि आज भी इन मज़दूरों के पास कोई काम नहीं है। कारखाने बंद हो गए हैं, और बेघर हुए लोगों के पास गुज़ारा करने के लिए छोटी-मोटी चीज़ें बनाने का कोई ज़रिया नहीं बचा है। उनके पिता भी इन्हीं कारीगरों में से एक थे।
आखिरी नहर पर बने एक छोटे से पत्थर के पुल को पार करने पर हम उसके आवासीय ब्लॉक के परिसर में पहुँच जाते हैं। मध्ययुगीन किलेबंदी की तरह दिखने वाले गलियारों का जाल एक इमारत से दूसरी इमारत के बीच की तंग जगह को घेरे हुए है।
आधी रात होने वाली है। कुछ खिड़कियों को छोड़कर बाकी सभी पर अंधेरा छाया हुआ है। वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे इस भूलभुलैया से ऐसे ले जाती है मानो किसी शिकारी निगाह से बचने की कोशिश कर रही हो। वह एक इमारत के सामने रुकती है और मुझे शुभ रात्रि कहती है।
“शुभ रात्रि,” मैंने कहा।
इसके बाद मैं अकेले ही पश्चिमी पहाड़ी की ढलान पर चढ़ता हूँ और अपने आवास पर लौट आता हूँ।

7

स्कल, लॉरेन बैकाल, लाइब्रेरी

बाहर अंधेरा था, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी और सड़कें काम से घर लौट रहे लोगों से भरी हुई थीं। टैक्सी मिलने में बहुत देर लग गई।

सामान्य परिस्थितियों में भी मुझे टैक्सी पकड़ने में बहुत परेशानी होती है। इसका कारण यह है कि संभावित खतरनाक स्थितियों से बचने के लिए, मैं जानबूझकर पहली दो खाली टैक्सियों में नहीं बैठता। सेमिओटेक लोगों के पास नकली टैक्सियाँ थीं, और कभी-कभी ऐसी खबरें आती थीं कि वे किसी काम को खत्म करके निकले कैलकुटेक को अगवा कर लेते थे। बेशक, ये अफवाहें भी हो सकती हैं, क्योंकि मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जिसके साथ वास्तव में ऐसा हुआ हो। फिर भी, सावधानी बरतना हमेशा अच्छा होता है।

इसीलिए मैं हमेशा मेट्रो या बस से सफर करता हूँ। लेकिन इस बार मैं इतना थका हुआ और नींद से व्याकुल था कि भीड़भाड़ वाली ट्रेन में सफर करने का ख्याल भी मेरे लिए असहनीय था। मैंने टैक्सी लेने का फैसला किया, भले ही इसमें ज़्यादा समय लगता। टैक्सी में बैठते ही मुझे कई बार नींद आने लगी और मेरी नींद कभी फीकी पड़ गई। घर पहुँचते ही अपने बिस्तर पर लेटते ही मैं चैन से सो गया। टैक्सी में सोना नामुमकिन था।

खुद को जगाए रखने के लिए, मैंने टैक्सी के रेडियो पर चल रहे बेसबॉल मैच पर ध्यान केंद्रित किया। मैं बेसबॉल का बहुत बड़ा प्रशंसक नहीं हूँ, इसलिए सुविधा के लिए मैंने बल्लेबाजी कर रही टीम का समर्थन किया और फील्डिंग कर रही टीम का विरोध किया। मेरी टीम 3-1 से पीछे थी। दो आउट हो चुके थे और दूसरे बेस पर एक खिलाड़ी था, तभी एक हिट लगी, लेकिन रनर दूसरे और तीसरे बेस के बीच लड़खड़ा गया, जिससे बिना रन बनाए पारी समाप्त हो गई। कमेंटेटर ने इसे घटिया खेल बताया, और मुझे भी ऐसा ही लगा। बेशक, कोई भी गिर सकता है, लेकिन बेसबॉल मैच के बीच में दूसरे और तीसरे बेस के बीच कोई लड़खड़ाता नहीं है। इस गलती से मेरी टीम का गेंदबाज इतना परेशान हो गया कि उसने विपक्षी टीम के पहले बल्लेबाज को बीच में एक आसान गेंद फेंक दी, जिसे उस खिलाड़ी ने बाएं फील्ड के स्टैंड में मारकर होम रन बना दिया।

जब टैक्सी मेरे अपार्टमेंट पहुंची, तो स्कोर 4-1 था। मैंने किराया चुकाया, अपना हैटबॉक्स और सुस्त दिमाग समेटा और बाहर निकल गया। हल्की बारिश लगभग रुक चुकी थी।

मेलबॉक्स में एक भी चिट्ठी नहीं थी। न ही आंसरिंग मशीन पर कोई संदेश था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी को मुझसे कोई लेना-देना नहीं था। ठीक है। मुझे भी किसी से कोई लेना-देना नहीं था। मैंने फ्रीजर से कुछ बर्फ

निकाली, अपने लिए ढेर सारी व्हिस्की डाली और उसमें थोड़ा सा सोडा मिलाया। फिर मैंने कपड़े उतारे और चादर के नीचे घुसकर बिस्तर पर बैठ गया और अपनी ड्रिंक की चुस्की लेने लगा। मुझे लग रहा था कि मैं किसी भी पल बेहोश हो जाऊंगा, लेकिन मुझे खुद को यह आराम देना ही था। बिस्तर पर जाने और सोने के बीच का यह एक खास पल है जो मुझे बहुत पसंद है। बिस्तर पर बैठकर संगीत सुनते हुए और किताब पढ़ते हुए ड्रिंक पीना। यह मेरे लिए उतना ही कीमती है जितना कि एक खूबसूरत सूर्यास्त या ताज़ी हवा।

मैंने अपनी आधी व्हिस्की खत्म ही की थी कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। टेलीफोन बिस्तर के पैरों से दो मीटर दूर एक गोल मेज पर रखा था। मैं अपने आरामदायक गर्म बिस्तर को छोड़कर इतनी दूर तक जाने को तैयार नहीं था, इसलिए मैं बस उसकी घंटी बजते हुए देखता रहा। तेरह बज, चौदह बज, मुझे क्या फर्क पड़ता? अगर यह कोई कार्टून होता, तो टेलीफोन हवा में कांप रहा होता, लेकिन ऐसा तो हो नहीं रहा था। टेलीफोन मेज पर विनम्रता से पड़ा रहा और बजता रहा। मैंने अपनी व्हिस्की पी और बस उसे देखता रहा।

टेलीफोन के बगल में मेरा बटुआ और चाकू रखा था—और वो तोहफे में मिला टोपी का डिब्बा भी। मेरे मन में ख्याल आया कि मुझे उसे खोलकर देखना चाहिए। शायद उसमें कोई खराब होने वाली चीज हो जिसे मुझे फ्रिज में रख देना चाहिए, कोई जीवित चीज हो, या फिर कोई "जरूरी" चीज हो। लेकिन मैं बहुत थका हुआ था। वैसे भी, अगर तोहफा देने वाले का इरादा इनमें से कुछ भी होता, तो वह मुझे जरूर बताता। जब टेलीफोन बजना बंद हुआ, तो मैंने अपनी व्हिस्की का पूरा गिलास पी लिया, बिस्तर के पास की बत्ती बंद कर दी और आंखें बंद कर लीं। नींद का एक बड़ा काला जाल, जो घात लगाकर बैठा था, मुझ पर छा गया। जैसे-जैसे मैं सोता गया, मैंने सोचा, क्या तुम सच में मुझसे यह उम्मीद करते हो कि मुझे पता हो कि क्या चल रहा है?

जब आखिरकार मेरी नींद खुली, तो हल्की रोशनी थी। घड़ी में छह बजकर पंद्रह मिनट हो रहे थे, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सुबह है या शाम। मैंने पैंट पहनी और पड़ोसी के दरवाजे के बाहर झुककर देखा। वहां सुबह का अखबार पड़ा था, जिससे मुझे लगा कि सुबह हो गई है। ऐसे समय में अखबार की सदस्यता काम आती है। शायद मुझे भी सदस्यता ले लेनी चाहिए।

तो मैं दस घंटे सो चुका था। मेरे शरीर को अभी भी आराम की ज़रूरत थी। दिन भर में कोई खास काम नहीं था, इसलिए मैं आराम से वापस सो सकता था। लेकिन फिर मैंने सोचा और उठ गया। मैं हमेशा कहता हूँ, सूरज के साथ उठो और तरोताज़ा हो जाओ। मैंने नहाया, शरीर को अच्छे से साफ़ किया और शेव किया। मैंने रोज़ की तरह पच्चीस मिनट कसरत की। जल्दी से नाश्ता बनाया।

फ्रिज लगभग खाली हो चुका था। अब सामान भरने का समय आ गया था। मैं संतरे का जूस लेकर बैठ गई और खरीदारी की सूची बनाने लगी। सूची एक पन्ने में भर गई और दूसरे पन्ने पर भी फैल गई।

मैंने अपने गंदे कपड़े वॉशिंग मशीन में डाले और सिंक में अपने टेनिस शूज़ से धूल झाड़ रही थी कि तभी मुझे उस बूढ़े आदमी का रहस्यमयी तोहफ़ा याद आया। शूज़ वहीं छोड़कर मैंने हाथ धोए और टोपी रखने वाला डिब्बा लेने चली गई। हमेशा की तरह भारी-भरकम होने के बावजूद हल्का-सा था—एक अजीब सी हल्कीपन। ज़रूरत से ज़्यादा हल्का।

किसी बात ने मुझे बेचैन कर दिया। इसे मेरा पेशेवर अंतर्ज्ञान कह लीजिए। मैंने कमरे का जल्दी से जायज़ा लिया। वहाँ अजीब सी खामोशी थी। मानो आवाज़ न के बराबर हो। लेकिन मेरी खाँसी की आवाज़ खाँसी जैसी ही थी। और जब मैंने अपना स्प्रिंग वाला चाकू खोला और उसके हैंडल को मेज़ पर पटका, तो आवाज़ बिल्कुल सही थी। आवाज़ न आने का अनुभव होने के कारण मुझे शक हो गया था। मैंने बालकनी की ओर खिड़की खोली। मुझे गाड़ियाँ और पक्षियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। कितनी राहत मिली! विकास हो या न हो, दुनिया में आवाज़ तो होनी ही चाहिए।

मैंने डिब्बे के अंदर रखी चीज़ों को नुकसान न पहुँचाते हुए सावधानी से टेप काटा। सबसे ऊपर मुड़ा हुआ अखबार था। मैंने कुछ पन्ने खोले—मैनिची शिंबुन, तीन हफ्ते पुराना, कोई खास खबर नहीं। मैंने पन्नों को फिर से मोड़कर फेंक दिया। डिब्बे में लगभग दो हफ्ते पुराने मुड़े हुए अखबार थे, सभी मैनिची के। अखबारों को हटाने के बाद, मुझे उन छोटी-छोटी चीज़ों की एक परत मिली—पॉलीथीन? स्टायरोफोम?—वे छोटी-छोटी चीज़ें जो पैकिंग के लिए इस्तेमाल होती हैं। मैंने उन्हें उठाया और कचरे में फेंक दिया। यह तोहफा संभालना एक झंझट भरा काम बनता जा रहा था। आधे प्लास्टिक के चीज़ पफ्स हटाने के बाद, अखबार में लिपटी एक और चीज़ दिखाई दी।

मुझे वह दृश्य पसंद नहीं आया। मैं रसोई में गई और कोक का एक कैन लेकर लौटी। मैं बिस्तर के किनारे बैठ गई और पूरा कैन पी गई। मैंने अपने एक नाखून को काटा। तभी बालकनी पर एक काली छाती वाली चिड़िया दिखाई दी और डेक टेबल पर फुदकते हुए कुछ टुकड़ों को चुगने लगी। एक शांत सुबह का दृश्य।

अंततः, मैंने अपना ध्यान अखबार में लिपटी वस्तु पर वापस केंद्रित किया और उसे धीरे से डिब्बे से बाहर निकाला। अखबार टेप के कई घेरों से लिपटा हुआ था, जो देखने में किसी समकालीन कलाकृति जैसा लग रहा था। आकार में एक लंबा तरबूज, हालांकि उसका वजन लगभग न के बराबर था। मैंने मेज साफ की और टेप और अखबार को अलग किया।

यह एक जानवर की खोपड़ी थी।

वाह, मैंने सोचा, बस वाह! क्या उस बूढ़े मूर्ख ने सच में सोचा था कि इसे पाकर मैं इतना खुश हो जाऊँगा? खोपड़ी उपहार में देने के बाद उसका दिमाग ज़रूर खराब होगा।

खोपड़ी आकार में घोड़े की खोपड़ी जैसी थी, लेकिन उससे काफी छोटी थी। जीव विज्ञान के अपने सीमित ज्ञान के आधार पर मैंने अनुमान लगाया कि यह खोपड़ी किसी पतले चेहरे वाले, खुर वाले, शाकाहारी और बहुत बड़े आकार के न होने वाले स्तनधारी जीव के कंधों से जुड़ी हुई थी। चलिए देखते हैं। मैंने अपने दिमाग में उस विवरण से मेल खाने वाले जानवरों की सूची खंगाली। हिरण, बकरी, भेड़, गधा, मृग... मुझे कोई और याद नहीं आया।

मैंने खोपड़ी को टीवी के ऊपर रख दिया। बहुत ही स्टाइलिश। अगर मैं अर्नेस्ट हेमिंग्वे होता, तो इसे मेंटलपीस के ऊपर, मूस के सिर के बगल में रख देता। लेकिन मेरे अपार्टमेंट में, ज़ाहिर है, कोई चिमनी नहीं थी। न चिमनी, न साइडबोर्ड, यहाँ तक कि कोट रखने की अलमारी भी नहीं। इसलिए टीवी के ऊपर ही रखना पड़ा।

मैंने बाकी पैकिंग सामग्री कूड़ेदान में फेंक दी। डिब्बे के निचले हिस्से में अखबार में लिपटी एक लंबी वस्तु पड़ी थी। उसे खोलकर देखा तो मुझे स्टेनलेस स्टील के चिमटे मिले, बिल्कुल वैसे ही जैसे उस बूढ़े आदमी ने अपने खोपड़ियों के संग्रह पर इस्तेमाल किए थे। मुझे बर्लिन फिलहारमोनिक के एक कंडक्टर की हाथीदांत की छड़ी याद आ गई।

“ठीक है, ठीक है, मैं भी साथ देता हूँ,” मैंने ज़ोर से कहा। मैं टीवी पर दिख रही खोपड़ी के पास गया और उसके माथे पर थपथपाया। अंदर से एक कराहने जैसी आवाज़ निकली, जैसे किसी बड़े कुत्ते की नाक से निकलने वाली धीमी आवाज़। वैसी तेज़ आवाज़ नहीं, जैसी मुझे उम्मीद थी। अजीब ज़रूर था, लेकिन परेशान होने की कोई बात नहीं। अगर वह धीमी कराहने जैसी आवाज़ ही थी, तो मैं भला क्यों बहस करूँ?

खोपड़ी थपथपाना जल्दी ही उबाऊ हो गया। मैं बैठ गया और अपना शेड्यूल चेक करने के लिए सिस्टम को डायल किया। मेरे प्रतिनिधि ने जवाब दिया और बताया कि उसने चार दिन बाद का एक काम नोट कर लिया है, क्या यह ठीक है? कोई दिक्कत नहीं, मैंने उसे कहा। मैंने फेरबदल की मंजूरी की पुष्टि करने के बारे में सोचा, लेकिन फिर नहीं किया। इसमें बहुत सारी अतिरिक्त बातचीत हो जाती। सारे कागजात ठीक थे, मेहनताना भी तय हो चुका था। इसके अलावा, उस बूढ़े आदमी ने कहा था कि उसने एजेंटों के माध्यम से काम करने से परहेज किया था ताकि बात गुप्त रहे। बेहतर होगा कि मामले को और जटिल न बनाया जाए।

इसके अलावा, मैं अपनी छवि से भी कुछ खास खुश नहीं था। लंबा, चुस्त-दुरुस्त, तीस साल का, ऐसा आदमी जो खुद को सब कुछ का स्वामी समझता है। मैं ऐसे लोगों से ज़रूरत से ज़्यादा बात न करने की पूरी कोशिश करता हूँ।

मैंने अपना काम खत्म किया और फोन रख दिया, फिर लिविंग रूम में जाकर सोफे पर आराम से बैठकर बीयर पीते हुए हम्फ्री बोगार्ट की फिल्म 'की लार्गो' का वीडियो देखने लगा। मुझे 'की लार्गो' में लॉरेन बैकाल बहुत पसंद हैं। बेशक, मुझे 'द बिग स्लीप' में भी बैकाल बहुत पसंद हैं, लेकिन 'की लार्गो' में तो वो मानो प्रतीकात्मक हैं।

टीवी स्क्रीन देखते-देखते मेरी नज़र अनायास ही ऊपर रखे जानवर की खोपड़ी पर चली गई। इससे मेरा ध्यान भंग हो गया। मैंने वीडियो को वहीं रोक दिया जहाँ तूफान आता है, और खुद से वादा किया कि बाकी का हिस्सा बाद में देख लूँगा। फिर मैं बीयर लेकर आराम से बैठ गया और टीवी के ऊपर रखी उस चीज़ को देखता रहा। मुझे हल्का सा शक हुआ कि मैंने खोपड़ी पहले भी देखी है। लेकिन कहाँ? और कैसे? मैंने दराज से एक टी-शर्ट निकाली और उसे खोपड़ी पर डाल दिया ताकि मैं 'की लार्गो' देखना पूरा कर सकूँ। आखिरकार, मैं लॉरेन बैकाल पर ध्यान केंद्रित कर सका।

ग्यारह बजे, मैं अपार्टमेंट से निकला और स्टेशन के पास वाले सुपरमार्केट की ओर चल पड़ा। रास्ते में शराब की दुकान पर रुककर मैंने थोड़ी रेड वाइन, सोडा वाटर और संतरे का जूस खरीदा। लॉन्ड्री से मैंने एक जैकेट और दो कमीज़ें लीं; स्टेशनरी की दुकान से मैंने एक पेन, लिफाफे और चिट्ठी लिखने का कागज़ खरीदा; हार्डवेयर की दुकान से मैंने सबसे बढ़िया धार लगाने वाला पत्थर लिया। फिर किताबों की दुकान से दो

पत्रिकाएँ, बिजली के सामान की दुकान से बल्ब और कैसेट टेप, और फोटो की दुकान से पोलरॉइड फिल्म का एक पैकेट लिया। आखिर में, मैं रिकॉर्ड की दुकान पर गया, जहाँ से मैंने कुछ डिस्क चुनीं। तब तक मेरी छोटी सी कार की पूरी पिछली सीट शॉपिंग बैगों से भर चुकी थी। लगता है मैं जन्म से ही खरीदारी का शौकीन हूँ। हर बार जब मैं शहर जाता हूँ, तो नवंबर में गिलहरी की तरह ढेर सारी छोटी-छोटी चीज़ें लेकर लौटता हूँ।
जिस कार से मैं गई थी, वो भी सिर्फ़ खरीदारी के लिए थी। मैंने उसे सिर्फ़ इसलिए खरीदा था क्योंकि मैं पहले से ही इतना सारा सामान खरीद चुकी थी कि उसे अकेले घर ले जाना मुश्किल था। मैं खरीदारी का थैला घसीट रही थी कि तभी मेरी नज़र एक पुरानी कारों के शोरूम पर पड़ी। मैं अंदर गई और वहाँ तरह-तरह की कारें देखीं। अब मुझे कारों का कोई खास शौक नहीं है, न ही मुझे उनके बारे में ज़्यादा जानकारी है। तो मैंने बस इतना कहा: "मुझे एक कार चाहिए, किसी भी ब्रांड की, कोई फैंसी नहीं, कोई बड़ी नहीं।"
अधेड़ उम्र के सेल्समैन ने एक कैटलॉग निकालना शुरू किया, लेकिन मुझे कोई कैटलॉग देखने की इच्छा नहीं थी। मैंने उससे साफ-साफ कह दिया कि मुझे सिर्फ शॉपिंग के लिए कार चाहिए। हाईवे पर तेज रफ्तार की जरूरत नहीं, डेट्स पर जाने के लिए शानदार दिखने की जरूरत नहीं। परिवार के साथ घूमने-फिरने के लिए भी नहीं। मुझे हाई-परफॉर्मेंस इंजन या एयर कंडीशनिंग की भी जरूरत नहीं थी। कार स्टीरियो, सनरूफ, सुपर रेडियल टायर्स भी नहीं। मुझे बस एक ठीक-ठाक कॉम्पैक्ट कार चाहिए थी जो कॉर्नरिंग में अच्छी हो, धुआं न छोड़े, ज्यादा शोर न करे और रास्ते में खराब न हो। और अगर वो गहरे नीले रंग की हो तो और भी बढ़िया।
उस आदमी ने मुझे जो कार दिखाई, वह पीले रंग की थी। मुझे रंग से कोई खास मतलब नहीं था, लेकिन बाकी सब वैसा ही था जैसा मैंने बताया था। और क्योंकि यह पुराना मॉडल था, इसलिए कीमत भी ठीक थी।
“गाड़ियाँ इसी तरह से बनाई जानी चाहिए थीं,” विक्रेता ने कहा। “अगर आप सचमुच जानना चाहते हैं, तो मुझे लगता है कि लोग पागल हैं।”
मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है।
इसी तरह मुझे अपनी शॉपिंग कार खरीदने का मौका मिला।
मैंने अपनी खरीदारी पूरी की और अपने नज़दीकी फ़ास्ट-फ़ूड रेस्टोरेंट में गाड़ी रोकी। मैंने झींगा सलाद, प्याज़ के छल्ले और एक बियर ऑर्डर की। झींगे सीधे फ़्रीज़र से निकाले गए थे, और प्याज़ के छल्ले नरम थे। हालाँकि, मैंने चारों ओर देखा, लेकिन मुझे एक भी ग्राहक ट्रे पीटता हुआ या वेट्रेस से शिकायत करता हुआ नज़र नहीं आया। इसलिए मैं चुपचाप अपना खाना खत्म कर लिया। उम्मीद न रखो, तो कुछ नहीं मिलेगा।
रेस्तरां की खिड़की से मुझे एक्सप्रेसवे दिखाई दे रहा था, जिस पर हर तरह की, हर रंग की और हर डिज़ाइन की गाड़ियाँ तेज़ी से दौड़ रही थीं। मुझे वो हंसमुख बूढ़ा आदमी और उसकी गोल-मटोल पोती याद आ गई। चाहे मैं उन्हें कितना भी पसंद करता, मुझे ये सोचना बंद नहीं हो रहा था कि वे किसी अजीब दुनिया में रह रहे होंगे। वो बेतुकी लिफ्ट, अलमारी के पीछे खुला गड्ढा, इंकलिंग्स और ध्वनि निरोधक यंत्र—ये सब तो किसी उपन्यास में भी संभव नहीं था। और फिर, वे मुझे एक जानवर की खोपड़ी यादगार के तौर पर दे देते हैं।

खाने के बाद अपनी कॉफ़ी का इंतज़ार करते हुए, मैं उस मोटी लड़की के बारे में सोच रहा था। मैं उसके चौकोर झुमके, गुलाबी सूट और गुलाबी ऊँची एड़ी के जूतों के बारे में सोच रहा था। मैं उसके शरीर, उसकी पिंडलियों, उसकी गर्दन के आसपास की चर्बी, उसके चेहरे की बनावट और... खैर, ऐसी ही चीज़ों के बारे में सोच रहा था। मुझे हर विवरण चौंकाने वाली स्पष्टता के साथ याद आ रहा था, फिर भी पूरी छवि धुंधली थी। अजीब बात है। शायद इसलिए कि मैंने काफी समय से किसी मोटी महिला के साथ संबंध नहीं बनाया था, इसलिए मैं एक भारी-भरकम महिला की पूरी छवि की कल्पना नहीं कर पा रहा था।

पिछली बार जब मैंने किसी मोटी महिला के साथ संबंध बनाया था, वह कारुइज़ावा में जापानी रेड आर्मी की गोलीबारी का वर्ष था। उस महिला की जांघें और कूल्हे असाधारण थे। वह एक बैंक कैशियर थी, जो काउंटर पर मुझसे हमेशा शिष्टाचार से बात करती थी। मैं उसे कमर के ऊपर से जानता था। हम दोस्त बन गए, एक बार साथ में ड्रिंक करने गए और फिर हमने साथ में संबंध बना लिया। बिस्तर पर जाने के बाद ही मुझे एहसास हुआ कि उसके शरीर का निचला हिस्सा शारीरिक रूप से इतना असंतुलित था। उसने मुझे बताया कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वह स्कूल के दौरान टेबल टेनिस खेलती थी, हालांकि मुझे इसका कारण पूरी तरह समझ नहीं आया। मुझे नहीं पता था कि टेबल टेनिस खेलने से शरीर का ऐसा आकार हो जाता है।

फिर भी, उसका सुडौलपन मनमोहक था। उसकी कमर पर कान टिकाना किसी सुहावनी बसंत की दोपहर में घास के मैदान में लेटने जैसा था, उसकी जांघें ताज़ी हवा से भीगे गद्दे की तरह मुलायम थीं, उसके सुडौल शरीर की लहरें खूबसूरती से उसके गुप्तांग तक जाती थीं। लेकिन जब मैंने उसकी खूबियों की तारीफ की, तो उसने बस इतना कहा, "ओह, हाँ?"

रेस्तरां से निकलने के बाद मैं पास ही स्थित पुस्तकालय में गया। संदर्भ पुस्तिका पर लंबे काले बालों वाली एक दुबली-पतली युवती एक पतली किताब में मग्न बैठी थी। मैंने पूछा, "क्या आपके पास स्तनधारी खोपड़ी से संबंधित कोई संदर्भ सामग्री है?"

“हं?” उसने ऊपर देखते हुए कहा।

मैंने प्रत्येक शब्द को अलग-अलग बोलते हुए दोहराया, “स्तनधारी खोपड़ियों पर संदर्भ।”

“मम-म-ली-अन-स्कल्स?” उसने लगभग गाते हुए दोहराया। जिस तरह से उसने इसे कहा, वह बहुत ही मधुर लग रहा था, मानो किसी कविता की पहली पंक्ति हो।

उसने अपने निचले होंठ को हल्के से दबाया और सोचने लगी। “बस एक मिनट रुकिए। मैं देख लेती हूँ,” उसने कहा और मुड़कर अपने कंप्यूटर कीबोर्ड पर 'मैमल' शब्द टाइप करने लगी। स्क्रीन पर लगभग बीस शीर्षक दिखाई दिए। उसने लाइट पेन का इस्तेमाल किया और दो-तिहाई शीर्षक एक ही बार में गायब हो गए। फिर उसने 'मेमोरी' फ़ंक्शन का इस्तेमाल किया और इस बार 'स्केलेटन' शब्द टाइप किया। सात-आठ शीर्षक दिखाई दिए, जिनमें से उसने दो को सहेज लिया और उन्हें पहले से चुने गए शीर्षकों के साथ 'मेमोरी' में डाल दिया। पुस्तकालयों ने वाकई बहुत तरक्की की है। किताबों के पिछले कवर के अंदर कार्ड रखने की जेबें अब एक धुंधले सपने जैसी लगती हैं। बचपन में मुझे वे सभी निकासी तिथि के स्टैम्प बहुत पसंद थे।

जब वह बड़ी फुर्ती से अपना कंप्यूटर चला रही थी, तब मेरी नज़र उसके लंबे बालों और आकर्षक नितंबों पर टिकी थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसके बारे में क्या सोचूँ। वह खूबसूरत थी और अपने पंचमापी खोज तंत्र से तो काफी बुद्धिमान भी लग रही थी। उसे आकर्षक न मानने का कोई कारण नहीं था।
उसने स्क्रीन डेटा का प्रिंटआउट लेने के लिए कॉपी बटन दबाया, जिसे उसने मुझे सौंप दिया।
उन्होंने कहा, "आपके पास चुनने के लिए नौ शीर्षक हैं।"
1. स्तनधारियों के लिए एक मार्गदर्शिका
2. स्तनधारियों का सचित्र एटलस
3. स्तनधारी कंकाल
4. स्तनधारियों का इतिहास
5. मैं, एक स्तनधारी
6. स्तनधारी शरीर रचना
7. स्तनधारी मस्तिष्क
8. जानवरों के कंकाल
9. हड्डियाँ बोलती हैं
मेरे कार्ड के साथ मुझे तीन किताबें खरीदने की अनुमति थी। मैंने दूसरी, तीसरी और आठवीं किताबें चुनीं। पाँचवीं और नौवीं किताबें दिलचस्प लग रही थीं, लेकिन उनका मेरी जांच से कोई खास संबंध नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें बाद के लिए छोड़ दिया।
"मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि स्तनधारियों का सचित्र एटलस केवल पुस्तकालय में उपयोग के लिए है और इसे रात भर के लिए उधार नहीं लिया जा सकता है," उसने कलम से अपनी कनपटी खुजाते हुए कहा।
“यह बहुत ज़रूरी है। क्या आप इसे मुझे सिर्फ़ एक दिन के लिए उधार दे सकते हैं?” मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा। “मैं वादा करता हूँ, कल दोपहर तक वापस कर दूँगा।”
मुझे खेद है, लेकिन पिक्टोरियल एटलस श्रृंखला बहुत लोकप्रिय है, और ये पुस्तकालय के नियम हैं। संदर्भ सामग्री उधार देने पर मुझे परेशानी हो सकती है।
“एक दिन। बस। किसी को पता नहीं चलेगा।”
वह झिझकी, अपनी जीभ की नोक को दांतों के बीच दबाते हुए। एक प्यारी सी गुलाबी जीभ।
“ठीक है। लेकिन इसे सुबह साढ़े नौ बजे तक वापस यहाँ लाना होगा।”
मैंने कहा, "धन्यवाद।"
“आपका स्वागत है,” उसने कहा।
“सचमुच, मैं आपका बहुत आभारी हूँ। क्या मैं आपको धन्यवाद के प्रतीक के रूप में कुछ भेंट कर सकता हूँ? क्या मैं आपके लिए कुछ विशेष कर सकता हूँ?”

जी हाँ, बिल्कुल। सामने ही बास्किन-रॉबिन्स का आइसक्रीम पार्लर है। मुझे पिस्ता फ्लेवर के साथ मोका चिप फ्लेवर का डबल कोन चाहिए। क्या आपको कोई आपत्ति होगी?

“पिस्ता पर मोचा चिप – अभी लाता हूँ!”

इसके बाद मैं पुस्तकालय से निकला और बास्किन-रॉबिन्स की ओर चल पड़ा।

जब मैं लौटा तब तक वह किताबें लेकर नहीं आई थी, इसलिए मैं आइसक्रीम कोन हाथ में लिए उसकी मेज पर खड़ा रहा। अखबार पढ़ रहे दो बूढ़े आदमी बारी-बारी से इस अजीबोगरीब दृश्य को देख रहे थे। सौभाग्य से आइसक्रीम पूरी तरह जमी हुई थी। अगर वह इधर-उधर टपक जाती तो मुझे और भी ज्यादा मूर्खता महसूस होती।

वह जिस किताब को पढ़ रही थी, वह मेज पर उलटी पड़ी थी। एच. जी. वेल्स की जीवनी 'टाइम ट्रैवलर', खंड दो। यह पुस्तकालय की किताब नहीं थी। उसके बगल में तीन नुकीली पेंसिलें और कुछ पेपरक्लिप पड़ी थीं। पेपरक्लिप! मैं जहाँ भी जाती, पेपरक्लिप ही पेपरक्लिप! ये क्या था?

शायद गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में अचानक हुए किसी उतार-चढ़ाव ने पूरी दुनिया को पेपरक्लिप्स से भर दिया था। शायद यह महज़ एक संयोग था। मुझे यह एहसास सता रहा था कि कुछ गड़बड़ है। क्या पेपरक्लिप्स मेरा पीछा कर रहे थे? मैं जहाँ भी जाता, वे हर जगह होते, बस एक नज़र की दूरी पर।

कुछ आवाज़ आई। ज़रा सोचिए, कुछ दिनों से ऐसी आवाज़ें आ रही थीं। पहले जानवरों की खोपड़ियाँ, अब कागज़ की क्लिपें। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पैटर्न बन रहा हो, लेकिन खोपड़ियों और कागज़ की क्लिपों के बीच क्या संबंध हो सकता है?

कुछ ही देर में वह महिला तीनों किताबें लेकर लौटी। उसने मुझे वे किताबें सौंप दीं और बदले में आइसक्रीम कोन ले ली।

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” उसने कहा।

मैंने कहा, "धन्यवाद।"

उसने आइसक्रीम कोन को डेस्क के पीछे नीचे की ओर रखा हुआ था। ऊपर से देखने पर उसकी गर्दन का पिछला हिस्सा कोमल और असहाय लग रहा था।

“वैसे, ये सारी पेपरक्लिप क्यों?” मैंने पूछा।

“पेपर क्लिप्स?” उसने गाते हुए जवाब दिया। “कागज़ों को एक साथ रखने के लिए, बिल्कुल। हर कोई इनका इस्तेमाल करता है। है ना?”

उसकी बात सही थी। मैंने उसे फिर से धन्यवाद दिया और पुस्तकालय से निकल गया। पेपरक्लिप का इस्तेमाल तो वाकई हर कोई करता है। एक हज़ार येन में तो ज़िंदगी भर के लिए काफी पेपरक्लिप मिल जाएंगी। क्यों नहीं? मैं एक स्टेशनरी की दुकान में रुका और अपने लिए ज़िंदगी भर के लिए काफी पेपरक्लिप खरीद लीं। फिर मैं घर चला गया।

अपार्टमेंट में वापस आकर, मैंने किराने का सामान समेटा। मैंने अपने कपड़े अलमारी में टांगे। फिर, टीवी के ऊपर, खोपड़ी के ठीक बगल में, मैंने मुट्ठी भर पेपरक्लिप फैला दिए।

सुंदर और कलात्मक। जैसे मुलायम तकिए और बर्फ खुरचनी का मेल हो, स्याही की बोतल और सलाद पत्ता। मैंने अपने टीवी के ऊपर की सजावट को ध्यान से देखने के लिए बालकनी में जाकर देखा। खोपड़ी और पेपरक्लिप्स का आपस में क्या संबंध है, इसका कोई संकेत नहीं था। या शायद था?

मैं बिस्तर पर बैठ गया। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। समय बीतता गया। एक एम्बुलेंस गुजरी, फिर एक दक्षिणपंथी प्रचार का ट्रक। मुझे व्हिस्की पीने का मन हुआ, लेकिन मैंने वह भी छोड़ दी। मुझे अपना दिमाग पूरी तरह से चुस्त रखना था।

मैं रसोई में गया और पुस्तकालय की किताबें लेकर बैठ गया। सबसे पहले मैंने मध्यम आकार के शाकाहारी स्तनधारियों और उनकी कंकाल संरचनाओं के बारे में जानकारी खोजी। दुनिया में मेरी कल्पना से कहीं अधिक मध्यम आकार के शाकाहारी स्तनधारी जीव थे। अकेले हिरणों की ही तीस से अधिक किस्में थीं।

मैंने टीवी से खोपड़ी उठाई, उसे मेज पर रखा और किताबों में मौजूद हर तस्वीर से उसकी तुलना करने की लंबी और श्रमसाध्य प्रक्रिया शुरू की। एक घंटा बीस मिनट और तिरानवे प्रजातियों के बाद भी मुझे कोई प्रगति नहीं मिली। मैंने तीनों किताबें बंद कीं और उन्हें मेज के एक कोने में ढेर कर दिया। फिर मैंने अपने हाथ ऊपर उठाए और अंगड़ाई ली।

क्या करें?

जॉन फोर्ड की फिल्म 'क्राइट मैन' का वीडियो चलाइए।

मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था, पेट में गड़ा हुआ था, तभी दरवाजे की घंटी बजी। मैंने पीपहोल से देखा तो टोक्यो गैस की वर्दी पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी दिखाई दिया। मैंने ताला लगा हुआ दरवाजा थोड़ा सा खोला।

“नियमित सुरक्षा जांच,” उस व्यक्ति ने कहा।

“एक पल रुकिए,” मैंने जवाब दिया और दरवाज़ा खोलने से पहले अपना चाकू जेब में रखने के लिए बेडरूम में चला गया। मुझे कुछ गड़बड़ लग रही थी। एक महीने पहले गैस इंस्पेक्टर आया था।

मैंने उस आदमी को अंदर आने दिया और 'द क्राइट मैन' देखना जारी रखा। इंस्पेक्टर ने प्रेशर गेज निकाला और बाथरूम के वॉटर हीटर की जाँच करने लगा, फिर रसोई में गया जहाँ मेज पर खोपड़ी रखी थी। मैंने टीवी चालू ही छोड़ दिया और दबे पांव रसोई में पहुँचा, ठीक उसी समय जब वह खोपड़ी को एक काले प्लास्टिक बैग में डाल रहा था। मैंने झट से अपना चाकू खोला और उस पर झपटा, घूमकर उसे बांहों से जकड़ लिया, चाकू की धार ठीक उसकी नाक के नीचे घुसा दी। उस आदमी ने तुरंत बैग नीचे फेंक दिया।

“मेरा... मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं था,” वह हकलाते हुए बोला। “मैंने बस वह चीज देखी और अचानक उसे पाने की इच्छा हुई। एक अचानक आवेग। मुझे माफ कर दीजिए।”

“बिलकुल नहीं,” मैंने ताना मारा। “सच बताओ वरना मैं तुम्हारा गला काट दूँगा,” मैंने कहा। यह अविश्वसनीय रूप से बनावटी लग रहा था—खासकर तब जब चाकू उसकी ठुड्डी के नीचे नहीं था—लेकिन वह आदमी मान गया।

“ठीक है, ठीक है, मुझे चोट मत पहुँचाओ। मैं सच बता देता हूँ,” वह गिड़गिड़ाते हुए बोला। “सच तो यह है कि मुझे यहाँ आकर यह चीज़ चुराने के लिए पैसे दिए गए थे। सड़क पर दो लोग मेरे पास आए और मुझसे पूछा कि क्या मैं पचास हज़ार येन झटपट कमाना चाहता हूँ। अगर मैं उनकी बात मान लेता, तो मुझे पचास हज़ार और मिल जाते। मैं यह करना नहीं चाहता था, लेकिन उनमें से एक आदमी बहुत ही क्रूर था। सच में। कृपया मुझे मत मारो। मेरी दो बेटियाँ हाई स्कूल में पढ़ती हैं।”

“हाई स्कूल में पढ़ने वाली दो बेटियां?”

“हाँ... हाँ।”

“कौन सा हाई स्कूल?”

उन्होंने कहा, “बड़ा वाला शिमुरा मेट्रोपॉलिटन में जूनियर है। छोटा वाला अभी-अभी योत्सुया के फुटाबा में दाखिला लेकर आया है।”

यह संयोग इतना अजीब था कि सच हो सकता था। मैंने उसकी बात पर विश्वास करने का फैसला किया। एहतियात के तौर पर, मैंने उस आदमी की जेब से उसका बटुआ निकाला और उसमें रखी चीज़ें देखीं। पाँच नए दस हज़ार येन के नोट थे। साथ ही एक टोक्यो गैस आईडी और उसके परिवार की एक रंगीन तस्वीर भी थी। दोनों बेटियाँ नए साल के शानदार किमोनो में सजी हुई थीं, दोनों में से कोई भी बहुत सुंदर नहीं थी। मैं यह नहीं बता सका कि कौन शिमुरा थी और कौन फुटाबा। इसके अलावा, मेरे पास केवल सुगामो-शिनानोमाची का ट्रेन पास था। वह आदमी हानिरहित लग रहा था, इसलिए मैंने चाकू समेट लिया और उसे जाने दिया।

“ठीक है, यहाँ से चले जाओ,” मैंने उसका बटुआ वापस देते हुए कहा।

“धन्यवाद, धन्यवाद,” गैस निरीक्षक ने कहा। “लेकिन अब मैं क्या करूँ? मैंने उनके पैसे तो ले लिए, लेकिन सामान नहीं पहुँचाया।”

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था। वे सेमिओटेक—मुझे यकीन है कि वे वही थे—सभ्य तो थे नहीं। वे जब मन करता, जो मन करता, वही करते थे। इसीलिए कोई भी उनके तौर-तरीकों को नहीं समझ पाया। हो सकता है वे इस आदमी की आंखें निकाल दें, या हो सकता है उसे बाकी के पचास हजार येन देकर अगली बार बेहतर किस्मत की कामना करें।

“तुम्हारा कहना है कि एक आदमी सचमुच में एक गोरिल्ला है?” मैंने पूछा।

“बिल्कुल सही। एक राक्षस। दूसरा आदमी छोटा है, लगभग डेढ़ मीटर का; उसने खास तौर पर सिलवाया हुआ सूट पहना हुआ था। दोनों ही बेहद सख्त मिजाज के लग रहे थे।”

मैंने उस आदमी को पार्किंग गैराज से इमारत से बाहर निकलने का निर्देश दिया। पीछे की तरफ एक संकरा रास्ता था, जिसे पहचानना आसान नहीं था। शायद वह बिना किसी घटना के बच निकलेगा।

गैस निरीक्षक ने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद। कृपया मेरी कंपनी को इसके बारे में मत बताना।"
ठीक है, मैंने उससे कहा। फिर मैंने उसे बाहर धकेल दिया, दरवाजा बंद कर दिया और कुंडी लगा दी। मैं रसोई में गया और प्लास्टिक की थैली से खोपड़ी निकाल ली। खैर, कम से कम मुझे एक बात तो पता चल गई: सेमिओटेक लोगों को खोपड़ी चाहिए थी।
मैंने हालात पर गौर किया। मेरे पास खोपड़ी तो थी, लेकिन मुझे उसका मतलब नहीं पता था। उन्हें उसका मतलब पता था—या शायद थोड़ा-बहुत अंदाज़ा था—लेकिन उनके पास खोपड़ी नहीं थी। दोनों बराबर थे। इस समय मेरे पास दो विकल्प थे: पहला, सिस्टम को सब कुछ समझा देना ताकि वे मुझे सेमियोटेक से बचा सकें और खोपड़ी की सुरक्षा कर सकें; या दूसरा, उस मोटी लड़की से संपर्क करके खोपड़ी के बारे में सारी जानकारी हासिल कर लेना।
मुझे पहला विकल्प पसंद नहीं आया। उसमें बेवजह की पूछताछ और जांच-पड़ताल होती। बड़ी-बड़ी संस्थाओं से मेरा तालमेल नहीं बैठता। वे बहुत कठोर होती हैं, बहुत समय बर्बाद करती हैं और उनमें बहुत सारे मूर्ख लोग होते हैं।
लेकिन दूसरा विकल्प नामुमकिन था। मुझे नहीं पता था कि उस मोटी लड़की से कैसे संपर्क करूं। मेरे पास उसका फ़ोन नंबर नहीं था। बेशक, मैं उस इमारत में जा सकता था, लेकिन अब अपने अपार्टमेंट से बाहर निकलना खतरनाक था। और मैं उस कड़ी सुरक्षा वाली इमारत में कैसे घुस पाता?
मैंने मन बना लिया: मैं कुछ नहीं करूंगा।
मैंने स्टेनलेस स्टील का चिमटा उठाया और एक बार फिर खोपड़ी के ऊपरी हिस्से पर हल्के से थपथपाया। उससे पहले जैसी ही कराह निकली। एक खोखली, दयनीय चीख, मानो वह जीवित हो। यह कैसे संभव था? मैंने खोपड़ी को उठाया। मैंने उसे फिर से थपथपाया। वही कराह फिर। गौर से देखने पर, ऐसा लगा कि आवाज़ खोपड़ी के किसी खास बिंदु से आ रही है।
मैंने बार-बार थपथपाया और आखिरकार सही जगह का पता लगा लिया। कराहने की आवाज़ माथे के बीचोंबीच लगभग दो सेंटीमीटर व्यास के एक उथले गड्ढे से आ रही थी। मैंने अपनी उंगली का सिरा उस गड्ढे में दबाया। वह थोड़ा खुरदुरा लगा। मानो कुछ टूट गया हो। जैसे कोई सींग...
एक सींग?
अगर यह सचमुच सींग होता, तो यह एक सींग वाला जानवर होता। एक सींग वाला जानवर? मैंने स्तनधारियों के सचित्र एटलस को फिर से पलटा, यह देखने के लिए कि क्या कोई ऐसा स्तनधारी है जिसके माथे के बीचोंबीच एक सींग हो। गैंडा एक संभावना थी, लेकिन यह गैंडे की खोपड़ी नहीं थी। आकार और बनावट दोनों ही गलत थे।
मैंने फ्रिज से कुछ बर्फ निकाली और अपने लिए एक ओल्ड क्रो बियर डाली। दिन ढल रहा था, और एक ड्रिंक पीना अच्छा विचार लगा। मैंने एस्पैरगस का एक डिब्बा खोला, जो मुझे पसंद है। मैंने क्रिस्पब्रेड पर कुछ स्मोक्ड ऑयस्टर्स का कैनैपी बनाया। मैंने एक और व्हिस्की पी।

ठीक है। सुविधा के लिए, मैंने इस दूर की परिकल्पना पर विचार करने के लिए सहमति व्यक्त की कि उक्त खोपड़ी का मालिक संभवतः एक यूनिकॉर्न हो सकता है।
मेरे पास और क्या सबूत था?
मेरे हाथों पर एक यूनिकॉर्न की खोपड़ी थी।
वाह, मैंने सोचा, बस वाह! ये सब अजीबोगरीब चीजें मेरे साथ क्यों हो रही थीं? मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझे ये सब झेलना पड़ रहा था? मैं तो बस एक सीधा-सादा, व्यावहारिक सोच वाला, अकेला रहने वाला कैलकुटेक था। मैं न तो बहुत महत्वाकांक्षी था, न ही लालची। मेरा कोई परिवार, दोस्त या प्रेमी नहीं था। मैं पैसे बचाता था। रिटायर होने के बाद, मैं बसने और सेलो या ग्रीक सीखने की योजना बना रहा था। आखिर मैं इस सब झंझट में कैसे फंस गया?
दूसरी व्हिस्की पीने के बाद, मैंने टेलीफोन बुक खोली और नंबर डायल किया। "रेफरेंस डेस्क, कृपया," मैंने कहा।
दस सेकंड बाद, लंबे बालों वाली लाइब्रेरियन फोन पर थी।
मैंने कहा, "स्तनधारियों का सचित्र एटलस यहाँ है।"
“नमस्ते। आइसक्रीम के लिए धन्यवाद,” उसने कहा।
मैंने कहा, "स्वागत है। लेकिन क्या मैं आपसे एक और मदद मांग सकता हूँ?"
“एक एहसान?” उसने कहा। “यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार का एहसान है।”
"क्या आप अपने पास मौजूद यूनिकॉर्न के बारे में जानकारी ढूंढ सकते हैं?"
“यूनि-नी-कॉर्न?” उसने दोहराया।
"क्या यह पूछना बहुत बड़ी बात है?"
सन्नाटा। शायद वह अपने होंठ काट रही थी।
"क्या आप चाहते हैं कि मैं गेंडा के बारे में जानकारी ढूंढूं?"
मैंने कहा, "सब कुछ।"
“प्लीज़, चार बजकर पंद्रह मिनट हो गए हैं। लाइब्रेरी बंद होने के समय के आसपास बहुत भीड़ हो जाती है। आप कल सुबह सबसे पहले क्यों नहीं आते? तब आप यूनिकॉर्न या ट्राइकॉर्न या जो भी आपको पसंद हो, उसके बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं।”
“इसमें देरी नहीं की जा सकती। मुझे खेद है कि यह बेहद जरूरी है।”
“अरे, सच में?” उसने कहा। “कितनी जल्दी है?”
मैंने कहा, "यह विकास का मामला है।"
“विकास?” वह मानो चौंक गई। “विकास से आपका मतलब लाखों वर्षों में होने वाले विकास से तो नहीं है? अगर मैं गलत समझ रही हूँ तो माफ़ कीजिएगा, लेकिन फिर आपको इतनी जल्दी चीज़ों की ज़रूरत क्यों है? एक दिन और क्या फर्क पड़ता है?”

“विकास की प्रक्रिया लाखों वर्षों में पूरी होती है और कुछ प्रक्रियाएँ केवल तीन घंटों में। मैं फ़ोन पर इसे समझा नहीं सकता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बात पर विश्वास करें, यह बेहद ज़रूरी है। इसका मानव विकास के अगले चरण पर असर पड़ेगा।”
“जैसे 2001: ए स्पेस ओडिसी में?”
“बिल्कुल सही,” मैंने कहा। मैंने इसे वीडियो पर अनगिनत बार देखा था।
वह कुछ नहीं बोली।
“क्या मैं यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि मैं किसी तरह का पागल हूँ या एक हानिरहित सनकी?” मैंने एक कोशिश की।
“तुम्हें मिल गया,” उसने कहा।
मुझे नहीं पता कि मैं आपको कैसे मनाऊँगा, लेकिन मैं सचमुच पागल नहीं हूँ। शायद थोड़ा संकीर्ण सोच वाला या जिद्दी हो सकता हूँ, लेकिन पागल तो बिल्कुल नहीं हूँ।
“हम्म,” उसने बस इतना ही कहा। “अच्छा, तुम तो सामान्य तरीके से बात करते हो। और तुम कुछ अजीब भी नहीं लगे। तुमने मुझे आइसक्रीम भी खिलाई। ठीक है, साढ़े छह बजे लाइब्रेरी के सामने वाले कैफे में मिलना। मैं तुम्हें किताबें दे दूंगी। ठीक है?”
“दुर्भाग्यवश, यह इतना आसान नहीं है। मैं, उह, विस्तार से नहीं बता सकती, लेकिन मैं अभी अपने घर को बिना किसी की देखरेख के नहीं छोड़ सकती। क्षमा करें, लेकिन—”
“मतलब...,” उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। मैं उसके नाखूनों से उसके सामने के दांतों को थपथपाने की आवाज़ सुन सकती थी। “मुझे यह बात साफ-साफ समझने दो। तुम चाहते हो कि मैं किताबें तुम्हारे दरवाजे तक लाऊं? तुम पागल हो गए होगे।”
मैंने झिझकते हुए कहा, "यही सामान्य विचार है। हालांकि, मैं कोई मांग नहीं कर रहा हूँ, मैं केवल अनुरोध कर रहा हूँ।"
आप बहुत ज्यादा मांग रहे हैं।
“मुझे पता है, मुझे पता है,” मैंने कहा। “लेकिन आपको विश्वास नहीं होगा कि क्या-क्या चल रहा है।”
एक और लंबा सन्नाटा।
“मैं इस पुस्तकालय में पाँच साल से काम कर रही हूँ और आज तक मुझे आप जैसा धृष्ट उधारकर्ता नहीं मिला,” वह गुस्से से बोली। “कोई भी किताबों को हाथ से पहुँचाने के लिए नहीं कहता। और आपका कोई पिछला रिकॉर्ड भी नहीं है! क्या आपको नहीं लगता कि आप कुछ ज़्यादा ही मनमानी कर रहे हैं?”
"दरअसल, मैं भी यही सोचता हूँ। मुझे बहुत खेद है। मुझे पता है कि यह बहुत असामान्य है, लेकिन मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है।"
“मुझे नहीं पता मैं ऐसा क्यों कर रही हूँ,” उसने कहा, “लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप मुझे अपने घर का रास्ता बताना चाहेंगे?”

8

कर्नल

"मुझे शक है कि तुम अपनी खोई हुई परछाई वापस पा सकते हो," कर्नल ने अपनी कॉफी की चुस्की लेते हुए कहा।

आदेश देने के वर्षों के अनुभव वाले अधिकांश व्यक्तियों की तरह, वे भी सीधे खड़े होकर और ठुड्डी अंदर की ओर दबाकर बोलते हैं। यह उनकी बड़ी खूबी है कि सैन्य सेवा में उनके लंबे करियर ने उन्हें अहंकारी नहीं बनाया है। बल्कि, इसने उनके जीवन को अनुशासन प्रदान किया है, साथ ही कई पदक भी दिलाए हैं। अत्यंत शांत और विचारशील, कर्नल मेरे लिए एक आदर्श पड़ोसी हैं। वे एक अनुभवी शतरंज खिलाड़ी भी हैं।

“जैसा कि द्वारपाल ने आपको चेतावनी दी थी,” बूढ़ा अधिकारी आगे कहता है, “इस शहर की एक शर्त यह है कि आप परछाई पर भी अधिकार नहीं रख सकते। दूसरी शर्त यह है कि आप शहर छोड़कर नहीं जा सकते। जब तक शहर के चारों ओर दीवार बनी हुई है, तब तक आप ऐसा नहीं कर सकते।”

“मुझे नहीं पता था कि मैं अपनी परछाई हमेशा के लिए खो दूंगी,” मैं कहती हूं। “मैंने सोचा था कि यह अस्थायी होगा। मुझे इसके बारे में किसी ने नहीं बताया था।”

“इस कस्बे में कोई आपको कुछ नहीं बताता,” कर्नल ने कहा। “इस कस्बे के अपने नियम हैं। इसे इस बात की कोई परवाह नहीं कि आप क्या जानते हैं या क्या नहीं जानते। अफसोस की बात है...”

मेरी परछाई का क्या होगा?

“कुछ भी नहीं। यह इंतजार करता है और फिर मर जाता है। क्या आपने अपने आने के बाद से इसे देखा है?”

“नहीं। मैंने कई बार कोशिश की और गेटकीपर ने मुझे अंदर नहीं जाने दिया। उसने सुरक्षा कारणों का हवाला दिया।”

“अनुमानित ही था,” कर्नल ने सिर हिलाते हुए कहा। “द्वारपाल को परछाइयों की रखवाली का जिम्मा सौंपा गया है। पूरी जिम्मेदारी उसी पर है। द्वारपाल एक सख्त मिजाज का आदमी हो सकता है; बेवजह कठोर, अपनी गलतियों को अनदेखा करने वाला। आपके पास बस यही उपाय है कि आप उसके मिजाज बदलने का इंतजार करें।”

“तो मैं इंतजार करूंगा,” मैंने कहा। “लेकिन उसे मुझसे डरने की क्या जरूरत है?”

कर्नल अपनी कॉफ़ी खत्म करते हैं, फिर अपना मुँह पोंछने के लिए एक रुमाल निकालते हैं। कपड़े का वह सफ़ेद चौकोर टुकड़ा, उनकी वर्दी की तरह, घिसा हुआ है लेकिन साफ़ और इस्त्री किया हुआ है।

उसे डर है कि तुम और तुम्हारी परछाई फिर से एक हो जाओगे।

यह सुनकर उनका ध्यान फिर से शतरंज के बोर्ड पर केंद्रित हो जाता है। यह शतरंज मेरे जाने-पहचाने खेल से मोहरों और उनकी चालों में भिन्न है। इसीलिए बूढ़ा अधिकारी हमेशा जीतता है।
"बंदर ने महायाजक का पद हथिया लिया, तुम्हें पता है?"
“आगे बढ़ो,” मैंने कहा। मैंने बंदर के पीछे हटने के रास्ते को ढकने के लिए एक दीवार को आगे बढ़ा दिया।
कर्नल सिर हिलाते हैं, फिर बोर्ड पर एक बार फिर से नज़र डालते हैं। भाग्य की लहरें लगभग जीत को उस बूढ़े अधिकारी के कदमों में ला चुकी हैं। फिर भी, वह जल्दबाजी में मैदान में नहीं उतरते, बल्कि एक के बाद एक रणनीति बनाते रहते हैं। उनके लिए खेल प्रतिद्वंद्वी को हराना नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं को चुनौती देना है।
“अपनी परछाई को त्याग देना और उसे यूँ ही मरने देना आसान नहीं है,” वह कहता है, और बड़ी कुशलता से अपने नाइट को प्राचीर और मेरे राजा के बीच ले आता है। इससे मेरा राजा असुरक्षित हो जाता है। तीन चालों में उसे चेकमेट मिल जाएगा।
“नहीं, यह आसान नहीं है,” कर्नल ने ज़ोर देकर कहा। “दर्द तो सबके लिए एक जैसा ही होता है, हालाँकि किसी मासूम बच्चे से, जिसका उससे कोई लगाव नहीं है, उसकी परछाई छीनना एक बात है और किसी बूढ़े मूर्ख से ऐसा करना बिलकुल अलग बात है। जब मेरी परछाई को मौत के घाट उतारा गया, तब मैं 65 वर्ष का था। उस उम्र तक तो हम दोनों ने एक साथ पूरा जीवन बिता लिया था।”
"एक बार परछाई हट जाने के बाद वह कितने समय तक जीवित रहती है?"
“यह परछाई पर निर्भर करता है,” बूढ़े अधिकारी ने कहा। “कुछ परछाइयाँ उपयुक्त होती हैं और कुछ नहीं। इस कस्बे में कटी हुई परछाइयाँ ज़्यादा दिन नहीं टिकतीं। यहाँ का मौसम कठोर है और सर्दियाँ लंबी होती हैं। बहुत कम परछाइयाँ वसंत ऋतु देख पाती हैं।”
मैं शतरंज की बिसात का अध्ययन करता हूँ और हार स्वीकार करता हूँ।
“आप पाँच चालें हासिल कर सकते हैं,” कर्नल कहते हैं। “अंत तक लड़ना सार्थक है। पाँच चालों में आपका प्रतिद्वंदी गलती कर सकता है। कोई भी युद्ध तब तक जीता या हारा नहीं जाता जब तक अंतिम लड़ाई समाप्त न हो जाए।”
“तो मुझे एक पल दीजिए,” मैंने कहा।
जब मैं अपने विकल्पों पर पुनर्विचार कर रहा था, कर्नल खिड़की के पास गए और बाहर झाँकने के लिए मोटे पर्दों को थोड़ा सा हटाया।
“ये कुछ सप्ताह आपके लिए सबसे कठिन होंगे। यह टूटी हुई हड्डियों की तरह ही है। जब तक वे जुड़ नहीं जातीं, आप कुछ भी नहीं कर सकते। मेरा विश्वास कीजिए।”
"क्या आपका मतलब यह है कि मैं इसलिए चिंतित हूं क्योंकि मेरी परछाई अभी तक मरी नहीं है?"

“हाँ,” बूढ़े अधिकारी ने सिर हिलाते हुए कहा। “मुझे भी वो एहसास याद है। आप बीते हुए कल और आने वाले कल के बीच फँसे होते हैं। आप खोया हुआ महसूस करते हैं। मेरी बात याद रखना: जैसे ही हड्डियाँ जुड़ जाएँगी, आप फ्रैक्चर को भूल जाएँगे।”
"आपका मतलब है, जैसे ही मेरा दिमाग गायब हो जाएगा?"
कर्नल कोई जवाब नहीं देते।
“इतने सारे सवाल पूछने के लिए मुझे माफ़ कीजिएगा,” मैंने कहा। “मुझे इस कस्बे के बारे में कुछ नहीं पता। यह कैसे चलता है, इसे दीवार की ज़रूरत क्यों है, रोज़ाना जानवरों को अंदर-बाहर क्यों लाया-ले जाया जाता है। मुझे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आता। आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिनसे मैं पूछ सकता हूँ।”
“मुझे भी सारे नियम नहीं पता,” बूढ़ा अधिकारी धीमी आवाज़ में बोला। “कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें समझाया नहीं जा सकता और न ही समझाया जाना चाहिए। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। यह शहर अपने तरीके से निष्पक्ष है। आपको जिन चीजों की ज़रूरत है, जो बातें आपको जाननी ज़रूरी हैं, शहर एक-एक करके आपके सामने रखेगा। मेरी बात ध्यान से सुनो: यह शहर परिपूर्ण है। और परिपूर्ण से मेरा मतलब है, संपूर्ण। इसमें सब कुछ है। अगर आप यह नहीं देख सकते, तो इसमें कुछ भी नहीं है। एक परिपूर्ण शून्य। इसे अच्छी तरह याद रखना। कोई भी आपको बस इतना ही बता सकता है; बाकी आपको खुद सीखना होगा। अपनी आँखें खोलो, अपने कान तेज़ करो, अपने दिमाग का इस्तेमाल करो। अगर आपके पास बुद्धि है, तो उसका इस्तेमाल तब तक करो जब तक कर सकते हो।”
यदि श्रमिक क्वार्टर, जहाँ लाइब्रेरियन रहते हैं, अतीत की भव्यता का प्रतीक है, तो दक्षिण-पश्चिम में फैला नौकरशाही क्वार्टर एक ऐसी जगह है जहाँ रंग मुरझाकर सूखी रोशनी में समा रहे हैं। यहाँ वसंत का नजारा ग्रीष्म ऋतु में विलीन हो गया है, और फिर शीत ऋतु की हवाओं से नष्ट हो जाता है। पश्चिमी पहाड़ी के नाम से जानी जाने वाली हल्की ढलान पर दो मंजिला सरकारी आवासों की कतारें खड़ी हैं। ये इमारतें, जो मूल रूप से तीन परिवारों के रहने के लिए साझा प्रवेश कक्ष वाले आवास थे, सफेद रंग से रंगी हुई हैं। साइडिंग, दरवाजे और खिड़की के फ्रेम—हर चीज सफेद है। इन सरकारी आवासों में से किसी में भी झाड़ियाँ नहीं हैं, केवल छोटे बरामदों के नीचे संकरी फूलों की क्यारियाँ हैं। फूलों की क्यारियों की सावधानीपूर्वक देखभाल की जाती है, वसंत में क्रोकस, पैंसी और गेंदा के फूल लगाए जाते हैं, और शरद ऋतु में कॉसमॉस के फूल। खिले हुए फूल इमारतों को और भी भद्दा बना देते हैं।
पहाड़ी पर टहलते हुए, कोई इसकी पुरानी शान की कल्पना कर सकता है: बच्चे गलियों में खुशी से खेलते हुए, हवा में पियानो का संगीत गूंजता हुआ, गरमागरम खाने की खुशबू। यादें मेरे अस्तित्व के उन दरवाजों से झाँकती हैं जिन्हें मैं मुश्किल से ही महसूस कर पाता हूँ।
बाद में यही ढलान नौकरशाही क्वार्टर बन गया, जो नाम से ही स्पष्ट है कि सरकारी अधिकारियों का इलाका था, जहाँ साधारण दर्जे के अधिकारी रहते थे। वे भी चले गए, लेकिन कहाँ?

नौकरशाहों के बाद सेवानिवृत्त सैनिक आए। अपनी परछाइयों को त्यागकर, जैसे कीड़ों के खोल उतर जाते हैं, वैसे ही वे भी हवा से भरी पश्चिमी पहाड़ी पर अपने-अपने अंत की ओर बढ़ रहे हैं। रक्षा करने के लिए कुछ खास बचा न होने के कारण, वे एक घर में आधा दर्जन बूढ़े नौकरों की तरह रहते हैं।

द्वारपाल ने मुझे बताया कि मुझे इन सरकारी आवासों में से एक में अपना कमरा ढूंढना है। मेरे साथ रहने वाले लोग कर्नल, उनके अधीन चार कमीशन प्राप्त अधिकारी और एक सार्जेंट थे, जो खाना बनाते और घर के काम करते थे। कर्नल हर चीज़ पर फैसला सुनाते थे, जैसा कि सेना में उनका कर्तव्य था। ये पेशेवर सैनिक कई युद्ध तैयारियों और युद्धाभ्यासों, क्रांतियों और प्रतिक्रांतियों और सीधे युद्धों से परिचित रहे हैं। वे लोग जिन्होंने कभी परिवार नहीं चाहा, अब अकेले बूढ़े हो चुके हैं।

हर सुबह जल्दी उठकर, वे नाश्ता जल्दी-जल्दी निपटाते हैं और फिर मानो किसी मौन आदेश से अपने-अपने कामों पर निकल पड़ते हैं। कोई इमारत से उखड़ता हुआ पेंट खुरचता है, कोई फर्नीचर ठीक करता है, कोई पहाड़ी से नीचे वैगन ले जाकर राशन लाता है। सुबह के काम पूरे होने पर, वे फिर से इकट्ठा होकर बाकी का दिन धूप में बैठकर बीते अभियानों की यादें ताजा करते हैं।

मुझे जो कमरा दिया गया है, वह ऊपरी मंजिल पर है और पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए है। सामने की पहाड़ियों के कारण दृश्य काफी हद तक अवरुद्ध है, हालांकि नदी और घंटाघर दिखाई देते हैं। कमरे की प्लास्टर की दीवारें दागदार हैं, खिड़कियों की चौखटें धूल से भरी हैं। कमरे में एक पुराना पलंग, एक छोटी खाने की मेज और दो कुर्सियाँ हैं। खिड़कियों पर फफूंदी लगे पर्दे लटके हैं। फर्श की लकड़ियाँ बुरी तरह क्षतिग्रस्त हैं और चलने पर चरमराती हैं।

सुबह होते ही कर्नल बगल वाले कमरे से बाहर आते हैं। हम साथ में नाश्ता करते हैं, फिर एक अंधेरे, पर्दे वाले कमरे में शतरंज खेलने चले जाते हैं। दिन बिताने का इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है।

“यह बहुत निराशाजनक होगा। तुम्हारे जैसे नौजवान को इतने खूबसूरत दिन में घर के अंदर बंद नहीं रहना चाहिए,” कर्नल ने कहा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

“हालांकि मुझे यह कहना होगा कि शतरंज का साथी पाकर मुझे खुशी है। बाकी पुरुषों को खेल में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे लगता है कि इस उम्र में शतरंज खेलने की इच्छा रखने वाला मैं अकेला ही हूं।”

"मुझे बताओ, तुमने अपनी परछाई क्यों त्याग दी?"

बूढ़ा अधिकारी खिड़की से बाहर निकलने से पहले, पर्दों पर पड़ रही धूप से झुलसी अपनी उंगलियों को देखता है और फिर मेज के उस पार जाकर दोबारा बैठ जाता है।

काश मैं कह पाता। शायद मैंने इस शहर की रक्षा में इतना लंबा समय बिताया कि मैं इसे छोड़ नहीं सका। अगर मैं चला जाता, तो मेरा पूरा जीवन व्यर्थ हो जाता। बेशक, अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

क्या आपको कभी अपनी परछाई को छोड़ने का पछतावा होता है?

“मुझे कोई पछतावा नहीं है,” बूढ़े अधिकारी ने सिर हिलाते हुए कहा। “मैंने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया जिसका मुझे पछतावा हो।”

मैं अपने प्राचीर से उसके बंदर को कुचल देता हूँ, जिससे मेरे राजा के लिए रास्ता खुल जाता है।

“अच्छा कदम,” कर्नल ने कहा। “दीवार घुसपैठ से बचाती है और राजा को मुक्त करती है। साथ ही, इससे मेरे नाइट को अधिक मारक क्षमता मिलती है।”

जब तक बूढ़ा अधिकारी अपनी अगली चाल के बारे में सोच रहा है, मैं कॉफी के एक नए बर्तन के लिए पानी उबाल रहा हूँ।

9

भूख, निराशा, लेनिनग्राद

उसके आने का इंतज़ार करते हुए मैंने रात का खाना बनाया। मैंने उमेबोशी नमक बेर को ओखली और मूसल में पीसकर खट्टी-मीठी चटनी बनाई; कुछ सार्डिन मछलियों को अबुरा-एज टोफू पफ्स के साथ कद्दूकस किए हुए यामा-इमो तारो के घोल में तला; और अजवाइन और गोमांस का एक साइड डिश बनाया। कुल मिलाकर, यह एक बढ़िया सा खाना था।

मेरे पास थोड़ा समय था, इसलिए मैंने एक बियर पीते हुए सोया सॉस में म्योगा (जंगली अदरक) और हरी बीन्स को टोफू-तिल की चटनी के साथ पकाया। उसके बाद मैं अपने बिस्तर पर लेट गया, छत को निहारता रहा और पुराने रिकॉर्ड सुनता रहा।

सात बज चुके थे और बाहर घना अंधेरा था। फिर भी उसका कोई अता-पता नहीं था। शायद उसने अपना इरादा बदल लिया और न आने का फैसला किया। भला मैं उसे दोष कैसे दे सकता हूँ? समझदारी तो यही होती कि वह न आती।

फिर, जैसे ही मैं अगला रिकॉर्ड चुन रहा था, दरवाजे की घंटी बजी। मैंने फिशआई लेंस से देखा, और वहाँ पुस्तकालय वाली महिला किताबों का ढेर लिए खड़ी थी। मैंने दरवाजा खोला, जबकि उसमें अभी भी चेन लगी हुई थी।

मैंने पूछा, "क्या आपको हॉल में कोई घूमता हुआ दिखाई दे रहा है?"

“एक भी नहीं,” उसने कहा।

मैंने चेन खोली, उसे अंदर आने दिया और जल्दी से दरवाजा दोबारा बंद कर दिया।

“कहीं से अच्छी खुशबू आ रही है,” उसने कहा। “क्या मैं रसोई में झाँक सकती हूँ?”

“बिल्कुल आगे बढ़िए। लेकिन क्या आपको यकीन है कि प्रवेश द्वार के आसपास कोई अजीबोगरीब लोग नहीं घूम रहे थे? कोई सड़क की मरम्मत तो नहीं कर रहा था, या बस खड़ी कार में बैठा तो नहीं था?”

“ऐसा कुछ नहीं,” उसने रसोई की मेज पर किताबें पटकते हुए कहा। फिर उसने चूल्हे पर रखे हर बर्तन का ढक्कन उठाया। “क्या तुम ये सब खुद बनाते हो?”

“ज़रूर। अगर आप चाहें तो मैं कुछ परोस सकता हूँ। वैसे तो यह रोज़मर्रा का खाना ही होगा।”

बिलकुल नहीं। मुझे इस तरह का खाना बहुत पसंद है।

मैंने रसोई की मेज पर बर्तन लगा दिए।

हम खाने के लिए बैठ गए, और मैं विस्मय से देखता रहा कि वह कितनी सहजता से सारा खाना चट कर गई। उसकी भूख वाकई अद्भुत थी।

मैंने अपने लिए एक बड़ा सा ओल्ड क्रो बियर बनाया, अत्सु-एज फ्राइड टोफू का एक टुकड़ा हल्का सा भून लिया और उस पर कद्दूकस की हुई मूली डाल दी। मैंने उसे भी एक ड्रिंक ऑफर की, लेकिन उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी।

“क्या मुझे थोड़ा सा अत्सु-एज मिल सकता है?” उसने पूछा। मैंने बचा हुआ आधा ब्लॉक उसकी तरफ खिसका दिया और बस अपना बॉर्बन पीता रहा।

मैंने कहा, "अगर आपको पसंद हो तो चावल हैं। और मैं झटपट मिसो सूप बना सकती हूँ।"

“शानदार!” उसने कहा।

मैंने सूखे बोनिटो मछली का कत्सुओबुशी शोरबा तैयार किया और उसमें वाकामे समुद्री शैवाल और हरे प्याज मिलाकर मिसो सूप बनाया। मैंने इसे चावल और उमेबोशी के साथ परोसा। उसने एक बार फिर सब कुछ झटपट चट कर दिया। बस कुछ बेर की गुठलियाँ ही बची थीं।

फिर उसने संतुष्टि भरी आह भरी। “हम्म, बहुत स्वादिष्ट था। शेफ को मेरी बधाई,” उसने कहा।

मैंने अपने जीवन में कभी इतनी दुबली-पतली काया वाली किसी को इतने भयानक ढंग से खाते नहीं देखा था। रसोइया होने के नाते, मुझे बहुत संतुष्टि हुई, और मुझे उसकी तारीफ करनी ही पड़ी—उसने अपना काम बड़ी खूबसूरती से किया था। मैं अभिभूत हो गया। और शायद थोड़ा घृणा भी हुई।

मैंने झट से पूछ लिया, "मुझे बताओ, क्या तुम हमेशा इतना ही खाते हो?"

"जी हां, बिल्कुल। मेरे लिए तो यह बिल्कुल सामान्य बात है," उसने बिना किसी झिझक के कहा।

लेकिन तुम तो बहुत पतली हो।

“पेट फूल गया है,” उसने स्वीकार किया। “मैं कितना भी खा लूं, मेरा वजन नहीं बढ़ता।”

मैंने कहा, "खाने का बिल तो काफी ज्यादा आएगा।" सच तो यह था कि उसने कल का खाना एक ही बार में पेट में गैस भरकर खा लिया था।

“यह डरावना है,” उसने कहा। “मेरी तनख्वाह का अधिकांश हिस्सा मेरे पेट में ही खर्च हो जाता है।”

मैंने उसे फिर से कुछ पीने के लिए दिया, और इस बार वह बीयर के लिए मान गई। मैंने फ्रिज से एक बीयर निकाली और एहतियात के तौर पर दो फ्रैंकफर्टर भी निकाल लिए, जिन्हें मैंने फ्राइंग पैन में डाल दिया। अविश्वसनीय, लेकिन मेरे द्वारा बचाए गए दो फ्रैंकफर्टर को छोड़कर, उसने बाकी सब चट कर दिया। इस लड़की की भूख सचमुच मशीन गन जैसी है!

आखिरी उपाय के तौर पर, मैंने तैयार आलू का सलाद परोसा, फिर झटपट वाकामे-टूना का एक कॉम्बो भी बना दिया। उसने अपनी दूसरी बियर के साथ ही उसे झटपट खा लिया।

“वाह, ये तो जन्नत है!” उसने धीरे से कहा। मैंने अभी कुछ खाया भी नहीं था और अब तक मैं अपनी तीसरी ओल्ड क्रो ऑन द रॉक्स पी रहा था।

“जब आप ये सब कर ही रही हैं, तो मिठाई के लिए चॉकलेट केक भी है,” मैंने हार मान ली। बेशक, उसने केक खा लिया। मैं अविश्वास से देखती रही, मानो खाना उसके गले में अटक गया हो।
शायद इसी वजह से मुझे इरेक्शन नहीं हो रहा था।
टोक्यो ओलंपिक वर्ष के बाद यह पहली बार था जब मैं उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाया था।
"कोई बात नहीं, परेशान होने की कोई बात नहीं है," उसने मुझे दिलासा देने की कोशिश की।
मिठाई के बाद, हमने एक बार फिर बोरबन और बियर पी, कुछ गाने सुने, फिर बिस्तर पर लेट गए। और जैसा कि मैंने कहा, मुझे इरेक्शन नहीं हुआ।
उसका नग्न शरीर मेरे शरीर से बिल्कुल सटा हुआ था। वह वहीं लेटी हुई मेरी छाती सहला रही थी। "ऐसा सबके साथ होता है। तुम्हें इस बात पर इतना परेशान नहीं होना चाहिए।"
लेकिन जितना ज़्यादा वह मुझे खुश करने की कोशिश करती, उतना ही यह बात मेरे लिए और भी स्पष्ट हो जाती कि मैं असफल हो गया था। मुझे याद आया कि मैंने कहीं पढ़ा था कि शिथिल लिंग, उत्तेजित लिंग से ज़्यादा आकर्षक होता है। लेकिन किसी तरह, इन परिस्थितियों में, यह बात मुझे ज़रा भी सांत्वना नहीं दे पाई।
“आखिरी बार आपने किसी के साथ कब शारीरिक संबंध बनाए थे?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "शायद दो हफ्ते पहले।"
और उस समय सब कुछ ठीक रहा था?
“बेशक,” मैंने कहा। क्या आजकल हर किसी को मेरी यौन जीवन पर सवाल उठाने का अधिकार है?
"आपकी गर्लफ्रेंड?"
“एक वेश्या।”
“एक वेश्या? क्या आपको, मैं इसे कैसे कहूँ, अपराधबोध महसूस नहीं होता?”
"अच्छा नहीं।"
“और उसके बाद से कुछ नहीं हुआ...?”
यह किस तरह की पूछताछ थी? “नहीं,” मैंने कहा। “मैं काम में इतना व्यस्त था कि मुझे अपने ड्राई क्लीनिंग के कपड़े लेने का भी समय नहीं मिला, हस्तमैथुन करने की तो बात ही छोड़ो।”
"शायद यही है," उसने पूरे यकीन के साथ कहा।
“संभवतः क्या है?”
“अत्यधिक काम। मेरा मतलब है, अगर आप सचमुच इतने व्यस्त थे...”
"शायद ऐसा ही हो।" शायद इसका कारण यह था कि मैं पिछली रात छब्बीस घंटे सोया नहीं था।
आपका पेशा क्या है?
“ओह, कंप्यूटर से संबंधित काम।” मेरा हमेशा का जवाब होता था। यह झूठ नहीं था, और चूंकि ज्यादातर लोग कंप्यूटर के बारे में ज्यादा नहीं जानते, इसलिए वे आमतौर पर आगे कुछ नहीं पूछते थे।

“इसमें घंटों दिमागी कसरत करनी पड़ती होगी। मुझे लगता है कि तनाव बढ़ता ही जाता है और आपको अस्थायी रूप से काम करने में असमर्थ बना देता है।”
यह काफी हद तक ठीक-ठाक स्पष्टीकरण था। चारों ओर इतनी अफरा-तफरी मची हुई थी। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि मैं नपुंसक से भी बदतर हालत में नहीं था।
"क्यों न तुम अपना कान मेरे पेट पर रखो?" उसने कहा और कंबल को बिस्तर के निचले हिस्से की ओर सरका दिया।
उसका शरीर सुडौल और खूबसूरत था। जरा भी चर्बी नहीं, उसके स्तन नाजुक कलियों जैसे थे। मैंने अपना कान उसकी नाभि के ऊपर के मुलायम, चिकने हिस्से पर रखा, जो आश्चर्यजनक रूप से अंदर मौजूद भोजन की मात्रा का जरा सा भी संकेत नहीं दे रहा था। यह हार्पो मार्क्स के उस जादुई कोट की तरह था, जो सामने दिख रही हर चीज को निगल जाता था।
“कुछ सुनाई दिया?” उसने पूछा।
मैंने अपनी सांस रोक ली और सुनने लगी। केवल उसके दिल की धीमी धड़कन की आवाज सुनाई दे रही थी।
मैंने कहा, "मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है।"
“क्या आपको मेरे पेट द्वारा इतना सारा खाना पचाने की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही?” उसने पूछा।
मुझे संदेह है कि पाचन क्रिया से कोई खास आवाज आती है। केवल पेट के रस ही चीजों को घोलते हैं। बेशक, कुछ पेरिस्टाल्टिक गतिविधि होनी चाहिए, लेकिन वह भी शांत ही होगी।
लेकिन मुझे सचमुच पेट में मरोड़ महसूस हो रही है। आप दोबारा क्यों नहीं सुनते?
मैं उसी स्थिति में संतुष्ट था। मैंने आलस्य से ठीक सामने के घने बालों के गुच्छे को देखा। मुझे पाचन क्रिया जैसी कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। मुझे 'द एनिमी बिलो' फिल्म का ऐसा ही एक दृश्य याद आया। मेरे कान के ठीक नीचे, उसका मजबूत पेट चुपके से पाचन क्रिया में लगा हुआ था, ठीक उसी तरह जैसे कर्ट जर्गेंस को ले जा रही उस यू-बोट में होता था।
मैंने हार मान ली और अपना सिर उसके शरीर से उठा लिया। मैं पीछे झुक गया और अपना हाथ उसके चारों ओर डाल दिया। मैंने उसके बालों की खुशबू महसूस की।
“क्या आपके पास टॉनिक वॉटर है?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "फ्रिज में।"
मुझे वोदका टॉनिक पीने की इच्छा हो रही है। क्या मैं पी सकता हूँ?
"क्यों नहीं?"
"क्या मैं आपके लिए एक बना सकता हूँ?"
"बिलकुल।"

वह बिस्तर से उठी और नग्न अवस्था में रसोई में जाकर दो वोदका टॉनिक बनाने लगी। जब वह ऐसा कर रही थी, मैंने अपना पसंदीदा जॉनी मैथिस का एल्बम लगा लिया। वही जिसमें 'टीच मी टुनाइट' गाना है। फिर मैं गुनगुनाते हुए वापस बिस्तर पर चला गया। मैं, मेरा ढीला लिंग और जॉनी मैथिस।

"आपकी उम्र कितनी है?" उसने पेय पदार्थ लेकर लौटते हुए पूछा।

मैंने कहा, "पैंतीस। आपका कितना?"

“लगभग तीस। मैं जवान दिखती हूँ, लेकिन असल में मैं उनतीस साल की हूँ,” उसने कहा। “सच कहूँ तो, क्या आप बेसबॉल खिलाड़ी हैं या कुछ और?”

मैं इतना हैरान हो गया कि मैंने वोदका टॉनिक को अपनी छाती पर थूक दिया।

मैंने कहा, "तुम्हें ऐसा विचार कहाँ से आया? मैंने तो पंद्रह साल से बेसबॉल को छुआ तक नहीं है।"

मुझे नहीं पता, मुझे लगा शायद मैंने आपका चेहरा टीवी पर देखा था। किसी खेल के दौरान। या शायद आप खबरों में थे?

"मैंने कभी कोई ऐसी घटना नहीं की जो समाचार योग्य हो।"

“एक विज्ञापन?”

“नहीं,” मैंने कहा।

“अच्छा, शायद वो तुम्हारा हमशक्ल था। तुम तो कंप्यूटर वाले इंसान जैसे बिल्कुल नहीं दिखते,” उसने रुकते हुए कहा। “तुम्हें समझना मुश्किल है। तुम विकासवाद और गेंडा की बातें करते रहते हो, और अपने साथ एक धारदार चाकू रखते हो।”

उसने फर्श पर पड़ी मेरी पैंट की ओर इशारा किया। चाकू मेरी पिछली जेब से बाहर निकला हुआ था।

“ओह,” मैंने कहा, “मेरे काम में, आप कितनी भी सावधानी बरतें, कम ही है। मैं डेटा प्रोसेस करता हूँ। बायोटेक्नोलॉजी वगैरह। इसमें कॉर्पोरेट हित भी शामिल हैं। आजकल डेटा की चोरी बहुत हो रही है।”

उसने एक शब्द भी नहीं छिपाया। "क्यों न हम अपने यूनिकॉर्न दोस्तों से निपटें? मुझे यहाँ बुलाने का आपका मूल उद्देश्य यही तो था, है ना?"

“अब जब आपने इसका जिक्र किया है,” मैंने कहा।

उसने मेरा हाथ छोड़ा और बिस्तर के पास रखी दो किताबें उठा लीं। एक थी बर्टलैंड कूपर की 'आर्कियोलॉजी ऑफ एनिमल्स' और दूसरी थी जॉर्ज लुइस बोर्जेस की 'बुक ऑफ इमेजिनरी बीइंग्स'।

“चलिए, मैं आपको संक्षेप में बता देती हूँ,” उसने शुरू किया। “बोर्जेस गेंडा को ड्रैगन और जलपरियों की तरह ही काल्पनिक मानते हैं। वहीं कूपर इस संभावना से इनकार नहीं करते कि गेंडा कभी अस्तित्व में रहे होंगे, और वे इस विषय को अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हैं। दुर्भाग्य से, दोनों के पास इस विषय पर बताने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं है। ड्रैगन और ट्रोल भी उनसे बेहतर हैं। मेरा अनुमान है कि गेंडा ने कभी ज़्यादा शोर नहीं मचाया होगा। पुस्तकालय में मुझे बस इतना ही पता चला।”

“बस इतना ही काफी है। मैं सच में इसकी सराहना करता हूँ। अब मेरी एक और गुजारिश है। क्या आप कुछ बेहतरीन अंश पढ़कर मुझे उनके बारे में बता सकते हैं?”
उन्होंने सबसे पहले काल्पनिक प्राणियों की पुस्तक खोली। और हमने उससे यह सीखा:
यूनिकॉर्न दो प्रकार के होते हैं: पश्चिमी प्रकार, जिसकी उत्पत्ति ग्रीस में हुई, और चीनी प्रकार। ये दिखने में और लोगों की धारणाओं में पूरी तरह भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, प्लिनी ने यूनानियों के यूनिकॉर्न का वर्णन इस प्रकार किया है:
उसका शरीर घोड़े जैसा, सिर हिरण जैसा, पैर हाथी जैसे और पूंछ सूअर जैसी है; वह भयानक ढंग से रंभाता है, उसके माथे के मध्य में एक काला गड्ढा है, जिसकी लंबाई दो क्यूबिट है: कहा जाता है कि इस जंगली जानवर को जीवित पकड़ना असंभव है।
इसके विपरीत, चीनी यूनिकॉर्न भी है:
इसका शरीर हिरण जैसा, पूंछ बैल जैसी और खुर घोड़े जैसे होते हैं। इसके माथे से निकला छोटा सींग मांस का बना होता है; इसकी पीठ पर पाँच मिश्रित रंगों का आवरण होता है, जबकि इसका पेट भूरा या पीला होता है।
अंतर केवल दिखावे का नहीं था। पूरब और पश्चिम चरित्र और प्रतीकों पर भी सहमत नहीं थे। पश्चिम में यूनिकॉर्न को क्रूर और आक्रामक माना जाता था। इसीलिए उसका सींग एक मीटर लंबा होता था। इसके अलावा, लियोनार्डो दा विंची के अनुसार, यूनिकॉर्न को पकड़ने का एकमात्र तरीका उसकी वासनाओं को वश में करना था। एक युवती को उसके सामने बिठा दिया जाता था और वह वासना से इतना व्याकुल हो जाता था कि हमला करना भूल जाता था और अपना सिर युवती की गोद में रख देता था। सींग का महत्व स्पष्ट है।
दूसरी ओर, चीनी यूनिकॉर्न एक शुभ प्रतीक माना जाता है। यह ड्रैगन, फीनिक्स और कछुए के साथ चार शुभ प्राणियों में शुमार है और तीन सौ पैंसठ स्थलीय प्राणियों में सर्वोच्च स्थान रखता है। स्वभाव से अत्यंत कोमल, यह इतनी सावधानी से चलता है कि छोटे से छोटा जीव भी सुरक्षित रहता है, और उगने वाली जड़ी-बूटियों के बजाय केवल सूखी घास खाता है। यह एक हजार वर्ष तक जीवित रहता है, और यूनिकॉर्न का दिखना किसी महान ऋषि के जन्म का संकेत माना जाता है। इसलिए हम पढ़ते हैं कि कन्फ्यूशियस की माता को गर्भ में पलते समय एक यूनिकॉर्न दिखाई दिया था।
सत्तर वर्ष बाद, कुछ शिकारियों ने एक किलिन (एक प्रकार का हिरण) को मार डाला, जिसके सींग पर अभी भी एक रिबन बंधा हुआ था जिसे कन्फ्यूशियस की माँ ने बाँधा था। कन्फ्यूशियस उस एक प्रकार के हिरण को देखने गए और रो पड़े क्योंकि उन्हें इस निर्दोष और रहस्यमय जानवर की मृत्यु में छिपी हुई बात का एहसास हुआ, और क्योंकि उस रिबन में उनका अतीत समाया हुआ था।
तेरहवीं शताब्दी में चीनी इतिहास में किलिन का फिर से उल्लेख मिलता है। भारत पर नियोजित आक्रमण की पूर्व संध्या पर, चंगेज खान के अग्रिम दस्ते को रेगिस्तान के बीच में एक गेंडा दिखाई देता है। इस गेंडे का सिर

घोड़े का और शरीर हिरण का है। इसकी खाल हरी है और यह मानवीय भाषा में बोलता है: "अब समय आ गया है कि तुम अपने स्वामी के राज्य में लौट जाओ।"

चंगेज़ खान के चीनी मंत्रियों में से एक ने परामर्श के बाद उन्हें समझाया कि यह जानवर जियाओ-शुई है, जो किलिन की एक किस्म है। उन्होंने कहा, “चार सौ वर्षों से महान सेना पश्चिमी क्षेत्रों में युद्ध कर रही है। रक्तपात से घृणा करने वाला स्वर्ग जियाओ-शुई के माध्यम से चेतावनी दे रहा है। ईश्वर की कृपा से साम्राज्य को बचाओ; संयम असीम आनंद देगा।” सम्राट ने अपनी युद्ध योजनाएँ छोड़ दीं।

पूर्व में शांति और सुकून; पश्चिम में आक्रामकता और वासना। फिर भी, यूनिकॉर्न एक काल्पनिक प्राणी बना हुआ है, एक ऐसी रचना जो किसी भी मूल्य को मूर्त रूप दे सकती है जिसे कोई भी व्यक्ति प्रदर्शित करना चाहे।

हालांकि, डॉल्फ़िन की एक प्रजाति है जिसे नारवाल या "समुद्री यूनिकॉर्न" कहा जाता है। इसमें सींग नहीं होता, बल्कि सिर के ऊपर से निकला हुआ जबड़े का एक बढ़ा हुआ नुकीला दांत होता है। इस "सींग" की औसत लंबाई ढाई मीटर होती है और यह ड्रिल जैसी घुमावदार संरचना से युक्त होता है। यह समुद्री जीव काफी दुर्लभ है और मध्ययुगीन अभिलेखों में इसका उल्लेख नहीं मिलता।

मेसोजोइक काल में यूनिकॉर्न से मिलते-जुलते अन्य स्तनधारी जीव मौजूद थे, लेकिन वे धीरे-धीरे विलुप्त हो गए।

उसने 'पशुओं का पुरातत्व' नामक पुस्तक उठाई और आगे पढ़ने लगी:

लगभग बीस मिलियन वर्ष पूर्व, मेसोज़ोइक काल के दौरान, उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप पर जुगाली करने वाले जानवरों की दो प्रजातियाँ पाई जाती थीं। एक है सिंटेतोकेरस, और दूसरी है कुरानोकेरस। दोनों के तीन सींग होते हैं, हालांकि स्पष्ट रूप से एक सींग स्वतंत्र होता है।

सिंटेतोकेरस एक छोटा घोड़ा और हिरण का मिला-जुला रूप है, जिसके दोनों कनपटी पर एक-एक सींग और नाक के सिरे पर एक लंबा, य-आकार का नुकीला सिरा होता है। कुरानोकेरस का चेहरा थोड़ा गोल होता है, और उसके सिर के ऊपर से हिरण जैसे दो सींग निकलते हैं, साथ ही एक अतिरिक्त सींग पीछे की ओर ऊपर और बाहर की ओर मुड़ा होता है। कुल मिलाकर, ये विचित्र जीव हैं।

स्तनधारी वर्ग में, एक सींग वाले या विषम संख्या में सींग वाले जानवर दुर्लभ हैं और एक प्रकार से विकासवादी विसंगति भी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे विकासवादी अनाथ हैं, और अधिकतर विषम सींग वाली प्रजातियाँ पृथ्वी से लगभग विलुप्त हो चुकी हैं। यहाँ तक कि डायनासोरों में भी, तीन सींगों वाला विशालकाय ट्राइसेरोटॉप्स एक अपवाद था।

यह देखते हुए कि सींग नज़दीकी वार करने वाले हथियार हैं, तीन सींग अनावश्यक होंगे। जैसे कांटों के मामले में होता है, सींगों की अधिक संख्या सतह प्रतिरोध को बढ़ाती है, जिससे वार करना कठिन हो जाता है। इसके अलावा, गति के नियम यह भी बताते हैं कि तीन सींगों के मध्य दूरी की वस्तुओं में फंसने का खतरा अधिक होता है, जिससे तीनों में से कोई भी सींग प्रतिद्वंद्वी के शरीर में प्रवेश नहीं कर पाता।

यदि कोई जानवर कई शिकारियों का सामना कर रहा हो, तो तीन सींग होने से उसकी गति में बाधा आ सकती है; एक शिकारी के शरीर से सींग निकालकर दूसरे पर लगाना असुविधाजनक हो सकता है। इन्हीं कमियों के कारण तीन सींग वाले जानवर का अस्तित्व समाप्त हो गया: दो सींग या एक सींग वाला जानवर बेहतर संरचना साबित हुआ।

दो सींगों का लाभ पशु शरीर की द्विपक्षीय समरूपता में निहित है। सभी पशु, दाएं-बाएं संतुलन प्रदर्शित करते हुए, अपनी शक्ति को दो भागों में विभाजित करते हैं और उसी के अनुसार अपने विकास और गति के पैटर्न को नियंत्रित करते हैं। नाक और यहां तक कि मुंह भी इस समरूपता को दर्शाते हैं जो मूल रूप से कार्यों को दो भागों में विभाजित करती है। नाभि, बेशक, एकल होती है, हालांकि यह एक प्रकार की प्रतिगामी विशेषता है। इसके विपरीत, लिंग और योनि एक जोड़ी बनाते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण हैं आंखें। आक्रमण और रक्षा, दोनों के लिए आंखें नियंत्रण कवच का काम करती हैं, इसलिए आंखों के पास स्थित सींग सबसे प्रभावी होता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण गैंडा है, जो सिद्धांत रूप में एक "यूनिकॉर्न" है। यह बेहद कमज़ोर दृष्टि वाला जानवर है, और इसका कारण उसका एक सींग ही है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो गैंडा एक तरह से अपंग है। इस संभावित घातक दोष के बावजूद, गैंडा दो अलग-अलग कारणों से जीवित रहा है: यह शाकाहारी है और इसका शरीर मोटी कवच जैसी परत से ढका हुआ है। इसलिए इसे रक्षा की कोई कमी नहीं होती। और इसी कारण से, शरीर की बनावट के आधार पर गैंडा ट्राइसेरोटॉप्स श्रेणी में आता है।

फिर भी, यूनिकॉर्न की जितनी भी तस्वीरें मौजूद हैं, उनमें यह एक अलग ही तरह का दिखता है। इसमें कोई कवच नहीं होता; यह पूरी तरह से असुरक्षित होता है, हिरण की तरह। अगर यूनिकॉर्न की नज़र भी कमजोर हो, तो यह दोष विनाशकारी साबित हो सकता है। सूंघने या सुनने की अत्यधिक विकसित क्षमता भी इसे बचाने में अपर्याप्त होगी। शिकारी इसे आसानी से अपना शिकार बना लेंगे। इसके अलावा, सींग न होने के कारण, दुर्घटना की स्थिति में यूनिकॉर्न को गंभीर नुकसान हो सकता है।

एक सींग की एक और खामी यह है कि इसे बलपूर्वक चलाना मुश्किल होता है, ठीक वैसे ही जैसे संतुलन के सिद्धांतों के कारण कृंतक दांत दाढ़ों के बराबर बल वितरित नहीं कर सकते। द्रव्यमान जितना अधिक होगा, बल लगाने पर स्थिरता उतनी ही अधिक होगी। स्पष्टतः, यूनिकॉर्न में भौतिक-गतिकीय दोष हैं।

“आप तो इन स्पष्टीकरणों में वाकई माहिर हैं, है ना?” मैंने उन्हें बीच में ही रोक दिया।

वह खिलखिलाकर मुस्कुराई और उसने अपनी दो उंगलियां मेरी छाती पर फेर दीं।

“तार्किक रूप से,” उसने आगे कहा, “केवल एक ही चीज़ है जो यूनिकॉर्न को विलुप्त होने से बचा सकती थी। और यह बहुत महत्वपूर्ण है। क्या आपके पास कोई विचार है?”

मैंने अपनी हथेलियों को वहाँ मोड़ा जहाँ उसकी उंगलियाँ थीं और कुछ देर तक अनिर्णय की स्थिति में इस बारे में सोचा। "क्या कोई प्राकृतिक शिकारी नहीं हैं?" मैंने हिम्मत करके पूछा।

“बिल्कुल सही,” उसने कहा और मेरे होठों पर एक हल्की सी चुंबन दी। “अब सोचो: ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ होंगी जिनमें तुम्हारा कोई प्राकृतिक शिकारी न हो?”
“खैर, एक तो एकांत। ऐसी जगह जहाँ कोई शिकारी न पहुँच सके,” मैंने अनुमान लगाया। “कोई ऐसी जगह, जैसे किसी ऊँचे पठार पर, कॉनन डॉयल की 'लॉस्ट वर्ल्ड' की तरह। या फिर किसी गहरे गड्ढे में।”
“वाह!” उसने उत्साह से कहा और अपनी तर्जनी उंगली से मेरे दिल पर थपथपाते हुए बोली, “और वास्तव में, ठीक ऐसी ही परिस्थितियों में एक यूनिकॉर्न के मिलने का एक दर्ज मामला भी है।”
मैंने घबराकर सांस ली। ओह-ओह!
उसने अपना व्याख्यान पुनः शुरू किया:
सन् 1917 में, यह वस्तु रूसी मोर्चे पर खोजी गई थी। यह सितंबर का महीना था, अक्टूबर क्रांति से एक महीने पहले, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, केरेन्स्की मंत्रिमंडल के अधीन, बोल्शेविक तख्तापलट की शुरुआत से ठीक पहले।
यूक्रेनी मोर्चे पर, एक रूसी पैदल सैनिक को खाई खोदते समय एक रहस्यमय वस्तु मिली। उसने उसे एक तरफ फेंक दिया, यह सोचकर कि यह किसी गाय या बारहसिंगे की खोपड़ी है। अगर बात यहीं खत्म हो जाती, तो यह खोज इतिहास के पन्नों में गुम हो जाती। लेकिन संयोग से, उस सैनिक का कमांडिंग लेफ्टिनेंट पेट्रोग्राड विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान का स्नातक छात्र था। उसने खोपड़ी में एक विचित्रता देखी और उसे अपने क्वार्टर में वापस लाकर उसकी गहन जांच की। उसने पाया कि यह एक अज्ञात प्रजाति के जानवर की खोपड़ी है। उसने तुरंत विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान संकाय के अध्यक्ष से संपर्क किया और एक सर्वेक्षण दल भेजने का अनुरोध किया। लेकिन कोई दल नहीं भेजा गया। उस समय रूस में उथल-पुथल मची हुई थी। भोजन, बारूद और दवाइयाँ सर्वोच्च प्राथमिकता थीं। हड़तालों के कारण संचार व्यवस्था ठप होने से वैज्ञानिक दल का मोर्चे तक पहुँचना असंभव था। अगर वे पहुँच भी जाते, तो भी परिस्थितियाँ सर्वेक्षण के लिए अनुकूल नहीं होतीं। रूसी सेना को लगातार हार का सामना करना पड़ रहा था; अग्रिम पंक्ति को लगातार पीछे धकेला जा रहा था। बहुत संभव है कि वह स्थान पहले से ही जर्मन क्षेत्र था।
लेफ्टिनेंट का अंत भी अपमानजनक रहा। उसी वर्ष नवंबर में उन्हें एक टेलीग्राफ के खंभे से लटका दिया गया। यूक्रेन-मॉस्को टेलीग्राफ लाइन के किनारे कई बुर्जुआ अधिकारियों को इसी तरह मौत के घाट उतार दिया गया। लेफ्टिनेंट एक साधारण जीव विज्ञान का छात्र था, जिसमें राजनीति का कोई अंश नहीं था।
फिर भी, बोल्शेविक सेना द्वारा सत्ता हथियाने से ठीक पहले, लेफ्टिनेंट ने खोपड़ी को घर भेजे जा रहे एक घायल सैनिक को सौंपने का सोचा और वादा किया कि खोपड़ी को एक बक्से में सुरक्षित रूप से पैक करके पेट्रोग्राद के संकाय अध्यक्ष को सौंपने पर उसे अच्छी खासी रकम का मुआवजा दिया जाएगा। सैनिक को सैन्य अस्पताल से छुट्टी मिल गई, लेकिन वह अगले वर्ष फरवरी तक विश्वविद्यालय नहीं गया, जहाँ उसे विश्वविद्यालय के द्वार अनिश्चित काल के लिए बंद मिले। अधिकांश व्याख्याताओं को या तो भगा दिया गया था या वे देश छोड़कर भाग गए थे। विश्वविद्यालय के फिर से खुलने की संभावना बहुत कम थी। उसके पास बाद

में अपना पैसा लेने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसने खोपड़ी को अपने बहनोई के पास रख दिया, जो पेट्रोग्राद में एक अस्तबल चलाता था, और पूर्व शाही राजधानी से लगभग तीन सौ किलोमीटर दूर अपने पैतृक गाँव लौट गया। अज्ञात कारणों से, सैनिक फिर कभी पेट्रोग्राद नहीं गया और खोपड़ी अस्तबल में पड़ी रही, भुला दी गई।

खोपड़ी अगली बार 1935 में प्रकाश में आई। पेट्रोग्राड तब तक लेनिनग्राद बन चुका था। लेनिन की मृत्यु हो चुकी थी, ट्रॉट्स्की निर्वासन में थे और स्टालिन सत्ता में थे। लेनिनग्राद में कोई भी घुड़सवारी नहीं करता था। पुराने अस्तबल मालिक ने अपनी आधी जगह बेच दी थी और शेष आधी जगह में उसने हॉकी के सामान की एक छोटी सी दुकान खोल ली थी।

“हॉकी?” मेरा मुंह खुला रह गया। “सोवियत संघ के तीस के दशक में?”

“मुझसे मत पूछो। मैंने तो बस यही पढ़ा है। लेकिन कौन जानता है? क्रांति के बाद का लेनिनग्राद आधुनिक स्नातकों के लिए बिल्कुल उपयुक्त रहा होगा। शायद हॉकी का बोलबाला रहा होगा।”

खैर, अपने भंडारगृह की जाँच करते समय, पूर्व अस्तबल प्रबंधक को वह बक्सा मिला जो उसके बहनोई ने 1918 में उसके पास छोड़ा था। उस बक्से में पेट्रोग्राड विश्वविद्यालय के जीवविज्ञान संकाय के अध्यक्ष को संबोधित एक पत्र था। पत्र में लिखा था: "कृपया इस वस्तु के धारक को उचित मुआवज़ा दें।" स्वाभाविक रूप से, हॉकी के सामान के विक्रेता ने बक्सा विश्वविद्यालय (अब लेनिनग्राद विश्वविद्यालय) में ले जाकर अध्यक्ष से मिलने की कोशिश की। लेकिन यह असंभव साबित हुआ। अध्यक्ष एक यहूदी थे जिन्हें ट्रॉट्स्की के पतन के बाद साइबेरिया भेज दिया गया था।

लेकिन यह पूर्व अस्तबल प्रबंधक मूर्ख नहीं था। कोई और विकल्प न होने पर, उसने जीवन भर एक अज्ञात जानवर की खोपड़ी को अपने पास रखने और एक पैसा भी न कमाने के बजाय, जीव विज्ञान के एक अन्य प्रोफेसर से संपर्क किया, उन्हें पूरी कहानी सुनाई और उनसे उचित राशि वसूल ली। वह कुछ रूबल अधिक लेकर घर लौटा।

प्रोफेसर ने खोपड़ी के हर एक मिलीमीटर की बारीकी से जांच की और अंततः उसी निष्कर्ष पर पहुंचे जिस पर अठारह साल पहले लेफ्टिनेंट पहुंचे थे—यानी, यह खोपड़ी किसी भी जीवित जानवर से मेल नहीं खाती थी, न ही किसी ऐसे जानवर से जो पहले अस्तित्व में रहा हो। इसकी आकृति हिरण से सबसे अधिक मिलती-जुलती थी। जबड़े की बनावट और थोड़े भरे हुए गालों को देखकर लगता था कि यह खुरों वाला शाकाहारी जानवर रहा होगा। फिर भी, इस प्रजाति और हिरण के बीच सबसे बड़ा अंतर, आश्चर्यजनक रूप से, इसके माथे के मध्य में स्थित एक सींग था।

सींग अभी भी साबुत था। बेशक, यह पूरी तरह से टूटा हुआ नहीं था, लेकिन जो हिस्सा बचा था, उससे लगभग बीस सेंटीमीटर लंबाई का एक सीधा सींग बनाना संभव हो गया। सींग लगभग तीन सेंटीमीटर की दूरी से टूटा था, और इसका आधार व्यास लगभग दो सेंटीमीटर था।

“दो सेंटीमीटर,” मैंने मन ही मन दोहराया। बूढ़े आदमी से मिली खोपड़ी में ठीक दो सेंटीमीटर व्यास का एक गड्ढा था।

प्रोफेसर पेट्रोव—यही उनका नाम था—ने कई सहायकों और स्नातकोत्तर छात्रों को बुलाया और टीम युवा लेफ्टिनेंट की खाइयों के स्थल पर एक महीने की खुदाई के लिए यूक्रेन रवाना हुई। दुर्भाग्य से, उन्हें कोई समान खोपड़ी नहीं मिली। हालांकि, उन्होंने उस क्षेत्र के बारे में कई रोचक तथ्य खोजे, जो वोल्टाफिल के नाम से जाना जाने वाला एक पठार था। यह क्षेत्र मध्यम ऊंचाई तक फैला हुआ था और इस प्रकार लहरदार मैदानों पर कुछ प्राकृतिक रणनीतिक लाभ स्थलों में से एक था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, जर्मन और ऑस्ट्रो-हंगेरियन सेनाओं ने रूसियों के साथ बार-बार खूनी संघर्ष किए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, पूरे पठार पर बमबारी करके उसे पहचान से परे कर दिया गया था, लेकिन यह कई साल बाद हुआ था।

वोल्टाफिल के बारे में प्रोफेसर पेट्रोव की दिलचस्पी इस बात में थी कि वहां से मिली हड्डियां उस भूभाग के अन्य हिस्सों में पाई जाने वाली प्रजातियों के वितरण से काफी अलग थीं। इससे प्रोफेसर को यह अनुमान लगाने की प्रेरणा मिली कि वर्तमान पठार प्राचीन काल में कोई उभरा हुआ हिस्सा नहीं था, बल्कि एक गड्ढा था, जो अनगिनत वनस्पतियों और जीवों का उद्गम स्थल रहा होगा। दूसरे शब्दों में, एक खोई हुई दुनिया।

किसी गड्ढे से पठार का बनना कल्पना से परे लग सकता है, लेकिन ठीक यही हुआ था। गड्ढे की दीवारें बेहद खड़ी थीं, लेकिन लाखों वर्षों में एक अनसुलझे भूवैज्ञानिक बदलाव के कारण दीवारें ढह गईं और आधार एक साधारण पहाड़ी में बदल गया। यूनिकॉर्न, जो विकास की दृष्टि से एक अपवाद था, इस चट्टानी हिस्से पर सभी शिकारियों से अलग-थलग रहकर जीवन व्यतीत करता रहा। प्राकृतिक झरने प्रचुर मात्रा में थे, मिट्टी उपजाऊ थी, परिस्थितियाँ आदर्श थीं। प्रोफेसर पेट्रोव ने इन निष्कर्षों को सोवियत विज्ञान अकादमी के समक्ष "वोल्टाफिल पठार के जीव रूपों पर एक विचार" शीर्षक से एक शोधपत्र में प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने अपनी खोई हुई दुनिया की परिकल्पना के लिए कुल छत्तीस प्राणीवैज्ञानिक, वानस्पतिक और भूवैज्ञानिक प्रमाणों का विस्तृत वर्णन किया। यह अगस्त 1936 की बात है।

इसे निराशाजनक प्रतिक्रिया मिली। अकादमी में किसी ने भी उन्हें गंभीरता से नहीं लिया। उनके शोधपत्र का बचाव उसी समय हुआ जब इस प्रतिष्ठित संस्थान में मॉस्को विश्वविद्यालय और लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के बीच सत्ता संघर्ष चल रहा था। लेनिनग्राद गुट की स्थिति अच्छी नहीं थी; उनके कथित गैर-द्वंद्वात्मक शोध को करारी हार मिली। फिर भी, पेट्रोव की परिकल्पना को छोड़ दें तो, खोपड़ी का अकाट्य भौतिक प्रमाण मौजूद था। विशेषज्ञों के एक दल ने अगले वर्ष को इस वस्तु के गहन अध्ययन में समर्पित कर दिया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए विवश हुए कि यह वास्तव में कोई कृत्रिम रचना नहीं थी, बल्कि एक सींग वाले जानवर की शुद्ध खोपड़ी थी। अंततः, सोवियत विज्ञान अकादमी की समिति ने इस शर्मनाक कलाकृति को सर्वीडो ओडोकोइलियस में एक स्वतःस्फूर्त उत्परिवर्तन घोषित किया जिसका कोई विकासवादी परिणाम नहीं था, और इस प्रकार यह शोध के लिए उपयुक्त विषय नहीं था। खोपड़ी को लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पेट्रोव को लौटा दिया गया।

इसके बाद, प्रोफेसर पेट्रोव ने भाग्य के पलटने और अपने शोध को मान्यता मिलने की आशा में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की, लेकिन 1940 में शुरू हुए जर्मन-सोवियत युद्ध ने उनकी सभी आशाओं पर पानी फेर दिया और 1943 में उनका निधन हो गया। 1941 में लेनिनग्राद की घेराबंदी के दौरान ही वह खोपड़ी गायब हो गई थी। जर्मन गोलाबारी से लेनिनग्राद विश्वविद्यालय पूरी तरह से नष्ट हो गया था। लगभग पूरा परिसर ही नष्ट हो गया था—एक अकेली पशु खोपड़ी का तो जिक्र ही नहीं। और इस तरह यूनिकॉर्न के अस्तित्व को साबित करने वाला एकमात्र ठोस सबूत भी खो गया।

“तो अब कोई ठोस चीज नहीं बची है?” मैंने कहा।

"तस्वीरों के अलावा कुछ नहीं।"

“तस्वीरें?”

“जी हां, खोपड़ी की तस्वीरें। प्रोफेसर पेट्रोव ने खोपड़ी की लगभग सौ तस्वीरें ली थीं, जिनमें से कुछ युद्ध में नष्ट होने से बच गईं। इन्हें लेनिनग्राद विश्वविद्यालय पुस्तकालय के संदर्भ संग्रह में सुरक्षित रखा गया है। देखिए, इस तरह की तस्वीरें।”

उसने मुझे किताब थमा दी और पन्ने पर छपी एक काली-सफेद तस्वीर की ओर इशारा किया। तस्वीर कुछ धुंधली थी, लेकिन उससे खोपड़ी का सामान्य आकार तो पता चल ही रहा था। उसे सफेद कपड़े से ढकी मेज पर रखा गया था, उसके बगल में आकार का अंदाज़ा लगाने के लिए एक घड़ी रखी थी, माथे के बीचोंबीच एक गोला बना था जो सींग की स्थिति को दर्शाता था। ऐसा लग रहा था कि यह उसी प्रजाति की खोपड़ी है जो उस बूढ़े आदमी ने मुझे दी थी। मैंने टीवी के ऊपर रखी खोपड़ी पर एक नज़र डाली। टी-शर्ट से ढकी होने के कारण वह सोती हुई बिल्ली जैसी लग रही थी। क्या मुझे उसे बताना चाहिए? नहीं, राज़ तो राज़ ही रहता है, क्योंकि उसे किसी को बताना नहीं चाहिए।

मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें लगता है कि खोपड़ी वाकई युद्ध में खो गई थी?"

“मुझे लगता है,” उसने अपनी छोटी उंगली से बालों की लटों को सहलाते हुए कहा। “अगर किताब पर यकीन करें तो लेनिनग्राद शहर लगभग पूरी तरह तबाह हो गया था, और यह देखते हुए कि विश्वविद्यालय क्षेत्र सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ था, यह कहना शायद सही होगा कि खोपड़ी भी बाकी सब चीज़ों के साथ नष्ट हो गई होगी। बेशक, प्रोफेसर पेट्रोव ने लड़ाई शुरू होने से पहले इसे कहीं छिपा दिया होगा। या फिर यह जर्मन सैनिकों द्वारा लूटे गए सामान में शामिल हो सकती है। ... जो भी हुआ हो, तब से किसी ने भी खोपड़ी को देखने की बात नहीं की है।”

मैंने तस्वीर को गौर से देखा और किताब को पटक दिया। क्या मेरे पास मौजूद खोपड़ी वही वोल्टाफिल-लेनिनग्राद वाली खोपड़ी हो सकती है? या फिर यह किसी और जगह और समय पर खोजी गई कोई और अनोखी खोपड़ी थी? सबसे आसान तरीका तो यही होगा कि मैं उस बूढ़े आदमी से पूछ लूँ। जैसे, आपको यह खोपड़ी कहाँ से मिली? और आपने इसे मुझे क्यों दिया? खैर, मुझे उस शरारती बूढ़े से तब मिलना था जब मैं फेरबदल किया हुआ डेटा सौंपने वाला था। मैं उससे तब पूछ लूँगा। तब तक, चिंता मत करो।

मैं छत को बेसुध होकर घूर रहा था, उसका सिर मेरे सीने पर था, उसका शरीर मेरे बगल से सटा हुआ था। मैंने अपना हाथ उसके चारों ओर लपेट लिया। मुझे एक तरह से गेंडा की खोपड़ी को लेकर राहत महसूस हुई, लेकिन मेरी शक्ति में कोई बदलाव नहीं आया था। कोई बात नहीं। इरेक्शन हो या न हो, वह मेरे पेट पर स्वप्निल आकृतियाँ बनाती रही।

10

दीवार

बादलों से घिरी एक दोपहर में मैं गेटहाउस की ओर बढ़ा और देखा कि मेरा हमशक्ल द्वारपाल के साथ काम कर रहा है। उन्होंने एक गाड़ी को खुले मैदान में लाकर पुराने फर्श और तख्तों को बदल दिया था। द्वारपाल तख्तों को चिकना कर रहा था और मेरा हमशक्ल उन्हें ठोक रहा था। हम जब अलग हुए थे तब से मेरा हमशक्ल बिल्कुल नहीं बदला था। वह शारीरिक रूप से तो स्वस्थ था, लेकिन उसकी हरकतें कुछ अटपटी लग रही थीं। उसकी आँखों के आसपास उदासी की लकीरें उभर रही थीं।

जैसे ही मैं उनके पास पहुंचता हूं, वे अपना काम रोककर ऊपर देखने लगते हैं।

"तो फिर आप यहाँ किसलिए आए हैं?" द्वारपाल ने पूछा।

“मुझे आपसे किसी बात पर चर्चा करनी है,” मैंने कहा।

"अगले ब्रेक तक इंतज़ार करो," द्वारपाल ने आधे मुंडे हुए बोर्ड की ओर देखते हुए कहा। मेरी परछाई ने मेरी तरफ देखा, फिर काम में लग गई। मुझे पता चल गया कि वह मुझसे बहुत नाराज़ है।

मैं द्वारगृह में प्रवेश करता हूँ और द्वारपाल का इंतज़ार करने के लिए मेज़ पर बैठ जाता हूँ। मेज़ अस्त-व्यस्त है। क्या द्वारपाल केवल अपने ब्लेडों को तेज़ करते समय ही सफाई करता है? आज मेज़ पर गंदे कप, कॉफ़ी के अवशेष, लकड़ी के बुरादे और पाइप की राख का ढेर लगा है। फिर भी, दीवार पर बने रैक में उसके चाकू एक आदर्श सौंदर्यपूर्ण ढंग से सजे हुए हैं।

चौकीदार मुझे इंतज़ार करवा रहा है। मैं कुर्सी के पीछे हाथ रखकर छत को घूर रहा हूँ। इस कस्बे में लोग इतना खाली समय कहाँ बिताते हैं?

बाहर, लकड़ी को समतल करने और हथौड़े मारने की आवाजें लगातार आ रही हैं।

जब आखिरकार दरवाजा खुलता है, तो अंदर द्वारपाल नहीं बल्कि मेरी परछाई आती है।

“मैं ज्यादा देर बात नहीं कर सकता,” मेरी परछाई फुसफुसाते हुए जल्दी से मेरे पास से गुज़र गई। “मैं भंडारगृह से कुछ कीलें लेने आया हूँ।”

वह कमरे के दूसरी तरफ का दरवाजा खोलता है, दाहिनी ओर के भंडारगृह में जाता है और कीलों का एक डिब्बा लेकर बाहर आता है।

“मैं सीधे मुद्दे पर आता हूँ,” मेरा साथी धीमी आवाज़ में कीलों को छाँटते हुए कहता है। “सबसे पहले, तुम्हें कस्बे का नक्शा बनाना होगा। किसी और से पूछकर मत बनाना। नक्शे की हर छोटी से छोटी बात तुम्हें खुद देखनी होगी। जो कुछ भी तुम देखो, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, उसे लिख लो।”

“आपको इसकी कितनी जल्दी जरूरत है?” मैंने कहा।

“पतझड़ तक,” परछाई तेज़ी से बोलती है। “और मुझे एक मौखिक रिपोर्ट चाहिए। खासकर दीवार के बारे में। उसकी बनावट, वह पूर्वी जंगलों से कैसे गुज़रती है, नदी कहाँ से प्रवेश करती है और कहाँ से निकलती है। समझ गए?”

और मेरी तरफ देखे बिना ही, मेरी परछाई दरवाजे से बाहर निकल गई। मैंने वो सब दोहराया जो उसने मुझे बताया था। दीवार की बनावट, पूर्वी जंगल, नदी का प्रवेश द्वार और निकास द्वार। नक्शा बनाना बुरा विचार नहीं है। इससे मुझे शहर का पता चल जाएगा और मेरा समय भी अच्छे से इस्तेमाल होगा।

कुछ ही देर में द्वारपाल अंदर आता है। वह अपने चेहरे से पसीना और गंदगी पोंछता है और अपना भारी-भरकम शरीर मेरे सामने वाली कुर्सी पर टिका देता है।

"अच्छा, यह क्या है?"

“क्या मैं अपनी परछाई देख सकता हूँ?” मैंने पूछा।

द्वारपाल कुछ बार सिर हिलाता है। वह अपनी पाइप में तंबाकू भरता है और उसे जलाता है।

“अभी नहीं,” वह कहता है। “अभी बहुत जल्दी है। खतरा अभी बहुत गहरा है। दिन छोटे होने तक इंतजार करो। ताकि कोई परेशानी न हो।”

वह अपनी माचिस की तीली को बीच से तोड़ता है और उसे मेज पर पलट देता है।

“अपनी भलाई के लिए, थोड़ा इंतज़ार करो,” वह आगे कहता है। “अपनी परछाई के बहुत करीब जाना मुसीबत लाता है। मैंने ऐसा पहले भी होते देखा है।”

मैं कुछ नहीं कहता। उसे कोई सहानुभूति नहीं है। फिर भी, मैंने अपनी परछाई से बात की है। यकीनन द्वारपाल फिर से अपनी सतर्कता कम कर देगा।

द्वारपाल उठता है। वह सिंक के पास जाता है और एक के बाद एक कई कप पानी पी जाता है।

"काम कासा है?"

“धीरे-धीरे, लेकिन मैं सीख रहा हूँ,” मैंने कहा।

“अच्छा,” द्वारपाल ने कहा। “अच्छा काम करो। मैं हमेशा कहता हूँ कि जो शरीर बुरा काम करता है, वह बुरा सोचता है।”

मैं अपनी परछाई के लगातार कील ठोकने की आवाज सुनता हूं।

“चलने चलें?” द्वारपाल ने प्रस्ताव रखा। “मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ।”

मैं उसके पीछे-पीछे बाहर गया। जैसे ही हम खुले मैदान में पहुँचे, मुझे अपनी परछाई दिखाई दी। वह गाड़ी पर खड़ा था और आखिरी साइडबोर्ड को अपनी जगह पर रख रहा था।

द्वारपाल खुले मैदान को पार करते हुए निगरानी मीनार की ओर बढ़ रहा है। दोपहर उमस भरी और धुंधली है। पश्चिम से काले बादल दीवार के ऊपर मंडरा रहे हैं, मानो किसी भी क्षण फटने वाले हों। पसीने से भीगी हुई द्वारपाल की कमीज उसके भारी धड़ से चिपकी हुई है और उससे दुर्गंध आ रही है।

“यही है दीवार,” द्वारपाल ने प्राचीर की चौड़ी दीवार पर थपथपाते हुए कहा। “सात गज ऊंची, पूरे शहर को घेरे हुए। केवल पक्षी ही दीवार पार कर सकते हैं। इस द्वार के अलावा कोई प्रवेश या निकास नहीं है। बहुत पहले पूर्वी द्वार हुआ करता था, लेकिन उसे दीवार से बंद कर दिया गया। ये ईंटें देखो? इन्हें कोई खरोंच नहीं सकता, यहां तक कि तोप भी नहीं।”

द्वारपाल लकड़ी का एक टुकड़ा उठाता है और कुशलतापूर्वक उसे एक छोटे से पतले टुकड़े में बदल देता है। “यह देखो,” वह कहता है। वह ईंटों के बीच लकड़ी का पतला टुकड़ा चलाता है। वह मुश्किल से एक इंच के अंश जितना ही अंदर जाता है। वह लकड़ी को फेंक देता है और अपनी चाकू की नोक ईंटों पर फेरता है। इससे एक भयानक आवाज़ आती है, लेकिन कोई निशान नहीं बनता। वह अपनी चाकू को देखता है, फिर उसे रख देता है।

“इस दीवार में सीमेंट नहीं लगा है,” द्वारपाल ने कहा। “इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। ईंटें एकदम सटीक बैठती हैं; उनके बीच ज़रा सा भी गैप नहीं है। कोई भी इस दीवार में छेद नहीं कर सकता। और कोई भी इस पर चढ़ नहीं सकता। क्योंकि यह दीवार एकदम सही है। इसलिए अपने सारे विचार भूल जाइए। यहाँ से कोई बाहर नहीं जा सकता।”

द्वारपाल ने अपना विशाल हाथ मेरी पीठ पर रख दिया।

“तुम्हें सहन करना होगा। यदि तुम सहन कर लोगे, तो सब ठीक हो जाएगा। कोई चिंता नहीं, कोई कष्ट नहीं। सब कुछ गायब हो जाएगा। अंधकार को भूल जाओ। यही दुनिया का अंत है। यहीं दुनिया का अंत होता है। आगे जाने के लिए कोई जगह नहीं।”

अपने कमरे में वापस जाते समय, मैं पुराने पुल के बीच में रुक गया और नदी को देखने लगा। मैं द्वारपाल की कही बातों के बारे में सोचने लगा।

दुनिया का अंत।

मैंने अपने अतीत को त्यागकर दुनिया के इस छोर पर आने का फैसला क्यों किया? इसके पीछे कौन सी घटना, अर्थ या उद्देश्य हो सकता था? मुझे याद क्यों नहीं आ रहा?

किसी चीज ने मुझे यहाँ बुलाया है। कोई ऐसी चीज जिसे नियंत्रित करना असंभव है। और इसी कारण मैंने अपनी परछाई और अपनी स्मृति खो दी है।

नदी मेरे पैरों के पास कलकल कर बह रही है। बीचोंबीच रेत का टीला है, जिस पर विलो के पेड़ अपनी लंबी शाखाओं को धारा में लहराते हुए झूम रहे हैं। पानी बेहद साफ है। मैं चट्टानों के बीच मछलियों को खेलते हुए देख सकता हूँ। नदी को निहारने से मुझे सुकून मिलता है।

पुल से सीढ़ियाँ नीचे रेतीले टीले तक जाती हैं। विलो के पेड़ों के नीचे एक बेंच है, और कुछ जानवर पास ही आराम कर रहे हैं। मैं अक्सर रेतीले टीले पर उतरकर जानवरों को रोटी के टुकड़े देता रहा हूँ। पहले तो वे हिचकिचाते थे, लेकिन अब बूढ़े और छोटे बच्चे भी मेरे हाथ से खाते हैं।

जैसे-जैसे शरद ऋतु गहरी होती जाती है, उनकी आँखों के अथाह सागर और भी अधिक उदास रंग धारण कर लेते हैं। पत्तियाँ रंग बदलने लगती हैं, घास सूखने लगती है; जानवर एक लंबे, भुखमरी भरे मौसम के आगमन को भांप लेते हैं। और उनकी दृष्टि को नमन करते हुए, मैं भी एक उदासी का अनुभव करता हूँ।

11

ड्रेसिंग, तरबूज, अराजकता

जब वो बिस्तर से उठी, तब घड़ी में साढ़े नौ बज रहे थे। उसने ज़मीन से अपने कपड़े उठाए और धीरे-धीरे, आराम से उन्हें पहना। मैं बिस्तर पर लेटा रहा, एक कोहनी सीधी करके, तिरछी नज़रों से उसकी हर हरकत को देखता रहा। एक-एक करके, बड़े सलीके से, एक भी हरकत बेकार नहीं, एकदम खामोशी से। उसने अपनी स्कर्ट की ज़िप बंद की, ब्लाउज़ के बटन ऊपर से नीचे तक लगाए, और आखिर में मोज़े पहनने के लिए बिस्तर पर बैठ गई। फिर उसने मेरे गाल पर चुंबन किया। बहुत सी औरतें हैं जो मोहक अंदाज़ में कपड़े उतार सकती हैं, लेकिन वो औरतें जो कपड़े पहनते समय भी मोहक लगें? अब पूरी तरह शांत होकर, उसने अपने लंबे काले बालों में हाथ फेरा। अचानक, कमरे में एक नई ताज़गी भर गई।

“खाने के लिए धन्यवाद,” उसने कहा।

"मुझे खुशी हुई।"

"क्या आप हमेशा इसी तरह खाना बनाते हैं?"

मैंने कहा, "जब मैं काम में ज्यादा व्यस्त नहीं होती, तब की बात है। जब काम बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, तो बचे-खुचे खाने से काम चलाना पड़ता है। या फिर मैं बाहर खाना खा लेती हूँ।"

उसने रसोई में एक कुर्सी पकड़ी और सिगरेट जला ली। “मैं खुद ज्यादा खाना नहीं बनाती। जब मैं काम से घर आकर खाना बनाने के बारे में सोचती हूँ, जिसे मैं वैसे भी दस मिनट में चट कर जाऊंगी, तो मुझे बहुत निराशा होती है।”

जब मैं कपड़े पहन रही थी, उसने अपने हैंडबैग से एक डायरी निकाली और उसमें कुछ लिखा, जिसे उसने फाड़कर मुझे दे दिया।

“ये रहा मेरा फोन नंबर,” उसने कहा। “अगर आपके पास कुछ खाने का सामान हो या आप मिलना चाहें या कुछ भी हो, तो मुझे फोन कर देना। मैं तुरंत आ जाऊंगी।”

उसके जाने के बाद, जब वह स्तनधारियों पर कई किताबें पुस्तकालय को लौटाने के लिए ले गई, तो मैं टीवी के पास गया और टी-शर्ट उतार दी।

मैंने उस यूनिकॉर्न की खोपड़ी पर विचार किया। मेरे पास ज़रा सा भी सबूत नहीं था, लेकिन मुझे यह महसूस हो रहा था कि यह रहस्यमयी खोपड़ी वही है जो वोल्टाफिल-लेनिनग्राद में मिली थी। मुझे मानो इतिहास की

एक गंध उससे रिस रही थी। सच है, कहानी अभी भी मेरे दिमाग में ताज़ा थी और अनुमान का प्रभाव बहुत प्रबल था। मैंने स्टेनलेस स्टील के चिमटे से खोपड़ी को हल्का सा थपथपाया और रसोई में चला गया।
मैंने बर्तन धोए, फिर रसोई की मेज साफ की। अब काम शुरू करने का समय हो गया था। मैंने फोन को आंसरिंग सर्विस पर स्विच कर दिया ताकि कोई मुझे परेशान न करे। मैंने दरवाज़े की घंटी बंद कर दी और रसोई के लैंप को छोड़कर बाकी सारी लाइटें बुझा दीं। अगले कुछ घंटों तक मुझे अपनी सारी ऊर्जा फेरबदल करने पर लगानी थी।
मेरा पासवर्ड था "दुनिया का अंत"। यह एक बेहद निजी नाटक का शीर्षक था, जिसमें पहले से संशोधित संख्याओं को कंप्यूटर गणना के लिए पुनर्व्यवस्थित किया जाना था। बेशक, जब मैं नाटक कहता हूँ, तो मेरा मतलब टीवी पर दिखाए जाने वाले नाटकों से नहीं है। यह नाटक कहीं अधिक जटिल था और इसकी कोई स्पष्ट कहानी नहीं थी। सुविधा के लिए मैंने इसे सिर्फ एक नाम दिया है। फिर भी, मुझे इसके विषय-वस्तु के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मुझे बस इतना पता था कि इसका शीर्षक था, दुनिया का अंत।
सिस्टम के वैज्ञानिकों ने यह सारा नाटक रचा था। मैंने कैलकुटेक का पूरे एक साल का प्रशिक्षण लिया था। अंतिम परीक्षा पास करने के बाद, उन्होंने मुझे दो सप्ताह के लिए अलग रखा ताकि मेरे मस्तिष्क तरंगों पर व्यापक परीक्षण किए जा सकें। इन परीक्षणों से मस्तिष्क तरंगों की गतिविधि का केंद्र, यानी मेरी चेतना का "मूल" निकाला गया। इन पैटर्नों को मेरे शफलिंग पासवर्ड में रूपांतरित किया गया, फिर उन्हें मेरे मस्तिष्क में दोबारा डाला गया—इस बार उल्टे क्रम में। मुझे बताया गया कि 'दुनिया का अंत' शीर्षक है, जो मेरा शफलिंग पासवर्ड होना था। इस प्रकार मेरे चेतन मन का पूर्ण पुनर्गठन किया गया। पहले मेरे चेतन मन की समग्र अराजकता थी, फिर उसके भीतर, केंद्र के रूप में संघनित अराजकता का एक विशिष्ट गड्ढा था।
उन्होंने इससे ज्यादा कुछ भी बताने से इनकार कर दिया।
“आपको इससे अधिक जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। अवचेतन मन अपना काम आपसे कहीं बेहतर तरीके से करता है। एक निश्चित आयु के बाद—हमारे अनुमान के अनुसार अट्ठाईस वर्ष—मनुष्यों की चेतना की समग्र संरचना में शायद ही कोई परिवर्तन होता है। जिसे आमतौर पर आत्म-सुधार या सचेतन परिवर्तन कहा जाता है, वह तो बस सतही बात है। आपकी ‘प्रलय’ की मूल चेतना, आपकी अंतिम सांस तक, अप्रभावित रूप से कार्य करती रहेगी। क्या आप यहाँ तक समझ गए?”
मैंने कहा, "मैं समझ गया।"
तर्क और विश्लेषण के सभी प्रयास, संक्षेप में, तरबूज को सिलाई की सुइयों से काटने की कोशिश करने के समान हैं। वे बाहरी छिलके पर निशान तो छोड़ सकते हैं, लेकिन फल का गूदा हमेशा पहुंच से बाहर रहेगा। इसलिए, हम छिलके को गूदे से अलग करते हैं। बेशक, कुछ आलसी लोग भी हैं जो केवल छिलके को कुतरने का आनंद लेते हैं।
“सभी संभावित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए,” उन्होंने आगे कहा, “हमें आपके पासवर्ड-नाटक की रक्षा करनी होगी, इसे किसी भी सतही उथल-पुथल, आपकी बाहरी चेतना के उतार-चढ़ाव से अलग रखना होगा।

मान लीजिए कि हम आपसे कहें कि आपके अंत में अमुक-अमुक तत्व निहित हैं। यह आपके लिए तरबूज का छिलका उतारने जैसा होगा। प्रलोभन अनियंत्रित होगा: आप अपनी उंगलियां गूदे में डालेंगे और उसे गंदा कर देंगे। और देखते ही देखते, हमारे पासवर्ड-नाटक की गुप्त और अलग करने योग्य क्षमता खो जाएगी। बस! आप फिर से कुछ नहीं कर पाएंगे।"

"इसीलिए हम आपको आपका तरबूज अतिरिक्त मोटे छिलके के साथ वापस दे रहे हैं," एक वैज्ञानिक ने बीच में कहा। "आप नाटक की कल्पना कर सकते हैं, क्योंकि आखिरकार यह आपका अपना ही रूप है। लेकिन आप इसके सार को कभी नहीं जान सकते। यह अराजकता के सागर में घटित होता है जिसमें आप खाली हाथ डूबते हैं और खाली हाथ ही बाहर निकलते हैं। समझे?"

मैंने कहा, "मुझे ऐसा ही लगता है।"

"एक और बात," उन्होंने गंभीर स्वर में कहा। "वास्तव में, क्या किसी व्यक्ति को कभी अपनी आंतरिक चेतना का सटीक और स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए?"

मैंने कहा, "मुझे नहीं पता।"

वैज्ञानिकों ने कहा, "हम भी ऐसा नहीं करेंगे। ऐसे प्रश्न, जैसा कि वे कहते हैं, विज्ञान की पहुंच से परे हैं।"

"अपने अनुभव के आधार पर हम इससे अलग निष्कर्ष नहीं निकाल सकते," एक व्यक्ति ने स्वीकार किया। "इसलिए इस लिहाज से यह एक बेहद संवेदनशील प्रयोग है।"

"प्रयोग?" मैं चौंक गया।

"हाँ, प्रयोग कीजिए," सभी ने एक साथ कहा। "हम आपको इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकते।"

फिर उन्होंने मुझे शफल करने का तरीका बताया: इसे अकेले करो, अधिमानतः रात में, न तो भरे पेट और न ही खाली पेट। एक ध्वनि-संकेत पैटर्न की तीन पुनरावृत्तियों को सुनो, जो दुनिया के अंत का आभास कराता है और चेतना को अराजकता के सागर में डुबो देता है। उसमें, संख्यात्मक डेटा को शफल करो।

जब फेरबदल पूरा हो जाएगा, तो प्रलय की पुकार अपने आप रद्द हो जाएगी और मेरी चेतना उस अराजकता से बाहर निकल जाएगी। मुझे कुछ भी याद नहीं रहेगा।

रिवर्स शफलिंग इस प्रक्रिया का ठीक उल्टा था। रिवर्स शफलिंग के लिए, मुझे रिवर्स शफलिंग ध्वनि-संकेत पैटर्न को सुनना था।

यह तंत्र मेरे भीतर पहले से ही प्रोग्राम किया हुआ था। मानो एक अचेतन सुरंग हो, जो सीधे मेरे मस्तिष्क के मध्य से होकर गुजरती हो। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

स्वाभाविक रूप से, जब भी मैं इधर-उधर घूमता हूँ, मैं पूरी तरह से असहाय हो जाता हूँ और मेरे मूड में उतार-चढ़ाव आने लगते हैं।

कपड़े धोने की बात अलग है। कपड़े धोना एक झंझट है, लेकिन मुझे इसे करने में गर्व महसूस होता है। इसमें कई तरह की क्षमताएं काम आती हैं। जबकि ताश के पत्तों को फेंटने में मुझे गर्व करने का कोई कारण नहीं दिखता। मैं तो बस एक माध्यम हूं जिसका इस्तेमाल किया जाता है। मेरी चेतना उधार ली जाती है और मेरी

जानकारी के बिना ही कुछ प्रक्रिया से गुजरती है। ताश के पत्तों को फेंटने के मामले में मैं खुद को गणितज्ञ नहीं कह सकती। और हां, गणित की विधि चुनने में भी मेरा कोई दखल नहीं होता।
मुझे धन की हेराफेरी और शुद्धिकरण दोनों का लाइसेंस प्राप्त है, लेकिन मैं केवल निर्धारित कार्य क्रम का ही पालन कर सकता हूँ। और अगर मुझे यह पसंद नहीं आता, तो मैं यह पेशा छोड़ सकता हूँ।
कैलकुटेक की योग्यता छोड़ने का मेरा कोई इरादा नहीं है। सिस्टम में दखलंदाजी और संदेह भरे रवैये के बावजूद, मुझे कोई और ऐसा काम नहीं पता जो कैलकुटेक की तरह किसी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल करने की इतनी आजादी देता हो। साथ ही, वेतन भी अच्छा है। अगर मैं पंद्रह साल काम करूँ, तो मेरे पास इतना पैसा होगा कि मैं बाकी जिंदगी आराम से जी सकूँ।
शराब पीने से शफलिंग में कोई रुकावट नहीं आती। दरअसल, विशेषज्ञों का मानना है कि सीमित मात्रा में शराब पीने से तंत्रिका तनाव कम करने में मदद मिल सकती है। हालांकि, मेरे लिए यह एक रस्म बन गई है कि मैं हमेशा होश में ही शफलिंग करता हूँ। मैं इस पूरे मामले को लेकर थोड़ा आशंकित हूँ। खासकर तब से जब से उन्होंने दो महीने से शफलिंग पर रोक लगा रखी है।
मैंने ठंडे पानी से स्नान किया, पंद्रह मिनट तक कठिन व्यायाम किया और दो कप काली कॉफी पी। मैंने अपना निजी तिजोरी खोला, उसमें से एक छोटा टेप रिकॉर्डर और परिवर्तित डेटा वाला टाइप किया हुआ कागज निकाला और उन्हें रसोई की मेज पर रख दिया। फिर मैंने एक नोटपैड और पाँच नुकीली पेंसिलें तैयार कर लीं।
मैंने टेप डाला, हेडफ़ोन लगाए, फिर टेप को चालू किया। मैंने डिजिटल टेप काउंटर को 16 तक चलने दिया, फिर उसे 9 तक रिवाइंड किया, फिर 26 तक आगे बढ़ाया। इसके बाद मैंने उसे लॉक करके दस सेकंड तक इंतज़ार किया जब तक कि काउंटर के अंक गायब नहीं हो गए और सिग्नल टोन बजना शुरू नहीं हो गया। अगर मैं ऐसा नहीं करता तो टेप पर मौजूद आवाज़ें अपने आप मिट जातीं।
मेरे दाहिने हाथ में टेप सेट, एकदम नया नोटपैड और बाएं हाथ में परिवर्तित डेटा था। सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। मैंने अपार्टमेंट के दरवाजे और सभी सुलभ खिड़कियों पर लगे सुरक्षा उपकरणों की लाल बत्ती जला दी। कोई चूक नहीं होनी चाहिए। मैंने टेप रिकॉर्डर का प्ले बटन दबाने के लिए हाथ बढ़ाया और जैसे ही सिग्नल की आवाज़ शुरू हुई, धीरे-धीरे एक मधुर शोरगुल मुझे खा गया।
<me>

drink———gradually chaos———>

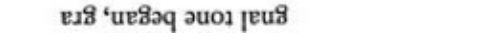

12

दुनिया के अंत का नक्शा

अपनी परछाई से मिलने के अगले दिन ही मैंने तुरंत कस्बे का नक्शा बनाना शुरू कर दिया।

शाम ढलते ही, मैं पश्चिमी पहाड़ी की चोटी पर जाकर पूरे दृश्य का आनंद लेता हूँ। लेकिन पहाड़ी इतनी ऊँची नहीं है कि मुझे पूरा नज़ारा दिख सके, और मेरी दृष्टि भी पहले जैसी नहीं रही। इसलिए मेरा प्रयास पूरी तरह सफल नहीं होता। मुझे शहर का बस एक मोटा-मोटा अंदाज़ा ही लग पाता है।

यह कस्बा न तो बहुत बड़ा है और न ही बहुत छोटा। कहने का तात्पर्य यह है कि यह इतना विशाल नहीं है कि मेरी समझ से परे हो, और न ही इतना संकुचित है कि इसका पूरा दृश्य आसानी से समझा जा सके। पश्चिमी पहाड़ी की चोटी से मुझे जो कुछ दिखाई देता है, उसका सार यह है: दीवार की ऊँचाई कस्बे को घेरे हुए है, और नदी इसे उत्तर और दक्षिण दिशा में काटती है। शाम के आकाश में नदी का रंग गहरा भूरा हो जाता है। कुछ ही क्षण में कस्बे में घोड़ों के सींगों और खुरों की आवाज़ गूंजने लगती है।

दीवार का मार्ग निर्धारित करने के लिए, मुझे अंततः पैदल ही उसका अनुसरण करना होगा। ज़ाहिर है, चूंकि मैं केवल अंधेरे, बादलों से घिरे दिनों में ही बाहर निकल सकता हूँ, इसलिए पश्चिमी पहाड़ी से दूर जाते समय मुझे सावधानी बरतनी होगी। तूफ़ानी आसमान अचानक साफ हो सकता है या मूसलाधार बारिश हो सकती है। हर सुबह, मैं कर्नल से मेरे लिए आसमान पर नज़र रखने का अनुरोध करता हूँ। कर्नल की भविष्यवाणियाँ लगभग हमेशा सही होती हैं।

“मौसम को लेकर चिंता न करें,” बूढ़ा अधिकारी गर्व से कहता है। “मुझे बादलों की दिशा का पता है। मैं आपको गलत रास्ते पर नहीं ले जाऊंगा।”

फिर भी, आसमान में अप्रत्याशित बदलाव हो सकते हैं, जो कर्नल के लिए भी समझ से परे होते हैं। पैदल चलना हमेशा जोखिम भरा होता है।

इसके अलावा, दीवार के किनारे कई जगहों पर घनी झाड़ियाँ, जंगल और गहरी खाइयाँ हैं, जिससे वहाँ पहुँचना मुश्किल हो जाता है। शहर के बीचोंबीच बहने वाली नदी के किनारे घर बसे हुए हैं; इन इलाकों से कुछ कदम आगे जाने पर रास्ते अचानक खत्म हो जाते हैं या कंटीली झाड़ियों में खो जाते हैं। मेरे पास दो ही विकल्प हैं: या तो इन बाधाओं को पार करके आगे बढ़ूँ या फिर उसी रास्ते से वापस लौट जाऊँ जिससे मैं आया था।

मैं अपनी पड़ताल कस्बे के पश्चिमी किनारे से शुरू करता हूँ, यानी पश्चिम में स्थित द्वार के पास बने गेटहाउस से, कस्बे के चारों ओर दक्षिणावर्त दिशा में चक्कर लगाता हूँ। द्वार से उत्तर की ओर जंगली अनाज से लदे खेत दूर-दूर तक फैले हुए हैं, जिनमें कमर तक घास उगी है। घास के बीच से गुजरने वाले रास्तों पर बहुत कम

रुकावटें हैं। लार्क जैसे दिखने वाले पक्षियों ने खेतों में अपने घोंसले बना रखे हैं; वे घास के बीच से उड़कर आसमान में भोजन की तलाश में चक्कर लगाते हैं। जानवर, जिनके सिर और पीठ घास के इस विशाल सागर में तैर रहे हैं, खाने योग्य हरी कलियों की तलाश में इधर-उधर भटकते हैं।

दीवार के साथ-साथ दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, मुझे सेना की बैरकों के अवशेष दिखाई देते हैं। तीन-तीन की कतारों में बनी सादी, बिना सजावट वाली दो मंजिला इमारतें। इनके आगे छोटे-छोटे घरों का एक समूह है। इमारतों के बीच पेड़ खड़े हैं, और एक नीची पत्थर की दीवार परिसर को घेरे हुए है। चारों ओर घनी घास उगी है। कोई भी नज़र नहीं आता। ऐसा लगता है कि ये खेत प्रशिक्षण मैदान के रूप में इस्तेमाल होते थे। मुझे खाइयाँ और पत्थर का बना एक झंडा स्टैंड दिखाई देता है।

शायद वही सैनिक, जो अब सरकारी आवासों में सेवानिवृत्त हो चुके हैं जहाँ मेरा कमरा है, कभी इन इमारतों में रहते थे। मुझे समझ नहीं आ रहा कि किन परिस्थितियों में उन्हें वेस्टर्न हिल में स्थानांतरित किया गया, जिससे बैरकें खंडहर में तब्दील हो गईं।

पूर्व की ओर, लहराते हुए खेत समाप्त होते हैं और जंगल शुरू हो जाता है। यह धीरे-धीरे बढ़ता है, पेड़ों के आपस में गुंथे तनों के बीच झाड़ियाँ झुंडों में उगती हैं, शाखाएँ मेरे कंधों और सिर के बीच की ऊँचाई तक पहुँचती हैं। नीचे, घनी झाड़ियों में छोटे-छोटे फूल बिखरे हुए हैं। जैसे-जैसे ज़मीन ढलान पर जाती है, पेड़ों की संख्या, विविधता और आकार बढ़ता जाता है। अगर पक्षियों की चहचहाहट न होती, तो सब कुछ शांत होता।

जैसे ही मैं एक संकरे झाड़ीदार रास्ते पर आगे बढ़ता हूँ, पेड़ घने होते जाते हैं, उनकी ऊँची शाखाएँ आपस में मिलकर एक जंगल की छत बना देती हैं, जिससे दीवार का मेरा नज़ारा छिप जाता है। मैं दक्षिण की ओर जाने वाले रास्ते से वापस कस्बे की ओर मुड़ता हूँ, पुराने पुल को पार करता हूँ और घर चला जाता हूँ।

इसलिए, शरद ऋतु के आगमन के बावजूद, मैं शहर की केवल धुंधली रूपरेखा ही देख पाता हूँ।

सामान्य शब्दों में कहें तो, यह भूभाग पूर्व से पश्चिम की ओर फैला हुआ है, जिसके चारों ओर उत्तरी वन और दक्षिणी पहाड़ी स्थित हैं। दक्षिणी पहाड़ी का पूर्वी ढलान चट्टानों में बँटा हुआ है जो दीवार के आधार के साथ-साथ फैली हुई हैं। कस्बे के पूर्व में एक घना और गहरा जंगल फैला हुआ है, जो उत्तरी वन से भी अधिक घना है। इस निर्जन क्षेत्र में बहुत कम सड़कें हैं, सिवाय नदी के किनारे बने एक पैदल मार्ग के जो पूर्वी द्वार तक जाता है और दीवार के कुछ हिस्सों से सटा हुआ है। जैसा कि द्वारपाल ने कहा था, पूर्वी द्वार सीमेंट से मज़बूती से बना हुआ है और कोई भी इसके पार नहीं जा सकता।

पूर्वी पहाड़ी से नदी तेज़ी से बहती हुई दीवार के नीचे से गुज़रती है, अचानक पूर्वी द्वार के पास प्रकट होती है और शहर के मध्य से पश्चिम की ओर तीन पुलों के नीचे से बहती है: पूर्वी पुल, पुराना पुल और पश्चिमी पुल। पुराना पुल न केवल सबसे प्राचीन है बल्कि सबसे बड़ा और सबसे सुंदर भी है। पश्चिमी पुल नदी के प्रवाह में एक मोड़ का प्रतीक है। यहाँ से नदी अचानक दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और पहले थोड़ा पूर्व की ओर बहती है। दक्षिणी पहाड़ी पर नदी एक गहरी घाटी बनाती है।

नदी दीवार के नीचे से दक्षिण की ओर नहीं निकलती। बल्कि यह दीवार पर एक कुंड बनाती है और सतह के नीचे किसी विशाल गुफा में समा जाती है। कर्नल के अनुसार, दीवार के उस पार चूना पत्थर के बड़े-बड़े शिलाखंडों का एक मैदान है, जो भूमिगत जल की अनगिनत धाराओं की रक्षा करते हैं।

बेशक, मैं शाम को भी सपने पढ़ने का अपना काम जारी रखता हूँ। शाम छह बजे, मैं दरवाजा खोलता हूँ, लाइब्रेरियन के साथ रात का खाना खाता हूँ, और फिर पुराने सपने पढ़ता हूँ।

एक शाम में, मैंने चार, शायद पाँच सपने पढ़े। मेरी उंगलियाँ प्रकाश की भूलभुलैया जैसी परतों को तेज़ी से तराशती हैं और मैं छवियों और प्रतिध्वनियों को अधिक स्पष्टता से याद करने में सक्षम हो जाता हूँ। मुझे नहीं पता कि स्वप्न-पाठ का क्या अर्थ है, न ही यह किस सिद्धांत पर काम करता है, लेकिन लाइब्रेरियन की प्रतिक्रियाओं से मुझे पता चलता है कि मेरे प्रयास सफल हो रहे हैं। खोपड़ियों की चमक से अब मेरी आँखों में दर्द नहीं होता और मैं इतनी जल्दी थकता भी नहीं हूँ।

जब मैं एक खोपड़ी को पढ़ना समाप्त कर लेता हूँ, तो लाइब्रेरियन उसे उस रात पहले पढ़ी गई खोपड़ियों के साथ काउंटर पर रख देता है। अगली शाम, काउंटर खाली होता है।

“आप प्रगति कर रहे हैं,” वह कहती हैं। “काम मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से हो रहा है।”

“कितनी खोपड़ियाँ हैं?”

“एक हजार, शायद दो हजार। क्या आप उन्हें देखना चाहेंगे?”

वह मुझे किताबों के ढेर में ले जाती है। यह एक विशाल स्कूल का कमरा है जिसमें अलमारियों की कतारें हैं, और हर अलमारी सफेद जानवरों की खोपड़ियों से भरी हुई है। यह एक कब्रिस्तान जैसा है। मृतकों की ठंडी हवा चुपचाप चारों ओर मंडरा रही है।

"इन सभी खोपड़ियों को पढ़ने में मुझे कितने साल लगेंगे?"

“आपको ये सब पढ़ने की ज़रूरत नहीं है,” वह कहती हैं। “आपको केवल उतनी ही किताबें पढ़नी हैं जितनी आप पढ़ सकते हैं। जो किताबें आप नहीं पढ़ेंगे, उन्हें अगला स्वप्न पाठक पढ़ लेगा। पुराने सपने सो जाएंगे।”

“और आप अगले स्वप्न पाठक की सहायता करेंगे?”

नहीं, मैं आपकी मदद करने के लिए यहाँ हूँ। यही नियम है। एक स्वप्न पाठक के लिए एक सहायक। जब आप पढ़ना बंद कर देंगे, तो मुझे भी पुस्तकालय छोड़ना होगा।

मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया, लेकिन यह बात समझ में आती है। हम दीवार से टिककर सफेद खोपड़ियों से भरी अलमारियों को निहारते हैं।

मैंने उससे पूछा, "क्या तुम कभी दक्षिण में स्थित पूल में गई हो?"

“हां, मैं गया था। बहुत समय पहले। जब मैं बच्चा था, मेरी माँ मुझे वहाँ ले गई थीं। ज़्यादातर लोग वहाँ नहीं जाते, लेकिन माँ अलग थीं। आप तालाब के बारे में क्यों पूछ रहे हैं?”

यह मुझे दिलचस्प लगता है।

वह अपना सिर हिलाती है। “यह खतरनाक है। आपको इससे दूर रहना चाहिए। आप वहां क्यों जाना चाहेंगे?”

मैं इस जगह के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ। अगर आप मुझे रास्ता नहीं दिखाएंगे, तो मैं अकेले ही चला जाऊंगा।
वह मेरी तरफ देखती है, फिर गहरी सांस छोड़ती है।
“ठीक है। अगर आप नहीं मानेंगे तो मुझे आपके साथ चलना पड़ेगा। लेकिन याद रखना, मुझे उस तालाब से बहुत डर लगता है। उसमें कुछ बुराई सी है।”
मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "अगर हम साथ रहें और सावधानी बरतें तो सब ठीक हो जाएगा।"
वह फिर से अपना सिर हिलाती है। “तुमने कभी वह तालाब नहीं देखा। तुम नहीं जान सकते कि वह कितना भयानक है। वह पानी शापित है। वह लोगों को पुकारता है।”
मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए वादा किया, "हम ज्यादा पास नहीं जाएंगे। हम इसे दूर से ही देखेंगे।"
नवंबर की एक अंधेरी दोपहर में, हम तालाब की ओर चल पड़े। पश्चिमी पहाड़ी के पश्चिमी ढलान पर नदी द्वारा बनाई गई घाटी में घनी झाड़ियाँ सड़क को घेर लेती हैं। हमें अपना रास्ता बदलकर दक्षिणी पहाड़ी के दूसरी ओर से पूर्व की ओर जाना होगा। सुबह की बारिश से ज़मीन पत्तों से ढकी हुई थी, जिससे हमारे हर कदम भीग रहे थे। हम दो जानवरों के पास से गुज़रे, उनके सुनहरे सिर हिल रहे थे और वे भावहीन होकर हमारे पास से गुज़र रहे थे।
“सर्दी नजदीक आ रही है,” वह समझाती है। “भोजन की कमी है और जानवर मेवे और जामुन की तलाश में हैं। अन्यथा, वे कस्बे से ज्यादा दूर नहीं जाते।”
हम दक्षिणी पहाड़ी पार कर लेते हैं, और अब न तो कोई जानवर दिखाई देता है, न ही कोई सड़क। जैसे ही हम सुनसान खेतों और एक वीरान बस्ती से पश्चिम की ओर बढ़ते हैं, तालाब की आवाज़ हमारे कानों तक पहुँचती है।
यह अलौकिक है, मेरे अनुभव में किसी भी चीज़ से मिलता-जुलता नहीं। झरने की गर्जना से अलग, हवा के शोर से अलग, भूकंप की गड़गड़ाहट से अलग। इसे एक विशालकाय गले की सिसकी के रूप में वर्णित किया जा सकता है। कभी यह कराहता है, कभी सिसकता है। अंत में यह रुक जाता है, घुटता हुआ।
मैंने टिप्पणी की, "लगता है तालाब में कुछ गड़बड़ है।"
वह परेशान होकर मेरी ओर मुड़ती है, लेकिन कुछ नहीं कहती। वह दस्ताने पहने हाथों से लटकती शाखाओं को हटाती है और आगे बढ़ जाती है।
“रास्ता बहुत खराब है,” वह कहती है। “पहले ऐसा नहीं था। शायद हमें वापस लौट जाना चाहिए।”
हम यहाँ तक आ चुके हैं। चलिए, जितना आगे जा सकते हैं, उतना आगे जाते हैं।
हम घने जंगलों से भरे मैदान में कई मिनट तक चलते रहे, केवल तालाब की रहस्यमयी आवाज़ ही हमारा मार्गदर्शन कर रही थी, तभी अचानक हमारे सामने एक मनोरम दृश्य खुल गया। जंगल का अंत हो गया और एक विशाल मैदान फैल गया। नदी दाहिनी ओर घाटी से निकलती हुई दिखाई दी, और फिर हमारी ओर बहते हुए चौड़ी होती चली गई। मैदान के किनारे पर अंतिम मोड़ से, पानी धीमा होता हुआ और पीछे की ओर

मुड़ता हुआ प्रतीत हुआ, गहरे नीले रंग का हो गया, मानो कोई सांप किसी छोटे जानवर को पचा रहा हो। यही वह तालाब है।

हम नदी के किनारे-किनारे तालाब की ओर बढ़ते हैं।

“पास मत जाओ,” वह मेरी बांह खींचते हुए चेतावनी देती है। “ऊपर से भले ही सतह शांत दिखे, लेकिन नीचे एक भंवर है। यह तालाब कभी भी अपना पानी वापस नहीं देता।”

“यह कितना गहरा है?”

“मुझे नहीं पता। मुझे बताया गया है कि वह कुंड गहरा होता जा रहा है। वह भंवर एक ड्रिल की तरह है, जो तल को कुतरता जा रहा है। एक समय था जब उसमें विधर्मियों और अपराधियों को फेंक दिया जाता था।”

“उनका क्या हुआ?”

“वे कभी वापस नहीं आए। क्या तुमने उन गुफाओं के बारे में सुना है? तालाब के नीचे बड़े-बड़े गलियारे हैं जहाँ खोए हुए लोग हमेशा के लिए अंधेरे में भटकते रहते हैं।”

कुंड की सिसकियाँ हर जगह गूँजती हैं, भाप के विशाल बादलों की तरह उठती हुई। गहराई से आती हुई वे पीड़ा को दर्शाती हैं।

उसे हथेली के आकार का लकड़ी का एक टुकड़ा मिलता है और वह उसे तालाब के बीचोंबीच फेंक देती है। वह कुछ सेकंड तक तैरता है, फिर कांपने लगता है और पानी में डूब जाता है। वह फिर कभी ऊपर नहीं आता।

"क्या आप देखते हैं?"

हम तालाब से दस गज की दूरी पर स्थित घास के मैदान में बैठते हैं और अपनी जेबों में रखी रोटी खाते हैं। यह दृश्य धोखे भरी शांति का चित्र प्रस्तुत करता है। घास का मैदान शरद ऋतु के फूलों से सजा है, पेड़ लाल पत्तों से जगमगा रहे हैं, और तालाब किसी दर्पण की तरह शांत है। इसके दूसरी ओर सफेद चूना पत्थर की चट्टानें हैं, जिनके ऊपर दीवार की ऊँची, गहरे रंग की ईंटों से बनी इमारतें हैं। तालाब की हल्की-हल्की आवाज़ के अलावा सब कुछ शांत है।

“तुम्हें इस नक्शे की क्या ज़रूरत है?” वह पूछती है। “नक्शे के साथ भी तुम इस कस्बे से बाहर नहीं निकल पाओगे।”

वह अपनी गोद में गिरे हुए ब्रेड के टुकड़ों को झाड़ती है और पूल की ओर देखती है।

“क्या तुम यहाँ से जाना चाहते हो?” वह फिर पूछती है।

मैं अपना सिर हिलाता हूँ। क्या इसका मतलब "नहीं" है, या फिर सिर्फ इतना है कि मुझे पता नहीं है?

“मैं बस इस कस्बे के बारे में जानना चाहता हूँ,” मैंने कहा। “यहाँ की भौगोलिक स्थिति, इतिहास, लोग... मैं जानना चाहता हूँ कि नियम किसने बनाए, हम पर किसका अधिकार है। मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि इसके आगे क्या है।”

वह धीरे से अपना सिर घुमाती है, फिर मेरी आंखों में देखती है।

“परलोक जैसा कुछ नहीं है,” वह कहती है। “क्या तुम्हें नहीं पता था? हम दुनिया के अंत में हैं। हम यहाँ हमेशा के लिए हैं।”

मैं लेटकर आसमान की ओर देखता हूँ। अँधेरा और बादलों से घिरा आसमान, बस यही आसमान मुझे देखने को मिलता है। सुबह की बारिश के बाद ज़मीन ठंडी और नम है, लेकिन मिट्टी की महक ताज़ी है।

सर्दियों के पक्षी झाड़ियों से निकलकर दक्षिण की ओर दीवार के ऊपर से उड़ जाते हैं। बादल नीचे की ओर बढ़ते हैं। सर्दी घेराबंदी के लिए तैयार हो रही है।

13

फ्रैंकफर्ट, डोर, इंडिपेंडेंट ऑपरेंट्स

हमेशा की तरह, चेतना धीरे-धीरे मेरी दृष्टि के किनारों से लौटकर मेरे पास आने लगी। सबसे पहले मुझे दाईं ओर से बाथरूम का दरवाज़ा और बाईं ओर से एक लैंप दिखाई दिया, जिनसे मेरी चेतना धीरे-धीरे अंदर की ओर, झील के बीच में बर्फ की तरह, सिमटती चली गई। मेरी दृष्टि के ठीक बीच में अलार्म घड़ी थी, जिसकी सुइयाँ दस बजकर छब्बीस मिनट पर थीं। यह अलार्म घड़ी मुझे किसी की शादी की यादगार के रूप में मिली थी। एक अनोखा डिज़ाइन। इसे बंद करने के लिए घड़ी के बाईं ओर का लाल बटन और दाईं ओर का काला बटन एक साथ दबाना पड़ता था, जिससे अलार्म बंद करके दोबारा सोने की आदत छूट जाती थी। सच है, दोनों बटन एक साथ दबाने के लिए मुझे घड़ी को गोद में लेकर बिस्तर पर सीधा बैठना पड़ता था, और तब तक मैं जागृत अवस्था में आ चुका होता था।

मुझे पता है मैं अपनी बात दोहरा रहा हूँ, लेकिन यह घड़ी मुझे एक शादी में आने पर धन्यवाद के तौर पर उपहार में मिली थी। किसकी शादी थी, मुझे याद नहीं। लेकिन जब मैं लगभग तीस साल का था, तब मेरे कई दोस्त थे। एक साल मैंने कई शादियों में शिरकत की, और वहीं से मुझे यह घड़ी मिली। मैं अपनी मर्जी से कभी ऐसी साधारण घड़ी नहीं खरीदता। वैसे, मुझे सुबह जल्दी उठने की अच्छी आदत है।

जैसे ही मेरी नज़र अलार्म घड़ी पर पड़ी, मैंने उसे तुरंत उठा लिया, अपनी गोद में रख लिया और अपने दाएं और बाएं हाथों से लाल और काले बटन दबा दिए। तभी मुझे एहसास हुआ कि यह बज ही नहीं रही थी। मैं सो नहीं रहा था, इसलिए मैंने अलार्म सेट नहीं किया था।

मैंने अलार्म घड़ी वापस रख दी और चारों ओर देखा। अपार्टमेंट में कोई खास बदलाव नहीं था। लाल रंग की सुरक्षा लाइट अभी भी जल रही थी, मेज के किनारे खाली कॉफी का कप पड़ा था, लाइब्रेरियन की सिगरेट तश्तरी में पड़ी थी। मार्लबोरो लाइट सिगरेट, लिपस्टिक का कोई निशान नहीं। अब सोचती हूँ तो लगता है कि उसने मेकअप किया ही नहीं था।

मैंने अपनी चेकलिस्ट पर एक नज़र डाली। मेरे सामने रखी पाँच पेंसिलों में से दो टूटी हुई थीं, दो पूरी तरह घिस चुकी थीं और एक बिल्कुल नई थी। नोटपैड सोलह पन्नों पर छोटी-छोटी संख्याओं से भरा हुआ था। मेरे दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में हल्की झनझनाहट हो रही थी, जैसा कि लंबे समय तक लिखने के बाद होता है।

अंत में, मैंने फेरबदल किए गए डेटा की तुलना शुद्ध डेटा से की ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत प्रविष्टियों की संख्या, नियमावली के अनुसार, मेल खाती है। इसके बाद मैंने मूल सूची को सिंक में जला दिया। मैंने नोटपैड को एक मजबूत बक्से में रखा और उसे तथा टेप रिकॉर्डर को तिजोरी में रख दिया। फेरबदल का काम पूरा हो गया। फिर मैं थका हुआ सोफे पर बैठ गया।

मैंने अपने लिए दो उंगली भर व्हिस्की डाली, आँखें बंद कीं और दो घूंट में पी गया। शराब की गर्माहट मेरे गले से नीचे उतरी और पूरे शरीर में फैल गई। मैं बाथरूम गया, दांत साफ किए, पानी पिया और टॉयलेट का इस्तेमाल किया। मैं रसोई में लौटा, पेंसिलें तेज कीं और उन्हें एक ट्रे में करीने से सजा दिया। फिर मैंने अलार्म घड़ी अपने बिस्तर के पास रख दी और फोन को सामान्य मोड पर कर दिया। घड़ी में ग्यारह बजकर सत्तावन मिनट हो रहे थे। कल का पूरा दिन मेरे सामने था। मैंने जल्दी से कपड़े उतारे, बिस्तर पर लेट गया और बगल वाली लाइट बंद कर दी। अब बारह घंटे की अच्छी नींद, मैंने खुद से कहा। पूरे बारह घंटे। पक्षियों को गाने दो, लोगों को काम पर जाने दो। कहीं न कहीं, कोई ज्वालामुखी फट सकता है, इजरायली कमांडो किसी फिलिस्तीनी गाँव को तबाह कर सकते हैं। मैं इसे रोक नहीं सकता। मैं सोने जा रहा था।

मैंने कैलकुटेक की नौकरी से रिटायरमेंट के सुख-सुविधाओं के बारे में अपनी रोज़ाना की कल्पना को दोहराया। मेरे पास खूब बचत होगी, सेलो बजाने और ग्रीक भाषा सीखने के लिए पर्याप्त से भी ज़्यादा। सेलो को कार के पीछे रखूंगा और अभ्यास करने के लिए पहाड़ों पर निकल जाऊंगा। शायद पहाड़ों में मेरा एक छोटा सा प्यारा सा केबिन होगा, जहाँ मैं किताबें पढ़ सकूंगा, संगीत सुन सकूंगा, वीडियो पर पुरानी फिल्में देख सकूंगा, खाना बना सकूंगा... और अगर मेरी लंबे बालों वाली लाइब्रेरियन भी मेरे साथ होती तो और भी अच्छा होता। मैं खाना बनाऊंगा और वो खाएगी।

जैसे-जैसे मेनू खुलते गए, नींद छा गई। एकदम अचानक, मानो आसमान गिर पड़ा हो। सेलो, केबिन और खाना पकाने की सारी यादें हवा में उड़ गईं, मुझे अकेला छोड़कर, फिर से अकेला, एक टूना मछली की तरह सोता हुआ।

किसी ने मेरे सिर में छेद कर दिया था और उसमें किसी चीज़ को धागे की तरह ठूंस रहा था। लगता है धागा बहुत लंबा था, क्योंकि रील बार-बार मेरे सिर में खुलती जा रही थी। मैं अपने हाथ-पैर पटक रहा था, उसे खींच रहा था, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद धागा अंदर आता ही जा रहा था।

मैं उठ बैठा और अपने सिर पर हाथ फेरा। लेकिन वहाँ कोई डोरी नहीं थी। कोई छेद भी नहीं था। एक घंटी बज रही थी। बजती जा रही थी, बजती जा रही थी, बजती जा रही थी। मैंने अलार्म घड़ी उठाई, उसे अपनी गोद में फेंक दिया और दोनों हाथों से लाल और काले बटनों को ज़ोर से दबाया। घंटी बजना बंद नहीं हुई। टेलीफोन! घड़ी में चार बजकर अठारह मिनट हो रहे थे। बाहर अंधेरा था। सुबह के चार बजकर अठारह मिनट।

मैं बिस्तर से उठा और रिसीवर उठाया। मैंने कहा, "हेलो?"

फोन के दूसरे छोर से कोई आवाज नहीं आई।

“हेलो!” मैंने गुर्राते हुए कहा।
फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। न कोई देहहीन साँसें सुनाई दीं, न ही कोई दबी हुई क्लिक की आवाज़। मैं गुस्से से आग बबूला हो गया और फोन काट दिया। मैंने फ्रिज से दूध का एक कार्टन निकाला और पूरा सफेद दूध गटक लिया, फिर वापस बिस्तर पर चला गया।
फोन फिर से चार बजकर छियालीस मिनट पर बजा।
मैंने कहा, "हैलो।"
“हेलो,” एक महिला की आवाज़ आई। “थोड़ी देर के लिए माफ़ कीजिएगा। ध्वनि क्षेत्र में कुछ गड़बड़ी है। कभी-कभी आवाज़ गायब हो जाती है।”
“आवाज चली जाती है?”
“हां,” उसने कहा। “ध्वनि क्षेत्र में गड़बड़ी हो रही है। क्या आप मुझे सुन सकते हैं?”
“बिल्कुल साफ,” मैंने कहा। यह उस सनकी बूढ़े वैज्ञानिक की पोती थी जिसने मुझे गेंडा की खोपड़ी दी थी। गुलाबी सूट वाली लड़की।
“दादाजी वापस नहीं आए हैं। और अब, ध्वनि क्षेत्र टूटने लगा है। कुछ गड़बड़ हो गई है। जब मैं प्रयोगशाला में फोन करता हूँ तो कोई जवाब नहीं देता। मुझे पक्का पता है कि उन इंकलिंग्स ने दादाजी को पकड़ लिया है।”
“क्या आपको यकीन है? हो सकता है कि वह अपने किसी प्रयोग में इतना मग्न हो गया हो कि घर आना ही भूल गया हो। उसने आपको पूरे एक हफ्ते तक ध्वनि-रोधक वातावरण में रहने दिया, है ना?”
“ऐसा नहीं है। इस बार नहीं। मैं समझ सकता हूँ। दादाजी को कुछ हो गया है। कुछ गड़बड़ है। खैर, ध्वनि अवरोध टूट गया है, और भूमिगत ध्वनि क्षेत्र अनियमित हो गया है।”
“यह क्या है?”
“ध्वनि अवरोधक, इंकलिंग्स को दूर रखने के लिए विशेष ऑडियो-सिग्नल उपकरण। वे जबरदस्ती अंदर घुस आए हैं, और हमारी आवाज़ गायब हो रही है। दादाजी को तो वे ज़रूर पकड़ लेंगे!”
"आपको कैसे मालूम?"
“उनकी पैनी निगाहें दादाजी के अध्ययन पर टिकी हुई हैं। इंकलिंग्स। सिमेंटिक्स। वे। वे उनके शोध को हथियाने के लिए बेताब हैं। उन्होंने उन्हें एक प्रस्ताव भी दिया, लेकिन इससे वे और भी क्रोधित हो गए। कृपया जल्दी आइए। आपको मदद करनी ही होगी, कृपया।”
मैंने कल्पना की कि नीचे किसी इंकलिंग से आमना-सामना होने पर कैसा लगेगा। वे डरावने भूमिगत रास्ते ही मेरे रोंगटे खड़े करने के लिए काफी थे।
मुझे पता है कि आप सोचेंगे कि मैं कितनी बुरी हूँ, लेकिन हिसाब-किताब करना मेरा काम है। मेरे अनुबंध में इसके अलावा कुछ और नहीं है। वैसे भी मेरे पास बहुत सारी चिंताएँ हैं। मैं मदद करना चाहती हूँ, सच में, लेकिन इंकलिंग्स से लड़ना और आपके दादाजी को बचाना मेरे बस की बात नहीं है। आप पुलिस या सिस्टम के अधिकारियों को क्यों नहीं बुला लेते? उन्हें इस तरह के मामलों के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

“मैं पुलिस को फोन नहीं कर सकती। मुझे उन्हें सब कुछ बताना पड़ेगा। अगर दादाजी का शोध अब सार्वजनिक हो गया, तो दुनिया खत्म हो जाएगी।”
"दुनिया का अंत?"
“कृपा कीजिए,” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। “मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है। मुझे डर है कि हम उसे कभी वापस नहीं पा सकेंगे। और अब वे आपके पीछे पड़ेंगे।”
“मैं? शायद आप, लेकिन मैं? मुझे आपके दादाजी के शोध के बारे में कुछ भी नहीं पता।”
“तुम ही चाबी हो। तुम्हारे बिना दरवाजा नहीं खुलेगा।”
मैंने कहा, "मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।"
मैं फोन पर समझा नहीं सकता। बस मुझ पर विश्वास कीजिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। आपने आज तक जो कुछ भी किया है, उससे कहीं अधिक। सचमुच! अपने भले के लिए, अभी भी समय रहते कदम उठाइए। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेरे साथ ऐसा हो रहा है। "ठीक है," मैंने हार मान ली, "लेकिन जब तक तुम यहाँ हो, तब तक बेहतर होगा कि तुम यहाँ से निकल जाओ। यह खतरनाक हो सकता है।"
"मैँ कहां जाऊं?"
मैंने उसे आओयामा में एक चौबीसों घंटे खुले रहने वाले सुपरमार्केट का पता बताया। “स्नैक बार पर मेरा इंतज़ार करना। मैं साढ़े पाँच बजे तक वहाँ पहुँच जाऊँगी।”
मुझे डर लग रहा है। पता नहीं क्यों—”
आवाज एकदम बंद हो गई। मैंने फोन पर चिल्लाया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। रिसीवर से सन्नाटा छा गया, जैसे बंदूक के मुंह से धुआं निकलता है। क्या ध्वनि क्षेत्र में दरार फैल रही थी? मैंने फोन काट दिया, पैंट पहनी, स्वेटशर्ट ओढ़ ली। मैंने जल्दी से शेविंग की, चेहरे पर पानी के छींटे मारे, बाल संवारे। मेरी त्वचा सस्ती चीज़केक की तरह फूली हुई थी। मुझे नींद चाहिए थी। क्या यह बहुत ज़्यादा मांग थी? पहले यूनिकॉर्न, अब इंकलिंग्स—क्यों मैं?
मैंने एक विंडब्रेकर जैकेट पहनी और अपना बटुआ, चाकू और खुले पैसे जेब में रख लिए। फिर, थोड़ी देर सोचने के बाद, मैंने यूनिकॉर्न की खोपड़ी को दो तौलिये में लपेटा, आग बुझाने वाले चिमटे और फेरबदल किए गए डेटा वाला तिजोरी उठाया और सब कुछ एक नाइकी स्पोर्ट्स बैग में डाल दिया। अपार्टमेंट बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं था। एक पेशेवर चोर मोजा धोने में लगने वाले समय से भी कम समय में उसमें घुसकर तिजोरी तोड़ सकता था।
मैंने अपने टेनिस के जूते पहने, जिनमें से एक अभी भी गंदा था, फिर बैग लेकर दरवाजे से बाहर निकल गया। गलियारे में कोई नहीं था। मैंने लिफ्ट का इस्तेमाल न करने का फैसला किया और सीढ़ियों से नीचे उतर गया। पार्किंग में भी कोई नहीं था।

वहाँ सन्नाटा था, हद से ज़्यादा सन्नाटा। अगर वे सचमुच मेरी खोपड़ी चाहते, तो कम से कम एक आदमी को तो वहाँ तैनात करना चाहिए था। ऐसा लग रहा था मानो वे मुझे भूल ही गए हों।

मैं कार में बैठा, बैग को बगल में रखा और इंजन स्टार्ट किया। समय था, लगभग पाँच बजने वाला था। गैरेज से निकलते ही मैंने चारों ओर सावधानी से देखा और आओयामा की ओर चल पड़ा। सड़कें सुनसान थीं, बस कभी-कभार टैक्सी और रात में चलने वाले ट्रक ही दिख रहे थे। मैं हर सौ मीटर पर रियरव्यू मिरर में देखता रहा; कोई मेरा पीछा करता हुआ नहीं दिख रहा था।

सब कुछ इतना बढ़िया चल रहा था, यह अजीब था। मैंने सेमिओटेक की हर चाल देखी थी, और अगर वे कुछ भी करने की ठान लेते थे, तो उसे छुपाते नहीं थे। वे किसी अनाड़ी गैस इंस्पेक्टर को काम पर नहीं रखते थे, न ही किसी पहरेदार को भूलते थे। वे सबसे तेज़ और अचूक तरीके चुनते थे, और उन्हें बेरहमी से अंजाम देते थे। कुछ साल पहले, उन्होंने पाँच कैलकुटेक को पकड़ा और एक ही झटके में आरी से उनकी खोपड़ियों के ऊपरी हिस्से काट दिए। टोक्यो खाड़ी में पाँच कैलकुटेक शव तैरते हुए मिले, उनकी खोपड़ियाँ गायब थीं। जब सेमिओटेक कोई काम करने का ठान लेते थे, तो उसे अंजाम तक पहुँचाते थे। यहाँ कुछ तो गड़बड़ थी।

मैं सुबह पांच बजकर अट्ठाईस मिनट पर आओयामा सुपरमार्केट के पार्किंग गैरेज में पहुंचा। पूरब की ओर आसमान में उजाला हो रहा था। मैंने अपना बैग लेकर दुकान में प्रवेश किया। वहां लगभग कोई नहीं था। धारीदार वर्दी पहने एक युवा क्लर्क पत्रिका पढ़ रहा था; एक अनिश्चित उम्र की महिला डिब्बाबंद और इंस्टेंट फूड से भरी एक गाड़ी खरीद रही थी। मैं शराब के स्टॉल को पार करके सीधे स्नैक बार की ओर चला गया।

वहाँ एक दर्जन स्टूल थे, और वह उनमें से किसी पर भी नहीं बैठी थी। मैं एक कोने में बैठ गया और एक सैंडविच और एक गिलास दूध मंगवाया। दूध इतना ठंडा था कि उसका स्वाद लगभग न के बराबर था, सैंडविच प्लास्टिक में लिपटा हुआ गीला और तैयार सैंडविच था। मैंने सैंडविच को धीरे-धीरे चबाया, दूध को बचा-बचाकर घूंट-घूंट करके पिया ताकि दूध ज़्यादा देर तक चले।

दीवार पर लगे फ्रैंकफर्ट के एक पोस्टर पर मेरी नज़र पड़ी। पतझड़ का मौसम था, नदी के किनारे के पेड़ रंगों से जगमगा रहे थे। नुकीली टोपी पहने एक बूढ़ा आदमी हंसों को दाना चुग रहा था। एक तरफ एक विशाल पुराना पत्थर का पुल था, और पृष्ठभूमि में एक गिरजाघर का शिखर दिखाई दे रहा था। लोग बेंचों पर बैठे थे, सभी ने कोट पहने थे, महिलाओं ने अपने सिर पर स्कार्फ लपेटे थे। एक खूबसूरत पोस्टकार्ड जैसा दृश्य। लेकिन इसे देखकर मुझे सिहरन सी महसूस हुई। ठंडे पतझड़ के दृश्य के कारण नहीं। मुझे तो ऊंचे, नुकीले शिखरों को देखकर हमेशा सिहरन होती है।

मैंने अपनी नज़र सामने वाली दीवार पर लगे पोस्टर पर डाली। एक चमकते चेहरे वाला युवक, हाथ में फिल्टर पकड़े, तिरछी नज़र से दूर कहीं देख रहा था। सिगरेट के विज्ञापनों में मॉडलों की आँखों में हमेशा एक ऐसा भाव होता है जैसे वे कुछ देख ही नहीं रहे हों, कुछ सोच ही नहीं रहे हों।

छह बज चुके थे, लेकिन वो गोल-मटोल लड़की अभी तक नहीं आई थी। समझ से परे, खासकर तब जब ये मामला इतना ज़रूरी था। मैं यहीं थी; वो कहाँ थी?

मैंने एक कॉफी ऑर्डर की। मैंने उसे धीरे-धीरे, बिना दूध और चीनी के पिया।
सुपरमार्केट में ग्राहकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। गृहिणियां नाश्ते के लिए ब्रेड और दूध खरीद रही थीं, विश्वविद्यालय के छात्र रात भर बाहर रहने के बाद भूखे थे, एक युवती टॉयलेट पेपर का रोल दबा रही थी, एक व्यवसायी तीन अलग-अलग अखबार खरीद रहा था, दो अधेड़ उम्र के पुरुष अपने गोल्फ क्लब घसीटते हुए व्हिस्की की बोतल खरीदने आए थे। मुझे सुपरमार्केट बहुत पसंद हैं।
मैंने साढ़े छह बजे तक इंतज़ार किया। मैं कार में बैठा और शिंजुकु स्टेशन के लिए निकल पड़ा। मैं सामान चेक काउंटर पर गया और अपना नाइकी स्पोर्ट्स बैग छोड़ने के लिए कहा। मैंने क्लर्क को बताया, "नाजुक है।" उसने बैग पर एक लाल रंग का "ध्यान से संभालें" टैग लगाया जिस पर एक कॉकटेल ग्लास छपा था। मैंने देखा कि उसने बैग को शेल्फ पर रख दिया। फिर उसने मुझे क्लेम टिकट थमा दिया।
मैं स्टेशन के एक कियोस्क पर गया। मैंने दो सौ साठ येन में एक लिफाफा और टिकट खरीदे। मैंने दावा टिकट को लिफाफे में डाला, उसे सील किया, टिकट लगाया और उस पर एक डाक बॉक्स का पता लिख दिया जिसे मैंने एक काल्पनिक कंपनी के नाम से रखा हुआ था। मैंने उस पर एक्सप्रेस लिखा और सामान डाक में डाल दिया।
फिर मैं कार में बैठकर घर चला गया। मैंने नहाया और बिस्तर पर लेट गया।
ग्यारह बजे मेरे घर मेहमान आए। घटनाक्रम को देखते हुए, यह तो होना ही था। फिर भी, आप सोचेंगे कि दरवाजा तोड़ने की कोशिश करने से पहले वे घंटी बजा सकते थे। नहीं, उन्हें लोहे के विध्वंसक बल्ले की तरह अंदर आना था, जिससे फर्श हिलने लगा। वे खुद को परेशानी से बचा सकते थे और अधीक्षक से चाबी ले सकते थे। वे मुझे भारी भरकम मरम्मत के बिल से भी बचा सकते थे।
जब मेरे मेहमान दरवाज़ा ठीक कर रहे थे, मैंने कपड़े पहने और अपनी चाकू जेब में रख ली। फिर, सावधानी बरतते हुए, मैंने तिजोरी खोली और टेप रिकॉर्डर का 'इरेज़' बटन दबा दिया। इसके बाद, मैंने दोपहर के भोजन के लिए फ्रिज से आलू का सलाद और एक बियर निकाली। मैंने बालकनी पर लगी आपातकालीन रस्सी की सीढ़ी से भागने के बारे में सोचा, लेकिन क्यों? भागने से कुछ हल नहीं होगा। क्या हल होगा? मुझे तो यह भी नहीं पता था कि समस्या क्या है। मुझे वास्तविकता का सामना करने की ज़रूरत थी।
चारों ओर बस प्रश्नचिह्न ही प्रश्नचिह्न थे। मैंने अपना आलू का सलाद खत्म किया, अपनी बियर खत्म की, और जैसे ही मैं डकार लेने वाला था, स्टील का दरवाजा ज़ोर से खुला और धड़ाम से नीचे गिर गया।
एक विशालकाय आदमी अंदर आया, जिसने चटख रंग की अलोहा शर्ट, ग्रीस से सने खाकी रंग के पुराने पैंट और स्कूबा डाइविंग के फ्लिपर्स जितने बड़े सफेद टेनिस जूते पहने हुए थे। गंजा सिर, पगड़ी जैसी थूथन, और मेरी कमर जितनी मोटी गर्दन। उसकी पलकें पिघले हुए सफेद रंग की उभरी हुई आँखों पर किसी धातु के खोल जैसी लग रही थीं। मैंने तुरंत सोचा, ये नकली आँखें हैं, लेकिन फिर पुतलियों की एक हल्की सी हरकत ने उन्हें इंसानी आँखें जैसा बना दिया। वह लगभग दो मीटर लंबा रहा होगा, और उसके कंधे इतने चौड़े थे कि उसकी अलोहा शर्ट के बटन लगभग उसकी छाती से उड़ रहे थे।

उस हट्टे-कट्टे आदमी ने टूटे हुए दरवाजे पर ऐसे नज़र डाली जैसे मानो कोई शराब की बोतल का कॉर्क खोल रहा हो, फिर मेरी तरफ ध्यान दिया। उसके मन में कोई गहरी भावना नहीं थी। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं भी कोई आम सी चीज़ हूँ। काश, मैं होती।

वह एक तरफ हट गया, और उसके पीछे एक छोटा सा आदमी दिखाई दिया। यह आदमी डेढ़ मीटर से भी कम लंबा था, दुबला-पतला और चुस्त-दुरुस्त। उसने हल्के नीले रंग की लैकोस्ट शर्ट, बेज रंग की चिनो पैंट और भूरे रंग के लोफर्स पहने हुए थे। क्या उसने ये सारे कपड़े किसी अमीर बच्चों के कपड़ों की दुकान से खरीदे थे? उसकी कलाई पर एक सोने की रोलेक्स घड़ी चमक रही थी, एक सामान्य वयस्क मॉडल—लगता है बच्चों के लिए रोलेक्स नहीं बनती थी—इसलिए वह अनुपात से ज़्यादा बड़ी लग रही थी, जैसे स्टार ट्रेक का कोई कम्युनिकेटर हो। मैंने उसकी उम्र तीस के आसपास या चालीस के आस-पास आंकी।

उस हट्टे-कट्टे आदमी ने जूते उतारने की ज़हमत भी नहीं उठाई और रसोई में घुसकर मेरे सामने वाली कुर्सी खींच ली। थोड़ी देर बाद जूनियर भी आया और चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया। बिग बॉय ने सिंक के किनारे पर अपना सारा वज़न टिका दिया। उसने अपनी बाहें, जो आम इंसान की जांघों जितनी मोटी थीं, क्रॉस कर लीं और उसकी नज़रें मेरी किडनी के ठीक ऊपर टिकी हुई थीं। मुझे मौका मिलते ही भाग जाना चाहिए था।

जूनियर ने मेरी ओर लगभग ध्यान ही नहीं दिया। उसने सिगरेट का एक पैकेट और एक लाइटर निकाला और मेज पर रख दिया। बेंसन एंड हेजेस और एक सोने का डुपोंट। अगर जूनियर के सामान को देखें तो यही लगता था कि व्यापार असंतुलन विदेशी सरकारों द्वारा जानबूझकर पैदा किया गया था। उसने लाइटर को उंगलियों के बीच घुमाया। कभी उबाऊ पल नहीं होता था।

मैंने शराब की दुकान से लाई हुई बडवाइज़र की ऐशट्रे ढूंढी, उसे उंगलियों से पोंछा और उस आदमी के सामने रख दिया। उसने एक झटके में सिगरेट जलाई, आंखें सिकोड़ीं और धुएं का एक कश छोड़ा।

जूनियर ने एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि अपनी जलती हुई सिगरेट के सिरे को निहारने लगा। जीन-ल्यूक गोडार्ड की फिल्मों में शायद इसी दृश्य का शीर्षक होता: 'अपने तंबाकू की आग को घूरता हुआ'। मेरी किस्मत ही खराब थी कि गोडार्ड की फिल्में अब फैशन से बाहर हो गई थीं। जब जूनियर की सिगरेट का सिरा राख के ढेर में बदल गया, तो उसने उसे हल्के से थपथपाया और राख मेज पर गिर गई। उसके लिए ऐशट्रे की कोई ज़रूरत नहीं थी।

“दरवाजे के बारे में,” जूनियर ने ऊँची, तीखी आवाज़ में कहना शुरू किया। “इसे तोड़ना ज़रूरी था। इसीलिए हमने इसे तोड़ा। अगर हम चाहते तो इसे और शालीनता से खोल सकते थे। लेकिन यह ज़रूरी नहीं था। मुझे उम्मीद है कि आप हमारे बारे में बुरा नहीं सोचेंगे।”

मैंने कहा, "अपार्टमेंट में कुछ नहीं है। तलाशी लो, तुम्हें पता चल जाएगा।"

“खोज?” छोटे कद के आदमी ने हैरानी से पूछा। “खोज?” होंठों पर सिगरेट लिए, उसने अपनी हथेली खुजलाई। “और हम क्या खोज रहे होंगे?”

"खैर, मुझे तो नहीं पता, लेकिन आप यहाँ कुछ ढूंढने ही आए होंगे। दरवाजा तोड़कर ही तो आए हैं।"

“मुझे समझ नहीं आ रहा,” उसने संयमित स्वर में कहा। “ज़रूर आपको गलतफहमी हुई होगी। हमें कुछ नहीं चाहिए। हम बस थोड़ी बातचीत करने आए हैं। बस इतना ही। न कुछ लेने आए हैं, न कुछ खोज रहे हैं। हालांकि, अगर आप मुझे एक कोका-कोला देना चाहें, तो मुझे खुशी होगी।”
मैंने फ्रिज से कोक के दो कैन निकाले और उन्हें दो गिलासों के साथ मेज पर रख दिया।
मैंने अपने पीछे खड़े उस विशालकाय व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे नहीं लगता कि वह भी कुछ पिएगा?"
जूनियर ने अपनी तर्जनी उंगली मोड़ी और बिग बॉय कोक का कैन लेने के लिए दबे पांव आगे बढ़ा। अपने छोटे कद के हिसाब से वह अविश्वसनीय रूप से फुर्तीला था।
“पीने के बाद, उसे अपना मुफ्त प्रदर्शन दिखा देना,” जूनियर ने बिग बॉय से कहा। “यह तो बस एक छोटा सा तमाशा है,” बिग बॉय ने मुझसे कहा।
मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह विशालकाय आदमी पूरा कैन एक ही बार में गटक गया। फिर, यह दिखाने के लिए कि वह खाली है, उसने कैन को उल्टा कर दिया और फिर उसे अपनी हथेलियों के बीच दबा दिया। उसके चेहरे पर जरा भी भाव नहीं बदला, जबकि वह जाना-पहचाना लाल कैन चूर-चूर होकर धातु का एक बेकार टुकड़ा बन गया।
जूनियर ने कहा, "यह एक छोटी सी ट्रिक है, जिसे कोई भी कर सकता है।"
इसके बाद, बिग बॉय ने चपटे एल्युमिनियम के खिलौने को अपनी उंगलियों से ऊपर उठाया। बड़ी आसानी से, हालांकि उसके होंठों पर हल्की सी झनझनाहट दिखाई दी, उसने धातु को टुकड़ों में फाड़ दिया। कमाल का हुनर!
जूनियर ने अधिकारपूर्वक कहा, "वह सौ येन के सिक्के भी मोड़ सकता है। जीवित मनुष्यों में से बहुत कम लोग ऐसा कर सकते हैं।"
मैंने सहमति में सिर हिलाया।
"वह उसके कान नोचकर अलग कर देता है।"
मैंने सहमति में सिर हिलाया।
जूनियर ने बताया, “तीन साल पहले तक वह एक पेशेवर पहलवान था। बुरा पहलवान नहीं था। वह जवान और फुर्तीला था। चैंपियनशिप जीतने लायक था। लेकिन जानते हो उसने क्या किया? उसने जाकर अपने घुटने में चोट लगा ली। और पेशेवर कुश्ती में फुर्तीला होना बहुत ज़रूरी है।”
मैंने तीसरी बार सहमति में सिर हिलाया।
"उसकी असमय चोट लगने के बाद से मैं उसकी देखभाल कर रहा हूँ। वह मेरा चचेरा भाई है, आप जानते ही हैं।"
मैंने पूछा, "क्या आपके परिवार में औसत शारीरिक बनावट वाले लोग नहीं हैं?"
"क्या तुम इसे दोबारा कहना चाहोगे?" जूनियर ने मेरी तरफ घूरते हुए कहा।

मैंने कहा, "बस बातें कर रहे थे।"
जूनियर ने अगले कुछ क्षणों तक अपने विचारों को इकट्ठा किया। फिर उसने अपनी सिगरेट फर्श पर फेंक दी और जूते से उसे बुझा दिया। मैंने कुछ न कहने का फैसला किया।
“तुम्हें थोड़ा और आराम करना चाहिए। खुलकर बात करो, चीजों को सहजता से लो। अगर तुम आराम नहीं करोगे, तो हम दिल खोलकर बातें कैसे कर पाएंगे?” जूनियर ने कहा। “तुम अभी भी बहुत तनाव में हो।”
"क्या मुझे एक बियर मिल सकती है?"
“बिल्कुल। बिल्कुल। ये आपकी बीयर है—आपके फ्रिज में—आपके अपार्टमेंट में। है ना?”
मैंने आगे कहा, "यह मेरा भी दरवाजा था।"
“दरवाजे की चिंता छोड़ो। तुम इतना ज्यादा सोचते रहते हो, इसीलिए तो तुम तनाव में हो। वैसे भी, वह एक घटिया और सस्ता दरवाजा था। तुम अच्छी कमाई करते हो, तुम्हें किसी ऐसी जगह चले जाना चाहिए जहाँ बेहतर दरवाजे हों।”
मुझे मेरी बियर मिल गई।
जूनियर ने अपने गिलास में कोक डाली और झाग के बैठने का इंतज़ार किया, फिर पिया। "माफ़ करना, थोड़ी परेशानी हुई। लेकिन मैं पहले कुछ बातें समझाना चाहता हूँ। हम आपकी मदद करने आए हैं।"
"मेरा दरवाजा तोड़कर?"
उस छोटे आदमी का चेहरा पल भर में लाल हो गया। उसकी नाक के नथुने फूल गए।
“फिर से वही दरवाज़ा खोल दिया। मैंने तुम्हें उसे छोड़ने के लिए कहा था ना?” उसने गुस्से में कहा। फिर उसने बिग बॉय की ओर मुड़कर वही सवाल दोहराया। “क्या मैंने नहीं कहा था?”
उस विशालकाय व्यक्ति ने सहमति में सिर हिलाया।
जूनियर ने आगे कहा, “हम यहाँ सद्भावना मिशन पर आए हैं। तुम भटक गए हो, इसलिए हम तुम्हें नैतिक मार्गदर्शन देने आए हैं। खैर, शायद भटकना कहना ठीक नहीं है। भ्रमित कहना कैसा रहेगा? क्या यह बेहतर है?”
“खो गए हो? उलझन में हो?” मैंने कहा। “मुझे कुछ पता नहीं। न कोई रास्ता, न दरवाजा।”
जूनियर ने अपना सोने का लाइटर उठाया और उसे ज़ोर से फ्रिज पर फेंक दिया, जिससे उसमें गड्ढा हो गया। बिग बॉय ने लाइटर ज़मीन से उठाया और उसे उसके मालिक को लौटा दिया। सब कुछ पहले जैसा हो गया, बस वह गड्ढा गायब था। जूनियर ने शांत होने के लिए अपनी बची हुई कोक पी ली।
“एक-दो खराब दरवाजों से क्या फर्क पड़ता है? स्थिति की गंभीरता पर गौर करें। हम इस अपार्टमेंट की मरम्मत पलक झपकते ही कर सकते हैं। उस दरवाजे के बारे में अब और कुछ मत सुनना।”
मेरा दरवाजा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह कितना सस्ता था। मुद्दा यह नहीं था। दरवाजा किसी खास बात का प्रतीक था।

“ठीक है, दरवाजे की बात भूल जाओ,” मैंने कहा। “इस हंगामे की वजह से मुझे इमारत से बाहर निकाला जा सकता है।”
“अगर कोई आपसे कुछ कहे तो बस मुझे फोन कर देना। हमारे पास एक ऐसा प्रचार कार्यक्रम है जो उन्हें भी विश्वासी बना देगा। निश्चिंत रहो।”
मैं चुपचाप अपनी बियर पीने लगा।
“और एक मुफ्त सलाह,” जूनियर ने कहा। “पैंतीस साल से अधिक उम्र के किसी भी व्यक्ति को बीयर पीने की आदत छोड़ देनी चाहिए। बीयर कॉलेज के छात्रों या शारीरिक श्रम करने वालों के लिए है। इससे पेट निकलता है। बिल्कुल भी सभ्य नहीं लगती।”
बहुत बढ़िया सलाह। मैंने अपनी बियर पी ली।
“लेकिन मैं तुम्हें क्या करने को कहने वाला कौन होता हूँ?” जूनियर ने आगे कहा। “हर किसी की कुछ कमजोरियाँ होती हैं। मेरी कमजोरी है धूम्रपान और मीठा खाना। खासकर मीठा। यह दांतों के लिए हानिकारक है और मधुमेह का कारण बनता है।”
उसने एक और सिगरेट जलाई और अपनी रोलेक्स घड़ी के डायल पर एक नजर डाली।
“अच्छा फिर,” जूनियर ने गला साफ करते हुए कहा। “समय ज्यादा नहीं है, इसलिए चलिए सामाजिक मेलजोल को छोड़ देते हैं। थोड़ा आराम करें?”
मैंने कहा, "थोड़ा बहुत।"
“अच्छा। अब मुद्दे पर आते हैं,” जूनियर ने कहा। “जैसा कि मैं कह रहा था, यहाँ आने का हमारा मकसद आपकी उलझन दूर करना था। अगर आपको कुछ भी समझ नहीं आ रहा है, तो बेझिझक पूछिए।” जूनियर ने हाथ से इशारा करते हुए कहा, “जो मन करे पूछिए।”
“ठीक है, आखिर तुम लोग हो कौन?” मुझे अपना मुंह खोलना ही पड़ा। “तुम लोग यहाँ क्यों हो? तुम्हें इस सब के बारे में क्या पता है?”
“बहुत ही समझदारी भरे सवाल,” जूनियर ने बिग बॉय की ओर सहमति जताते हुए कहा। “तुम तो बड़े होशियार हो। तुम फालतू बातें नहीं करते, सीधे मुद्दे पर आते हो।”
जूनियर ने अपनी सिगरेट को ऐशट्रे में झाड़ दिया। कितनी अच्छी बात है!
“इसे इस तरह समझिए। हम आपकी मदद करने के लिए यहाँ हैं। फिलहाल, इससे क्या फर्क पड़ता है कि हम किस संगठन से जुड़े हैं। हमें बहुत कुछ पता है। हमें प्रोफेसर के बारे में, खोपड़ी के बारे में, फेरबदल किए गए डेटा के बारे में, लगभग हर चीज़ के बारे में पता है। हमें वो बातें भी पता हैं जो आपको नहीं पता। अगला सवाल?”
ठीक है। क्या तुमने खोपड़ी चुराने के लिए किसी गैस इंस्पेक्टर को रिश्वत दी थी?
“क्या मैंने अभी तुम्हें नहीं बताया?” उस छोटे आदमी ने कहा। “हमें खोपड़ी नहीं चाहिए, हमें कुछ भी नहीं चाहिए।”

"अच्छा, किसने किया? गैस निरीक्षक को किसने रिश्वत दी?"
जूनियर ने कहा, "यह उन चीजों में से एक है जो हमें नहीं पता। आप हमें क्यों नहीं बताते?"
मैंने कहा, "तुम्हें लगता है कि मुझे पता है? मुझे बस इतना पता है कि मुझे दुख की जरूरत नहीं है।"
“हमें यही पता था। तुम्हें कुछ नहीं पता। तुम्हारा इस्तेमाल किया जा रहा है।”
तो फिर यहाँ क्यों आए हो?
“जैसा कि मैंने कहा, बस एक शिष्टाचार भेंट थी,” जूनियर ने मेज पर लाइटर पटकते हुए कहा। “सोचा एक-दूसरे से परिचय कर लें। शायद मिलें, कुछ विचार साझा करें। अब आपकी बारी है। आपको क्या लगता है कि क्या चल रहा है?”
"क्या आप चाहते हैं कि मैं अनुमान लगाऊं?"
“आगे बढ़ो। खुद को मुक्त होने दो, एक पक्षी की तरह स्वतंत्र, समुद्र की तरह विशाल। तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।”
“ठीक है, मुझे लगता है कि आप लोग न तो सिस्टम से हैं और न ही फैक्ट्री से। चीजों को देखने का आपका नजरिया अलग है। मुझे लगता है कि आप स्वतंत्र कार्यकर्ता हैं, जो अपना क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं। फैक्ट्री के इलाके पर आपकी नजर है।”
“देखा?” जूनियर ने अपने विशालकाय चचेरे भाई से कहा। “मैंने तुमसे कहा था ना? ये आदमी बहुत होशियार है।”
बिग बॉय ने सिर हिलाया।
"इस तरह के गंदे इलाके में रहने वाले किसी व्यक्ति के लिए अविश्वसनीय रूप से तेज दिमाग। जिसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई हो, उसके लिए अविश्वसनीय रूप से तेज दिमाग।"
मुझे इतने सालों में किसी ने इतनी तारीफ नहीं की थी। मैं शर्म से लाल हो गई।
“तुम्हारा अनुमान अच्छा है,” जूनियर ने कहा। “हम प्रोफ़ेसर के शोध को हासिल करेंगे और अपना नाम रोशन करेंगे। हमने इस सूचना युद्ध की पूरी रणनीति बना ली है। हमने अपना होमवर्क कर लिया है। हमें समर्थन प्राप्त है। हम आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। हमें बस कुछ चीज़ों की ज़रूरत है। सूचना युद्ध की यही तो खासियत है। यह बहुत लोकतांत्रिक है। यहाँ पिछला रिकॉर्ड मायने नहीं रखता। यहाँ सबसे तेज़ दिमाग वाला ही टिकता है। बड़े पैमाने पर। मेरा मतलब है, कौन कह सकता है कि हम हिस्सेदारी नहीं ले सकते? क्या जापान पूरी तरह से एकाधिकारवादी देश है? सिस्टम सूचना जगत में हर चीज़ पर एकाधिकार रखता है, फ़ैक्ट्री पर्दे के पीछे हर चीज़ पर एकाधिकार रखती है। उन्हें प्रतिस्पर्धा का मतलब ही नहीं पता। मुक्त उद्यम का क्या हुआ? क्या यह अन्याय नहीं है? हमें बस प्रोफ़ेसर के शोध और तुम्हारी ज़रूरत है।”
“मैं ही क्यों?” मैंने कहा। “मैं तो बस एक साधारण काम करने वाली चींटी हूँ। मैं अपने काम के सिवा किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचती। इसलिए अगर आप मुझे भर्ती करने की सोच रहे हैं तो—”

जूनियर ने जीभ चटकाते हुए कहा, "लगता है तुम्हें बात समझ नहीं आई। हम तुम्हें भर्ती नहीं करना चाहते। हम बस तुम्हें पकड़ना चाहते हैं। अगला सवाल?"

“ओह, मैं समझ गया,” मैंने कहा। “तो फिर मुझे इंकलिंग्स के बारे में कुछ बताइए?”

“इंकलिंग्स? आप जैसे समझदार आदमी को इंकलिंग्स के बारे में नहीं पता? यानी इन्फ्रा-नॉक्टर्नल कप्पा। आपको लगा था कि कप्पा सिर्फ़ लोककथाओं में होते हैं? वे ज़मीन के नीचे रहते हैं। वे सबवे और सीवरों में छिपते हैं, शहर का कूड़ा खाते हैं और गंदा पानी पीते हैं। उन्हें इंसानों से कोई मतलब नहीं है। सिवाय कुछ सबवे कर्मचारियों के जो गायब हो जाते हैं, हा हा।”

क्या सरकार को इनके बारे में पता नहीं है?

“हाँ, सरकार को पता है। राज्य इतना बेवकूफ नहीं है।”

“तो फिर वे लोगों को चेतावनी क्यों नहीं देते? या फिर इंकलिंग्स को भगा क्यों नहीं देते?”

“सबसे पहले तो,” उन्होंने कहा, “इससे बहुत से लोग नाराज़ हो जाएँगे। ऐसा कोई नहीं चाहेगा, है ना? इंकलिंग्स उनके पैरों के नीचे झुंड बनाकर घूम रहे हों, लोगों को यह पसंद नहीं आएगा। दूसरी बात, उन्हें खत्म करने के बारे में भूल जाइए। आप क्या करेंगे? क्या आप पूरी जापानी आत्मरक्षा बल को टोक्यो के सीवरों में भेज देंगे? अँधेरे में नीचे दलदली इलाका उनका अड्डा है। यह अच्छा नज़ारा नहीं होगा।”

“एक और बात, इंकलिंग्स ने शाही महल से कुछ ही दूरी पर अपना अड्डा बना लिया है। ये एक रणनीतिक चाल है, समझ रहे हो ना? अगर कोई गड़बड़ हुई तो ये रात में चुपके से निकलकर लोगों को ज़मीन में गाड़ देंगे। जापान में तो जैसे उथल-पुथल मच जाएगी, हा हा। है ना? इसीलिए सरकार को इंकलिंग्स से कोई आपत्ति नहीं है और इंकलिंग्स को सरकार से कोई आपत्ति नहीं है।”

"लेकिन मुझे लगा था कि सेमियोटेक ने इंकलिंग्स से दोस्ती कर ली थी," मैंने बीच में टोकते हुए कहा।

“यह सिर्फ एक अफवाह है। और अगर यह सच भी है, तो इसका मतलब सिर्फ इतना होगा कि इंकलिंग्स के एक समूह को सेमियोटेक्स से प्यार हो गया है। यह एक अस्थायी सगाई है, कोई स्थायी शादी नहीं। चिंता की कोई बात नहीं।”

लेकिन क्या इंकलिंग्स ने प्रोफेसर का अपहरण नहीं कर लिया है?

“हमने भी यही सुना है। लेकिन हमें पक्का पता नहीं है। हो सकता है प्रोफेसर ने ही यह सब रचा हो।”

"प्रोफेसर ऐसा क्यों करेंगे?"

जूनियर ने अलग-अलग कोणों से अपने लाइटर को देखते हुए कहा, "प्रोफेसर किसी के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। वे सर्वश्रेष्ठ हैं और उन्हें यह पता है। सेमियोटेक भी जानते हैं, कैलकुटेक भी जानते हैं। वे बस बीच का रास्ता अपनाते हैं। इस तरह वे अपनी रिसर्च को आगे बढ़ा सकते हैं और अपनी मर्जी से काम कर सकते हैं। एक दिन वे ज़रूर कामयाबी हासिल करेंगे। यहीं पर तुम्हारी भूमिका आती है।"

“उसे मेरी ज़रूरत क्यों होगी? मेरे पास कोई विशेष कौशल नहीं है। मैं एक बिल्कुल साधारण आदमी हूँ।”

जूनियर ने अपने हाथों में लाइटर घुमाते हुए कहा, "हम खुद ही इसका हल निकालने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे पास कुछ विचार हैं। कुछ भी पक्का नहीं है। वैसे भी, वह तुम्हारे बारे में सब कुछ पढ़ रहा है। वह काफी समय से कुछ तैयारी कर रहा है।"
"अच्छा, है ना? तो आप उसके आखिरी टुकड़े को सही जगह पर रखने का इंतजार कर रहे हैं, और फिर आपके पास मैं और शोध होंगे।"
जूनियर ने कहा, "बिल्कुल सही। मौसम अचानक बदल रहा है। फैक्ट्री को कुछ गड़बड़ लग रही है और उन्होंने कदम उठा लिया है। इसलिए हमें भी कदम उठाने होंगे।"
“सिस्टम के बारे में क्या?”
नहीं, वे समझने में धीमे हैं। लेकिन उन्हें समय दीजिए। वे प्रोफेसर को बहुत अच्छी तरह जानते हैं।
"आपका क्या मतलब है?"
"प्रोफेसर पहले सिस्टम के लिए काम करते थे।"
“प्रणाली?”
“जी हां, प्रोफेसर आपके पूर्व सहकर्मी हैं। बेशक, वे आपके जैसा काम नहीं कर रहे थे। वे केंद्रीय अनुसंधान विभाग में थे।”
“केंद्रीय अनुसंधान?” यह समझना बहुत मुश्किल होता जा रहा था। मैं सबके बीचोंबीच खड़ा था, लेकिन मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
“तुम्हारा यह सिस्टम बहुत बड़ा है, हद से ज़्यादा बड़ा। दायाँ हाथ कभी नहीं जानता कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। इतनी ज़्यादा जानकारी है कि तुम उसे संभाल नहीं सकते। और सेमियोटेक भी उतने ही बुरे हैं। इसीलिए प्रोफ़ेसर ने संगठन छोड़ दिया और अपना काम खुद शुरू कर दिया। वो बहुत बुद्धिमान हैं। उन्हें मनोविज्ञान और दिमाग से जुड़ी हर तरह की चीज़ों में रुचि है। उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहते हैं। उन्हें इस सिस्टम की ज़रूरत ही क्या है?”
और मैंने इस आदमी को मनी लॉन्ड्रिंग और हेराफेरी के बारे में समझाया था? इस तकनीक का आविष्कार तो उसने किया था! मैं कितना बड़ा मजाक था!
“कैल्क्यूटेक के ज़्यादातर कंप्यूटर सिस्टम उन्हीं के डिज़ाइन के हैं। ये कोई अतिशयोक्ति नहीं है। तुम तो उस बूढ़े आदमी के शहद से लदी हुई एक श्रमिक मधुमक्खी की तरह हो,” उस छोटे आदमी ने कहा। “शायद ये कोई बहुत अच्छी उपमा नहीं है।”
मैंने कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
“जैसे ही प्रोफ़ेसर ने पद छोड़ा, फ़ैक्ट्री से कुछ जासूस उनके दरवाज़े पर आ पहुँचे। लेकिन प्रोफ़ेसर ने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी खिड़कियाँ खुद साफ़ करनी हैं, जिसकी वजह से उनके कई प्रशंसक उनसे दूर हो गए। कैलकुटेक्स के लिए उन्हें बहुत कुछ पता था, और सेमिओटेक्स ने तो उन्हें पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया था। जो आपके पक्ष में नहीं है, वो आपका दुश्मन है, है ना? इसलिए जब उन्होंने

इंकलिंग्स के बगल में ज़मीन के नीचे अपनी प्रयोगशाला बनाई, तो प्रोफ़ेसर और बाकी सब आमने-सामने थे। मुझे लगता है कि आप वहाँ गए होंगे?"
मेंने सिर हिलाया।
"सच में पागल, लेकिन दिमागी रूप से तेज़। कोई भी उस प्रयोगशाला के पास नहीं जा सकता। पूरी जगह इंकलिंग्स से भरी पड़ी है। प्रोफ़ेसर आते-जाते रहते हैं। वे इंकलिंग्स को डराने के लिए ध्वनि तरंगें छोड़ते हैं। एकदम सही बचाव। उनकी वो लड़की और आप ही वो लोग हैं जो कभी अंदर गए हैं। इससे पता चलता है कि आप कितने महत्वपूर्ण हैं। तो हमें लगता है कि प्रोफ़ेसर आपको ताबूत में बंद करके सब कुछ बांधने वाले हैं।"
मैंने आह भरी। यह सब अजीब होता जा रहा था। अगर मैं उसकी बात मान भी लेता, तो भी इस पर यकीन नहीं करता।
"क्या आप मुझे यह बता रहे हैं कि मैंने प्रोफेसर के लिए जो भी प्रयोग डेटा संसाधित किया, वह सिर्फ इसलिए था ताकि वह मुझे लुभा सके?"
"नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं," उस छोटे आदमी ने कहा। उसने एक बार फिर अपनी घड़ी पर नज़र डाली। "वह डेटा एक प्रोग्राम था। एक टाइम बम। समय आएगा और—धमाका! बेशक, यह सिर्फ़ हमारा अनुमान है। पक्का तो सिर्फ़ आपके प्रोफ़ेसर को ही पता है। खैर, मुझे लगता है कि समय कम है, इसलिए हमें अपनी यह छोटी-सी बातचीत यहीं खत्म कर देनी चाहिए। इसके बाद हमारी एक छोटी सी मुलाक़ात है।"
"एक मिनट रुकिए, प्रोफेसर की पोती को क्या हुआ है?"
"बच्चे को कुछ हुआ क्या?" जूनियर ने मासूमियत से पूछा। "हमें कुछ नहीं पता। हर किसी का ख्याल रखना तो नामुमकिन है। उस प्यारे से बच्चे से तुम्हारा कुछ लगाव था क्या?"
"नहीं," मैंने कहा। खैर, शायद नहीं।
जूनियर अपनी कुर्सी से उठा, मुझसे नज़रें हटाए बिना, मेज से अपना लाइटर और सिगरेट उठाकर जेब में रख लीं। "मुझे लगता है आपसे मिलकर अच्छा लगा। लेकिन मुझे एक राज़ बताना है। अभी हम सेमियोटेक से एक कदम आगे हैं। फिर भी, हम छोटे हैं, इसलिए अगर वे हरकत में आ गए, तो हम कुचल दिए जाएँगे। हमें उन्हें व्यस्त रखना होगा। समझे?"
मैंने कहा, "शायद।"
"अब अगर आप हमारी जगह होते, तो आपको क्या लगता है कि उन्हें व्यस्त रखने के लिए आप क्या करते?"
मेरा अनुमान था, "क्या यह व्यवस्था है?"
"देखा?" जूनियर ने बिग बॉय से फिर कहा। "कितना सटीक और सटीक। मैंने तुम्हें बताया था ना?" फिर उसने मेरी तरफ देखा। "लेकिन इसके लिए हमें चारा चाहिए। चारा नहीं तो मछली नहीं फंसेगी।"
मैंने जल्दी से कहा, "मुझे इस तरह की चीजों के लिए बिल्कुल भी मन नहीं है।"

उन्होंने कहा, "हम आपसे यह नहीं पूछ रहे हैं कि आप कैसा महसूस करते हैं। हमें थोड़ी जल्दी है। इसलिए अब हमारी बारी है एक छोटा सा सवाल पूछने की। इस अपार्टमेंट में, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीजें क्या हैं?"

मैंने कहा, "यहाँ कुछ भी नहीं है। कोई भी कीमती चीज़ नहीं है। सब कुछ सस्ता सामान है।"

“हम जानते हैं। लेकिन कुछ न कुछ तो ऐसा होगा, कोई न कोई छोटी-मोटी चीज़ जिसे आप नष्ट होते नहीं देखना चाहते। चाहे वह सस्ती हो या महंगी, यहाँ आपकी ही ज़िंदगी है, है ना?”

“नष्ट हो गया?” मैंने कहा। “नष्ट हो गया, तुम्हारा क्या मतलब है?”

“पूरी तरह नष्ट हो गया, मतलब... नष्ट हो गया। जैसे दरवाज़ा,” उस छोटे आदमी ने टूटे हुए कब्ज़ों से उखड़े हुए दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा। “पूरी तरह नष्ट।”

“किसलिए?”

“विनाश केवल विनाश के लिए किया जा रहा है। क्या आपको स्पष्टीकरण चाहिए? तो आप हमें सीधे-सीधे बता दीजिए कि आप क्या नष्ट नहीं करवाना चाहते। हम उन्हें उचित सम्मान देना चाहते हैं।”

“अच्छा, वो वीडियोडेक,” मैंने हार मानते हुए कहा। “और वो टीवी। ये थोड़े महंगे हैं और मैंने इन्हें अभी-अभी खरीदा है। फिर मेरे पास व्हिस्की का कलेक्शन भी है।”

"और कुछ?"

“मेरा नया सूट और मेरी चमड़े की जैकेट। यह अमेरिकी वायु सेना की बॉम्बर जैकेट है जिसमें फर का कॉलर लगा है।”

"और कुछ?"

मैंने कहा, "बस इतना ही।"

छोटे आदमी ने सिर हिलाया। बड़े आदमी ने भी सिर हिलाया।

तुरंत ही बिग बॉय ने सारे अलमारियां और कोठरी खोल दीं। उसे वह बुलवर्कर मिल गया जिसका इस्तेमाल मैं कभी-कभी व्यायाम के लिए करता हूँ, और उसने उसे पीछे की ओर घुमाकर फुल बैक-प्रेस किया। बहुत ही शानदार!

फिर उसने शाफ्ट को बेसबॉल बैट की तरह पकड़ लिया। मैं आगे झुककर देखने लगा कि वह क्या कर रहा है। वह टीवी के पास गया, बुलवर्कर उठाया और पिक्चर ट्यूब पर पूरी ताकत से वार किया। क्रब्लैम! चारों ओर कांच बिखर गया, साथ ही सौ छोटी-छोटी चमकती रोशनी भी निकली।

“अरे!...” मैं चिल्लाया और अपने पैरों पर खड़ा हो गया, इससे पहले कि जूनियर ने मुझे चुप कराने के लिए मेज पर अपना हाथ पटका।

इसके बाद बिग बॉय ने वीडियोडेक को उठाया और पुराने टीवी के एक कोने पर बार-बार पटका। स्विच उड़ गए, तार में शॉर्ट सर्किट हो गया और सफेद धुएं का एक बादल हवा में ऐसे उठ खड़ा हुआ मानो किसी ने अपनी जान बचा ली हो। वीडियोडेक के पूरी तरह से नष्ट हो जाने के बाद, बिग बॉय ने उसके ढांचे को फर्श

पर फेंक दिया और अपनी जेब से एक स्विचब्लेड निकाला। ब्लेड झट से खुल गया। अब वह मेरे कपड़ों की अलमारी खंगाल रहा था और लगभग दो लाख येन कीमत के बॉम्बर जैकेट और ब्रूक्स ब्रदर्स सूट को फिर से ठीक कर रहा था।

“लेकिन आपने कहा था कि आप मेरी कीमती चीजों को हाथ नहीं लगाएंगे,” मैं रोते हुए बोली।

“मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। मैंने कहा था कि हम उन्हें उचित सम्मान देंगे। हम हमेशा सर्वश्रेष्ठ से शुरुआत करते हैं। यह हमारी छोटी सी नीति है।”

बिग बॉय मेरे आरामदायक, सुरुचिपूर्ण अपार्टमेंट में तबाही शब्द को एक नया अर्थ दे रहा था। मैंने फ्रिज से बीयर का एक और कैन निकाला और आतिशबाजी देखने के लिए आराम से बैठ गया।

14

वुड्स

समय आने पर पतझड़ भी विदा हो जाता है। एक सुबह मैं जागा और आसमान पर एक नज़र डालते ही जान गया कि सर्दी नज़दीक है। ऊँचे, जीवंत पतझड़ के बादल गायब हो गए थे; उनकी जगह उत्तरी पर्वतमाला पर घने बादलों का एक समूह छा गया था, मानो कोई बुरी खबर लेकर आया हो। पतझड़ का स्वागत एक खुशमिजाज और मनमोहक मेहमान की तरह हुआ था; उसका ठहराव बहुत कम था, और उसका जाना बहुत अचानक।

शरद ऋतु का बीत जाना एक अस्थायी खालीपन छोड़ जाता है, साल में एक ऐसा खालीपन जो किसी ऋतु का नहीं है। जानवरों के शरीर की चमक फीकी पड़ने लगती है, उनका सुनहरा रंग धीरे-धीरे सफेद होने लगता है। यह इस बात का संकेत है कि सर्दी नजदीक आ रही है। कस्बे के सभी जीव-जंतु अपने सिर झुका लेते हैं, अपने शरीर को ठंड के लिए तैयार कर लेते हैं। सर्दी के संकेत कस्बे को एक अदृश्य आवरण की तरह ढक लेते हैं। हवा की आवाज, घासों का लहराना, रात के सन्नाटे में पत्थरों पर एड़ियों की खटखटाहट, सब कुछ एक अशुभ भार के नीचे दूर होता चला जाता है। यहाँ तक कि नदी का पानी, जो कभी रेत के टीलों से टकराते हुए इतना सुखद लगता था, अब मुझे सुकून नहीं देता। आत्मरक्षा के लिए एक सहज अलगाव होता है, एक ऐसा समापन जो पूर्णता का रूप धारण कर लेता है। सर्दी अपने आप में एक ऋतु है। पक्षियों की छोटी-छोटी आवाजें पतली और तीखी हो जाती हैं; कभी-कभी केवल उनके पंखों की फड़फड़ाहट ही उस खालीपन को भंग करती है।

“इस सर्दी में भीषण ठंड पड़ने वाली है,” कर्नल ने कहा। “बादलों को देखकर ही अंदाजा लग जाता है। देखिए, ये कितने काले हैं।”

बूढ़ा अधिकारी मुझे खिड़की तक ले जाता है और पहाड़ियों पर छाए घने बादलों की ओर इशारा करता है।

“हर साल इस समय, सर्दियों के बादलों की पहली लहर उत्तरी पर्वतमाला पर आकर ठहर जाती है। ये आने वाली भीषण ठंड के दूत होते हैं। हल्के, सपाट बादल सुहावने तापमान का संकेत देते हैं। घने बादल, ठंडे मौसम का। सबसे भयानक वे बादल होते हैं जो शिकारी पक्षियों की तरह अपने पंख फैलाते हैं। जब वे दिखाई देते हैं, तो समझ लीजिए कि कड़ाके की सर्दी आने वाली है। उदाहरण के लिए, वह बादल।”

आँखें सिकोड़कर, मैंने उत्तरी पर्वतमाला के ऊपर आकाश का अवलोकन किया। धुंधला होने के बावजूद, मैंने उस बादल को पहचान लिया जिसका वर्णन उस बूढ़े अधिकारी ने किया था। पहाड़ जितना विशाल, वह पूरी पर्वतमाला पर फैला हुआ था, मानो ऊँचाई से झपट्टा मारने के लिए तैयार एक दुष्ट चट्टान हो।

“हर पचास-साठ साल में एक बार, कड़ाके की सर्दी पड़ती है,” कर्नल ने कहा। “तुम्हारे पास कोट नहीं है, है ना?”

“नहीं, मेरे पास नहीं है,” मैंने कहा। मेरे पास केवल वही हल्की सूती जैकेट है जो मुझे शहर में पहली बार आने पर दी गई थी।

बूढ़े अधिकारी ने अपनी अलमारी खोली और एक गहरे नीले रंग का फौजी कोट निकाला। उन्होंने वह कोट मुझे दे दिया। कोट पत्थर की तरह भारी था, और उसकी ऊन छूने में खुरदरी थी।

“थोड़ा बड़ा है, लेकिन आपके काम आएगा। मैंने इसे कुछ समय पहले ही आपके लिए खरीदा है। साइज़ कैसा है?”

मैंने कोट पहन लिया। कंधे कुछ ज़्यादा चौड़े हैं और बनावट भी कुछ ठीक नहीं है, लेकिन काम चल जाएगा। जैसा कि उस बूढ़े अधिकारी ने कहा था, यह मेरे लिए अच्छा साबित होगा।

“क्या तुम अभी भी अपना नक्शा बना रहे हो?” कर्नल ने पूछा।

“हाँ,” मैं कहता हूँ। “कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में मुझे जानकारी नहीं है, लेकिन मैं इसे पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।”

“मैं आपको नक्शों से हतोत्साहित नहीं करूँगा। यह आपका निजी मामला है, और इससे किसी को कोई परेशानी नहीं है। नहीं, मैं यह नहीं कहूँगा कि यह गलत है, हालाँकि सर्दियों के बाद आपको जंगलों में जाना बंद कर देना चाहिए। आबादी वाले इलाकों से दूर जाना बुद्धिमानी नहीं है, खासकर इस सर्दी में। जैसा कि आप जानते हैं, यह कस्बा बहुत बड़ा नहीं है, लेकिन आप रास्ता भटक सकते हैं। बेहतर होगा कि आप नक्शों का काम वसंत ऋतु के लिए छोड़ दें।”

“मैं समझ गया,” मैंने कहा। “सर्दी कब शुरू होती है?”

“बर्फ के साथ। बर्फ के पहले टुकड़े सर्दियों की शुरुआत का संकेत देते हैं। जब नदी में रेत के टीलों से बर्फ पिघल जाती है, तो सर्दियों का अंत हो जाता है।”

हम उत्तरी पर्वतमाला पर बादलों को निहारते हुए अपनी सुबह की कॉफी पी रहे हैं।

“एक और महत्वपूर्ण बात,” कर्नल ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। “दीवार और जंगल से दूरी बनाए रखें। सर्दियों में, वे एक भयानक शक्ति का रूप ले लेते हैं।”

“वुड्स के बारे में यह सब क्या है? उनके पास ऐसा क्या है?”

कुछ देर सोचने के बाद बूढ़े सैनिक ने कहा, "बिल्कुल कुछ नहीं। बिल्कुल कुछ नहीं। कम से कम, हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे लिए, जंगल एक अनावश्यक इलाका है।"

क्या जंगल में कोई नहीं रहता?

बूढ़ा अधिकारी चूल्हे का ढक्कन उठाकर राख झाड़ता है। फिर वह उसमें कुछ छोटी टहनियाँ और कोयला डालता है। वह कहता है, “शायद हमें आज रात से चूल्हे जलाने पड़ेंगे। हमारी जलाऊ लकड़ी और कोयला

जंगल से ही हैं। हाँ, मशरूम, चाय और अन्य खाने-पीने का सामान भी। तो इस लिहाज से जंगल हमारे काम का है। बस इतना ही। इसके अलावा वहाँ कुछ नहीं है।"

"तो क्या जंगल में ऐसे लोग भी हैं जो कोयला खोदकर और लकड़ियाँ व मशरूम इकट्ठा करके अपना जीवन यापन करते हैं?"

"हाँ, कुछ लोग वहाँ रहते हैं। वे शहर में कोयला, लकड़ी और मशरूम लाते हैं, और बदले में हम उन्हें अनाज और कपड़े देते हैं। एक जगह है जहाँ ये लेन-देन साप्ताहिक रूप से होते हैं, लेकिन यह केवल कुछ खास लोगों द्वारा ही किया जाता है। जंगलवासियों से कोई और संपर्क नहीं होता। वे शहर के पास नहीं आते; हम जंगल के पास नहीं जाते। उनका जीवन हमारे जीवन से बिल्कुल अलग है।"

"ऐसा कैसे?"

"हर मायने में," बूढ़ा अधिकारी कहता है, "वे हमसे अलग हैं। लेकिन उनमें दिलचस्पी लेना बुद्धिमानी नहीं है। वे खतरनाक हैं। वे तुम पर प्रभाव डाल सकते हैं। यहाँ तुम्हारा व्यक्तित्व अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है। और जब तक तुम्हारा व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित नहीं हो जाता, मैं तुम्हें ऐसे खतरे से खुद को बचाने की सलाह देता हूँ। जंगल तो बस जंगल ही हैं। तुम्हें बस अपने नक्शे पर 'जंगल' लिखना है। समझे?"

"समझा।"

"फिर आती है वो दीवार। सर्दियों में ये दीवार सबसे बड़ा खतरा होती है। खासकर सर्दियों में, ये दीवार पूरे शहर को घेर लेती है। ये अभेद्य है और हमें हमेशा के लिए कैद कर लेती है। दीवार अंदर घटने वाली हर चीज़ देखती है। सावधान रहो, ऐसा कुछ मत करो जो तुम्हें दीवार के पास ले जाए। मैं फिर दोहराता हूँ: तुम अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुए हो। तुम्हारे मन में शंकाएँ हैं, विरोधाभास हैं, पछतावे हैं, तुम कमज़ोर हो। सर्दी का मौसम तुम्हारे लिए सबसे खतरनाक मौसम है।"

फिर भी, सर्दी शुरू होने से पहले, मुझे जंगल में निकलना होगा। वादा निभाने के बाद, नक्शा जल्द ही मेरे साथी को सौंपने का समय आ जाएगा। उसने मुझसे साफ तौर पर जंगल की छानबीन करने को कहा है। जब मैं यह कर लूंगा, तो नक्शा तैयार हो जाएगा।

उत्तरी पहाड़ी पर मंडराता बादल अपने पंख फैलाए, आगे की ओर झुका हुआ है, मानो शहर के ऊपर से उड़ने के लिए तैयार हो। सूरज डूब रहा है। आसमान बादलों से घिरा है, एक धुंधली चादर से छनकर आती रोशनी ठहर रही है। मेरी कमजोर आँखों के लिए, यह राहत का मौसम है। साफ आसमान के वो दिन चले गए। अब बादलों को उड़ाने वाली तेज़ हवाएँ नहीं चलेंगी।

मैं नदी किनारे वाली सड़क से जंगल में प्रवेश करता हूँ, मेरा इरादा सीधे अंदरूनी हिस्से में जाने का है, दीवार के समानांतर चलते हुए ताकि मैं रास्ता न भटक जाऊँ। इसी तरह मैं जंगल के चारों ओर दीवार की रूपरेखा भी बनाऊँगा।

यह आसान नहीं है। रास्ते में गहरी खाइयाँ हैं जहाँ ज़मीन अचानक नीचे गिर जाती है। मैं संभलकर कदम रखता हूँ, फिर भी खुद को घनी ब्लैकबेरी की झाड़ियों में धँसा हुआ पाता हूँ। दलदली ज़मीन रास्ता रोक देती

है; कहीं-कहीं मकड़ियाँ अपने जाले फैलाकर मेरे चेहरे और हाथों को जकड़ लेती हैं। विशाल शाखाओं का एक आवरण जंगल को समुद्र तल के अंधकार में रंग देता है। जड़ें जंगल की ज़मीन पर ऐसे रेंगती हैं जैसे कोई घातक त्वचा रोग हो।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि घनी झाड़ियों में कुछ हलचल हो रही है।

लेकिन जैसे ही मैं दीवार से मुड़कर जंगल के भीतरी हिस्से में कदम रखता हूँ, एक रहस्यमय और शांत दुनिया मेरे सामने खुल जाती है। जंगल में जीवन की जो अनुभूति होती है, वह मुझे असीम शांति प्रदान करती है। भला यह वही खतरनाक इलाका कैसे हो सकता है जिसके बारे में बूढ़े कर्नल ने मुझे चेतावनी दी थी? यहाँ पेड़-पौधे और छोटे-छोटे जीव एक अटूट जीवन-संरचना का हिस्सा हैं; हर पत्थर में, मिट्टी के हर ढेले में एक अविचल व्यवस्था का आभास होता है।

जैसे-जैसे मैं दीवार से दूर जंगल के भीतर की ओर बढ़ता हूँ, ये अनुभूतियाँ और भी प्रबल होती जाती हैं। दुर्भाग्य के सारे साये जल्द ही दूर हो जाते हैं, पेड़ों की आकृतियाँ और पत्तियों के रंग किसी तरह अधिक जीवंत हो उठते हैं, पक्षियों के गीत लंबे और अधिक मधुर हो जाते हैं। छोटी-छोटी घाटियों में, भीतरी जंगलों से बहने वाली हवाओं में, वह अंधकार और तनाव नहीं है जो मैंने दीवार के पास महसूस किया था। आखिर ये परिवेश इतना अंतर क्यों पैदा कर रहा है? क्या यह दीवार की शक्ति है जो वातावरण को अशांत कर रही है? या यह स्वयं भूमि है?

जंगल में और अंदर तक चलना कितना भी सुखद क्यों न हो, मैं दीवार को नज़रों से ओझल नहीं होने देना चाहता। क्योंकि अगर मैं जंगल में बहुत अंदर चला गया, तो मैं रास्ता भटक जाऊंगा। यहाँ न कोई पगडंडी है, न कोई निशान जो मुझे राह दिखाए। मैं अपने कदम संभलकर रखता हूँ।

मुझे कोई वनवासी नहीं मिला। मुझे न तो कोई पदचिह्न दिखाई दिया, न ही मानव हाथों द्वारा निर्मित कोई वस्तु। मैं डर और उम्मीद के साथ चलता रहा। शायद मैं जंगल के भीतरी हिस्से में पर्याप्त दूर तक नहीं पहुंचा हूँ। शायद वे चतुराई से मुझसे बच रहे हैं।

इन खोजों के तीसरे या चौथे दिन, जब मैं उस बिंदु पर पहुँचा जहाँ पूर्वी दीवार दक्षिण की ओर एक तीखा मोड़ लेती है, तो मुझे एक छोटा सा खुला मैदान दिखाई दिया। यह एक खुला स्थान था, जो दीवार के मोड़ से थोड़ा बाहर की ओर फैला हुआ था। हैरानी की बात यह थी कि यह आसपास के घने जंगल से अछूता था। इस एक खुले मैदान में एक ऐसी शांति व्याप्त थी जो दीवार के इतने करीब असामान्य सी लग रही थी, एक ऐसी शांति जो मैंने केवल भीतरी जंगलों में ही महसूस की थी। ज़मीन पर हरी-भरी घास की चादर बिछी हुई थी, जबकि ऊपर आकाश का एक छोटा सा टुकड़ा पेड़ों की चोटियों के बीच से निकलता हुआ दिखाई दे रहा था।

जंगल के एक छोर पर पत्थर की बनी एक ऊँची नींव खड़ी है, जिस पर कभी कोई इमारत टिकी हुई थी। नींव से पता चलता है कि इस इमारत की दीवारें बड़ी बारीकी से बनाई गई थीं। फर्श का नक्शा देखने पर मुझे तीन अलग-अलग कमरे दिखाई देते हैं, साथ ही एक रसोईघर, स्नानघर और गलियारा भी रहा होगा। मैं यह

समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि जंगल के इतने भीतरी हिस्से में घर क्यों बनाया गया था, और इसे पूरी तरह से क्यों छोड़ दिया गया है।

रसोई के पीछे एक पत्थर के कुएं के अवशेष हैं। यह घास से ढका हुआ है। क्या यहाँ रहने वालों ने इसे खुद ही भर दिया होगा?

मैं कुएं के सहारे बैठ जाता हूँ और आकाश की ओर देखता हूँ। उत्तरी पहाड़ी से आती हवा मेरे आस-पास के पेड़ों की शाखाओं को सरसरा देती है। नमी से भरा एक बादल आकाश में धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। मैं अपना कॉलर ऊपर कर लेता हूँ और उसे धीरे-धीरे गुजरते हुए देखता हूँ।

घर के खंडहरों के पीछे दीवार खड़ी है। जंगल में मैं कभी दीवार के इतने करीब नहीं आया था। यह सचमुच मनमोहक है। पूर्वी जंगल के इस छोटे से खुले मैदान में, इस पुराने कुएँ के पास आराम करते हुए, हवा की आवाज़ सुनते हुए, दीवार को देखते हुए, मैं द्वारपाल के शब्दों को पूरी तरह समझ जाता हूँ: यह दीवार परिपूर्ण है। एक परिपूर्ण रचना। यह वैसे ही खड़ी है जैसे शुरुआत से खड़ी है। ऊपर बादलों की तरह, धरती पर खुदी हुई नदी की तरह।

दीवार इतनी विशाल है कि उसे नक्शे पर चित्रित करना असंभव है। यह स्थिर नहीं है। इसकी धड़कन बहुत तीव्र है, इसके वक्र इतने मनमोहक हैं कि हर नए कोण से देखने पर इसका रूप नाटकीय रूप से बदल जाता है। कागज पर इसका सटीक चित्रण संभव नहीं है। मुझे लगता है कि अपनी रेखाचित्र पुस्तिका में ऐसा करने का मेरा प्रयास व्यर्थ है।

मैं झपकी लेने के लिए अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ। हवा लगातार तेज़ गति से बह रही है, लेकिन पेड़ और दीवार ठंड से बचाव कर रहे हैं। मैं अपनी परछाई के बारे में सोचता हूँ। मैं उस नक्शे के बारे में सोचता हूँ जो उसने माँगा था। ज़्यादा समय नहीं बचा है।

मेरे नक्शे में सटीकता और विवरण की कमी है। जंगल के भीतरी हिस्से लगभग खाली हैं। लेकिन सर्दियाँ लगभग आ ही गई हैं। आगे घूमने के अवसर कम होते जा रहे हैं। मैंने अपनी रेखाचित्र पुस्तिका में कस्बे की एक सामान्य रूपरेखा बनाई है, जिसमें प्रमुख स्थलों और इमारतों का स्थान भी दर्शाया है। मैंने जो तथ्य सीखे हैं, उन्हें भी नोट कर लिया है।

यह निश्चित नहीं है कि द्वारपाल मुझे मेरी परछाई के पास आने देगा, भले ही उसने वादा किया हो कि जब दिन छोटे हो जाएंगे और मेरी परछाई कमजोर हो जाएगी, तब हम मिलेंगे। अब जब सर्दी नजदीक है, तो ये शर्तें पूरी होने की पूरी संभावना है।

मेरी आँखें अभी भी बंद हैं, मैं लाइब्रेरियन के बारे में सोच रही हूँ। मैं उदासी से भरी हुई हूँ, हालाँकि मुझे इन भावनाओं का कारण समझ नहीं आ रहा है।

मैं लाइब्रेरियन से रोज़ मिलती हूँ, लेकिन मेरे अंदर का खालीपन बना रहता है। मैंने लाइब्रेरी में पुराने सपने पढ़े हैं। वह मेरे पास बैठी हैं। हमने साथ में खाना खाया है। मैं उन्हें घर तक छोड़ने गई हूँ। हमने कई बातें की हैं।

अजीब बात है, मेरा दुख बढ़ता ही जा रहा है, गहराता जा रहा है। जो भी नुकसान है, हर बार मिलने पर वह और भी बढ़ जाता है। यह एक ऐसा कुआँ है जो कभी नहीं भरेगा। यह अँधेरा है, असहनीय रूप से अँधेरा।
मुझे लगता है कि ये भावनाएँ भूली हुई यादों से जुड़ी हैं। मैंने उसमें कुछ जुड़ाव खोजने की कोशिश की है। मुझे अपने आप में कुछ भी नहीं मिलता। रहस्य सुलझ नहीं रहा। मेरा अपना अस्तित्व कमजोर और अनिश्चित लगता है।
मैं इन उलझे हुए विचारों को अपने दिमाग से निकाल देता हूं और सोने की कोशिश करता हूं।
मैं जागता हूँ तो देखता हूँ कि दिन लगभग समाप्त हो चुका है, तापमान तेज़ी से गिर गया है। मुझे कंपकंपी हो रही है। मैं अपना कोट कसकर ओढ़ लेता हूँ। जैसे ही मैं खड़ा होकर घास झाड़ता हूँ, बर्फ के टुकड़े मेरे गालों को छूते हैं। मैं ऊपर देखता हूँ। बादल नीचे हैं, चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ है। बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़े धीरे-धीरे नीचे गिर रहे हैं। सर्दी आ गई है।
वापस लौटने से पहले, मैं दीवार पर एक और नज़र डालता हूँ। बर्फ से ढके आसमान के नीचे, यह पहले से कहीं अधिक भव्य और परिपूर्ण दिखाई देती है। जैसे ही मैं इसे देखता हूँ, मुझे ऐसा लगता है जैसे वे मुझे घूर रहे हों। वे मानो कह रहे हों, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम क्या खोज रहे हो?
ऐसे सवाल जिनका जवाब मैं नहीं दे सकता। ठंड में थोड़ी सी नींद ने मेरी सारी गर्माहट छीन ली है, और मेरा दिमाग अमूर्त आकृतियों से भरा हुआ है। क्या मैं किसी और के शरीर में हूँ? सब कुछ इतना भारी और इतना अस्पष्ट है।
मैं जंगल से होते हुए पूर्वी द्वार की ओर दौड़ता हूँ, अब दीवार की ओर न देखने का निश्चय कर चुका हूँ। मुझे बहुत लंबी दूरी तय करनी है। अंधेरा पल-पल गहराता जा रहा है। मेरा संतुलन बिगड़ता जा रहा है। मैं बार-बार रुकता हूँ, हिम्मत जुटाने के लिए, अपनी नसों से सुन्नपन दूर करने के लिए। मुझे रात का आभास हो रहा है। शायद जंगल में मुझे सींग की आवाज़ सुनाई दे रही है। वह आवाज़ मेरे ध्यान से बिना किसी निशान के गुज़र जाती है।
अंततः मैं जंगल से निकलकर नदी के किनारे पहुँच गया। ज़मीन पर सन्नाटा पसरा हुआ था। न चाँद, न तारे, सब कुछ बर्फ़बारी से ढक गया था। मुझे पानी की ठंडी आवाज़ सुनाई दे रही थी, हवा मेरे पीछे पेड़ों से गुज़रते हुए मुझे चिढ़ा रही थी। पुस्तकालय कितनी दूर है? मुझे याद नहीं। मुझे बस इतना याद है कि नदी के किनारे एक सड़क थी, जो दूर तक जाती जा रही थी। छाया में विलो के पेड़ झूम रहे थे, ऊपर से हवा तेज़ चल रही थी। मैं चलता रहा, चलता रहा, लेकिन मंज़िल नज़र नहीं आ रही थी।
वह मुझे चूल्हे के सामने बिठाती है और अपना हाथ मेरे माथे पर रखती है। उसका हाथ बर्फ जैसा ठंडा है। मेरी स्वाभाविक प्रतिक्रिया उसे दूर धकेलने की होती है, लेकिन मैं हाथ उठा नहीं पाती। क्योंकि अगर मैं हाथ उठाती हूँ, तो मुझे अचानक मतली महसूस होती है।
“तुम्हें बुखार है,” वह कहती है। “तुम कहाँ चले गए थे?”

मेरे लिए जवाब देना नामुमकिन है। मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं यह भी नहीं समझ पा रहा कि वह क्या पूछ रही है।

वह कई कंबल लाती है और मुझे उनमें लपेट देती है। मैं चूल्हे के पास लेट जाती हूँ। उसके बाल मेरे गालों को छूते हैं। मैं नहीं चाहती कि वह चली जाए। मुझे नहीं पता कि यह विचार मेरा है या किसी स्मृति के टुकड़े से निकलकर मेरे मन में आ गया है। मैंने बहुत कुछ खो दिया है। मैं बहुत थक गई हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं धीरे-धीरे बह रही हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे मैं बिखर रही हूँ, मेरे अस्तित्व के कुछ हिस्से बह रहे हैं। मेरे किस हिस्से को ऐसा लग रहा है?

वह मेरा हाथ पकड़ती है।

"अच्छी नींद लो," मुझे दूर अंधेरे से उसकी आवाज़ सुनाई देती है।

15

व्हिस्की, यातना, तुर्गेनेव

बिग बॉय ने मेरी व्हिस्की की एक भी बोतल नहीं छोड़ी। मेरे व्हिस्की के संग्रह में से एक भी बोतल खराब नहीं हुई। मोहल्ले के शराब विक्रेता से मेरा अच्छा रिश्ता था, जो आयातित व्हिस्की के सस्ते दामों पर मेरे लिए लाता था, इसलिए मेरे पास व्हिस्की का अच्छा-खासा संग्रह हो गया था। लेकिन अब ऐसा नहीं है।

उस हट्टे-कट्टे आदमी ने वाइल्ड टर्की की दो बोतलों से शुरुआत की, फिर कटी सार्क की एक बोतल, आई. डब्ल्यू. हार्पर की तीन बोतलें पी डालीं, उसके बाद जैक डेनियल्स की दो बोतलें, फोर रोज़ेज़ की एक बोतल, हैग की एक बोतल खत्म कर दी और आखिर में चिवास रीगल की आधी दर्जन बोतलें बचाकर रखीं। शोर तो बहुत था, लेकिन बदबू उससे भी बदतर थी।

जूनियर ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा, "मैं तो बस यहीं बैठे-बैठे ही नशे में चूर हो रहा हूँ।"

मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था सिवाय इसके कि मैं अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाकर सिंक में जमा होते टूटे कांच के ढेर को देखता रहूँ। बिग बॉय लगातार सीटी बजाता रहा। मुझे उसकी धुन समझ नहीं आ रही थी, अगर कोई धुन थी भी तो। पहले ऊँची और तीखी, फिर नीची और कर्कश, वह किसी घिसते हुए वायलिन के धनुष जैसी लग रही थी। उसकी चीख पागलपन की हद थी।

बिग बॉय ने बड़े ही सलीके से बेमतलब की तोड़फोड़ की। शायद उन्हें यह सब समझ में आता हो, मुझे नहीं। उसने पलंग उलट दिया, गद्दा फाड़ दिया, मेरी अलमारी में सब कुछ उलट-पुलट कर दिया, डेस्क के दराजों का सारा सामान ज़मीन पर बिखेर दिया, और एयर कंडीशनर का पैनल दीवार से उखाड़ दिया। उसने कूड़ेदान को गिरा दिया, फिर बिस्तर की अलमारी में घुस गया और जो भी चीज़ रास्ते में आई, उसे तोड़ता चला गया। एकदम फुर्तीला और कारगर।

फिर बारी रसोई की आई: बर्तन, गिलास, कॉफी पॉट, बाकी सब कुछ।

जूनियर और मैं लिविंग रूम में जाकर बैठ गए। हमने गिरे हुए सोफे को सीधा किया, जो किस्मत से बाकी सब ठीक था, और आमने-सामने की आर्मरेस्ट पर बैठ गए। यह वाकई एक आरामदायक सोफा था, एक बेहतरीन मॉडल जो मैंने एक कैमरामैन दोस्त से सस्ते में खरीदा था, जिसने अपने सफल कमर्शियल करियर के बीच में ही अपना आपा खो दिया था और नागानो के ग्रामीण इलाके में भाग गया था। फ्यूज का गिरना तो बुरा हुआ, लेकिन बदले में मिले सोफे का उतना बुरा नहीं। और यह भी संभावना थी कि सोफे को अभी भी ठीक किया जा सकता था।

बिग बॉय जितना शोर मचा रहा था, उसके बावजूद अपार्टमेंट बिल्डिंग का कोई भी निवासी जाँच करने नहीं आया। सच है, मेरे फ्लोर पर लगभग सभी लोग अविवाहित थे और दिन में काम पर जाते थे—यह बात मेरे आगंतुकों से छिपी नहीं थी। ये लोग बदमाश तो थे, लेकिन बेवकूफ नहीं थे।

छोटा लड़का बीच-बीच में अपनी रोलेक्स घड़ी पर नज़र डालता रहता था, मानो ऑपरेशन की प्रगति देख रहा हो, जबकि बड़ा लड़का बिना कोई हरकत छोड़े अपना विनाशकारी काम जारी रखता था। वह इतना सलीके से काम कर रहा था कि मैं चाहकर भी एक पेंसिल नहीं छिपा सकता था। फिर भी, जैसा कि जूनियर ने शुरुआत में कहा था, वे वास्तव में कुछ खोज नहीं रहे थे। वे बस एक बात साबित करना चाहते थे।

किस लिए?

किसी तीसरे पक्ष को उनकी बारीकियों पर ध्यान देने की क्षमता के बारे में आश्वस्त करने के लिए?

और वह तीसरा पक्ष कौन हो सकता है?

मैंने बची हुई बियर पी ली और खाली कैन को कॉफी टेबल पर रख दिया। बिग बॉय खाने तक पहुँच चुका था: नमक, आटा और चावल सब इधर-उधर बिखर गए; एक दर्जन जमे हुए झींगे, एक बीफ़ फ़िले, नैचुरल आइसक्रीम, प्रीमियम मक्खन, तीस सेंटीमीटर लंबा सैल्मन रोआ, और मेरी घर की बनी टमाटर की चटनी, सब कुछ लिनोलियम के फर्श पर ऐसे बिखर गया जैसे उल्कापिंड डामर पर गिर रहे हों।

इसके बाद, बिग बॉय ने फ्रिज उठाया और उसे दरवाजे की तरफ से ज़मीन पर उलट दिया। वायरिंग में शॉर्ट सर्किट हो गया और चिंगारियों की बौछार होने लगी। भला कौन सा इलेक्ट्रीशियन इस पर यकीन करेगा? मेरा सिर दुखने लगा।

फिर, जितनी अचानक शुरुआत हुई थी, उतनी ही अचानक तबाही रुक गई। कोई किंतु-परंतु नहीं—विध्वंस पल भर में रुक गया, बिग बॉय रसोई और बैठक कक्ष के बीच के दरवाजे पर बड़े ही बेपरवाह अंदाज में खड़ा था।

मेरे अपार्टमेंट को इतनी खूबसूरती से तहस-नहस करने में उसे कितना समय लगा था? पंद्रह मिनट, तीस मिनट? कुछ ऐसा ही। पंद्रह मिनट के लिए बहुत ज़्यादा, तीस मिनट के लिए बहुत कम। लेकिन चाहे जितना भी समय लगा हो, जिस तरह से जूनियर गर्व से अपनी रोलेक्स घड़ी को देख रहा था, उससे लग रहा था कि बिग बॉय ने अच्छा काम किया है। मैराथन दौड़ और टॉयलेट पेपर की लंबाई की तरह, यहाँ भी कुछ मानक तो होने ही चाहिए।

जूनियर ने मुझसे कहा, "लगता है तुम सफाई करने में व्यस्त रहने वाले हो।"

मैंने आगे कहा, "और इसके लिए भुगतान भी करना होगा।"

“यहाँ पैसे की कोई परवाह नहीं है। यह युद्ध है। अगर कोई युद्ध की लागत का हिसाब लगाने लगे तो वह जीत नहीं पाएगा।”

“यह मेरी लड़ाई नहीं है।”

“किसका युद्ध मायने नहीं रखता। किसका पैसा भी मायने नहीं रखता। युद्ध का मतलब यही होता है।”

जूनियर ने एक सफेद रुमाल में खांसा और उसे ध्यान से देखकर वापस अपनी जेब में रख लिया। मैं हमेशा कहता हूँ, रुमाल रखने वाले आदमी पर कभी भरोसा मत करो। यह मेरी कई पूर्वाग्रही धारणाओं में से एक है।
“अब सुनो,” जूनियर गंभीर हो गया, “हमारे जाने के कुछ ही समय बाद, सिस्टम के लड़के हमें श्रद्धांजलि देने आएंगे। तुम उन्हें हमारे बारे में बता देना। कहना कि हम अंदर घुसे और कुछ ढूंढते हुए सब कुछ तहस-नहस कर दिया। उन्हें बताना कि हमने तुमसे खोपड़ी के बारे में पूछा था, लेकिन तुम्हें खोपड़ी के बारे में कुछ नहीं पता था। समझे? तुम किसी ऐसी चीज़ के बारे में चुगली नहीं कर सकते जिसके बारे में तुम्हें पता न हो और तुम किसी ऐसी चीज़ के बारे में जानकारी नहीं दे सकते जो तुम्हारे पास न हो। यातना के दौरान भी नहीं। इसीलिए हम खाली हाथ ही लौटेंगे, जैसे खाली हाथ आए थे।”
“यातना?” मैं चौंक गया।
“कोई तुम पर शक नहीं करेगा। उन्हें तो यह भी नहीं पता कि तुम प्रोफ़ेसर से मिलने गए थे। फिलहाल, सिर्फ़ हमें ही यह पता है। इसलिए तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा। तुम्हारे जैसा कैलकुटेक, जिसका रिकॉर्ड शानदार है? उनके पास तुम पर भरोसा करने के अलावा कोई चारा नहीं है। वे सोचेंगे कि हम ही फैक्ट्री हैं। और वे इसके बारे में कुछ करना चाहेंगे। हमने सब कुछ ठीक कर लिया है।”
“यातना?” मैं फिर से अटक गया। “यातना से तुम्हारा क्या मतलब है?”
“तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा,” उस छोटे आदमी ने कहा।
"अगर मैं सारी बात मुख्यालय वालों को बता दूं तो क्या होगा?" मैंने सोचा कि पूछ लूं।
“बेवकूफी मत करो। तुम्हारे ही लोग तुम्हें खत्म कर देंगे। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सोचो ज़रा। तुम प्रोफ़ेसर के यहाँ काम के लिए गए, तुमने सिस्टम को नहीं बताया। तुमने फेरबदल पर लगी रोक तोड़ दी। और इससे भी बुरा, तुमने प्रोफ़ेसर को अपने प्रयोगों में तुम्हारा इस्तेमाल करने दिया। क्या उन्हें यह पसंद आएगा? तुम बहुत खतरनाक खेल खेल रहे हो, दोस्त।”
सोफे के दोनों सिरों से हमारे चेहरे एक-दूसरे से मिले।
मैंने कहा, “मेरा एक सवाल है। सिस्टम से झूठ बोलकर और आपके साथ सहयोग करके मुझे क्या फायदा होगा? मैं आप लोगों के बारे में कुछ नहीं जानता। इसमें मेरा क्या हित है?”
जूनियर ने चहकते हुए कहा, "यह तो आसान है। हमें पता है कि तुम्हारे साथ क्या होने वाला है, लेकिन हम तुम्हें ज़िंदा छोड़ रहे हैं। तुम्हारी संस्था को तुम्हारी स्थिति के बारे में कुछ नहीं पता। लेकिन अगर उन्हें पता चल भी जाए, तो वे तुम्हें खत्म करने का फैसला कर सकते हैं। मुझे लगता है कि हमारे साथ तुम्हारे बचने की संभावना कहीं ज़्यादा है।"
"देर-सवेर, सिस्टम को इस स्थिति के बारे में पता चल ही जाएगा, जैसा कि आप इसे कहते हैं। मुझे नहीं पता कि यह स्थिति क्या है, लेकिन सिस्टम इतना मूर्ख नहीं है।"
“शायद,” जूनियर ने कहा। “लेकिन वो तो बाद की बात है। ये अभी की बात है। अगर सब कुछ योजना के मुताबिक चला, तो इस बीच हम दोनों की समस्याएँ हल हो जाएँगी। ये आपकी मर्ज़ी है, अगर आप कोई

विकल्प तलाश रहे हैं। मैं इसे दूसरे तरीके से समझाता हूँ: ये शतरंज की तरह है। अगर आपको चेक मिलता है, तो आप पीछे हट जाते हैं। और जब आप इधर-उधर हाथ-पैर मार रहे होते हैं, तो शायद आपका विरोधी भी कोई गलती कर दे। हर कोई गलती करता है, यहाँ तक कि सबसे समझदार खिलाड़ी भी।"

जूनियर ने अपनी घड़ी दोबारा देखी, फिर बिग बॉय की ओर मुड़ा और उंगलियां चटकाईं। देखते ही देखते हल्क जैसे रोबोट की तरह हरकत में आ उठा, मानो बिजली चालू हो गई हो। उसने अपना जबड़ा उठाया और सोफे पर झुक गया, मानो कमरे को बांटने वाला यंत्र हो। नहीं, कमरे को बांटने वाला यंत्र नहीं, बल्कि ड्राइव-इन मूवी स्क्रीन जैसा। उसके शरीर ने छत की रोशनी रोक दी, जिससे मैं एक धुंधली छाया में आ गया, ठीक वैसे ही जैसे बचपन में सभी बच्चे मोमबत्ती के धुएं से धुंआ लगे शीशे को उठाकर सूर्य ग्रहण देखते थे। पच्चीस साल पहले की बात है। देखो उस पच्चीस साल ने मुझे कहाँ पहुँचा दिया।

"और अब," उसने बोलना शुरू किया, "मुझे डर है कि हमें थोड़ा अप्रिय माहौल बनाना पड़ेगा। खैर, शायद आपको यह थोड़ा अप्रिय से ज़्यादा ही अप्रिय लगे। लेकिन याद रखिए, हम यह आपके लिए कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि हम यह अपनी मर्ज़ी से कर रहे हैं। हम यह इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हमारे पास कोई और चारा नहीं है। अपनी पैंट उतारो।"

मैंने वही किया जो मुझे कहा गया था। मानो मेरे पास कोई विकल्प ही न हो।

"घुटने टेकना।"

मैं घुटनों के बल बैठ गया। स्वेटशर्ट और जॉकी शॉर्ट्स में ऐसा करना मुझे थोड़ा अजीब लग रहा था, लेकिन ध्यान लगाने का ज़्यादा समय नहीं था क्योंकि बिग बॉय मेरे पीछे से झपट्टा मारकर आया और मेरी कलाइयों को मेरी कमर से सटा दिया। फिर उसने मेरे टखनों को अपने पैरों के बीच कसकर जकड़ लिया। उसकी हरकतें बहुत सहज थीं। मुझे बंधा हुआ तो महसूस नहीं हुआ, लेकिन जब मैंने हिलने की कोशिश की, तो मेरे शरीर में तेज़ दर्द हुआ। मैं हिल-डुल नहीं पा रहा था, जैसे कोई बत्तख शूटिंग गैलरी में बैठी हो।

इसी बीच, जूनियर को बिग बॉय का चाकू मिल गया। उसने सात सेंटीमीटर लंबे ब्लेड को झट से खोला और फिर लाइटर की लौ से उसे गर्म किया। यह छोटा सा चाकू देखने में जानलेवा हथियार जैसा नहीं लग रहा था, लेकिन जाहिर था कि यह कोई सस्ता खिलौना भी नहीं था। यह इतना तेज था कि किसी इंसान के टुकड़े-टुकड़े कर सकता था। इंसान हमेशा काटने के लिए तैयार रहता है।

ब्लेड को स्टेरलाइज़ करने के बाद, जूनियर ने उसे थोड़ा ठंडा होने दिया। फिर उसने मेरी जॉकी शॉर्ट्स की कमरबंद नीचे खींच दी और मेरा लिंग बाहर निकाल दिया।

उन्होंने कहा, "अब इससे थोड़ा दर्द होगा।"

मेरे पेट से टेनिस बॉल के आकार का एक हवा का गोला उछला और मेरे गले में अटक गया। मेरी नाक पर पसीना आ गया। मैं कांप रहा था। इस रफ्तार से तो मैं कभी इरेक्शन नहीं पा सकूंगा।

लेकिन नहीं, उस आदमी ने मेरे लिंग के साथ कुछ नहीं किया। उसने बस उसे कसकर पकड़ रखा था, और फिर गर्म ब्लेड को मेरे पेट पर चला दिया। एकदम सीधा, छह सेंटीमीटर लंबा क्षैतिज घाव, मेरी नाभि से दो सेंटीमीटर नीचे।

मैंने अपना पेट अंदर खींचने की कोशिश की, लेकिन बिग बॉय की पीठ पर जकड़ और जूनियर की मेरे लिंग पर पकड़ के कारण मैं एक बाल बराबर भी हिल नहीं सका। मेरे शरीर के हर रोम से ठंडा पसीना बह रहा था। फिर, सर्जरी खत्म होने के तुरंत बाद, मुझे असहनीय दर्द होने लगा।

जूनियर ने टिशू पेपर से चाकू पर लगा खून पोंछा और ब्लेड को मोड़कर रख दिया। बिग बॉय ने मुझे छोड़ दिया। मेरी सफेद जॉकी शॉर्ट्स खून से लाल हो रही थीं। बिग बॉय बाथरूम से एक तौलिया लाया और मैंने उसे घाव पर दबाया।

जूनियर ने कहा, "सात टांके लगेंगे और तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे। एक निशान रह जाएगा, लेकिन कोई उसे देख नहीं पाएगा। हमें यह करना पड़ा, इसके लिए हमें खेद है, लेकिन तुम ठीक हो जाओगे।"

मैंने तौलिया हटाया और घाव को देखा। घाव बहुत गहरा नहीं था, लेकिन इतना गहरा था कि उसमें गुलाबी रंग दिख रहा था।

“अब हम जा रहे हैं। जब तुम्हारे सिस्टम वाले आएँ, तो उन्हें हिंसा का यह छोटा सा नमूना दिखा देना। उन्हें बताना कि जब तुमने हमें खोपड़ी के बारे में नहीं बताया, तो हम पागल हो गए। लेकिन अगली बार, हमारे इरादे इतने ऊँचे नहीं होंगे, और हो सकता है हमें तुम्हारे अंडकोष पर हमला करना पड़े, हा हा। उन्हें बता देना कि हमने ऐसा कहा है। वैसे भी, तुम्हें कुछ पता नहीं था, इसलिए तुमने हमें कुछ नहीं बताया। इसीलिए हमने बाद में मिलने का फैसला किया। समझे? अगर हम चाहें तो हम बहुत अच्छा काम कर सकते हैं। शायद जल्द ही किसी दिन, अगर हमारे पास समय हुआ, तो हम तुम्हें एक और प्रदर्शन दिखाएँगे।”

मैं तौलिया पेट पर दबाकर वहीं बैठा रहा। मुझसे मत पूछो क्यों, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उनके खेल में शामिल होना मेरे लिए बेहतर होगा।

“तो तुमने उस बेचारे गैस इंस्पेक्टर को फंसाया था,” मैंने हड़बड़ाते हुए कहा। “तुमने जानबूझकर उसका झूठ पकड़वाया ताकि मैं सामान छिपा सकूं।”

“वाह, वाह,” उस छोटे आदमी ने कहा। “अपने दिमाग का इस्तेमाल करते रहो, शायद तुम बच जाओगे।”

इसी के साथ मेरे दोनों मेहमान चले गए। उन्हें विदा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मेरे स्टील के दरवाज़े का टूटा-फूटा ढांचा अब सबके लिए खुला था।

मैंने खून से सना हुआ अपना अंडरवियर उतारकर कूड़ेदान में फेंक दिया, फिर मैंने पट्टी को गीला करके घाव से खून पोंछा। हर हरकत पर घाव में तेज़ दर्द हो रहा था। मेरी स्वेटशर्ट की आस्तीनें भी खून से सनी थीं, इसलिए मैंने उसे भी फेंक दिया। फिर ज़मीन पर बिखरे कपड़ों में से मुझे एक गहरे रंग की टी-शर्ट मिली जिस पर खून ज़्यादा दिखाई नहीं दे रहा था, एक जॉकी पैंट और एक ढीली पतलून मिली।

तीस मिनट बाद, ठीक समय पर, मुख्यालय से तीन आदमी आ गए। उनमें से एक वही तेजतर्रार नौजवान संपर्क अधिकारी था जो हमेशा डेटा लेने आता था, हमेशा की तरह बिजनेस सूट, सफेद शर्ट और बैंक क्लर्क की टाई पहने हुए। बाकी दो लोग सामान ढोने वालों जैसे कपड़े पहने हुए थे। फिर भी, वे बैंक क्लर्क और सामान ढोने वालों जैसे बिल्कुल नहीं लग रहे थे; ऐसा लग रहा था जैसे वे बैंक क्लर्क और सामान ढोने वालों जैसा दिखने की कोशिश कर रहे हों। उनकी निगाहें हर तरफ घूम रही थीं; उनकी हर हरकत में तनाव झलक रहा था।

वे बिना दरवाजा खटखटाए, जूते समेत अपार्टमेंट में घुस गए। दोनों सामान ढोने वाले तुरंत अपार्टमेंट की जाँच करने लगे, जबकि बैंक क्लर्क मुझसे पूछताछ करने लगा। उसने एक काली नोटबुक में मैकेनिकल पेंसिल से सारी बातें लिख लीं। जैसा कि मैंने उसे बताया, दो लोगों का एक गिरोह अंदर घुस आया था, उन्हें खोपड़ी चाहिए थी। मुझे खोपड़ी के बारे में कुछ नहीं पता था; वे हिंसक हो गए और उन्होंने मेरे पेट पर वार किया। मैंने अपनी अंडरवियर नीचे खींच ली। क्लर्क ने कुछ देर घाव की जाँच की, लेकिन उस पर कोई टिप्पणी नहीं की।

“खोपड़ी? वे लोग किस बारे में बात कर रहे थे?”

मैंने कहा, "मुझे बिल्कुल पता नहीं है। मैं खुद भी जानना चाहता हूँ।"

“क्या आपको सच में नहीं पता?” बैंक क्लर्क ने बिना किसी भाव के पूछा। “यह बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए सोच समझकर फैसला लें। बाद में आप अपना बयान नहीं बदल पाएंगे। सेमिओटेक तब तक कोई कदम नहीं उठाते जब तक उनके पास कोई ठोस सबूत न हो। अगर वे आपके अपार्टमेंट में खोपड़ी की तलाश में आए थे, तो उनके पास यह सोचने का कोई कारण जरूर रहा होगा कि आपके अपार्टमेंट में खोपड़ी है। वे मनगढ़ंत बातें नहीं करते। इसके अलावा, वह खोपड़ी इतनी कीमती रही होगी कि वे उसकी तलाश में आए हों। इन स्पष्ट तथ्यों को देखते हुए, यह मानना मुश्किल है कि आपको इसके बारे में कुछ भी नहीं पता।”

मैंने कहा, "अगर तुम इतने ही समझदार हो, तो मुझे यह क्यों नहीं बताते कि खोपड़ी का यह सारा मामला किस बारे में है?"

“जांच होगी,” बैंक क्लर्क ने अपनी नोटबुक पर मैकेनिकल पेंसिल से टैप करते हुए कहा। “पूरी जांच होगी, और आप जानते हैं कि सिस्टम कितना गहन हो सकता है। अगर आप कुछ छुपाते हुए पाए गए, तो आपके साथ उचित कार्रवाई की जाएगी। क्या आपको इसकी जानकारी है?”

मैंने उसे बताया, "मुझे इस बात का पता था। मुझे नहीं पता था कि इसका क्या नतीजा होगा, लेकिन उन्हें भी नहीं पता था। भविष्य का अनुमान कोई नहीं लगा सकता।"

हमें पहले से ही आभास था कि सेमियोटेक कुछ साजिश रच रहे हैं। वे लामबंद हो रहे हैं। लेकिन हमें नहीं पता कि वे क्या चाहते हैं, और न ही यह पता है कि इसमें आपकी क्या भूमिका है। हमें इस खोपड़ी के बारे में भी कुछ समझ नहीं आ रहा है। लेकिन जैसे-जैसे और सुराग मिलेंगे, आप यकीन मानिए कि हम मामले की तह तक पहुंच जाएंगे। हम हमेशा ऐसा करते हैं।

"तो मुझे क्या करना होगा?"

“बहुत सावधान रहें। अपने सभी काम रद्द कर दें। किसी भी असामान्य बात पर ध्यान दें। अगर कुछ भी गड़बड़ लगे तो तुरंत मुझसे संपर्क करें। क्या आपका फोन अभी भी चालू है?”
मैंने रिसीवर उठाया और डायल टोन सुनाई दी। जाहिर है, दोनों बदमाशों ने टेलीफोन को हाथ नहीं लगाया था।
लाइन ठीक है।
“अच्छा,” उसने कहा। “याद रखना, अगर कुछ भी हो जाए, चाहे कितनी भी छोटी बात हो, मुझसे तुरंत संपर्क करना। खुद से मामला सुलझाने की कोशिश भी मत करना। कुछ भी छुपाने की कोशिश मत करना। वे लोग कोई आसान खेल नहीं खेल रहे हैं। अगली बार तुम बच नहीं पाओगे।”
"खरोंच? क्या आप इसे खरोंच कहते हैं?"
सामान ढोने वाली कंपनियों ने परिसर का सर्वेक्षण पूरा करने के बाद रिपोर्ट दी।
“हमने पूरी छानबीन की,” बुजुर्ग कर्मचारी ने कहा। “उन्होंने किसी भी चीज को नजरअंदाज नहीं किया, बहुत ही सहजता से काम किया। पेशेवर काम। सेमियोटेक्स।”
संपर्क अधिकारी ने सिर हिलाया और दोनों कर्मचारी बाहर चले गए। अब वहाँ केवल संपर्क अधिकारी और मैं ही बचे थे।
मैंने ज़ोर से सोचा, "अगर उन्हें सिर्फ़ एक खोपड़ी ही चाहिए थी, तो उन्होंने मेरे कपड़े क्यों फाड़े? मैं वहाँ खोपड़ी कैसे छुपाता? अगर वहाँ खोपड़ी होती, तो?"
“वे पेशेवर थे। पेशेवर हर संभावित स्थिति के बारे में सोचते हैं। मान लीजिए आपने खोपड़ी को सिक्कों से भरे लॉकर में रख दिया और वे चाबी ढूंढ रहे थे। चाबी कहीं भी छिपी हो सकती है।”
“सच है,” मैंने कहा। बिलकुल सच है।
"वैसे, क्या इन फैक्ट्री के गुंडों ने तुम्हें कोई प्रस्ताव दिया?"
“एक प्रस्ताव?”
"हां, एक प्रस्ताव। उदाहरण के लिए, कि आप उनके लिए काम करें। पैसों का प्रस्ताव, कोई पद।"
"अगर उन्होंने ऐसा किया भी तो मैंने नहीं सुना। उन्होंने तो बस अपनी खोपड़ी की मांग की।"
“ठीक है,” संपर्क अधिकारी ने कहा। “अगर कोई आपको कोई प्रस्ताव दे, तो उसे भूल जाइए। उनके साथ मत मिलिए। अगर सिस्टम को कभी पता चला कि आपने उनके साथ मिलीभगत की है, तो हम आपको ढूंढ निकालेंगे, चाहे आप कहीं भी हों, और आपको खत्म कर देंगे। यह कोई धमकी नहीं है; यह एक वादा है। सिस्टम ही राज्य है। हम कुछ भी कर सकते हैं।”
मैंने कहा, "मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।"
जब मैं फिर से अकेला हुआ, तो मैंने कहानी के हर हिस्से पर गौर किया। चाहे मैंने ज़रूरी जानकारियों को कितना भी व्यवस्थित किया हो, उनसे कोई सुराग नहीं मिला। रहस्य की जड़ में प्रोफेसर और उनकी चालें

थीं। अगर मुझे यह नहीं पता था, तो मुझे कुछ भी नहीं पता चल सकता था। और मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उनके उस बूढ़े दिमाग में क्या चल रहा था।

मुझे बस इतना पक्का पता था कि मैंने सिस्टम को धोखा दिया है। अगर उन्हें इस बात का पता चल गया—और जल्द ही पता चल ही जाएगा—तो सब कुछ खत्म हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे मेरे चालाक बैंक क्लर्क ने मुझे बताया था। भले ही मुझे झूठ बोलने के लिए मजबूर किया गया हो। सिस्टम किसी भी मामले में छूट देने के लिए नहीं जाना जाता था।

जब मैं इन परिस्थितियों का जायजा ले रहा था, तभी मेरे घाव में तेज दर्द होने लगा। अस्पताल जाना बेहतर होगा। मैंने टैक्सी के लिए फोन किया। फिर मैंने अपने जूते पहने। जूते के फीते बांधने के लिए झुकते समय मुझे इतना दर्द हुआ कि मुझे लगा जैसे मेरा शरीर दो टुकड़ों में फट जाएगा।

मैंने अपार्टमेंट का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया—जैसे मेरे पास कोई और विकल्प ही न हो—और लिफ्ट से नीचे उतर गया। प्रवेश द्वार के पास झाड़ियों के पीछे टैक्सी का इंतज़ार करने लगा। मेरी घड़ी में डेढ़ बज रहे थे। तोड़फोड़ शुरू हुए ढाई घंटे हो चुके थे। ढाई घंटे बहुत लंबे लग रहे थे।

गृहणियां कतार में खड़ी होकर गुजर रही थीं, सुपरमार्केट के थैलों से लीक और डाइकॉन मूली के पत्ते बाहर निकले हुए थे। मुझे उन पर तरस आ रहा था। उनके फ्रिज तो खाली नहीं हुए थे और न ही उनके पेट चीरे गए थे। लीक और डाइकॉन, बच्चों के अच्छे नंबर—सब कुछ ठीक था। न कोई गेंडा खोपड़ी, न कोई गुप्त कोड, न कोई चेतना का स्थानांतरण। यह सामान्य, रोजमर्रा की जिंदगी थी।

मुझे अचानक रसोई के फर्श पर पड़े जमे हुए झींगे, गोमांस और टमाटर की चटनी का ख्याल आया। शायद दिन खत्म होने से पहले इन्हें खा लेना चाहिए। कुछ भी बर्बाद न करें, कमी न हो। दिक्कत ये थी कि मुझे खाने की इच्छा ही नहीं थी।

डाकिया लाल रंग की सुपरकब कार पर सवार होकर आया और इमारत के प्रवेश द्वार पर रखे डाक बक्सों में डाक बांटने लगा। कुछ बक्सों में ढेर सारी डाक थी, जबकि कुछ में न के बराबर। डाकिया ने मेरे बक्से को छुआ तक नहीं। उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं।

डाकपेटियों के बगल में एक गमले में लगा रबर का पौधा था, जिसका मिट्टी का गमला आइसक्रीम स्टिक और सिगरेट के टुकड़ों से भरा हुआ था। वह पौधा उतना ही मुरझाया हुआ लग रहा था जितना मैं खुद महसूस कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो हर राहगीर ने उस बेचारे पौधे को नुकसान पहुंचाया हो। मुझे नहीं पता कि वह कब से वहाँ पड़ा था। मैं शायद हर दिन उसके पास से गुजरता था, लेकिन जब तक मेरे पेट में चाकू नहीं लगा, मैंने कभी ध्यान नहीं दिया कि वह वहाँ है।

जब डॉक्टर ने मेरा घाव देखा, तो सबसे पहले उन्होंने मुझसे पूछा कि मुझे इस तरह का कट कैसे लग गया।

“एक महिला को लेकर मामूली कहासुनी हो गई,” मैंने कहा। मेरे पास बताने के लिए बस यही एक कहानी थी।

“ऐसी स्थिति में, मुझे पुलिस को सूचित करना होगा,” डॉक्टर ने कहा।

“पुलिस? नहीं, गलती मेरी थी, और सौभाग्य से चोट ज्यादा गहरी नहीं है। क्या हम पुलिस को इसमें शामिल न करें, कृपया?”
डॉक्टर बड़बड़ाया और आनाकानी की, लेकिन आखिरकार मान गया। उसने घाव को कीटाणुरहित किया, मुझे कुछ इंजेक्शन लगाए, फिर सुई और धागा निकाला। नर्स ने टांकों पर मोटी पट्टी लगाते हुए मुझे शक भरी नजरों से देखा, फिर उसे अपनी जगह पर रखने के लिए मेरी कमर पर एक रबर की बेल्ट बांध दी। मुझे बहुत अजीब लगा।
डॉक्टर ने चेतावनी देते हुए कहा, "ज़ोरदार गतिविधियों से बचें। सेक्स या ज़ोर-ज़ोर से हंसना मना है। आराम करें, किताब पढ़ें और कल फिर आइएगा।"
मैंने धन्यवाद कहा, बिल चुकाया और घर चला गया। बड़ी मुश्किल से और दर्द से मैंने दरवाज़ा ठीक किया, फिर डॉक्टर के निर्देशानुसार, तुर्गेनेव की रुडिन की किताब लेकर अपने बिस्तर पर लेट गया। असल में, मैं 'स्प्रिंग टॉरेंट्स' पढ़ना चाहता था, लेकिन अपने खस्ताहाल अपार्टमेंट में मुझे वो किताब मिलती ही नहीं। और वैसे भी, अगर आप सच में सोचें तो 'स्प्रिंग टॉरेंट्स' रुडिन से कोई बहुत बेहतर उपन्यास नहीं है।
मैं उठा और रसोई में गया, जहाँ मैंने सिंक में टूटी बोतलों के ढेर में छानबीन की। कांच के टुकड़ों के नीचे, मुझे चिवस की एक बोतल का निचला हिस्सा मिला जो लगभग सही सलामत था, जिसमें शायद थोड़ी सी कीमती सुनहरी शराब बची थी। मैंने बोतल के निचले हिस्से को रोशनी में उठाया, और उसमें कांच के टुकड़े न देखकर, मैंने रात को सोने से पहले उस गुनगुनी व्हिस्की को पीकर ही काम चलाने का जोखिम उठाया।
मैंने रुडिन को पहले भी पढ़ा था, लेकिन पंद्रह साल पहले विश्वविद्यालय में। अब दोपहर में बिस्तर पर पट्टी बांधकर, व्हिस्की की चुस्की लेते हुए इसे दोबारा पढ़ते हुए, मुझे नायक रुडिन के लिए एक नई सहानुभूति महसूस हुई। मैं दोस्तोयेव्स्की के किसी भी किरदार से शायद ही कभी खुद को जोड़ पाता हूँ, लेकिन तुर्गेनेव के पुराने ज़माने के उपन्यासों के पात्र परिस्थितियों के इतने शिकार होते हैं कि मैं उनसे तुरंत जुड़ जाता हूँ। मुझे हारे हुए लोगों से लगाव है। खुद की कमियाँ हमें दूसरों की कमियों के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। ऐसा नहीं है कि दोस्तोयेव्स्की के पात्र करुणा उत्पन्न नहीं करते, लेकिन उनकी कमियाँ इस तरह से दिखाई देती हैं कि वे दोष नहीं लगतीं। और इसी विषय पर बात करते हुए, टॉल्स्टॉय के पात्रों की कमियाँ इतनी व्यापक और बेतुकी हैं कि वे पृष्ठभूमि की तरह स्थिर लगती हैं।
मैंने रुडिन की किताब खत्म की और उसे किताबों की अलमारी के ऊपर फेंक दिया। फिर मैं सिंक में रखे कांच के ढेर में व्हिस्की की एक और छिपी हुई बोतल ढूंढने लगा। ढेर के नीचे मुझे जैक डेनियल्स की एक छोटी सी बोतल दिखी, जिसे मैंने बड़ी मुश्किल से निकाला और स्टेंडहल की किताब 'द रेड एंड द ब्लैक' के साथ बिस्तर पर ले गया। क्या कहूँ? लगता है मेरा मन पुराने ज़माने के साहित्य को पढ़ने का कर रहा था। आज के ज़माने में कितने युवा 'द रेड एंड द ब्लैक' पढ़ते हैं?
मुझे परवाह नहीं थी। मैं जूलियन सोरेल से भी काफी मिलता-जुलता महसूस करता था। पंद्रह साल की उम्र तक सोरेल की सारी बुनियादी चारित्रिक कमियां पक्की हो चुकी थीं, और इसी बात ने मेरी सहानुभूति और

बढ़ा दी। उस उम्र तक जीवन की सारी बुनियादें तय हो जाना, किसी भी लिहाज से, एक त्रासदी थी। यह मानो खुद को किसी कालकोठरी में बंद कर लेने जैसा था। चारों तरफ से घिरे हुए, जहां से जाने के लिए कोई रास्ता नहीं, बस अपनी बर्बादी।

दीवारें।

एक ऐसी दुनिया जो पूरी तरह से दीवारों से घिरी हुई है।

मैंने किताब बंद की और जैक डेनियल्स का आखिरी घूंट पीते हुए अलविदा कहा, और मन ही मन दीवारों के भीतर की दुनिया की छवि को दोहराता रहा। मैं उसे बिना किसी प्रयास के कल्पना कर सकता था। एक बहुत ऊंची दीवार, एक बहुत बड़ा द्वार। सन्नाटा। मैं अंदर। उसके आगे का दृश्य धुंधला था। दुनिया की बारीकियां स्पष्ट प्रतीत हो रही थीं, फिर भी मेरे चारों ओर सब कुछ अंधेरा और धुंधला था। और कहीं दूर से एक आवाज़ पुकार रही थी।

यह किसी फिल्म के दृश्य जैसा था, किसी ऐतिहासिक ब्लॉकबस्टर फिल्म जैसा। लेकिन कौन सी? एल सिड नहीं, बेन हर नहीं, स्पार्टाकस नहीं। नहीं, यह छवि मेरे अवचेतन मन की कल्पना मात्र थी।

मैंने उस तस्वीर को दिमाग से निकालने के लिए अपना सिर हिलाया। मैं बहुत थकी हुई थी।

निश्चित रूप से, दीवारें मेरे जीवन को घेरने वाली सीमाओं का प्रतीक थीं। सन्नाटा, ध्वनि-निवारण के मेरे अनुभव का अवशेष था। मेरे आस-पास का धुंधला दृश्य, इस बात का संकेत था कि मेरी कल्पना एक गंभीर संकट का सामना कर रही थी। वह पुकारती हुई आवाज़, शायद गुलाबी रंग की लड़की की आवाज़ थी।

उस मतिभ्रम का सरसरी तौर पर विश्लेषण करने के बाद, मैंने अपनी किताब दोबारा खोली। लेकिन अब मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। मैंने सोचा, मेरा जीवन कुछ भी नहीं है। शून्य। कुछ भी नहीं। खाली। मैंने अपने जीवन में क्या किया? कुछ भी नहीं। मेरे पास घर नहीं था। परिवार नहीं था। दोस्त नहीं थे। मेरे नाम पर कोई घर नहीं था। इरेक्शन भी नहीं। बहुत जल्द, नौकरी भी नहीं होगी।

ग्रीक संगीत और सेलो की वो सुकून भरी कल्पना मेरे वहाँ लेटे-लेटे ही हवा में घुल रही थी। अगर मेरी नौकरी चली गई, तो आराम से ज़िंदगी जीने का सपना ही छोड़ दो। और अगर सिस्टम मुझे दुनिया के कोने-कोने तक दौड़ाएगा, तो फिर अनियमित ग्रीक क्रियाओं को याद करने का समय कहाँ मिलेगा?

मैंने अपनी आँखें बंद कीं और एक गहरी साँस ली, फिर लाल और काले रंग के खेल में वापस लग गया। जो खो गया सो खो गया। उसे वापस पाना नामुमकिन था, चाहे आप कितनी भी योजनाएँ बना लें, न ही पहले जैसी स्थिति में लौटना संभव था, न ही पीछे जाना।

अगर मेरे चारों ओर तुर्गेनेवो-स्टेंडहलियन उदासी का साया न होता, तो मुझे पता ही नहीं चलता कि दिन खत्म हो गया है।

खड़े न होने से मेरे पेट का दर्द कम हो गया था। घाव से कभी-कभी हल्की-हल्की धड़कनें उठती थीं, लेकिन मैं उन्हें सहता रहा। दर्द का एहसास धीरे-धीरे कम होता जा रहा था।

घड़ी में सात बजकर बीस मिनट हो रहे थे, लेकिन मुझे भूख नहीं लग रही थी। आप सोचेंगे कि आज का दिन इतना खराब गुज़रा था तो कुछ खाने का मन तो होना चाहिए था, लेकिन खाने के ख्याल से ही मुझे घिन आ रही थी। नींद पूरी नहीं हुई थी, पेट बुरी तरह से क्षतिग्रस्त था और अपार्टमेंट पूरी तरह से खाली था। भूख लगने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।

मेरे चारों ओर बिखरे मलबे को देखकर मुझे निकट भविष्य की एक ऐसी दुनिया याद आ गई जो कचरे में दबी हुई बंजर भूमि में तब्दील हो चुकी थी। एक विज्ञान कथा उपन्यास जो मैंने पढ़ा था। खैर, मेरा अपार्टमेंट बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था। फटा हुआ सूट, टूटा हुआ वीडियो डेक और टीवी, गमले के टुकड़े, टेढ़ा-मेढ़ा फर्श लैंप, कुचले हुए रिकॉर्ड, टमाटर सॉस, उखड़े हुए स्पीकर के तार, ... गंदे पानी से सने जोसेफ कॉनराड और थॉमस हार्डी के उपन्यास, आस्तीन पर पेलिकन स्याही के धब्बे वाले गिरे हुए कश्मीरी स्वेटर पर पड़े कटे हुए ग्लेडियोली फूल, ... सब कुछ, बेकार का कचरा।

जब सूक्ष्मजीव मरते हैं, तो तेल बनता है; जब विशाल लकड़ियाँ गिरती हैं, तो कोयला बनता है। लेकिन यहाँ सब कुछ शुद्ध, मिलावट रहित कचरा था जिससे कुछ भी नहीं बनता था। एक टूटा हुआ वीडियोडेक आपको कहाँ ले जाता है?

मैं कुछ और घूंट व्हिस्की बचाने की कोशिश में रसोई में वापस गया, लेकिन कहावत के अनुसार आखिरी बूंद भी नहीं मिली। नाली में बह गई, इंकलिंग्स की दुनिया में।

सिंक में कुछ ढूंढते हुए मेरी उंगली कांच के एक छोटे टुकड़े से कट गई। खून की बूँदें व्हिस्की के लेबल पर गिर रही थीं, और मैं अपनी उंगली को ध्यान से देख रहा था। असली घाव के बाद, एक छोटा सा कट क्या है? उंगली पर कट लगने से आज तक कोई मरा नहीं है।

मैंने खून को बहने दिया। खून बहना बंद होने का कोई आसार नहीं दिखा, इसलिए अंत में मैंने टिशू पेपर से उसे पोंछ दिया।

कई खाली बीयर के डिब्बे इधर-उधर पड़े थे, जैसे किसी मोर्टार हमले के बाद बचे हुए गोले। मैं एक डिब्बा उठाने के लिए झुका; धातु गर्म थी। मैंने सोचा, गर्म बीयर की कुछ बूँदें भी न मिलने से बेहतर हैं। इसलिए मैं खाली डिब्बे वापस बिस्तर पर ले गया और हर डिब्बे से आखिरी कुछ मिलीलीटर बीयर निकालते हुए 'द रेड एंड द ब्लैक' पढ़ना जारी रखा। मुझे तनाव कम करने और आराम करने के लिए कुछ चाहिए था। क्या यह बहुत ज़्यादा माँग थी? मैं इतनी देर तक सोना चाहता था जितनी देर में धरती एक बार माइकल जैक्सन की तरह घूम जाती है।

रात के नौ बजने से कुछ पहले ही, अपने उजाड़ घर में मुझे नींद आ गई। मैंने 'द रेड एंड द ब्लैक' को ज़मीन पर फेंक दिया, लाइट बंद कर दी और सोने के लिए सिकुड़कर लेट गई। तबाही के बीच एक भ्रूण की तरह। लेकिन सिर्फ कुछ घंटों के लिए। ग्यारह बजे, गुलाबी सूट पहने मोटी लड़की मुझे कंधों से हिला रही थी।

“उठो, प्लीज़। प्लीज़!” वह चिल्लाई। “यह सोने का समय नहीं है!” उसने मुट्ठियों से मुझ पर वार किया। “प्लीज़। अगर तुम नहीं उठे तो दुनिया खत्म हो जाएगी!”

16

सर्दियों का आगमन

मैं परिचित और सुखद गंधों के बीच जागता हूँ। मैं अपने बिस्तर पर, अपने कमरे में हूँ। लेकिन हर चीज़ का आभास थोड़ा बदला हुआ है। ऐसा लगता है जैसे दृश्य मेरी यादों से फिर से बनाया गया हो। छत पर लगे धब्बे, प्लास्टर की दीवारों पर निशान, छोटी-छोटी बारीकियाँ।

बाहर बारिश हो रही है। मुझे बर्फीली ठंडी बारिश की आवाज़ सुनाई दे रही है, जो छत पर पड़ रही है और ज़मीन पर बह रही है। ये आवाज़ें मेरे बिस्तर के पास से आ सकती हैं, या फिर एक मील दूर से भी।

मैंने कर्नल को खिड़की पर बैठे देखा, उनकी पीठ हमेशा की तरह सीधी थी, वे बिना हिले-डुले बारिश को निहार रहे थे। बारिश में इतनी तल्लीनता से देखने लायक आखिर क्या हो सकता है?

मैं हाथ उठाने की कोशिश करती हूँ, लेकिन मेरी बांह हिलने से इनकार कर देती है। मैं बोलने की कोशिश करती हूँ, लेकिन मेरे मुंह से आवाज़ नहीं निकलती; मैं अपने फेफड़ों से हवा भी नहीं निकाल पाती। मेरा शरीर असहनीय रूप से भारी और थका हुआ है। खिड़की के पास बैठे बूढ़े अधिकारी पर नज़र टिकाना मेरे लिए बड़ी मुश्किल है। मुझे क्या हो गया है? जब मैं याद करने की कोशिश करती हूँ, तो मेरे सिर में तेज़ दर्द होने लगता है।

“सर्दी,” कर्नल ने खिड़की के शीशे पर उंगली से थपथपाते हुए कहा। “सर्दी आ गई है। अब आप समझ गए होंगे कि सर्दी से इतना डर क्यों लगता है।”

मैंने अस्पष्ट रूप से सिर हिलाया।

हाँ, सर्दी ने ही मुझे तकलीफ दी। मैं जंगल से पुस्तकालय की ओर दौड़ रहा था।

“पुस्तकालय अध्यक्ष आपको यहाँ लेकर आए थे। द्वारपाल की मदद से। आपको तेज बुखार था और बहुत पसीना आ रहा था। परसों की बात है।”

“परसों...?”

“जी हां, तुम पूरे दो दिन सोए हो,” बूढ़े अधिकारी ने कहा। “हमें चिंता थी कि तुम कभी जागोगे ही नहीं। क्या मैंने तुम्हें जंगल में जाने के बारे में चेतावनी नहीं दी थी?”

"क्षमा चाहता हूँ।"

कर्नल चूल्हे पर रखे बर्तन से एक कटोरी सूप निकालते हैं। फिर वे मुझे बिस्तर पर सहारा देकर बिठाते हैं और एक बैकरेस्ट लगा देते हैं। बैकरेस्ट सख्त है और मेरे वजन से चरमराहट की आवाज आती है।

“पहले आप खाना खा लीजिए,” वह कहता है। “बाद में माफी मांग लेना अगर जरूरी हो तो। क्या आपको भूख लगी है?”

“नहीं,” मैं कहती हूँ। साँस लेना भी मुश्किल है।
“बस इतना ही। आपको यही खाना होगा। तीन निवाले, इससे ज्यादा नहीं। कृपया।”
जड़ी-बूटियों का यह सूप बेहद कड़वा है, लेकिन मैंने किसी तरह तीन घूंट पी लिए। मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे शरीर से तनाव दूर हो रहा है।
“अब बहुत अच्छा लग रहा है,” कर्नल ने चम्मच को कटोरे में रखते हुए कहा। “इसका स्वाद अच्छा नहीं है, लेकिन यह सूप तुम्हारे शरीर से ज़हर निकाल देगा। अब सो जाओ। जब तुम जागोगे, तो तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।”
जब मैं जागा, तो बाहर अंधेरा हो चुका था। तेज़ हवा खिड़कियों पर बारिश की बूँदें मार रही थी। बूढ़ा पुलिस अधिकारी मेरे बिस्तर के पास बैठा था।
आप कैसा महसूस कर रहे हैं? कुछ बेहतर?
“पहले से काफी बेहतर है, हाँ,” मैंने कहा। “कितना समय हुआ है?”
शाम के आठ बजे।
मैं बिस्तर से उठने की कोशिश करता हूं, लेकिन फिर भी मुझे चक्कर आ रहे हैं।
“तुम कहाँ जा रहे हो?” कर्नल ने पूछा।
“पुस्तकालय जाना है। मुझे स्वप्न-पाठ करना है।”
“अपने उस शरीर को लेकर पाँच गज भी चलकर देखो, बेवकूफ!” वह डांटता है।
लेकिन मुझे काम करना ही होगा।
कर्नल ने सिर हिलाया। “पुराने सपने बाद में भी देखे जा सकते हैं। लाइब्रेरियन जानती है कि आपको आराम करना चाहिए। पुस्तकालय खुला नहीं रहेगा।”
बूढ़ा अधिकारी चूल्हे के पास जाता है, अपने लिए एक कप चाय डालता है और मेरे बिस्तर के पास लौट आता है। हवा से खिड़की खड़खड़ाती है।
“मुझे लगता है कि तुम लाइब्रेरियन को पसंद करने लगे हो,” कर्नल ने कहा। “मैं दखलंदाजी नहीं करना चाहता, लेकिन तुमने अपने सपने में उसे पुकारा था। इसमें शर्म की कोई बात नहीं है। जवानी में प्यार में हर कोई नाकाम होता है।”
मैं न तो इसकी पुष्टि करता हूँ और न ही इसका खंडन करता हूँ।
“वह तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित है,” वह चाय की चुस्की लेते हुए कहता है। “लेकिन मुझे तुम्हें यह बताना होगा कि ऐसा प्यार शायद समझदारी भरा न हो। मैं यह कहना नहीं चाहता, लेकिन यह मेरा कर्तव्य है।”
"ऐसा करना विवेकपूर्ण क्यों नहीं होगा?"
क्योंकि वह आपकी भावनाओं का प्रतिफल नहीं दे सकती। इसमें किसी की कोई गलती नहीं है। न आपकी, न उसकी। आप इसे बदल नहीं सकते, ठीक वैसे ही जैसे आप नदी को वापस नहीं मोड़ सकते।
मैं अपने गालों को दोनों हाथों से मलती हूँ।

"क्या आप मन की बात कर रहे हैं?"
बूढ़े अधिकारी ने सिर हिलाया।
“मेरे पास बुद्धि है और उसके पास नहीं। चाहे मैं उससे कितना भी प्यार करूँ, मेरा मन खाली ही रहेगा। क्या यह सही है?”
“यह सही है,” कर्नल ने कहा। “हो सकता है कि आपका दिमाग अब पहले जैसा न रहा हो, लेकिन उसमें ऐसी कोई बात नहीं है। न मुझमें, न ही यहाँ किसी में।”
“लेकिन क्या आप मेरे प्रति अत्यधिक दयालु नहीं हैं? मेरी ज़रूरतों का ध्यान रखना, बिना सोए मेरी बीमारी में मेरी देखभाल करना? क्या ये एक दयालु मन के लक्षण नहीं हैं?”
नहीं। दयालुता और सहानुभूतिपूर्ण मन दो अलग-अलग गुण हैं। दयालुता शिष्टाचार है। यह सतही प्रथा है, एक अर्जित अभ्यास है। मन ऐसा नहीं है। मन गहरा, शक्तिशाली है, और मेरा मानना है कि यह कहीं अधिक अस्थिर है।
मैं अपनी आंखें बंद कर लेता हूं और अपने बिखरे हुए विचारों को समेटने की कोशिश करता हूं।
“मेरी समझ से तो यही है,” मैं कहना शुरू करता हूँ, “जब परछाई मर जाती है तो मन भी खो जाता है। क्या यह सच नहीं है?”
"यह है।"
"अगर उसकी परछाई मर चुकी है, जैसा कि वह मुझे बताती है, तो क्या इसका मतलब यह है कि वह कभी भी अपनी मानसिक स्थिति वापस नहीं पा सकती?"
कर्नल ने सिर हिलाया। “मैंने टाउन हॉल में उसके रिकॉर्ड देखे हैं। कोई गलती नहीं हुई है। सत्रह साल की उम्र में उसकी परछाई मर गई थी। उसे आदेशानुसार एप्पल ग्रोव में दफनाया गया था। उसे शायद याद हो। फिर भी, उस लड़की से उसकी परछाई दुनिया के प्रति जागरूकता प्राप्त करने से पहले ही छीन ली गई थी, इसलिए वह नहीं जानती कि मन क्या होता है। यह मुझसे अलग है, जिसने जीवन के अंतिम पड़ाव में अपनी परछाई खोई। इसीलिए मैं तुम्हारे मन की गतिविधियों को समझ सकता हूँ, जबकि वह नहीं।”
लेकिन उसे अपनी माँ याद है। और उसकी माँ में बुद्धि थी। क्या इसका कोई महत्व नहीं है?
वह अपने कप में चाय को हिलाता है, फिर धीरे-धीरे पीता है।
“नहीं,” कर्नल ने कहा। “दीवार किसी भी चीज़ को संयोग पर नहीं छोड़ती। दीवार हर उस व्यक्ति पर अपना प्रभाव जमाती है जिसके पास बुद्धि होती है, या तो उन्हें अपने में समाहित कर लेती है या उन्हें बाहर निकाल देती है। ऐसा लगता है कि उसकी माँ का भी यही हश्र हुआ था।”
तो क्या प्रेम मन की बात है?
मैं तुम्हें निराश नहीं देखना चाहता। यह शहर शक्तिशाली है और तुम कमजोर। यह बात तुम्हें अब तक समझ लेनी चाहिए थी।
बूढ़ा अधिकारी अपने खाली कप को घूरता रहता है।

समय बीतने पर तुम्हारा मन महत्वहीन हो जाएगा। वह चला जाएगा, और उसके साथ ही हानि का सारा बोध, सारा दुख भी चला जाएगा। प्रेम का भी कोई महत्व नहीं रहेगा। केवल जीवन शेष रहेगा। शांत, निर्मल जीवन। तुम उस लड़की से प्रेम करते हो और मुझे विश्वास है कि वह भी तुमसे प्रेम करती है। इससे अधिक की अपेक्षा मत करो।

“यह बहुत अजीब है,” मैं कहता हूँ। “मेरा दिमाग अभी भी काम करता है, लेकिन कभी-कभी मैं उसे भूल जाता हूँ। या यूँ कहें कि ऐसा बहुत कम होता है। फिर भी मुझे विश्वास है कि वह वापस आ जाएगा, और यही विश्वास मुझे हिम्मत देता है।”

इसके बाद काफी देर तक सूरज दिखाई नहीं देता।

बुखार उतरने पर मैं बिस्तर से उठकर खिड़की खोलकर बाहर की हवा में सांस लेता हूँ। मैं खड़ा तो हो जाता हूँ, लेकिन दो दिन तक मेरी ताकत जवाब देती है। मैं दरवाज़े का हैंडल भी नहीं घुमा पाता। हर शाम कर्नल मेरे लिए कड़वा जड़ी-बूटी वाला सूप और दलिया लेकर आते हैं। और वे मुझे पुरानी लड़ाइयों की कहानियाँ और यादें सुनाते हैं। वे उस लड़की या दीवार का ज़िक्र दोबारा नहीं करते, और न ही मेरी हिम्मत होती है पूछने की।

तीसरे दिन, मैंने कर्नल की छड़ी उधार ली और सरकारी आवासों के आसपास लंबी सैर की। चलते-चलते मेरा शरीर हल्का और बेकाबू सा महसूस हो रहा था। शायद बुखार उतर गया था, लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। सर्दी ने मेरे आस-पास की हर चीज़ को एक रहस्यमय भार दे दिया था; मैं अकेला ही उस भारी-भरकम दुनिया में अजनबी सा लग रहा था।

सरकारी आवासों वाली पहाड़ी की ढलान से शहर के पश्चिमी हिस्से का नजारा दिखता है: नदी, घंटाघर, दीवार और दूर पश्चिम में स्थित द्वार। काले चश्मे के पीछे मेरी कमजोर आँखें अधिक बारीकियाँ नहीं देख पातीं, हालाँकि मुझे ऐसा लगता है कि सर्दियों की हवा से शहर में स्पष्टता आ जाती होगी।

मुझे वो नक्शा याद है जो मुझे अपनी परछाई को देना था। वो अब पूरा हो चुका है, लेकिन बिस्तर पर पड़े रहने के कारण तय तारीख से लगभग एक हफ्ता देर हो गई है। मेरी परछाई ज़रूर मेरे बारे में चिंतित होगी। या हो सकता है उसने मुझसे पूरी तरह उम्मीद ही छोड़ दी हो। ये सोचकर मेरा मन उदास हो जाता है।

मैंने कर्नल से काम के लिए एक जोड़ी जूते मांगे। मैंने कहा, "मेरा साथी तो सिर्फ पतले गर्मियों के जूते पहनता है। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ेगी, उसे इनकी ज़रूरत पड़ेगी।"

मैंने एक जूते का भीतरी तलवा निकाला, नक्शा छुपाया और तलवा वापस लगा दिया। मैं फिर से कर्नल के पास गया। “द्वारपाल पर मैं भरोसा नहीं कर सकता। क्या आप यह सुनिश्चित करेंगे कि ये चीजें मेरी परछाईं तक पहुँच जाएँ?”

“बिल्कुल,” वह कहता है।

शाम होने से पहले, वह लौटता है और कहता है कि उसने जूते खुद मेरी परछाई को सौंप दिए हैं। "तुम्हारी परछाई ने तुम्हारे बारे में चिंता जताई थी।"

“वह कैसा दिखता है?” मैंने पूछा।
"सर्दी का असर उन पर पड़ने लगा है। लेकिन उनका मनोबल अच्छा है।"
बुखार उतरने के दसवें दिन की शाम को मैं पश्चिमी पहाड़ी की तलहटी तक उतरने और पुस्तकालय जाने में सक्षम हुआ।
जैसे ही मैंने पुस्तकालय का दरवाजा खोला, इमारत की हवा सन्नाटे भरी और सीलन से भरी हुई थी, जितनी मुझे याद थी उससे कहीं ज़्यादा। अंदर कोई रोशनी नहीं थी और अंधेरे में सिर्फ मेरे कदमों की आहट गूंज रही थी। चूल्हे की आग बुझ चुकी थी, कॉफी पॉट ठंडा था। छत पहले से ज़्यादा ऊंची थी। काउंटर पर धूल जमी थी। वह कहीं नहीं दिखी। किसी इंसान की मौजूदगी नहीं थी।
कुछ करने को न होने के कारण मैं एक लकड़ी की बेंच पर बैठा हूँ। मैं उसके आने का इंतज़ार कर रहा हूँ। अगर दरवाज़ा खुला हुआ है, जैसा कि था, तो वह आएगी। मैं इंतज़ार करता रहता हूँ, लेकिन उसका कोई आभास नहीं होता। पुस्तकालय के बाहर समय ठहर सा गया है। मैं यहाँ अकेला हूँ, दुनिया के छोर पर। मैं हाथ बढ़ाता हूँ, लेकिन कुछ भी स्पर्श नहीं होता।
कमरा सर्दियों की भारीपन से भरा है, हर चीज़ मजबूती से कीलों से ठोंकी हुई है। मेरे अंगों का वजन कम हो रहा है। मेरा सिर अपने आप फैलता और सिकुड़ता है।
मैं बेंच से उठता हूँ और लाइट जलाता हूँ। फिर बाल्टी से कोयला निकालकर चूल्हे में डालता हूँ, माचिस जलाता हूँ और वापस बैठ जाता हूँ। पता नहीं कैसे, लाइट से कमरा और भी उदास हो जाता है, चूल्हे की आग उसे ठंडा कर देती है।
शायद मैं कुछ ज़्यादा ही गहराई में उतर गया। या शायद मेरे शरीर के भीतरी हिस्से में बसी एक झनझनाहट ने मुझे थोड़ी देर के लिए नींद में सुला दिया। जब मैंने दोबारा ऊपर देखा, तो वह मेरे सामने खड़ी थी। उसके पीछे पीली रोशनी का एक हल्का सा घेरा बना हुआ था, जो उसकी आकृति को ढँक रहा था। उसने अपना नीला कोट पहना हुआ था, उसके बाल कॉलर के अंदर बंधे हुए थे। उस पर सर्दियों की हवा की महक थी।
मैंने कहा, "मुझे लगा था कि तुम नहीं आओगे। मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था।"
वह कॉफी पॉट को धोती है और उसमें पानी गर्म करने के लिए रखती है। फिर वह अपने कॉलर के अंदर से अपने बालों को निकालती है और अपना कोट उतार देती है।
“क्या आपको नहीं लगा था कि मैं आऊंगी?” वह पूछती है।
“मुझे नहीं पता,” मैंने कहा। “बस एक एहसास था।”
जब तक आपको मेरी जरूरत होगी, मैं आता रहूंगा।
मुझे उसकी ज़रूरत तो ज़रूर है। भले ही हर बार मिलने पर मेरा दुख और गहराता जाता है, फिर भी मुझे उसकी ज़रूरत रहेगी।
“मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे अपनी परछाई के बारे में बताओ,” मैं कहती हूँ। “हो सकता है कि मैं उससे अपनी पिछली दुनिया में मिली होऊँ।”

“हां, ऐसा हो सकता है। मुझे याद है जब आपने कहा था कि हम पहले मिल चुके होंगे।
वह चूल्हे के सामने बैठती है और आग को निहारती है।
“जब मैं चार साल की थी, तब मेरी परछाई को ले जाकर दीवार के बाहर भेज दिया गया। वह उस पार की दुनिया में रहती थी, और मैं यहाँ रहती थी। मुझे नहीं पता कि वह वहाँ क्यों थी, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझसे संपर्क खो दिया। जब मैं सत्रह साल की हुई, तो मेरी परछाई मरने के लिए कस्बे में लौट आई। परछाइयाँ हमेशा मरने के लिए लौटती हैं। द्वारपाल ने उसे सेब के बाग में दफना दिया।”
"क्या तभी आप कस्बे के नागरिक बने?"
“हाँ। मेरे दिमाग का आखिरी हिस्सा मेरी परछाई के नाम पर दफन हो गया था। आपने कहा था कि दिमाग हवा की तरह है, लेकिन शायद हम ही हवा की तरह हैं। कुछ न जानते हुए, बस बहते चले जाते हैं। कभी बूढ़े नहीं होते, कभी मरते नहीं।”
"क्या मरने से पहले आपकी मुलाकात आपकी परछाई से हुई थी?"
वह सिर हिलाती है। "नहीं, मैंने उसे नहीं देखा। हमारे मिलने का कोई कारण नहीं था। वह मुझसे बिल्कुल अलग हो गई थी।"
चूल्हे पर रखा बर्तन धीमी आवाज़ में उबलने लगता है, जो मेरे कानों को दूर से आती हवा की आवाज़ जैसी लगती है।

17

दुनिया का अंत, चार्ली पार्कर, टाइम बम

“प्लीज़!” गोल-मटोल लड़की चिल्लाई। “अगर आप नहीं उठे तो दुनिया खत्म हो जाएगी!”

मैंने कराहते हुए कहा, "बस इसे खत्म होने दो।" मेरे पेट में जो घाव था, वह इतना दर्दनाक था कि मुझे परवाह ही नहीं थी।

“तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या गड़बड़ है? यहाँ क्या हुआ है?”

मैंने एक टी-शर्ट उठाई और अपने चेहरे से पसीना पोंछा। मैंने गुस्से में कहा, "कुछ लोग अंदर घुस आए और मेरे पेट में छह सेंटीमीटर का घाव कर दिया।"

"चाकू के साथ?"

"जैसे गुल्लक।"

"लेकिन क्यों?"

मैंने कहा, "मैं खुद भी यही पता लगाने की कोशिश कर रहा था। मुझे लगा कि चाकू लिए हुए दोनों लोग शायद तुम्हारे दोस्त हों।"

गोल-मटोल लड़की ने मेरी तरफ घूरकर देखा। "तुम ऐसा सोच भी कैसे सकते हो?" वह चिल्लाई।

"ओह, मुझे नहीं पता। मैं बस किसी पर दोष डालना चाहती थी। इससे मुझे अच्छा महसूस होता है।"

लेकिन इससे समस्या का समाधान नहीं होता।

मैंने भी सहमति जताते हुए कहा, "इससे कुछ हल नहीं होगा। लेकिन क्या फर्क पड़ता है। इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। तुम्हारे दादाजी ने बस हाथ हिलाया और अचानक मैं इस सब के बीच में आ गया।"

दर्द से भरी एक और गाड़ी आ गई। मैंने चुपचाप चौराहे पर इंतजार किया।

“आज का ही उदाहरण ले लो। पहले तो तुमने सुबह-सुबह पता नहीं किस समय फोन किया। तुमने बताया कि तुम्हारे दादाजी गायब हो गए हैं और तुम्हें मेरी मदद चाहिए। मैं तुमसे मिलने गया; तुम नहीं आए। मैं घर आकर सोने लगा; तभी वो दोनों मेरे अपार्टमेंट में घुस आए और मेरे पेट में चाकू घोंप दिया। फिर सिस्टम के लोग आए और मुझसे पूछताछ करने लगे। अब तुम यहाँ हो। लगता है तुम सबने पहले से ही तय कर रखा है। वाह, क्या बढ़िया टीम है तुम्हारी।” मैंने गहरी साँस ली। “ठीक है, अब तुम मुझे सब कुछ बताओगे कि क्या चल रहा है।”

“मैं कसम खाकर कहता हूँ, मुझे आपसे ज़्यादा कुछ नहीं पता। मैंने दादाजी के शोध में मदद की थी, लेकिन मैंने वही किया जो मुझे करने को कहा गया था। छोटे-मोटे काम। ये करो, वो करो, वहाँ जाओ, यहाँ आओ, फ़ोन करो, चिट्ठी लिखो, बस ऐसे ही। मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं पता।”

लेकिन आपने शोध में मदद तो की।
“मैंने मदद तो की, लेकिन मैंने सिर्फ डेटा प्रोसेस किया। तकनीकी काम। मेरे पास अकादमिक पृष्ठभूमि नहीं है, इसलिए मुझे इससे ज्यादा कुछ समझ नहीं आया।”
मैंने अपने विचारों को फिर से संगठित करने की कोशिश की। मुझे हालात बिगड़ने से पहले ही सब कुछ सुलझाना था।
"ठीक है, अभी-अभी आप कह रहे थे कि दुनिया खत्म होने वाली है। यह सब क्या था?"
मुझे नहीं पता। ये दादाजी ने कहा था। ‘अगर मेरे अंदर ये होता, तो दुनिया खत्म हो जाती।’ दादाजी ऐसी बातों पर मजाक नहीं करते। अगर उन्होंने कहा कि दुनिया खत्म होने वाली है, तो सच में दुनिया खत्म हो जाएगी।
मैंने कहा, “मुझे समझ नहीं आ रहा। इस प्रलय की बात का क्या मतलब है? उसने असल में क्या कहा? क्या आपको यकीन है कि उसने ये नहीं कहा, ‘दुनिया मिट जाएगी’ या ‘दुनिया तबाह हो जाएगी’?”
“नहीं,” उसने कहा, “दुनिया खत्म होने वाली है।”
और अधिक मानसिक पुनर्गठन।
तो फिर, इस... उह... ‘दुनिया के अंत’ का मुझसे कुछ लेना-देना है?
“मुझे लगता है ऐसा ही है। दादाजी ने कहा था कि तुम ही कुंजी हो। उन्होंने कुछ साल पहले तुम्हारे बारे में पूरी जानकारी जुटाना शुरू किया था।”
“कुछ साल पहले!” मुझे अपनी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। “और क्या? टाइम बम के बारे में कुछ पता चला?”
“एक टाइम बम?”
“जिस आदमी ने मुझ पर चाकू से हमला किया था, उसने यही कहा था। कि मैंने तुम्हारे दादाजी के लिए जो डेटा प्रोसेस किया था, वह एक टाइम बम की तरह था जो कभी भी फट सकता था। क्या तुम्हें इसके बारे में कुछ पता है?”
“सिर्फ़ अंदाज़ा,” गोल-मटोल लड़की ने कहा। “दादाजी लंबे समय से मानव चेतना का अध्ययन कर रहे हैं। और मुझे नहीं लगता कि सिर्फ़ शफ़लिंग ही इसका एकमात्र आधार है। कम से कम शफ़लिंग के सिद्धांत को सामने लाने से पहले तक, दादाजी मुझे अपने शोध के बारे में तरह-तरह की बातें बताते थे। जैसा कि मैंने कहा, मुझे इस विषय में ज़्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन दादाजी बातों को सरल रखते थे, और यह बहुत दिलचस्प होता था। मुझे हमारी वो छोटी-छोटी बातें बहुत पसंद थीं।”
लेकिन फिर, जब उन्होंने फेरबदल के लिए अपनी प्रणाली को अंतिम रूप दे दिया, तो वे चुप हो गए?
“हाँ, बिल्कुल सही। दादाजी ने खुद को अपनी भूमिगत प्रयोगशाला में बंद कर लिया और मुझे कभी कुछ नहीं बताया। जब भी मैं उनसे उनके शोध के बारे में पूछता, वे विषय बदल देते थे।”
"क्या आपको यह अजीब नहीं लगा?"

“हाँ, इससे मुझे दुख तो हुआ। और बहुत अकेलापन भी महसूस हुआ।” फिर मेरी आँखों में देखते हुए उसने पूछा, “क्या मैं आपके साथ कंबल के नीचे आ सकती हूँ? यहाँ बहुत ठंड है।”
मैंने कहा, "जब तक तुम मेरे घाव को नहीं छूते या ज्यादा हिलते-डुलते नहीं हो।"
वह बिस्तर के दूसरी तरफ घूमकर कंबल के नीचे घुस गई, गुलाबी सूट पहने हुए ही। मैंने उसे एक तकिया दिया। उसने उसे थोड़ा फुलाया और फिर अपने सिर के नीचे रख लिया। उसके गले से वही तरबूज जैसी खुशबू आ रही थी। मैंने बड़ी मुश्किल से अपना शरीर घुमाकर उसकी तरफ मुँह किया। तो हम दोनों एक ही बिस्तर पर आमने-सामने लेटे हुए थे।
"यह पहली बार है जब मैं किसी पुरुष के इतने करीब आई हूं," उस गोल-मटोल लड़की ने कहा।
उह ओह।
“मैं तो शायद ही कभी शहर से बाहर निकला हूँ। इसीलिए आज सुबह मुझे आओयामा के उस सुपरमार्केट का रास्ता नहीं सूझा। मैं आपसे बेहतर दिशा-निर्देश पूछने ही वाला था, लेकिन आवाज़ बंद हो गई।”
आप किसी भी टैक्सी ड्राइवर को वहां ले जाने के लिए कह सकते थे।
“मेरे पास लगभग कोई पैसा नहीं था। मैं इमारत से इतनी जल्दी बाहर भागा कि अपने साथ और पैसे लेना भूल गया। इसलिए मुझे पैदल चलना पड़ा।”
"क्या आपका कोई और परिवार नहीं है?" मैंने उससे पूछा, मुझे उसकी बात पर पूरी तरह से विश्वास नहीं हो रहा था।
“जब मैं छह साल का था, तब एक दुर्घटना में मेरे माता-पिता और भाई की मौत हो गई। एक ट्रक ने पीछे से हमारी कार को टक्कर मार दी और पेट्रोल टैंक फट गया। वे जलकर मर गए।”
और आप ही अकेले जीवित बचे थे?
“मैं उस समय अस्पताल में था। वे मुझसे मिलने आ रहे थे।”
“हां, बिल्कुल,” मैंने कहा।
“तब से दादाजी मुझ पर नजर रखते थे। मैं स्कूल भी नहीं गया, मुश्किल से ही कभी बाहर निकलता था, मेरे कोई दोस्त नहीं थे...”
“तुम स्कूल क्यों नहीं गए?”
“दादाजी ने कहा था कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है,” उसने सहज भाव से जवाब दिया। “उन्होंने मुझे सारे विषय पढ़ाए—अंग्रेज़ी, रूसी और शरीर रचना विज्ञान, सब कुछ। खाना बनाना और सिलाई करना जैसी चीज़ें मैंने चाची से सीखीं।”
“तुम्हारी चाची?”
“वैसे, वो मेरी असली चाची नहीं थीं। वो घर में रहने वाली महिला थीं जो साफ-सफाई और घर के काम करती थीं। बहुत ही अच्छी इंसान थीं। तीन साल पहले कैंसर से उनकी मृत्यु हो गई। चाची के जाने के बाद से, दादाजी और मैं ही रह गए हैं।”

तो क्या आप छह साल की उम्र के बाद स्कूल नहीं गए?
“हाँ, सही है, लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? मेरा मतलब है, मैं कई तरह के काम कर सकता हूँ। मैं चार विदेशी भाषाएँ बोल सकता हूँ, मैं पियानो और ऑल्टो सैक्सोफोन बजा सकता हूँ, मैं वायरलेस जोड़ सकता हूँ, मैंने नेविगेशन और रस्सी पर चलना सीखा है, मैंने ढेर सारी किताबें पढ़ी हैं। और मेरे सैंडविच अच्छे थे, है ना?”
“बहुत बढ़िया,” मैंने स्वीकार किया।
“दादाजी हमेशा कहते थे कि स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ दिमाग को घिसने में सोलह साल लग जाते हैं। दादाजी खुद भी मुश्किल से ही स्कूल गए थे।”
“अविश्वसनीय,” मैंने कहा। “लेकिन क्या आपको अपने हमउम्र दोस्तों के न होने से कोई कमी महसूस नहीं हुई?”
“खैर, मैं सच में कुछ नहीं कह सकती। मैं इतनी व्यस्त थी कि मुझे इसके बारे में सोचने का समय ही नहीं मिला। और वैसे भी, मुझे नहीं पता कि मैं अपनी उम्र के लोगों से क्या कह पाती।”
"हम्म।"
दूसरी ओर," वह उत्साहित होकर बोली, "आप मुझे बेहद दिलचस्प लगते हैं।"
“हं?”
“मेरा मतलब है, आप इतने थके हुए हैं, फिर भी आपकी थकान आपको एक तरह की ऊर्जा प्रदान करती है। यह अद्भुत है,” उसने चहकते हुए कहा। “मुझे यकीन है कि आप सैक्सोफोन बजाने में माहिर होंगे!”
"माफ़ करें?"
"क्या आपके पास चार्ली पार्कर के कोई रिकॉर्ड हैं?"
“मुझे ऐसा लगता है। लेकिन इस आपदाग्रस्त इलाके में उन्हें ढूंढने की मेरी हालत नहीं है। स्टीरियो खराब है, इसलिए वैसे भी आप सुन नहीं सकते।”
"क्या आप एक साधन बजा सकते हैं?"
"नहीं।"
"क्या मैं आपको छू सकता हूँ?"
“नहीं!” मैंने साफ-साफ कह दिया। “मुझे पहले से ही बहुत दर्द हो रहा है।”
"जब घाव भर जाए, तब क्या मैं उसे छू सकता हूँ?"
“जब घाव भर जाएगा, अगर दुनिया खत्म नहीं हुई है... चलिए, हम उसी बात पर वापस आते हैं जिस पर हम चर्चा कर रहे थे। आपने कहा था कि आपके दादाजी ने अपनी फेरबदल करने की प्रणाली का आविष्कार करने के बाद चुप्पी साध ली थी।”
“ओह हाँ, बिल्कुल सही। उस घटना के बाद से दादाजी में ज़बरदस्त बदलाव आ गया। वे मुझसे मुश्किल से ही बात करते थे। वे चिड़चिड़े हो गए थे, हमेशा खुद से कुछ बुदबुदाते रहते थे।”
"क्या आपको याद है कि उसने शफलिंग के बारे में कुछ और कहा था?"

गोल-मटोल लड़की ने अपने एक सोने के झुमके को छुआ। "मुझे याद है, उन्होंने कहा था कि 'शफलिंग' एक नई दुनिया का द्वार है। उन्होंने कहा था कि हालांकि उन्होंने इसे कंप्यूटर डेटा को स्क्रैम्बल करने की विधि के रूप में विकसित किया था, लेकिन थोड़ा-सा प्रयास करने से कोई व्यक्ति पूरी दुनिया को स्क्रैम्बल कर सकता है। कुछ-कुछ परमाणु भौतिकी की तरह।"
लेकिन अगर फेरबदल एक नई दुनिया का द्वार है, तो चाबी मेरे पास क्यों होनी चाहिए?
"मुझें नहीं पता।"
मुझे बर्फ के साथ एक बड़ा गिलास व्हिस्की पीने की बहुत इच्छा हो रही थी। मेरे यहाँ तो किस्मत ही अच्छी है। चलिए इसे फिर से कोशिश करते हैं। क्या आपके दादाजी का मकसद दुनिया को खत्म करना था?
“नहीं। ऐसा कुछ नहीं है। दादाजी थोड़े चिड़चिड़े और अभिमानी हो सकते हैं और उन्हें आम तौर पर लोग पसंद नहीं होते, लेकिन दिल से वे वाकई एक अच्छे इंसान हैं। बिल्कुल मेरी और तुम्हारी तरह।”
"धन्यवाद।" इससे पहले किसी ने भी मेरे बारे में ऐसा नहीं कहा था।
उन्हें इस बात का भी डर था कि उनका शोध गलत हाथों में न पड़ जाए। उन्होंने सिस्टम छोड़ दिया क्योंकि उन्हें पता था कि अगर वे बने रहे तो सिस्टम उनके निष्कर्षों का इस्तेमाल अपनी मर्जी से करेगा। तभी उन्होंने अपनी खुद की प्रयोगशाला खोली।
मैंने कहा, "लेकिन यह प्रणाली अच्छा काम करती है। यह सेमिओटेक लोगों को डेटा बैंकों से डेटा चुराने और उसे काला बाजार में बेचने से रोकती है, जिससे सूचना के सही स्वामित्व की रक्षा होती है।"
गोल-मटोल लड़की ने कंधे उचकाते हुए कहा, “दादाजी को अच्छे या बुरे की ज़्यादा परवाह नहीं थी। या कम से कम उन्होंने यही कहा था कि मालिकाना हक के दावों से इसका कोई लेना-देना नहीं है।”
“खैर, शायद नहीं,” मैंने पीछे हटते हुए कहा।
“दादाजी को किसी भी प्रकार के अधिकार पर कभी भरोसा नहीं था। वे कुछ समय के लिए सिस्टम से जुड़े थे, लेकिन ऐसा केवल इसलिए था ताकि उन्हें डेटा, प्रायोगिक संसाधनों और एक मेनफ्रेम सिम्युलेटर का मुफ्त उपयोग मिल सके।”
“क्या सच में? मुझे बताओ, जब तुम्हारे दादाजी ने सिस्टम छोड़ा, तो क्या उन्होंने गलती से भी मेरी निजी फाइल डेटा बैंक से अपने साथ ले ली थी?”
“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। “लेकिन अगर उसके मन में ऐसा करने का ख्याल आया भी होता, तो उसे कौन रोकता? मेरा मतलब है, वह केंद्रीय अनुसंधान विभाग का प्रमुख था। उसे डेटा के साथ जो चाहे करने की पूरी छूट थी।”
तो बात कुछ ऐसी थी। प्रोफेसर मेरे बारे में डेटा लेकर चले गए थे। उन्होंने इसे अपने किसी निजी शोध प्रोजेक्ट में इस्तेमाल किया था, जिसमें मुझे एक नमूने के तौर पर इस्तेमाल करके पीढ़ियों के फेरबदल के सिद्धांत को दूसरों से आगे बढ़ाने की कोशिश की गई थी। और अब, जैसा कि मेरे दोस्त जूनियर ने सुझाव दिया था, प्रोफेसर मेरे लिए तैयार थे। उनका प्राथमिक नमूना अब उनका गिनी पिग बनने वाला था। उन्होंने शायद मुझे

फेरबदल के लिए फर्जी डेटा दिया था, जिसमें एक ऐसा कोड डाला गया था जो मेरी चेतना में प्रतिक्रिया करेगा।
अगर सच में ऐसा था, तो प्रतिक्रिया शुरू हो चुकी थी। एक टाइम बम। क्या पता जूनियर सही हो? मैंने मन ही मन हिसाब लगाया। पिछली रात जब मैं करवटें बदलने के बाद होश में आया था, तब से लगभग चौबीस घंटे बीत चुके थे। चौबीस घंटे। मुझे नहीं पता था कि टाइम बम कब फटेगा, लेकिन मैं पहले ही पूरा एक दिन खो चुका था।
“एक और सवाल। आपने कहा था ना कि ‘दुनिया खत्म होने वाली है’?”
“हां, बिल्कुल सही। दादाजी ने भी यही कहा था।”
"क्या आपके दादाजी ने मेरे डेटा पर शोध करने से पहले ही दुनिया के अंत की यह बात शुरू कर दी होती? या फिर उसके बाद ही?"
“बाद में,” उसने कहा। “कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। मतलब, दादाजी ने तो अभी कुछ दिन पहले ही कहना शुरू किया है कि ‘दुनिया खत्म होने वाली है’। इसमें क्या अहमियत है? इसका किसी भी बात से क्या लेना-देना है?”
मुझे पक्का नहीं पता। लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि इसमें कहीं न कहीं कोई रहस्य छिपा है। मेरा शफलिंग पासवर्ड 'दुनिया का अंत' है। अब मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यह महज़ एक संयोग है।
आपकी ‘दुनिया के अंत’ की कहानी किस बारे में है?
मुझे इसके बारे में बताया नहीं गया था। यह मेरी चेतना का हिस्सा है, लेकिन मेरी पहुंच से बाहर है। इसके बारे में मुझे सिर्फ इतना पता है कि इसका कोड नाम है, 'दुनिया का अंत'।
“क्या आप इसे वापस नहीं ला सकते? प्रक्रिया को उलट दें या कुछ और करें?”
मैंने कहा, "असंभव। यह प्रक्रिया सिस्टम सेंट्रल द्वारा सुरक्षित है। पूरी सेना की एक टुकड़ी भी जानकारी नहीं निकाल सकती। सुरक्षा अविश्वसनीय है।"
“और दादाजी ने फाइल निकाली?”
“शायद। लेकिन मैं सिर्फ अनुमान लगा रहा हूँ। हमें आपके दादाजी से ही पूछना पड़ेगा।”
तो फिर तुम दादाजी को इंकलिंग्स से बचाने में मदद करोगे?
अपने पेट के घाव को दबाते हुए, मैं बिस्तर से उठा। मेरा सिर दर्द से ऐसे जगमगा उठा जैसे कोई व्यस्त स्विचबोर्ड बज रहा हो।
मैंने कहा, "लगता है मेरे पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं। मुझे नहीं पता कि आपके दादाजी के प्रलय के परिदृश्य का क्या मतलब है, लेकिन हालात देखकर लगता है कि मैं इसे नजरअंदाज नहीं कर सकता।"
"चाहे कुछ भी हो जाए, हमें दादाजी की मदद करनी ही होगी।"
“क्योंकि हम तीनों अच्छे लोग हैं?”
“बेशक,” गोल-मटोल लड़की ने कहा।

18

स्वप्न पठन

अपने मन की बात न जान पाने के कारण, मैं स्वप्न-व्याख्या के कार्य में लौट आती हूँ। जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती है, मैं इस प्रयास पर ध्यान केंद्रित करती हूँ, और मुझे सताने वाला हानि का भाव कुछ समय के लिए ही सही, भुला दिया जाता है।

दूसरी ओर, मैं जितने पुराने सपने पढ़ता हूँ, उतनी ही अपनी बेबसी का एहसास करता हूँ। मैं सपनों का संदेश नहीं समझ पाता। मैं उन्हें बिना किसी समझ के पढ़ता हूँ। वे रात-दर-रात मेरी आँखों के सामने से गुज़रते हुए गूढ़ ग्रंथों की तरह हैं। ऐसा लगता है मानो मैं नदी के पानी को निहार रहा हूँ।

मेरी स्वप्न-पठन क्षमता में सुधार हुआ है। मैं इस तकनीक में निपुण हो गई हूँ और पुराने सपनों की बड़ी मात्रा को भी पढ़ सकती हूँ। लेकिन इसका क्या लाभ?

“स्वप्न-पाठ का क्या अर्थ है?” मैंने लाइब्रेरियन से पूछा। “जैसा कि आपने कहा है, मेरा काम इन खोपड़ियों से पुराने सपने पढ़ना है। लेकिन सपने बिना किसी कारण के मेरे अंदर से गुजरते हैं। मैं दिन-ब-दिन थका हुआ महसूस कर रहा हूँ।”

फिर भी, तुम सपनों को ऐसे पढ़ते हो मानो तुम पर किसी आत्मा का कब्ज़ा हो। क्या ऐसा नहीं है?

“मुझे नहीं पता,” मैंने जवाब दिया। एक और बात यह है कि मैं अपनी खालीपन को भरने के लिए इस तरह ध्यान केंद्रित करती हूँ। जैसा कि उसने कहा है, स्वप्न-पाठ में कुछ ऐसा है जिसने मुझे मोहित कर लिया है।

"शायद समस्या आपमें ही है," वह कहती हैं।

"क्या मुझमें कोई समस्या है?"

मुझे लगता है कि आपको अपने दिमाग को खोलने की ज़रूरत है। मैं दिमाग की बातों को अच्छी तरह से नहीं समझता, लेकिन शायद आपका दिमाग बहुत मजबूती से बंद है। आपको अपने पुराने सपनों को पढ़ना होगा और उन्हें खोजना होगा।

"आपके ऐसा सोचने की वजह क्या है?"

“यह स्वप्न-पाठ है। जैसे-जैसे पक्षी अपने मौसम के अनुसार दक्षिण या उत्तर की ओर जाते हैं, स्वप्न-पाठक को सपने पढ़ने को मिलते हैं।”

फिर वह मेज के उस पार हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ पकड़ लेती है। वह मुस्कुराती है। एक ऐसी मुस्कान जो वसंत ऋतु का वादा करती है।

अपने दिमाग को खोलो। तुम कैदी नहीं हो। तुम उड़ता हुआ पक्षी हो, जो आसमान में सपनों की तलाश कर रहा है।

समय बीतने के साथ मैं अपने हर पुराने सपने को फिर से संजो लेता हूँ और पूरी लगन से उसमें लीन हो जाता हूँ। मैं लंबी अलमारियों में से एक खोपड़ी चुनता हूँ और उसे मेज पर ले आता हूँ। वह पहले गीले कपड़े से धूल पोंछने में मेरी मदद करती है। फिर बड़ी सावधानी से सूखे कपड़े से उसे तब तक चमकाती है जब तक कि खोपड़ी बर्फ की तरह चिकनी न हो जाए।

मैं अपने दोनों हाथों को खोपड़ी पर धीरे से रखता हूँ और एक गर्म चमक के निकलने का इंतज़ार करते हुए उसे निहारता हूँ। जब वह एक निश्चित तापमान पर पहुँच जाती है—जैसे सर्दियों में सूरज की एक किरण—तो सफ़ेद पॉलिश की हुई खोपड़ी अपने पुराने सपनों को प्रकट करती है। मैं अपनी आँखें गड़ाकर गहरी साँस लेता हूँ और अपनी उंगलियों से उस कहानी की जटिल रेखाओं को छूता हूँ जो वह सुनाना शुरू करती है। प्रकाश की आवाज़ बहुत धीमी रहती है; प्राचीन नक्षत्रों की तरह शांत छवियाँ मेरे जागृत मन के गुंबद पर तैरती हैं। वे अस्पष्ट टुकड़े हैं जो कभी एक सजीव चित्र में विलीन नहीं होते।

एक ऐसा परिदृश्य होगा जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा, अपरिचित मधुर गूँज, अनेक ध्वनियों के शोर में फुसफुसाहट। वे रुक-रुक कर ऊपर उठती हैं और उतनी ही अचानक अंधेरे में डूब जाती हैं। एक अंश से दूसरे अंश में कोई समानता नहीं है। मैं अपनी ऊर्जा को अपनी उंगलियों में केंद्रित करने के तरीके आजमाता हूँ, लेकिन परिणाम कभी नहीं बदलता। क्योंकि यद्यपि मैं यह मानता हूँ कि पुराने सपने मेरे भीतर किसी चीज़ से संबंधित हैं, फिर भी मैं खोया हुआ हूँ।

शायद मैं स्वप्न-पाठक के रूप में अपर्याप्त हूँ। शायद प्रकाश मंद पड़ गया है, अनगिनत वर्षों के कारण भाषा क्षीण हो गई है। या फिर, क्या ये आयाम किसी अलग ही प्रकार के हैं? क्या मेरे जागृत समय और खोपड़ियों के स्वप्न समय के बीच कोई अथाह खाई मौजूद है?

मैं बिखरे हुए टुकड़ों को ऊपर तैरते और चुपचाप गायब होते देखता हूँ। बेशक, खोपड़ियाँ मुझे ऐसे दृश्य भी दिखाती हैं जो मेरी समझ से परे हैं। हवा में लहराती घास, आकाश में तैरते सफेद बादल, नदी पर पड़ती धूप —शुद्ध, सरल दृश्य। लेकिन मेरे मन में, ये सरल दृश्य एक ऐसी उदासी जगाते हैं जिसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। जैसे कोई जहाज खिड़की के सामने से गुजर जाता है, वैसे ही वे प्रकट होते हैं और बिना कोई निशान छोड़े गायब हो जाते हैं।

मैं पढ़ता हूँ और पुराना सपना धीरे-धीरे अपनी गर्माहट खो देता है, जैसे कोई ज्वार पीछे हटता है, और वापस उसी ठंडी सफेद खोपड़ी में समा जाता है जहाँ वह कभी था। पुराना सपना अपनी अनंत नींद में लौट जाता है। और दृष्टि का सारा पानी उंगलियों से फिसलकर ज़मीन पर गिर जाता है। मेरा स्वप्न-पाठ इसी का एक अंतहीन पुनरावृति है।

जब पुराने सपने थम जाते हैं, तो मैं खोपड़ी लाइब्रेरियन को सौंप देता हूँ और वह उसे काउंटर पर रख देती है। इस विराम में मैं आराम करता हूँ, दोनों हाथ मेज पर रखकर, और अपनी क्षमताओं को समझने की कोशिश करता हूँ। मैंने पाया है कि मैं एक रात में ज़्यादा से ज़्यादा छह खोपड़ियाँ पढ़ सकता हूँ। इससे ज़्यादा होने पर

मेरी एकाग्रता भंग हो जाती है; सपने शोर में बदल जाते हैं। ग्यारह बजे तक, मैं थकान से लगभग खड़ा नहीं हो पाता।

हर सत्र के अंत में, वह कॉफ़ी परोसती है। कभी-कभी हम उसके घर पर बने बिस्कुट या फ्रूटब्रेड आपस में बाँटते हैं। खाते समय हम बात नहीं करते।

“क्या मैं आपके स्वप्न-पाठ में बाधा डाल रही हूँ?” वह मुझसे पूछती है। “शायद आपका दिमाग इसलिए बंद है क्योंकि मैं आपको जवाब नहीं दे पा रही हूँ?”

हमेशा की तरह, हम पुराने पुल से रेत के टीले तक जाने वाली संकरी सीढ़ियों पर बैठे हैं। पानी की सतह पर एक हल्का चाँदी जैसा चाँद काँप रहा है। एक खंभे से बंधी लकड़ी की नाव धारा की आवाज़ को मधुर बना रही है। उसके साथ बैठे हुए, मुझे उसकी गर्माहट अपनी बांह पर महसूस हो रही है।

“ऐसा बिल्कुल नहीं है,” मैं कहती हूँ। “यह मेरे अंदर की कोई बात है। मेरा मन मुझसे दूर होता जा रहा है। मैं भ्रमित हूँ।”

क्या मन आपकी समझ से परे है?

“मुझे नहीं पता,” मैं कहता हूँ। “कई बार समझ बाद में आती है, जब उसका कोई महत्व नहीं रह जाता। कई बार मैं वही करता हूँ जो मुझे करना पड़ता है, अपने मन की बात जाने बिना, और भटक जाता हूँ।”

"मन इतना अपूर्ण कैसे हो सकता है?" वह मुस्कुराते हुए कहती है।

मैं अपने हाथों को देखता हूँ। चाँदनी में नहाए हुए, वे मूर्तियों की तरह लगते हैं, जिनका कोई उद्देश्य नहीं है।

मैं कहता हूँ, "यह भले ही अपूर्ण हो, लेकिन यह निशान छोड़ जाता है। और हम उन निशानों का अनुसरण कर सकते हैं, जैसे बर्फ में पैरों के निशान।"

“इनका परिणाम कहाँ होता है?”

“स्वयं के लिए,” मैंने उत्तर दिया। “मन का यही अर्थ है। मन के बिना, कुछ भी कहीं नहीं ले जाता।”

मैंने ऊपर देखा। शहर के ऊपर, दीवार के ऊपर, सर्दियों का चाँद बहुत चमकीला था।

“इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है,” मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा।

19

हैम्बर्गर, स्काईलाइन, डेडलाइन

हमने निकलने से पहले कुछ खाने का फैसला किया। मुझे वैसे तो भूख नहीं थी, लेकिन कौन जानता था कि बाद में हमें खाने का मौका कब मिलेगा। खैर, उस लड़की ने कहा कि उसके पास दोपहर के खाने के लिए सिर्फ एक चॉकलेट बार खरीदने के पैसे थे और उसे बहुत भूख लगी थी।

मैंने ज़ख्म को और ज़्यादा बढ़ाने से बचने की कोशिश करते हुए किसी तरह अपने पैरों में जींस डाली, टी-शर्ट के ऊपर एक शर्ट पहनी, उसके ऊपर एक हल्का स्वेटर, फिर उसके ऊपर एक नायलॉन का विंडब्रेकर। उसका गुलाबी सूट गुफा अन्वेषण के लिए ठीक नहीं था, लेकिन मेरे वॉर्डरोब में उसके नाप के ज़्यादा कपड़े नहीं बचे थे। मैं उससे दस सेंटीमीटर लंबा था; वह मुझसे दस किलो ज़्यादा भारी थी। मुझे लगा कि हमें उसके लिए ज़्यादा उपयुक्त कपड़े लेने चाहिए, लेकिन इस समय कोई दुकान खुली नहीं थी, इसलिए मैंने उसे अपनी पुरानी, सैन्य सेवा से बची हुई फ़्लाइट जैकेट पहना दी। उसकी ऊँची एड़ी के जूते थोड़ी दिक्कत पैदा कर रहे थे, लेकिन उसने कहा कि उसके पास ऑफ़िस में जॉगिंग शूज़ और गैलोश हैं।

गुलाबी रंग के जॉगिंग शूज़ और गुलाबी रंग के गैलोश।

मैंने कहा, "लगता है आपको गुलाबी रंग पसंद है।"

“दादाजी को यह पसंद है। उनका कहना है कि मैं गुलाबी रंग में बहुत सुंदर दिखती हूँ।”

“हाँ, तुम हो,” मैंने कहा। और वह थी भी। गुलाबी रंग के कपड़े पहने गोल-मटोल लड़कियों को देखकर अक्सर मन में डांस फ्लोर पर नाचती हुई बड़ी-बड़ी स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक की छवि उभरती है, लेकिन उसके मामले में यह रंग उस पर खूब जंच रहा था।

मैंने अपना थैला बिस्तर के ढेर के नीचे से निकाला और यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसमें कोई चीरा तो नहीं लगा है, मैंने उसमें एक छोटी टॉर्च, एक चुंबक, दस्ताने, तौलिए, एक बड़ा चाकू, सिगरेट लाइटर, रस्सी और ईंधन भर लिया। फिर मैं रसोई में गया और फर्श पर बिखरे हुए ब्रेड, कॉर्नड बीफ़ के डिब्बे, आड़ू, वियना सॉसेज और अंगूर जैसे फलों को इकट्ठा किया। मैंने अपनी पानी की बोतल में पानी भर लिया और फिर अपार्टमेंट में मौजूद सारा पैसा अपनी जेब में भर लिया।

“यह मुझे पिकनिक की याद दिलाता है,” लड़की ने कहा।

"बिलकुल।"

मैंने अपने कबाड़खाने जैसे अपार्टमेंट पर आखिरी नज़र डाली। एक बार फिर, ज़िंदगी ने मुझे एक सबक सिखाया: बनाने में सालों लगते हैं, नष्ट करने में पल भर। हाँ, मैं इस छोटी सी जगह से ऊब गया था, लेकिन यहाँ मेरा घर अच्छा था। दो कैन बीयर पीने में जितना समय लगता है, उतने ही समय में सब कुछ सुबह की

धुंध की तरह गायब हो गया। मेरी नौकरी, मेरी व्हिस्की, मेरा सुकून, मेरा अकेलापन, मेरे समरसेट मॉघम और जॉन फोर्ड के संग्रह—सब कुछ कूड़े में बदल गया और बेकार हो गया।

खेतों की भव्यता, फूलों की महिमा, मैंने धीरे से ये शब्द दोहराए। फिर मैंने हाथ बढ़ाकर ब्रेकर स्विच खींचकर बिजली काट दी।

शारीरिक रूप से मैं इतना दर्द में था कि जीवन के इस अध्याय को समाप्त करने के बारे में गहराई से सोचने की हिम्मत ही नहीं थी। मुझे बहुत तकलीफ हो रही थी और मैं बहुत थका हुआ था। आधा-अधूरा सोचने से बेहतर है कि बिल्कुल न सोचा जाए।

हम लिफ्ट में चढ़े, बेसमेंट गैराज में गए और अपना सामान कार की पिछली सीट पर रख दिया। मैंने छुपकर पीछा करने वालों को ढूंढने की ज़हमत भी नहीं उठाई। वे घात लगाकर बैठे हो सकते हैं, हमारा पीछा कर रहे हो सकते हैं, अब क्या फर्क पड़ता है? और वैसे भी, वे कौन होते? सेमियोटेक्स? सिस्टम के लोग? वो दोस्ताना जोड़ी? क्या तीनों के साथ सिर्फ़ मज़ाक-मस्ती ही करनी थी? मुझे सरप्राइज़ पसंद हैं। अगर उन्हें कोई काम करना होता, तो वे उसे बखूबी कर सकते थे।

मुझे इतनी तकलीफ हो रही थी कि मैं गाड़ी चलाना नहीं चाहता था, लेकिन उस लड़की को गाड़ी चलाना नहीं आता था।

“माफ़ कीजिए। लेकिन मैं घुड़सवारी कर सकती हूँ,” उसने कहा।

“कोई बात नहीं। हो सकता है आपको अभी भी घोड़े की सवारी करनी पड़े,” मैंने कहा।

पेट्रोल पंप लगभग पूरा भरा हुआ था। मैंने गाड़ी को धीरे से बाहर निकाला। रिहायशी गलियों से होते हुए हम मुख्य सड़क पर आ पहुँचे। इस समय के हिसाब से सड़क पर काफी भीड़ थी, ज्यादातर टैक्सियाँ थीं। आधी रात को इतने सारे लोग इतनी तेजी से क्यों भाग रहे थे? वे शाम छह बजे काम छोड़कर घर क्यों नहीं जा सकते थे और रात दस बजे तक सो क्यों नहीं सकते थे?

लेकिन जैसा कि कहते हैं, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं था। ओपेक किसी की राय की परवाह किए बिना तेल की खुदाई करता रहेगा, बड़ी-बड़ी कंपनियां उस तेल से बिजली और पेट्रोल बनाती रहेंगी, लोग देर रात तक शहर में घूमते रहेंगे और उस पेट्रोल का इस्तेमाल करते रहेंगे। लेकिन फिलहाल, मुझे अपनी खुद की समस्याओं से निपटना था।

मैं लाल बत्ती पर रुका रहा, दोनों हाथ स्टीयरिंग व्हील पर रखे हुए थे, और मुझे जम्हाई आने लगी।

हमारे दाईं ओर एक सफेद स्काईलाइन कार खड़ी थी। उसमें एक युवक और युवती बैठे थे, जो रात भर शहर में घूमने के बाद या तो जा रहे थे या वापस आ रहे थे, और थोड़े ऊबे हुए लग रहे थे। कार के स्टीरियो से ड्यूरान ड्यूरान के गाने बज रहे थे। खिड़की से बाहर लटके हुए हाथ में दो चांदी के कंगन पहने उस युवती ने मेरी तरफ एक नज़र डाली। मैं चाहे डेनीज़ रेस्टोरेंट का साइनबोर्ड होता या ट्रैफिक सिग्नल, कोई फर्क नहीं पड़ता। वह एक आम खूबसूरत युवती थी, शायद। किसी टीवी ड्रामा में, वह मुख्य नायिका की सबसे अच्छी

दोस्त होती, जो किसी कैफे के सीन में एक बार आकर कहती, "क्या बात है? आजकल तुम कुछ ज्यादा ही उदास लग रहे हो।"
सिग्नल हरा हो गया, और आगे वाले ट्रक को गियर बदलने में जितना समय लगा, उतनी देर में सफेद स्काईलाइन गाड़ियों ने अपने एग्जॉस्ट से निकलने वाले धुएं का शानदार प्रदर्शन करते हुए तेजी से रफ्तार पकड़ ली।
मैंने उस गोल-मटोल लड़की से कहा, "हमारे पीछे आ रही गाड़ियों पर नज़र रखना। अगर तुम्हें लगे कि कोई हमारा पीछा कर रहा है, तो मुझे बताना।"
लड़की ने सिर हिलाया और पीछे मुड़ गई। "क्या आपको लगता है कि हमें पीछा करना पड़ेगा?"
मैंने कहा, "मुझे कोई अंदाज़ा नहीं है। बस यूं ही पूछ रहा था। बर्गर कैसा रहेगा? जल्दी बन जाएगा।"
"अच्छा।"
मैंने अपनी कार को सामने दिख रहे पहले ड्राइव-इन बर्गर रेस्टोरेंट में रोक दिया। लाल रंग की माइक्रो-मिनीस्कर्ट पहनी एक वेट्रेस ने हमारी खिड़कियों पर ट्रे लगाईं और फिर हमसे ऑर्डर पूछा।
"एक डबल चीज़बर्गर, फ्रेंच फ्राइज़ और एक हॉट चॉकलेट," उस गोल-मटोल लड़की ने कहा।
मैंने कहा, "एक साधारण बर्गर और एक बियर।"
"माफ़ कीजिए, लेकिन हम बीयर नहीं परोसते," वेट्रेस ने कहा।
मैंने खुद को सुधारते हुए कहा, "एक साधारण बर्गर और एक कोक।" मैं क्या सोच रहा था?
खाना आने का इंतज़ार करते-करते ड्राइव-इन में कोई गाड़ी नहीं आई। ज़ाहिर है, अगर कोई सच में हमारा पीछा कर रहा होता, तो वो हमारे साथ एक ही पार्किंग में गाड़ी नहीं लाता। वो कहीं नज़रों से ओझल होकर, चुपचाप बैठा हमारी अगली चाल का इंतज़ार कर रहा होता। मैंने अपना ध्यान आए हुए खाने पर लगाया और बिना सोचे-समझे हैमबर्गर को, जिसमें हाईवे टिकट के बराबर बड़ा सा सलाद पत्ता था, जल्दी-जल्दी निगल लिया। दूसरी तरफ, मिस पिंक अपने चीज़बर्गर के हर टुकड़े का मज़ा ले रही थी, साथ ही बड़े आराम से फ्रेंच फ्राइज़ खा रही थी और हॉट चॉकलेट की चुस्कियाँ ले रही थी।
"क्या आप कुछ फ्रेंच फ्राइज़ खाना चाहेंगे?" उसने मुझसे पूछा।
मैंने कहा, "नहीं, धन्यवाद।"
लड़की ने अपनी थाली में रखा सारा खाना चट कर दिया। उसने गरमा गरम चॉकलेट का आखिरी घूंट बड़े चाव से पिया, अपनी उंगलियों से केचप और सरसों चाटी, फिर नैपकिन से अपने हाथ और मुंह पोंछे।
मैंने कहा, "तो अब, आपके दादाजी के बारे में, हमें शायद पहले उनकी भूमिगत प्रयोगशाला में जाना चाहिए।"
“हां। शायद हमें कुछ सुराग मिल जाए।”
"लेकिन क्या आपको लगता है कि हम इंकलिंग्स से बच पाएंगे? अल्ट्रासोनिक रिपेल सिस्टम तो खराब हो चुका है, है ना?"

“हाँ, ऐसा है, लेकिन आपातकालीन स्थिति के लिए एक छोटा सा उपकरण है। यह बहुत शक्तिशाली नहीं है, लेकिन अगर हम इसे अपने साथ रखें, तो इंकलिंग्स दूर रहेंगे।”
“अच्छा,” मैंने राहत भरी आवाज में कहा।
उन्होंने आगे कहा, "हालांकि, इसकी बैटरी सिर्फ तीस मिनट तक चलती है। उसके बाद इसे दोबारा चार्ज करना पड़ता है।"
“रिचार्ज होने में कितना समय लगता है?”
“पंद्रह मिनट। लेकिन ऑफिस और लैब के बीच आने-जाने में ही हमारे पास समय बच जाएगा।”
ठीक है, कुछ नहीं से तो बेहतर है। हम ड्राइव-इन से निकले और रात भर खुले रहने वाले एक सुपरमार्केट में रुके, जहाँ से हमने बीयर के दो कैन और व्हिस्की की एक बोतल खरीदी। वहाँ पहुँचते ही मैंने बीयर के दोनों कैन और व्हिस्की का एक चौथाई हिस्सा तुरंत पी लिया। बस, अब थोड़ा आराम मिला। मैंने व्हिस्की की बोतल का ढक्कन बंद किया और उसे लड़की को दे दिया, जिसने उसे अपने बैग में रख लिया।
“तुम इतना ज्यादा क्यों पीते हो?” वह जानना चाहती थी।
मैंने कहा, "इससे मुझे बहादुरी का एहसास होता है।"
मुझे भी डर लगता है, लेकिन आप मुझे शराब पीते हुए नहीं देखेंगे।
"तुम्हारा 'डरना' और मेरा 'डरना' दो अलग-अलग बातें हैं।"
“इसका क्या मतलब है?” उसने पूछा।
"जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, आप चीजों से इतनी आसानी से उबर नहीं पाते हैं।"
"और जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, आप थकने भी लगते हैं?"
“हां,” मैंने कहा, “आप थक जाते हैं।”
वह मेरी ओर मुड़ी, अपना हाथ बढ़ाया और मेरे कान के निचले हिस्से को छुआ।
“कोई बात नहीं। चिंता मत करो। मैं तुम्हारे साथ रहूंगी,” उसने कहा।
"धन्यवाद।"
मैंने कार को उसके दादाजी के दफ्तर की इमारत की पार्किंग में खड़ा किया। बैग कंधे पर रखते हुए, मुझे घाव में तेज़ दर्द महसूस हुआ। मैंने मन ही मन सोचा, बारिश की तरह यह दर्द भी गुजर जाएगा, और मैं उस लड़की के पीछे दौड़ पड़ा।
इमारत के प्रवेश द्वार पर एक हट्टा-कट्टा नौजवान चौकीदार खड़ा था, जिसने उससे उसका पहचान पत्र मांगा। उसने एक प्लास्टिक कार्ड निकाला, जिसे चौकीदार ने मेज पर लगे कंप्यूटर स्लॉट में डाल दिया। मॉनिटर पर उसका नाम और कमरा नंबर देखकर उसने स्विच दबाकर दरवाजा खोल दिया।
"यह एक असाधारण इमारत है," लड़की ने मुझे समझाया जब हम उस विशाल, खुले फर्श से गुज़र रहे थे। "इस इमारत में हर किसी के पास कोई न कोई राज़ है जिसे सुरक्षित रखना ज़रूरी है। महत्वपूर्ण शोध या व्यापारिक सौदे, इस तरह की चीज़ें। इसीलिए इतनी सुरक्षा है। वे आपको दरवाज़े पर ही चेक करते हैं, फिर

टीवी कैमरों से आप पर नज़र रखते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आप अपने कमरे तक पहुँच गए हैं। इसलिए अगर कोई हमारा पीछा भी कर रहा होता, तो भी वह अंदर हम तक नहीं पहुँच पाता।"
"क्या उन्हें पता है कि आपके दादाजी ने इमारत के अंदर एक सुरंग खोदी थी?"
“शायद नहीं। दादाजी ने इमारत के निर्माण के समय ही कार्यालय को विशेष रूप से तहखाने से सीधे जोड़ने के लिए डिज़ाइन करवाया था। इसके बारे में केवल इमारत के मालिक और वास्तुकार को ही पता है। निर्माण दल को बताया गया था कि यह एक 'मीडिया वेल' है, एक संचार केंद्र है जिसमें बाद में फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क स्थापित किए जाएंगे। मुझे लगता है कि ब्लूप्रिंट में भी हेराफेरी की गई है।”
मुझे यकीन है कि इसमें काफी खर्च आया होगा।
“मुझे यकीन है कि ऐसा हुआ होगा। लेकिन दादाजी के पास तो बहुत पैसा है,” लड़की ने कहा। “मेरे पास भी। मैं बहुत अमीर हूँ। मैंने अपनी विरासत और जीवन बीमा के पैसे को शेयर बाजार में निवेश करके कई गुना बढ़ा लिया।”
उसने अपनी जेब से चाबी निकाली और लिफ्ट का दरवाजा खोला। वापस उसी झाड़ियों से भरी वैक्यूम-पैक लिफ्ट में।
“शेयर बाजार?”
“हाँ, दादाजी ने मुझे ये सब सिखाया है। उन्होंने मुझे सारी जानकारी में से सही जानकारी चुनना, बाज़ार को समझना, टैक्स बचाना, विदेशों में बैंकों में पैसे भेजना, जैसी चीज़ें सिखाईं। शेयर बाज़ार में बहुत मज़ा आता है। कभी आज़माया है क्या?”
मैंने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं है।" मैंने कभी भी निश्चित अवधि का चक्रवृद्धि ब्याज खाता नहीं खोला था।
लिफ्ट अपनी अपेक्षित असंभव ऊपर या नीचे जाने की गति से चल रही थी।
“दादाजी कहते हैं कि स्कूल इतने अक्षम हैं कि वे उच्च कोटि के छात्र तैयार नहीं कर पाते। आपका क्या विचार है?” उसने पूछा।
“हाँ, शायद ऐसा ही हो,” मैंने जवाब दिया। “मैंने कई साल पढ़ाई की है और मुझे नहीं लगता कि इससे मेरे जीवन में कोई खास फर्क पड़ा है। मैं कोई भाषा नहीं बोल सकता, कोई वाद्य यंत्र नहीं बजा सकता, शेयर बाजार में निवेश नहीं कर सकता, घुड़सवारी नहीं कर सकता।”
“तो तुमने स्कूल क्यों नहीं छोड़ा? तुम जब चाहो तब छोड़ सकते थे, है ना?”
“शायद हाँ,” मैंने कहा। “मैं नौकरी छोड़ सकता था, लेकिन मैं छोड़ना नहीं चाहता था। मुझे लगता है कि ऐसा करने का ख्याल ही मेरे मन में नहीं आया। तुम्हारे विपरीत, मेरा पालन-पोषण बिल्कुल साधारण और सामान्य तरीके से हुआ था। मुझमें कभी भी किसी भी क्षेत्र में प्रथम श्रेणी का बनने की क्षमता नहीं थी।”
“यह गलत है,” उसने कहा। “हर किसी में कोई न कोई ऐसी चीज जरूर होती है जिसमें वह माहिर हो सकता है। बस उसे बाहर निकालने की बात है, है ना? लेकिन स्कूल को यह नहीं पता कि उस प्रतिभा को कैसे बाहर

निकाला जाए। यह प्रतिभा को कुचल देता है। इसीलिए तो ज्यादातर लोग कभी वो नहीं बन पाते जो वे बनना चाहते हैं। वे बस कुचल दिए जाते हैं।”

मैंने कहा, "मेरी तरह।"

“नहीं, तुम अलग हो। मैं बता सकता हूँ कि तुममें कुछ खास है। तुम्हारे चारों ओर भावनात्मक कवच इतना कठोर है कि अंदर सब कुछ अभी भी बरकरार होना चाहिए।”

“भावनात्मक आवरण?”

“हाँ, बिल्कुल,” उसने कहा। “इसीलिए अभी देर नहीं हुई है। ये सब खत्म होने के बाद, क्यों न हम साथ रहने लगें? ऐसा तो है नहीं कि हमें शादी करनी ही पड़ेगी। हम ग्रीस या फिनलैंड या ऐसी ही किसी शांत जगह पर जा सकते हैं और घुड़सवारी करते हुए और गाने गाते हुए समय बिता सकते हैं। हमारे पास खूब पैसा होगा, और इस बीच तुम एक बेहतरीन इंसान के रूप में नया जीवन पा सकते हो।”

“हम्म।” बुरा प्रस्ताव नहीं है।

लिफ्ट रुक गई। वह बाहर निकली और मैं उसके पीछे-पीछे गया। वह तेज़ कदमों से चल रही थी, ठीक वैसे ही जैसे पहली बार मिलने पर चली थी, उसकी ऊंची हीलों की आवाज़ लंबे गलियारे में गूंज रही थी। मेरी आँखों के सामने, उसकी मोहक अदाएं, उसके चमकते सोने के झुमके।

“लेकिन मान लीजिए कि मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लूँ,” मैंने उसे जवाब दिया, “तो आप सब कुछ देंगी और मैं सब कुछ लूँगा। यह मुझे उचित नहीं लगता।”

वह मेरे बगल में चलने के लिए अपनी गति धीमी कर दी।

"तुम्हें मुझे कुछ न कुछ जरूर देना होगा," उसने कहा।

"उदाहरण के लिए?"

उदाहरण के लिए, आपका भावनात्मक आवरण। मैं वास्तव में इसके बारे में जानना चाहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि यह किससे बना है और यह कैसे काम करता है, और इस तरह की बातें।

मैंने कहा, "इसमें उत्साहित होने जैसी कोई बात नहीं है। हर किसी के मन में कमोबेश एक भावनात्मक कवच होता है—अगर आप उसे यही कहना चाहें तो। आप कभी दुनिया में नहीं उतरे हैं। आपको नहीं पता कि आम आदमी का दिमाग कैसे काम करता है।"

“तुम ऐसे बर्ताव करती हो जैसे तुम्हारी कोई कीमत ही न हो!” मोटी लड़की ने हैरानी से कहा। “तुम पैर घिसट सकती हो, है ना?”

“बिल्कुल कर सकता हूँ। लेकिन यह तो बस अभ्यास की बात है। यह अबेकस का उपयोग करने या पियानो बजाने से बहुत अलग नहीं है।”

“बात सिर्फ इतनी ही नहीं है,” उसने कहा। “शुरू में तो सब यही सोचते थे। कि ज़रूरी ट्रेनिंग के साथ कोई भी —यानी जो भी परीक्षा पास कर ले—शफल कर सकता है। दादाजी भी यही सोचते थे। खैर, संयोग से छब्बीस

लोगों की एक ही सर्जरी और ट्रेनिंग हुई, और उन सभी को शफल करने की क्षमता मिल गई। शुरुआत में कोई समस्या नहीं थी—"

"अरे, मुझे तो किसी भी तरह की समस्या के बारे में कुछ पता ही नहीं चला। मैंने तो यही सुना कि सब कुछ योजना के मुताबिक ही हुआ।"

"आधिकारिक तौर पर, हाँ," उसने अधिकारपूर्वक कहा। "लेकिन सच्चाई यह है कि इन छब्बीस में से पच्चीस प्रशिक्षण के डेढ़ साल के भीतर ही मर गए। उनमें से केवल एक ही जीवित है।"

"आपका मतलब क्या है-"

"तुम। तीन साल बाद तुम ही एकमात्र जीवित बचे हो। तुमने अपना जीवन सुचारू रूप से चलाया है, और तुम्हें कोई परेशानी या मानसिक आघात नहीं हुआ है। क्या तुम्हें अब भी लगता है कि तुम इतने साधारण हो? तुम एक बेहद महत्वपूर्ण व्यक्ति हो!"

मैंने अपने दोनों हाथ जेब में डाले और गलियारे में आगे बढ़ता रहा। इस मामले का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा था, जो असहनीय होता जा रहा था।

मैंने लड़की से पूछा, "बाकी लोग क्यों मर गए?"

मुझे नहीं लगता कि उन्हें पता है। मौत का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। मस्तिष्क में कुछ गड़बड़ी थी, कुछ भी स्पष्ट नहीं है।

उन्हें कुछ तो अंदाजा होगा ही।

"दादाजी ने इसे इस तरह समझाया था। आम लोग शायद अपने दिमाग पर विकिरण का छिड़काव सहन नहीं कर पाते, जो चेतना के मूल को उत्तेजित करने के लिए किया जाता है। दिमाग की कोशिकाएं एंटीबॉडी बनाने की कोशिश करती हैं और ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया करती हैं। मुझे यकीन है कि मामला इससे कहीं ज़्यादा जटिल है, लेकिन यह एक सरल व्याख्या है।"

तो फिर मेरे जीवित रहने का कारण क्या है?

"शायद आपके अंदर प्राकृतिक एंटीबॉडीज़ थीं। आपका 'भावनात्मक कवच'। किसी कारणवश आपके मस्तिष्क में पहले से ही एक सुरक्षा कवच मौजूद था जिसने आपको जीवित रहने में मदद की। दादाजी ने इस कवच को अनुकरण करने की कोशिश की, लेकिन यह टिक नहीं पाया।"

मैंने इस बारे में सोचा। "यह एंटीबॉडी कारक या सुरक्षा तंत्र या जो भी कह लें, क्या यह जन्मजात क्षमता है? या यह कुछ ऐसा है जो मैंने अर्जित किया है?"

"कुछ जन्मजात और कुछ सीखी हुई, मुझे याद है। लेकिन इसके अलावा दादाजी कुछ नहीं बताते थे। ज्यादा जानने से मैं खतरे में पड़ सकता था। हालांकि, उनकी परिकल्पना के अनुसार, आपके जैसे प्राकृतिक एंटीबॉडी वाले लोग दस लाख से डेढ़ लाख में से एक होते हैं। और तब भी, उन्हें सचमुच शफलिंग क्षमता दिए बिना, इन लोगों को अलग करना असंभव है।"

"जिसका मतलब यह है कि अगर आपके दादाजी की परिकल्पना सही है, तो मेरा उन छब्बीस लोगों में शामिल होना एक अविश्वसनीय संयोग था।"
“इसीलिए आप एक नमूने के रूप में इतने मूल्यवान हैं। इसीलिए आप ही कुंजी हैं।”
“तुम्हारे दादाजी ने मेरे लिए क्या योजना बनाई थी? उन्होंने मुझे जो डेटा शफल करने को दिया था, वह यूनिकॉर्न की खोपड़ी—वह सब क्या था?”
"अगर मुझे यह पता होता, तो मैं तुम्हें यहीं और अभी बचा सकती थी," लड़की ने कहा।
मैं और दुनिया।
* * *
दफ्तर में तोड़फोड़ हुई थी, मेरे अपार्टमेंट जितनी बुरी तरह तो नहीं, लेकिन किसी ने पूरे दफ्तर को तहस-नहस कर दिया था। कागज़ इधर-उधर बिखरे पड़े थे, डेस्क उलटी पड़ी थी, तिजोरी टूटी हुई थी, अलमारियों के दराज कमरे में इधर-उधर पड़े थे, प्रोफेसर और लड़की के कपड़े उनके लॉकरों से निकालकर फटे हुए सोफे पर सलाद की तरह बिखेर दिए गए थे। लड़की के कपड़े, निश्चित रूप से, सारे गुलाबी थे। हल्के गुलाबी से लेकर गहरे फ़्यूशिया तक, गुलाबी रंग के हर शेड का मिश्रण था।
“यह तो अक्षम्य है!” वह चिल्लाई। “वे नीचे से ही आए होंगे।”
“इंकलिंग्स?”
“नहीं, वे नहीं। इंकलिंग्स इतनी ऊपर ज़मीन पर नहीं आ सकते। और अगर वे आ भी जाते, तो उनकी गंध से पता चल जाता।”
“कैसी गंध?”
"एक अजीब सी, दलदली, भयानक बदबू। इंकलिंग्स ने ऐसा नहीं किया। मुझे लगता है कि उन्होंने ही तुम्हारे अपार्टमेंट में तोड़फोड़ की है।"
मैंने कमरे में चारों ओर देखा। उलटी हुई मेज के सामने, बिखरे हुए पेपरक्लिप्स से भरा एक पूरा डिब्बा फ्लोरोसेंट लाइट में चमक रहा था। उनमें कुछ तो था, मुझे नहीं पता क्या। मैंने फर्श से एक क्लिप उठाई और अपनी जेब में रख ली।
मैंने पूछा, "क्या यहाँ कोई महत्वपूर्ण वस्तु रखी गई थी?"
“नहीं,” उसने कहा। “यहाँ लगभग सब कुछ बेकार है। बस खाता बही, रसीदें और सामान्य शोध सामग्री। कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे बदला न जा सके।”
“इंकलिंग-भगाने वाले उपकरण का क्या हुआ? क्या वह अभी भी सही सलामत है?”
उसने लॉकरों के सामने पड़े मलबे में छानबीन की, एक टॉर्च, रेडियो-कैसेट प्लेयर, अलार्म घड़ी और खांसी की गोलियों का एक डिब्बा एक तरफ फेंक दिया, ताकि उसे एक छोटा सा काला डिब्बा मिल सके जिसमें वीयू-मीटर जैसा कुछ लगा हुआ था, जिसे उसने कई बार जांचा।

“कोई बात नहीं, यह ठीक से काम करता है। शायद उन्हें लगा होगा कि यह एक बेकार उपकरण है। हमारे लिए सौभाग्य की बात है, क्योंकि इसका तंत्र इतना सरल है कि एक हल्की सी चोट से भी यह टूट सकता था।”
फिर गोल-मटोल लड़की कमरे के एक कोने में गई और बिजली के आउटलेट का ढक्कन खोलने के लिए नीचे झुक गई। अंदर लगे एक छोटे से स्विच को दबाकर वह खड़ी हुई और अपनी हथेलियों को बगल की दीवार के एक हिस्से पर हल्के से दबाया, जिससे टेलीफोन डायरेक्टरी के आकार का एक पैनल खुल गया और उसके अंदर एक तिजोरी दिखाई दी।
“बुरा नहीं है, है ना? शर्त लगाओ कोई यहाँ देखने के बारे में सोचेगा भी नहीं, है ना?” उसने खुद को शाबाशी दी। फिर उसने कॉम्बिनेशन डायल किया और तिजोरी खोल दी।
दर्द को दबाते हुए, मैंने डेस्क को सीधा करने और तिजोरी का सामान निकालने में उसकी मदद की। तिजोरी में रबर बैंड से बंधी बैंक की किताबों का एक मोटा बंडल, स्टॉक सर्टिफिकेटों का एक ढेर, किसी ठोस चीज़ से भरा एक कपड़े का थैला, एक काली चमड़े की नोटबुक और एक भूरा लिफाफा था। उसने लिफाफे का सामान बाहर निकाला: एक सोने की अंगूठी और एक पुरानी, फीकी पड़ चुकी ओमेगा घड़ी, जिसका शीशा टूटा हुआ था।
“मेरे पिता की एक यादगार निशानी,” लड़की ने कहा। “यह अंगूठी मेरी माँ की थी। बाकी सब जल गया।”
उसने अंगूठी और घड़ी को वापस लिफाफे में रख दिया। फिर, कपड़े के थैले से उसने एक पुरानी कमीज़ में लिपटी हुई एक वस्तु निकाली; खोलने पर पता चला कि वह एक छोटी स्वचालित पिस्तौल थी। वह खिलौने जैसी बिल्कुल नहीं लग रही थी। यह एक असली बंदूक थी जिससे असली गोलियां चलती थीं। मैं कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन फिल्मों को देखने के अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि यह या तो ब्राउनिंग थी या बेरेटा। बंदूक के साथ एक अतिरिक्त कारतूस और गोलियों का एक डिब्बा भी था।
"मुझे लगता है कि तुम सब कैलकुटेक लोग अच्छे निशानेबाज हो," लड़की ने कहा।
“मजाक कर रहे हो क्या? मैंने तो कभी बंदूक पकड़ी भी नहीं है।”
“सच में? शूटिंग भी एक ऐसी चीज है जो मैंने स्कूल न जाकर सीखी है। मुझे यह एक खेल के रूप में पसंद है। खैर, चूंकि आपको बंदूक चलाने का कोई अनुभव नहीं है, इसलिए मैं इसे अपने पास ही रखूंगा।”
“बिल्कुल। बस गलती से मुझे गोली मत मार देना। मुझे नहीं लगता कि मैं अपने शरीर को और नुकसान झेल पाऊंगा।”
“चिंता मत करो। मैं बहुत सावधान रहती हूँ,” उसने कहा और ऑटोमैटिक बंदूक को अपनी जेब में रख लिया।
फिर उसने काले चमड़े की नोटबुक का बीच वाला पन्ना खोला और रोशनी में उसका अध्ययन किया। पूरा पन्ना अस्पष्ट संख्याओं और अक्षरों की एक जटिल लिपि में लिखा हुआ था।

“ये दादाजी की नोटबुक है,” उसने समझाया। “ये एक ऐसे कोड में लिखी है जिसे सिर्फ़ वो और मैं ही जानते हैं। योजनाएँ, दिन की घटनाएँ, सब कुछ वो इसमें लिखते हैं। तो फिर—ये क्या है?—28 सितंबर को, डेटा को साफ करने का काम पूरा करने वालों में तुम्हारा नाम दर्ज है।”

"यह सही है।"

“वहाँ (1) लिखा है। शायद यह पहला कदम है। फिर, वह आपसे 29 वें या 30 वें दिन फेरबदल पूरा करवाता है। या यह गलत है?”

"बिल्कुल नहीं।"

“यह (2) है। दूसरा चरण। इसके बाद, ... उह, चलिए देखते हैं ... दोपहर, दूसरा, जो (3) है। ‘कार्यक्रम रद्द करें’।”

“मुझे 2 तारीख को दोपहर में तुम्हारे दादाजी से मिलना था। मेरा अनुमान है कि वह मेरे अंदर स्थापित किसी भी प्रोग्राम को निष्क्रिय करने वाले थे, ताकि दुनिया खत्म न हो जाए। लेकिन बहुत कुछ बदल गया है। और उनके साथ कुछ हुआ है। उन्हें कहीं ले जाया गया है।”

“ज़रा रुकिए,” उसने नोटबुक पढ़ते हुए कहा। “कोड काफी जटिल है।”

जब वह पढ़ रही थी, मैंने उसका बैग व्यवस्थित किया, जिसमें उसके गुलाबी जॉगिंग शूज़ भी शामिल थे। रेनकोट और बूट इधर-उधर बिखरे हुए थे, लेकिन शुक्र है कि उनमें कोई कट-फट या खरोंच नहीं थी। बारिश से बचाव के लिए रेनकोट के बिना झरने के नीचे जाना मतलब पूरी तरह भीग जाना और ठंड से कांप जाना होता; और इससे मेरे ज़ख्म को भी बहुत आराम मिलता। मेरी घड़ी में आधी रात से कुछ पहले का समय था।

“नोटबुक जटिल गणनाओं से भरी हुई है। विद्युत आवेश और क्षय दरें, प्रतिरोध कारक और अंतर, इस तरह की चीजें। मुझे इनमें से कुछ भी समझ नहीं आता।”

“इसे छोड़ो। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है,” मैंने कहा। “बस जो समझ में आ रहा है, उसे समझने की कोशिश करो।”

"इसे समझने की कोई जरूरत नहीं है।"

"क्यों नहीं?"

उसने मुझे नोटबुक पकड़ा दी और उस जगह की ओर इशारा किया।

कोई कोड नहीं था, केवल एक बड़ी सी लिखावट थी:

“क्या आपको लगता है कि यही अंतिम तिथि है?” उसने पूछा।

या तो ऐसा है, या फिर (4) है। मतलब, अगर प्रोग्राम (3) पर रद्द हो जाता है, तो X नहीं होगा। लेकिन अगर किसी कारण से यह रद्द नहीं होता है और प्रोग्राम चलता रहता है, तो मुझे लगता है कि हम X तक पहुँच जाएँगे।

"तो इसका मतलब है कि हमें 2 तारीख की दोपहर तक दादाजी के पास पहुंचना होगा।"

"अगर मेरा अनुमान सही है।"

“कितना समय बचा है? बिग बैंग से पहले...”

“छत्तीस घंटे,” मैंने कहा। मुझे घड़ी देखने की ज़रूरत नहीं थी। पृथ्वी को डेढ़ चक्कर लगाने में लगने वाला समय। सुबह के दो अख़बार और शाम का एक अख़बार वितरित होगा। अलार्म घड़ी दो बार बजेगी, पुरुष दो बार दाढ़ी बनाएंगे। भाग्यशाली लोग दो या तीन बार यौन संबंध बनाएंगे। छत्तीस घंटे, बस। सत्तर साल की जीवन प्रत्याशा में से एक घंटा, सत्रह हज़ार तैंतीस। फिर, उन छत्तीस घंटों के बाद, दुनिया का अंत हो जाना चाहिए था।

“अब हम क्या करें?” लड़की ने पूछा।

मैंने फर्श पर पड़ी प्राथमिक चिकित्सा किट में कुछ दर्द निवारक गोलियां ढूंढीं और पानी की बोतल से एक घूंट पानी के साथ उन्हें निगल लिया। फिर मैंने अपना बैग कंधों पर उठा लिया।

मैंने कहा, "अब भूमिगत होने के अलावा कोई चारा नहीं है।"

20

जानवरों की मृत्यु

इन जानवरों में से कई पहले ही मर चुके हैं। बर्फ से ढकी पहली सुबह, कुछ बूढ़े जानवर बर्फ में दबकर मर गए, उनके बर्फ से सफेद पड़े शरीर दो इंच बर्फ के नीचे दबे हुए थे। सुबह का सूरज बादलों को चीरता हुआ आया और जमी हुई ज़मीन को रोशन कर दिया, एक हज़ार से ज़्यादा जानवरों की बर्फीली साँसें हवा में सफ़ेद रंग बिखेर रही थीं।

भोर से पहले मेरी नींद खुली तो देखा कि पूरा शहर बर्फ की चादर से ढका हुआ है। धुंधली रोशनी में यह एक अद्भुत दृश्य था। सफेद बर्फ से ढकी दुनिया के ऊपर क्लॉकटावर काला आसमान छू रहा था, नीचे नदी की काली धारा बह रही थी। मैंने अपना कोट और दस्ताने पहने और खाली गलियों में उतर गया। बर्फ पर अभी तक किसी के पैरों के निशान नहीं थे। जब मैंने बर्फ को हाथों में उठाया तो वह बिखर गई। नदी के किनारे जमे हुए थे, उन पर बर्फ की हल्की परत जमी हुई थी।

न हवा चल रही है, न पक्षी चहचहा रहे हैं, कस्बे में कोई हलचल नहीं है। मुझे अपने पैरों के नीचे बर्फ के कुचलने की आवाज के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है।

मैं द्वार की ओर चलता हूँ और देखता हूँ कि द्वारपाल छाया मैदान के पास खड़ा है। द्वारपाल उस गाड़ी के नीचे है जिसे उसने और मेरी परछाई ने मिलकर ठीक किया था। वह धुरों में चिकनाई लगा रहा है। गाड़ी तिलहन के तेल को रखने के लिए इस्तेमाल होने वाले मिट्टी के बर्तनों से भरी है, जो सभी रस्सियों से किनारे पर बंधे हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि द्वारपाल को इतने तेल की क्या आवश्यकता होगी।

चौकीदार गाड़ी के नीचे से बाहर निकलता है और मेरा अभिवादन करने के लिए अपना हाथ उठाता है। वह अच्छे मूड में लग रहा है।

“जल्दी उठ गए, है ना? कौन सी हवा तुम्हें इधर खींच लाई?”

मैंने कहा, "मैं बर्फ देखने आया हूँ। पहाड़ी से बर्फ बहुत खूबसूरत दिख रही थी।"

द्वारपाल ने उपहास उड़ाया और हमेशा की तरह मुझे गले लगा लिया। उसने दस्ताने नहीं पहने थे।

“तुम बड़े अजीब हो। यहाँ तो सर्दी में सिर्फ बर्फ ही बर्फ होती है, और तुम सिर्फ उसे देखने के लिए अपनी पहाड़ी से नीचे आ जाते हो।”

फिर वह एक ज़ोरदार डकार लेता है, भाप का एक बड़ा बादल उठता है, और द्वार की ओर देखता है। "लेकिन मैं कहूंगा, तुम सही समय पर आए हो," वह मुस्कुराता है। "क्या तुम वॉचटावर पर चढ़ना चाहते हो? वहाँ से देखने लायक नज़ारा है। सर्दियों का एक शानदार अनुभव, हा हा। थोड़ी देर में मैं हॉर्न बजाऊंगा, इसलिए नज़रें खुली रखना।"

"एक दावत?"
"आप देखेंगे।"
मैं द्वार के बगल में स्थित निगरानी मीनार पर चढ़ता हूँ, यह जाने बिना कि आगे क्या होगा। मैं दीवार के उस पार की दुनिया को देखता हूँ। सेब के बाग में बर्फ़ गहरी जमी है, मानो किसी तूफ़ानी बादल ने विशेष रूप से उसे ही निशाना बनाया हो। उत्तरी और पूर्वी पहाड़ियाँ बर्फ़ की सफ़ेद चादर से ढकी हैं, जिन पर कुछ गहरे रंग की चट्टानें उनकी सुंदरता को धूमिल कर रही हैं।
वॉचटावर के ठीक नीचे जानवर सो रहे हैं, जैसा कि वे आमतौर पर इस समय सोते हैं। पैर मोड़े हुए, वे ज़मीन पर दुबके हुए हैं, उनके सींग आगे की ओर निकले हुए हैं, हर कोई नींद की तलाश में है। वे सभी शांति से उस मोटी बर्फ की चादर से बेखबर हैं जो उन पर गिरी है।
बादल छंट जाते हैं और सूरज धरती को रोशन करने लगता है। सूरज की किरणें धरती पर तिरछी पड़ती हैं। मेरी आँखें तेज रोशनी में उस वादे के मुताबिक "अतिरिक्त आनंद" को देखने के लिए तरसती हैं।
इसी क्षण, द्वारपाल द्वार खोलता है और तुरही बजाता है। एक लंबी ध्वनि, फिर तीन छोटी ध्वनियाँ। पहली ध्वनि सुनते ही जानवर जाग उठते हैं और पुकार की दिशा में अपना सिर उठाते हैं। सफेद साँसें हवा में नई ऊर्जा भर देती हैं, जो नए दिन की शुरुआत का संकेत देती हैं।
तुरही की आखिरी ध्वनि मंद पड़ जाती है, और जानवर अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। वे अपने सींग आकाश की ओर उठाते हैं, फिर बर्फ को ऐसे झाड़ देते हैं मानो उन्होंने पहले कभी बर्फ देखी ही न हो। अंत में वे द्वार की ओर चल पड़ते हैं।
जैसे ही जानवर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, कुछ अपना सिर नीचे झुका लेते हैं, कुछ चुपचाप अपने खुर पटकते हैं। उनके अंदर चले जाने के बाद ही मुझे समझ आता है कि द्वारपाल मुझे क्या दिखाना चाहता था। कुछ जानवर नींद की मुद्रा में ही जम कर मर गए हैं। फिर भी वे मरे हुए नहीं, बल्कि गहरी ध्यान मुद्रा में प्रतीत होते हैं। उनसे साँस नहीं निकल रही है। उनके शरीर गतिहीन हैं, उनकी चेतना अंधकार में डूबी हुई है। बाकी सभी जानवरों के द्वार से गुजर जाने के बाद, ये मृत जानवर धरती पर उभरे हुए पिंडों की तरह रह जाते हैं। उनके सींग अंतरिक्ष में ऊपर की ओर उठे हुए हैं, मानो जीवित हों।
मैं सुबह के सूरज के उगने और दीवार की छाया के हटने के साथ ही उनकी शांत आकृतियों को निहारता हूँ, सूरज की चमक से ज़मीन से बर्फ पिघल रही है। क्या सुबह का सूरज उनकी मृत्यु को भी पिघला देगा? क्या किसी क्षण ये दिखने में निर्जीव आकृतियाँ उठेंगी और अपनी रोज़मर्रा की सुबह की दिनचर्या में लग जाएँगी?
वे उठते नहीं हैं। सूरज की किरणें उनकी गीली खाल पर चमकती हैं। काले चश्मे के पीछे मेरी आँखें दुखने लगती हैं।
वॉचटावर से उतरकर, मैं नदी पार करता हूँ और पश्चिमी पहाड़ी पर स्थित अपने क्वार्टर में लौट आता हूँ। मुझे पता चलता है कि सुबह की धूप ने मेरी आँखों को बहुत नुकसान पहुँचाया है। जब मैं आँखें बंद करता हूँ, तो आँसू रुकते नहीं। मुझे हर बूँद की आवाज़ अपनी गोद में गिरती सुनाई देती है। मैं कमरे में अँधेरा कर देता हूँ

और घंटों तक उन विचित्र आकृतियों को देखता रहता हूँ जो एक ऐसे स्थान में तैरती और धुंधली होती जा रही हैं जहाँ कोई परिप्रेक्ष्य नहीं है।

दस बजे कर्नल कॉफ़ी लेकर मेरे दरवाजे पर दस्तक देते हैं और मुझे बिस्तर पर औंधे मुंह लेटा हुआ, ठंडे तौलिए से अपनी आँखें मलते हुए पाते हैं। मेरे सिर के पिछले हिस्से में दर्द है, लेकिन कम से कम आँसू तो थम चुके हैं।

"तुम्हें क्या हुआ है?" वह पूछता है। "सुबह की धूप तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा तेज़ होती है। खासकर बर्फीली सुबहों में। तुम जानती थी कि स्वप्न-पाठक तेज़ रोशनी बर्दाश्त नहीं कर सकते। फिर तुम बाहर क्यों जाना चाहती थी?"

मैंने कहा, "मैं उन जानवरों को देखने गया था। बहुत से मर गए। आठ-नौ। नहीं, इससे ज्यादा नहीं।"

और हर बर्फबारी के साथ और भी कई लोग मरेंगे।

"ये लोग इतनी आसानी से क्यों मर जाते हैं?" मैंने बूढ़े अधिकारी से पूछा, और उनकी ओर देखने के लिए अपने चेहरे से तौलिया हटा दिया।

"वे कमजोर हैं। ठंड और भूख से। यह हमेशा से ऐसा ही रहा है।"

क्या वे कभी विलुप्त नहीं होते?

बूढ़ा अधिकारी अपना सिर हिलाता है। "ये जीव यहाँ कई सहस्राब्दियों से रह रहे हैं, और आगे भी रहते रहेंगे। सर्दियों में कई मर जाएँगे, लेकिन वसंत में बचे हुए जीव बच्चे पैदा करेंगे। नया जीवन पुराने को पीछे धकेल देता है। इस कस्बे में रहने वाले जानवरों की संख्या सीमित है।"

"वे कहीं और क्यों नहीं चले जाते? जंगल में पेड़ हैं। अगर वे दक्षिण की ओर चले गए, तो वे बर्फ से बच जाएंगे। उन्हें यहाँ रहने की क्या ज़रूरत है?"

"क्यों, मैं आपको नहीं बता सकता," वह कहता है। "लेकिन ये जानवर शहर छोड़कर नहीं जा सकते। वे शहर के ही हैं; वे शहर के गुलाम हैं। ठीक वैसे ही जैसे आप और मैं हैं। अपनी सहज प्रवृत्ति से वे यह जानते हैं।"

"लाशों का क्या होता है?"

"उन्हें जला दिया गया है," कर्नल ने अपने सूखे हाथों को कॉफी के कप से सेंकते हुए जवाब दिया। "अगले कुछ हफ्तों तक, यही द्वारपाल का मुख्य काम होगा। पहले वह उनके सिर काटता है, उनके दिमाग और आंखें निकालता है, फिर उन्हें तब तक उबालता है जब तक कि खोपड़ी साफ न हो जाए। बचे हुए अवशेषों पर तेल डालकर आग लगा दी जाती है।"

"तो फिर पुराने सपनों को पुस्तकालय के लिए उन खोपड़ियों में डाल दिया जाता है, क्या यही बात है?" मैंने कर्नल से पूछा। "क्यों?"

बूढ़ा अधिकारी कोई जवाब नहीं देता। मुझे बस फर्श की चरमराहट सुनाई देती है, जैसे ही वह मुझसे दूर खिड़की की ओर चला जाता है।

“जब आप पुराने सपनों का मतलब समझेंगे, तब आपको पता चलेगा,” वे कहते हैं। “मैं आपको नहीं बता सकता। आप ही स्वप्न-पाठक हैं। आपको इसका उत्तर स्वयं खोजना होगा।”
मैंने तौलिए से आंसू पोंछे, फिर आंखें खोलीं। कर्नल खिड़की के पास धुंधले से खड़े थे।
“सर्दियों के दौरान कई बातें आपके सामने स्पष्ट हो जाएंगी,” वह आगे कहते हैं। “चाहे आपको जो पता चले वह पसंद आए या न आए, सब कुछ होकर रहेगा। बर्फ गिरेगी, जानवर मरेंगे। इसे कोई नहीं रोक सकता। दोपहर में जलते हुए जानवरों से धूसर धुआं उठेगा। पूरी सर्दी, हर दिन। सफेद बर्फ और धूसर धुआं।”

21

कंगन, बेन जॉनसन, शैतान

बियॉन्ड द क्लोसेट ने पहले की तरह ही उसी अंधेरे आंतरिक कक्ष को खोल दिया, लेकिन अब जब मुझे इंकलिंग्स के बारे में पता चल गया था, तो यह एक गहरा, रोंगटे खड़े कर देने वाला हॉरर शो जैसा लग रहा था। वह मुझसे पहले सीढ़ी से नीचे उतर गई। अपने रेनकोट की बड़ी जेब में इंकलिंग-रोधी यंत्र रखे और शरीर पर तिरछी टॉर्च लटकाए, वह तेज़ी से अकेले ही नीचे उतर गई। फिर, टॉर्च जेब में डाले, मैं भी सीढ़ी के फिसलन भरे पायदानों से नीचे उतरने लगा। जितनी ऊंचाई से नीचे उतरना मुझे याद था, उससे कहीं ज़्यादा गहरी खाई थी। नीचे उतरते हुए, मैं स्काईलाइन कार में बैठे उस युवा जोड़े के बारे में सोचता रहा, जिनके कानों में स्टीरियो पर ड्यूरान ड्यूरान का संगीत बज रहा था। वे हर चीज़ से बेखबर थे।

काश मैं थोड़ा और बेखबर होता। मैंने खुद को ड्राइवर की सीट पर बैठा पाया, मेरे बगल में एक महिला बैठी थी, और हम देर रात सड़कों पर एक साधारण पॉप धुन पर गाड़ी चला रहे थे। क्या उस महिला ने सेक्स के दौरान अपने कंगन उतार दिए थे? अच्छा हुआ अगर उसने नहीं उतारे। भले ही वह नग्न थी, उन दो कंगनों का वहाँ होना ज़रूरी था।

शायद उसने गहने उतार दिए थे। महिलाएं नहाने से पहले गहने उतार देती हैं। इसका मतलब था कि नहाने से पहले सेक्स करना। या फिर उसे कंगन पहने रहने के लिए मनाना। अब, इनमें से कौन सा विकल्प बेहतर था? खैर, मैं उसके साथ बिस्तर पर हूँ, उसके कंगन पहने हुए। उसका चेहरा भावहीन है, इसलिए मैं रोशनी धीमी कर देता हूँ। उसके रेशमी अंतर्वस्त्र उतर जाते हैं। उसके शरीर पर सिर्फ कंगन ही हैं। वे हल्के से चमकते हैं, चादर पर एक मधुर धीमी झंकार सुनाई देती है। मुझे उत्तेजना हो रही है।

सीढ़ी से आधे रास्ते नीचे उतरते हुए मुझे यही बात समझ आई। वाह! अब क्यों? जब मुझे इरेक्शन की ज़रूरत थी तब क्यों नहीं हुआ? और मैं इन दो घटिया कंगन को लेकर इतना उत्तेजित क्यों हो रहा था? खासकर इस रेनकोट के नीचे, जब दुनिया खत्म होने वाली है।

जब मैं नीचे पहुंचा तो वह चारों ओर अपनी रोशनी बिखेर रही थी। “यहाँ कुछ संकेत हैं। सुनो,” उसने कहा। “ये आवाज़ें।”

“आवाजें?”

“पंख फड़फड़ा रहे हैं। ध्यान से सुनो। तुम उन्हें महसूस कर सकते हो।”

मैंने बहुत ध्यान से सुना, लेकिन मुझे ऐसा कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

“एक बार जब आपको पता चल जाए कि क्या सुनना है, तो आप उनकी आवाज़ भी पहचान सकते हैं। यह वास्तव में बोलना नहीं है; यह ध्वनि तरंगों के ज़्यादा करीब है। वे चमगादड़ों की तरह हैं। मनुष्य उनकी आवाज़ की सीमा का केवल एक हिस्सा ही सुन सकते हैं।”
“तो फिर सेमिओटेक लोगों ने उनसे संपर्क कैसे किया? अगर वे मौखिक रूप से संवाद नहीं कर सकते थे?”
“अनुवाद उपकरण बनाना इतना मुश्किल नहीं है। दादाजी आसानी से बना सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा न करने का फैसला किया।”
"क्यों नहीं?"
क्योंकि वह उनसे बात नहीं करना चाहता था। वे घिनौने जीव हैं और उनकी भाषा भी घिनौनी है। वे जो कुछ भी खाते-पीते हैं, वह लगभग सड़ा हुआ ही होता है।
“क्या वे कोई ताजा चीज नहीं खाते?”
“नहीं। अगर वे तुम्हें पकड़ लेते हैं, तो वे तुम्हें कई दिनों तक पानी में डुबो कर रखते हैं। जब तुम्हारा शरीर सड़ने लगता है, तो वे उसे खा जाते हैं।”
बहुत सुंदर। मैं वापस लौटने को तैयार थी, लेकिन हम आगे बढ़ते रहे। उसे रास्ते की हर एक सीढ़ी का पता था और वह तेज़ी से आगे निकल गई। जब मैंने पीछे से उस पर अपनी लाइट डाली, तो उसकी सोने की बालियां चमक उठीं।
मैंने पूछा, "मुझे बताओ, क्या तुम नहाते समय अपनी बालियां उतार देती हो?"
“मैं इन्हें पहने रहती हूँ,” उसने धीमी गति से जवाब दिया। “सिर्फ़ मेरी बालियाँ। सेक्सी?”
“शायद।” मुझे इस विषय को उठाने की क्या ज़रूरत थी?
“आपको और क्या चीज़ें सेक्सी लगती हैं? जैसा कि मैंने कहा, मुझे ज़्यादा अनुभव नहीं है। ये सब बातें कोई सिखाता नहीं है।”
“कोई नहीं बताएगा। यह तो आपको खुद ही पता लगाना होगा,” मैंने कहा।
मैंने जानबूझकर अपने दिमाग से सेक्स से जुड़ी सभी छवियों को मिटाने का प्रयास किया।
“उम्म,” मैंने विषय बदलते हुए कहा, “आप कहते हैं कि आपका यह उपकरण अल्ट्रासोनिक तरंगें उत्सर्जित करता है जो इंकलिंग्स को भगा देती हैं?”
जब तक डिवाइस सिग्नल भेज रहा है, वे हमारे पंद्रह मीटर के दायरे में नहीं आएंगे। इसलिए आपको मेरे पास ही रहना चाहिए। नहीं तो वे आपको पकड़ लेंगे और नाश्ते के लिए अचार बना देंगे। आपकी हालत में, आपका पेट सबसे पहले सड़ेगा। और उनके दांत और पंजे रेज़र की तरह तेज़ हैं।
मैं उसके ठीक पीछे जाकर बैठ गया।
“क्या तुम्हारे पेट के घाव में अभी भी दर्द हो रहा है?” उसने पूछा।
मैंने जवाब दिया, "सिर्फ़ हिलने-डुलने पर ही दर्द होता है। लेकिन दर्द निवारक दवाओं की वजह से इतना बुरा नहीं लगता।"

"अगर हमें दादाजी मिल गए, तो वे दर्द दूर कर सकेंगे।"
“तुम्हारे दादाजी? वो कैसे मदद करेंगे?”
“सीधी सी बात है। उसने मेरे लिए कई बार ऐसा किया है। जैसे जब मुझे भयानक सिरदर्द होता है, तो वह दर्द के प्रति मेरी जागरूकता को खत्म करने के लिए एक आवेग का उपयोग करता है। वैसे, दर्द शरीर से मिलने वाला एक महत्वपूर्ण संकेत है, इसलिए इसे बार-बार नहीं करना चाहिए। इस मामले में, यह एक आपातकालीन स्थिति है। मुझे यकीन है कि वह मेरी मदद करेगा।”
मैंने कहा, "धन्यवाद।"
“मुझे धन्यवाद मत दो। दादाजी को धन्यवाद दो। अगर हम उन्हें ढूंढ लेते हैं,” उसने याद दिलाया।
अपनी तेज़ रोशनी को बाएँ और दाएँ घुमाते हुए, वह भूमिगत नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर बढ़ती रही। चट्टानों के बीच से नमी रिसकर छोटी-छोटी धाराओं में बह रही थी, जो हमारे पैरों के पास से गुज़र रही थी। जहाँ-जहाँ से यह भूमिगत जल बह रहा था, वहाँ काई की चिकनी परतें बिछी हुई थीं। काई असामान्य रूप से हरी दिखाई दे रही थी, जो प्रकाश संश्लेषण की पहुँच से परे इतनी गहराई में होना समझ से परे था।
"क्या आपको लगता है कि इंकलिंग्स को पता है कि हम अब यहाँ नीचे घूम रहे हैं?"
“बेशक, वे सुनते हैं,” उसने भावहीनता से कहा। “यह उनकी दुनिया है। वे चारों ओर हैं, हमें देख रहे हैं। जब से हम यहाँ आए हैं, मुझे लगातार आवाज़ें सुनाई दे रही हैं।”
मैंने अपनी टॉर्च की रोशनी बगल में घुमाई, लेकिन मुझे केवल चट्टानें और काई ही दिखाई दीं।
“वे दरारों और छेदों में छिपे हैं, जहाँ रोशनी नहीं पहुँचती,” उसने कहा। “या फिर वे चुपके से हमारे पीछे आ रहे हैं।”
मैंने पूछा, "डिवाइस को चालू किए हुए कितने मिनट हो गए हैं?"
“दस मिनट,” उसने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। “दस मिनट, बारह सेकंड। झरने तक पहुँचने में अभी पाँच मिनट और हैं। हम ठीक चल रहे हैं।”
ठीक पाँच मिनट बाद हम झरने पर पहुँचे। झरने की गर्जना को एक बार फिर चुनिंदा तरीके से दबा दिया गया था; जाहिर तौर पर ध्वनि-निवारण उपकरण अभी भी काम कर रहा था।
“अजीब बात है,” उसने खामोश झरने के नीचे झुकते हुए कहा। “इस आवाज़ के गायब होने का मतलब है कि प्रयोगशाला में कोई घुसपैठ नहीं हुई। अगर इंकलिंग्स ने हमला किया होता, तो वे पूरी जगह तहस-नहस कर देते। वे इस प्रयोगशाला से नफरत करते हैं।”
वाकई, प्रयोगशाला का दरवाजा अभी भी बंद था। उसने इलेक्ट्रॉनिक चाबी डाली; दरवाजा खुल गया। प्रयोगशाला का भीतरी भाग अंधेरा और ठंडा था और उसमें कॉफी की महक आ रही थी। उसने घबराकर हमारे पीछे दरवाजा बंद किया, ताला जांचा और फिर बत्ती जलाई।
यह सच था कि प्रयोगशाला में भी ऊपर के कार्यालय में हुई उथल-पुथल जैसी ही स्थिति थी: चारों ओर कागज़ बिखरे थे, फर्नीचर उलटा पड़ा था, कप और प्लेटें टूटी पड़ी थीं, और कालीन कॉफी के बचे हुए दानों से भरी

बाल्टी की अमूर्त अभिव्यंजना जैसी आकृति से सजी थी। लेकिन इस विनाश में एक खास पैटर्न था। विध्वंस दल ने स्पष्ट रूप से यह तय कर लिया था कि क्या नष्ट करना है और क्या नहीं। नष्ट की जाने वाली चीज़ों पर कोई रहम नहीं दिखाया गया, लेकिन कंप्यूटर, दूरसंचार कंसोल, ध्वनि-निवारण उपकरण और बिजली जनरेटर को छुआ तक नहीं गया था।

अगला कमरा भी वैसा ही था। पूरी तरह अस्त-व्यस्त, लेकिन तोड़फोड़ सुनियोजित ढंग से की गई थी। खोपड़ियों से भरी अलमारियाँ बिल्कुल सुरक्षित थीं, प्रयोगों के लिए आवश्यक उपकरणों को सावधानीपूर्वक अलग रखा गया था। कम महत्वपूर्ण, सस्ते उपकरण और आसानी से बदले जा सकने वाले शोध सामग्री को चकनाचूर कर दिया गया था।

लड़की तिजोरी के अंदर रखी चीज़ें देखने गई। तिजोरी का दरवाज़ा बंद नहीं था। उसने मुट्ठी भर सफेद राख निकाली।

उन्होंने कहा, "आपातकालीन ऑटो-इंसिनरेटर ने अपना काम कर दिया। उन्हें कोई कागजात नहीं मिले।"

मैंने पूछा, "तुम्हें क्या लगता है कि यह किसने किया?"

“सबसे पहले तो इंसान। सेमियोटेक या जो भी हों, उन्हें यहाँ आने के लिए इंकलिंग की मदद मिली होगी, लेकिन अंदर सिर्फ वही आए। उन्होंने तो दरवाजा भी बंद कर दिया ताकि इंकलिंग अपना काम पूरा न कर सकें।”

"ऐसा नहीं लगता कि उन्होंने कोई कीमती सामान चुराया है।"

"नहीं।"

“लेकिन उन्हें तुम्हारे दादाजी मिल गए, जो सबसे कीमती संपत्ति थे,” मैंने कहा। “अब तो मेरे पास वही बचा है जो उन्होंने मेरे अंदर बोया था। अब तो मैं सचमुच मुसीबत में फंस गई हूँ।”

“इतनी जल्दी नहीं,” गोल-मटोल लड़की ने कहा। “दादाजी का अपहरण बिल्कुल नहीं हुआ था। यहाँ से एक गुप्त रास्ता है। मुझे पूरा यकीन है कि वह दूसरे इंकलिंग-रोधी उपकरण का इस्तेमाल करके भाग निकले होंगे।”

"आप इतने निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?"

“दादाजी उस तरह के इंसान नहीं हैं जो खुद को पकड़े जाने दें। अगर उन्हें किसी के घर में घुसने की आहट सुनाई देती, तो वे तुरंत यहाँ से निकल जाते।”

तो क्या वह जमीन के ऊपर सुरक्षित है?

“ज़मीन के ऊपर नहीं,” उसने सुधार करते हुए कहा। “भागने का रास्ता एक भूलभुलैया जैसा है। सबसे तेज़ गति से भी इसे पार करने में पाँच घंटे लगेंगे, और इंकलिंग को रोकने वाला यंत्र केवल तीस मिनट तक ही काम करता है। वह अभी भी भूलभुलैया में फंसा हुआ है।”

"या फिर उसे इंकलिंग्स ने पकड़ लिया है।"

“मुझे ऐसा नहीं लगता। दादाजी ने अपने लिए एक बेहद सुरक्षित ठिकाना बना रखा है, ठीक ऐसे ही हालातों के लिए। ज़मीन के नीचे वो एकमात्र जगह है जहाँ कोई भी इंकलिंग नहीं जाएगा। मुझे पूरा यकीन है कि वो वहीं हैं, हमारे आने का इंतज़ार कर रहे हैं।”
"वह कहां है?"
“दादाजी ने एक बार रास्ता समझाया था, लेकिन नोटबुक में एक संक्षिप्त नक्शा होना चाहिए। उसमें उन सभी खतरनाक जगहों को दिखाया गया है जहाँ सावधान रहना चाहिए।”
“किस प्रकार के खतरे के संकेत?”
“ऐसी बातें जिन्हें न जानना ही शायद आपके लिए बेहतर होगा। ऐसा लगता है कि जब आप उनके बारे में ज्यादा सुनते हैं तो आप घबरा जाते हैं।”
“ज़रूर, बेटा।” मैं बहस नहीं करना चाहता था। “उस आश्रय स्थल तक पहुँचने में कितना समय लगता है?”
“पहुँचने में लगभग आधा घंटा लगेगा। और वहाँ से दादाजी तक पहुँचने में एक या डेढ़ घंटा और लगेगा। एक बार पहुँच गए तो सब ठीक हो जाएगा; परेशानी तो पहले आधे घंटे में ही है। अगर हम जल्दी नहीं करेंगे तो INKling-repel डिवाइस की बैटरी खत्म हो जाएगी।”
"अगर हमारा पोर्टेबल बैग बीच रास्ते में खराब हो जाए तो क्या होगा?"
"हमें शुभकामनाएँ दीजिए। हमें अपनी टॉर्च को लगातार बेतहाशा घुमाते रहना होगा।"
“तो फिर हमें जल्दी चलना चाहिए,” मैंने कहा। “इंकलिंग्स सेमियोटेक्स को यह बताने में जरा भी देर नहीं करेंगे कि हम यहाँ हैं। वे किसी भी पल वापस आ सकते हैं।”
उसने अपने रेनकोट उतारे और मेरे द्वारा पैक की गई जीआई जैकेट और जॉगिंग शूज़ पहन लिए। इसी बीच मैंने अपना रेनकोट उतारकर नायलॉन का विंडब्रेकर पहन लिया। फिर मैंने स्नीकर्स की जगह रेन बूट्स पहन लिए और अपना बैग दोबारा कंधे पर टांग लिया। मेरी घड़ी में लगभग साढ़े बारह बज रहे थे।
लड़की दूर वाले कमरे में अलमारी के पास गई और हैंगर ज़मीन पर फेंक दिए। जैसे ही उसने कपड़े टांगने वाली छड़ी घुमाई, गियर घूमने की आवाज़ आई और अलमारी की निचली दाहिनी दीवार में लगा एक चौकोर पैनल चरमराते हुए खुल गया। अंदर से ठंडी, सीलन भरी हवा आई।
मैंने टिप्पणी की, "तुम्हारे दादाजी को अलमारियों के प्रति विशेष लगाव होगा।"
“बिल्कुल नहीं,” उसने बचाव करते हुए कहा। “एक सनकी वह होता है जिसे केवल एक ही चीज़ का जुनून होता है। बेशक, दादाजी अलमारियां बनाने में माहिर हैं। वे हर चीज़ में अच्छे हैं। प्रतिभा किसी एक क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल नहीं करती; प्रतिभा अपने आप में तर्क है।”
“प्रतिभाशाली होने की बात भूल जाओ। इससे निर्दोष लोगों को कोई फायदा नहीं होता। खासकर तब जब हर कोई इसमें हिस्सा लेना चाहे। इसी वजह से तो यह सारा बवाल हुआ है। चाहे तुम प्रतिभाशाली हो या मूर्ख, इस दुनिया में अकेले नहीं रहते। चाहे तुम जमीन के नीचे छिप जाओ या अपने चारों ओर दीवार बना लो, कोई न

कोई आएगा और सब कुछ बिगाड़ देगा। तुम्हारे दादाजी भी अपवाद नहीं हैं। उन्हीं की वजह से मेरा पेट चीर दिया गया, और अब दुनिया खत्म होने वाली है।"
"दादाजी मिल गए तो सब ठीक हो जाएगा," उसने मेरे कान के पास आकर हल्का सा चुंबन करते हुए कहा। "अब तुम वापस नहीं जा सकते।"
लड़की ने इंकलिंग-रोधी उपकरण पर तब तक नज़र रखी जब तक वह चार्ज नहीं हो गया। चार्ज पूरा होने पर, वह आगे बढ़ी और मैं पहले की तरह उसके पीछे-पीछे चला। छेद से अंदर जाते ही, उसने एक हैंडल घुमाकर छेद को बंद कर दिया। हर बार घुमाने पर, रोशनी का धब्बा छोटा होता गया, फिर एक पतली सी दरार बन गया और अंत में गायब हो गया।
"आपके दादाजी ने भागने के लिए इस रास्ते को क्यों चुना?"
"क्योंकि यह सीधे इंकलिंग के ठिकाने के केंद्र से जुड़ा हुआ है," उसने बिना किसी झिझक के कहा। "वे खुद इसके पास नहीं जा सकते। यह उनका अभयारण्य है।"
"आश्रय स्थल?"
"मैंने इसे खुद तो कभी नहीं देखा, लेकिन दादाजी इसे यही कहते थे। वे एक मछली की पूजा करते हैं। एक विशाल मछली जिसकी आंखें नहीं होतीं," उसने मुझे बताया, फिर अपनी टॉर्च आगे की ओर चमकाई। "चलो चलते हैं। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।"
गुफा की छत नीची थी; चलते समय हमें झुकना पड़ता था, जिससे हमारे सिर स्टैलेक्टाइट्स से टकराते थे। मुझे लगता था कि मैं अच्छी सेहत में हूँ, लेकिन अब इस तरह झुके रहने पर, मेरे कूल्हों का हर झुकाव मेरे पेट में बर्फ की कील चुभने जैसा दर्द पैदा कर रहा था। फिर भी, अगर मैंने कभी उसे अपनी नज़रों से ओझल होने दिया, तो यहाँ अकेले भटकने से तो यह दर्द कहीं बेहतर था।
जैसे-जैसे हम अंधेरे में आगे बढ़ते गए, मुझे अपने शरीर से और भी अलग-थलग महसूस होने लगा। मैं उसे देख नहीं पा रहा था, और कुछ समय बाद, आपको लगने लगता है कि शरीर महज़ एक काल्पनिक रचना है। हाँ, मैं अपने घाव और पैरों के तलवों के नीचे की ज़मीन को महसूस कर सकता था। लेकिन ये सिर्फ़ गति और स्पर्श की अनुभूतियाँ थीं, शरीर की मूल धारणा से उपजी आदिम भावनाएँ। ये संवेदनाएँ शरीर के न रहने के बाद भी बनी रह सकती हैं। जैसे किसी अंगविहीन व्यक्ति को पैर की उंगलियों में खुजली होती है।
मेरे दिमाग में तरह-तरह के विचार दौड़ रहे थे, सचमुच, क्योंकि मैं उस गोल-मटोल लड़की के पीछे भाग रहा था। उसकी गुलाबी स्कर्ट उसकी गहरे हरे रंग की जैकेट के नीचे से झाँक रही थी। उसके झुमके चमक रहे थे, मानो दो जुगनू उसके आसपास मंडरा रहे हों। उसने कभी यह नहीं देखा कि मैं उसके पीछे आ रहा हूँ या नहीं; वह बस एक गर्ल स्काउट की तरह फुर्ती से आगे बढ़ती रही। वह तभी रुकी जब रास्ते में एक मोड़ आया, जहाँ उसने नक्शा निकाला और उसे रोशनी में देखा। तभी मैं उसके पास पहुँच पाया।
"ऊपर सब ठीक है? क्या हम सही रास्ते पर हैं?" मैंने पूछा।
"फिलहाल तो कम से कम," उसने जवाब दिया।

आप यह कैसे बता सकते हैं?
“मैं कह सकती हूँ कि हम सही रास्ते पर हैं, क्योंकि हम हैं,” उसने अधिकारपूर्वक कहा और अपनी टॉर्च हमारे पैरों की ओर चमकाई। “देखा? एक नज़र डालो।”
मैंने ज़मीन के रोशन घेरे को देखा। खुरदरी चट्टान की सतह चांदी के छोटे-छोटे टुकड़ों से चमक रही थी। मैंने उनमें से एक को उठाया—एक पेपरक्लिप।
“देखा?” उसने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। “दादाजी इसी रास्ते से गुज़रे थे। उन्हें पता था कि हम उनका पीछा करेंगे, इसलिए उन्होंने ये निशान छोड़ दिए।”
मैंने अपनी जगह पर आकर कहा, "समझ गया।"
“पंद्रह मिनट बीत चुके हैं। जल्दी करो,” उसने जोर देकर कहा।
आगे रास्ते में कई मोड़ थे। लेकिन हर बार बिखरे हुए पेपरक्लिप हमें रास्ता दिखाते रहे। रास्ते के फर्श में छेद भी थे। इन्हें नक्शे पर चिह्नित किया गया था, ये वे स्थान थे जहाँ हमें टॉर्च की रोशनी ज़मीन पर डालकर सावधानी से चलना था।
रास्ता दाएं-बाएं मुड़ता हुआ नीचे की ओर जाता रहा। कोई खड़ी चढ़ाई नहीं थी, बस एक सीधी और समतल ढलान थी। पांच मिनट बाद हम एक बड़े कक्ष में पहुँचे। हवा में आए बदलाव और कदमों की आहट से हमें इसका पता चल गया था।
उसने हमारी लोकेशन देखने के लिए नक्शा निकाला। मैंने चारों ओर टॉर्च की रोशनी डाली। कमरा गोलाकार था; छत गुंबदनुमा थी। घुमावदार दीवारें चिकनी और चमकदार थीं, साफ तौर पर किसी इंसान के हाथों की कारीगरी लग रही थी। फर्श के ठीक बीच में एक मीटर व्यास का एक छोटा सा गड्ढा था, जो किसी अनजान चिपचिपे पदार्थ से भरा हुआ था। हवा में किसी चीज की हल्की सी गंध थी, तेज तो नहीं, लेकिन उससे मुंह में एक अप्रिय खट्टी-सी चिपचिपाहट रह जाती थी।
उन्होंने कहा, "ऐसा लगता है कि यही अभयारण्य तक पहुंचने का रास्ता है। इसका मतलब है कि हम INKlings से सुरक्षित हैं। फिलहाल के लिए।"
"बहुत बढ़िया, लेकिन हम यहां से बाहर कैसे निकलेंगे?"
“इसे दादाजी पर छोड़ दो। उन्हें कोई न कोई रास्ता जरूर मिल जाएगा।”
अभयारण्य के प्रवेश द्वार के दोनों ओर एक जटिल नक्काशी थी। दो मछलियाँ एक वृत्त में थीं, प्रत्येक ने दूसरी की पूंछ अपने मुँह में दबा रखी थी। उनके सिर हवाई जहाज के कवर की तरह फूले हुए थे, और जहाँ उनकी आँखें होनी चाहिए थीं, वहाँ दो लंबे, पतले स्पर्शक निकले हुए थे। उनके मुँह उनके शरीर के बाकी हिस्सों के लिए बहुत बड़े थे, जो लगभग गलफड़ों तक पीछे की ओर कटे हुए थे, जिनके नीचे मांसल अंग थे जो कटे हुए जानवरों के अंगों जैसे दिखते थे। इनमें से प्रत्येक अंग पर तीन पंजे थे। पंजे? पृष्ठीय पंख ज्वाला की जीभ की तरह आकार के थे, और शल्क कांटों की तरह खुरदुरे थे।
“पौराणिक जीव? क्या आपको लगता है कि वे सचमुच मौजूद हैं?” मैंने उससे पूछा।

“कौन जाने?” उसने कुछ पेपरक्लिप उठाते हुए कहा। “जल्दी करो, अंदर चलते हैं।”
प्रवेश द्वार से अंदर जाने से पहले मैंने नक्काशी पर एक बार फिर टॉर्च की रोशनी डाली। यह देखकर आश्चर्य ही हुआ कि इंकलिंग्स घोर अंधेरे में भी इतनी बारीकी से नक्काशी कर सकते थे। ठीक है, वे अंधेरे में देख तो सकते थे, लेकिन उनकी यह दृष्टि किसी दूसरी दुनिया की थी। और अब वे शायद हमारी हर हरकत पर नज़र रख रहे थे।
पवित्रस्थल तक जाने वाला रास्ता धीरे-धीरे ऊपर की ओर ढलान वाला था, और उसी समय छत भी उत्तरोत्तर ऊंची होती जा रही थी, जब तक कि अंततः वह टॉर्च की रोशनी से बाहर नहीं निकल गई।
“यहाँ से हम पहाड़ पर चढ़ेंगे,” उसने कहा। “वैसे, यह कोई असली पहाड़ नहीं है। यह एक छोटी पहाड़ी जैसी है। लेकिन उनके लिए, यह एक पहाड़ है। दादाजी ने यही कहा था। यह एकमात्र दस्तावेजी रूप से प्रमाणित भूमिगत पहाड़ है, एक पवित्र पहाड़।”
"तो फिर हम इसे अपवित्र कर रहे हैं।"
“बिल्कुल नहीं। बल्कि इसका उल्टा। यह पहाड़ शुरू से ही गंदा था। यह जगह धरती की ऊपरी परत से ढकी हुई एक पेंडोरा की पेटी है। गंदगी यहीं जमा थी। और हम ठीक इसके केंद्र से होकर गुजरने वाले हैं।”
"तुम इसे नरक जैसा बता रहे हो।"
"आप यह कहा।"
मुझे नहीं लगता कि मैं इसके लिए तैयार हूं।
“अरे, हिम्मत रखो,” मेरी प्यारी दोस्त ने कहा। “अच्छी-अच्छी बातें याद करो, अपने प्रियजनों को याद करो, अपने बचपन को याद करो, अपने सपनों को याद करो, संगीत को याद करो, ऐसी ही चीजों को याद करो। चिंता मत करो, खुश रहो।”
मैंने पूछा, "क्या बेन जॉनसन काफी खुश हैं?"
“बेन जॉनसन?”
"उन्होंने जॉन फोर्ड की उन शानदार पुरानी फिल्मों में अभिनय किया था, जिनमें वे सबसे खूबसूरत घोड़ों की सवारी करते थे।"
"तुम सचमुच अनोखे हो," वह हंसते हुए बोली। "मुझे तुम बहुत पसंद हो।"
मैंने कहा, "धन्यवाद, लेकिन मैं कोई भी वाद्य यंत्र नहीं बजा सकता।"
* * *
जैसा कि उसने भविष्यवाणी की थी, रास्ता और भी ज़्यादा ढलान वाला होता चला गया, और अंत में हम एक चट्टान पर चढ़ने लगे। लेकिन मेरे विचार मेरे पसंदीदा हीरो बेन जॉनसन पर टिके हुए थे। बेन जॉनसन फोर्ट डिफिएंस, शी वोअर अ येलो रिबन, वैगनमास्टर और रियो ग्रांडे में। बेन जॉनसन मैदान में, चिलचिलाती धूप में, बादलों से घिरे नीले आसमान में। बेन जॉनसन एक घाटी में भैंसों के झुंड के साथ, औरतें दरवाज़े से बाहर झुककर गिंघम एप्रन से हाथ पोंछ रही थीं। बेन जॉनसन नदी के किनारे, सूखी गर्मी में टिमटिमाती रोशनी में,

चरवाहे गा रहे थे। कैमरा ज़ूम हुआ, और बेन जॉनसन नज़र आए, तेज़ी से दौड़ते हुए, तीर की तरह तेज़, हमारा हीरो हमेशा के लिए फ्रेम में।

जब मैंने चट्टानों को कसकर पकड़ा और पैर जमाने की कोशिश की, तभी मुझे घोड़े पर सवार बेन जॉनसन ने सहारा दिया। मेरे पेट का दर्द लगभग गायब हो गया। शायद वही मेरे लिए शारीरिक दर्द को भुला देने का संकेत था।

हम अंधेरे में पहाड़ पर चढ़ते रहे। टॉर्च को हाथ में पकड़कर चढ़ना नामुमकिन था, इसलिए मैंने टॉर्च को अपनी जींस में ठूंस लिया और उसने अपनी टॉर्च पीठ पर बांध ली। इसका मतलब था कि हमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उसकी टॉर्च की रोशनी उसकी कमर पर पड़कर बेकार में इधर-उधर भटक रही थी। और मेरी टॉर्च से मुझे बस ऊपर, ऊपर, ऊपर जाती हुई चट्टानी सतहें ही दिखाई दे रही थीं।

वह बीच-बीच में मुझे आवाज़ देकर यह सुनिश्चित करती थी कि मैं उसके साथ कदम मिलाकर चल रहा हूँ। वह कहती, "ठीक हो?" मैं कहता, "बस थोड़ा और।"

फिर कुछ समय बाद, बात यहाँ तक पहुँच गई कि "क्यों न हम कुछ गाएँ?"

“क्या गाना है?” मैं जानना चाहता था।

"कुछ भी, बिलकुल कुछ भी।"

मैं अंधेरी जगहों पर गाना नहीं गाता।

अरे, चलो भी।

ठीक है, तो चलो छोड़ो। इसलिए मैंने वही रूसी लोकगीत गाया जो मैंने प्राथमिक विद्यालय में सीखा था:

पूरी रात बर्फ गिरती रही—

हे-हे! चूल्हा, हो!

आग बहुत तेज जल रही है—

हे-हे! चूल्हा, हो!

पुराने सपने गीत में फूट पड़ते हैं—

हे-हे! चूल्हा, हो!

मुझे गीत के और बोल याद नहीं थे, इसलिए मैंने कुछ बोल खुद बना लिए: सब लोग आग के चारों ओर बैठे थे —पेचका—तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और पिताजी देखने गए, तो वहाँ एक बारहसिंगा घायल पैरों पर खड़ा था, कह रहा था, “मुझे भूख लगी है, मुझे कुछ खाने को दो”; तो उन्होंने उसे डिब्बाबंद आड़ू खिला दिए। अंत में सब लोग चूल्हे के चारों ओर बैठकर साथ में गा रहे थे।

“बहुत बढ़िया। आप बहुत अच्छा गाते हैं,” उसने कहा। “माफ़ कीजिए मैं ताली नहीं बजा सकती, क्योंकि मैं बहुत व्यस्त हूँ।”

हम टीले को पार करके एक समतल जगह पर पहुँच गए। साँस लेते हुए हमने अपनी टॉर्च चारों ओर घुमाई। पठार विशाल था; उसकी चिकनी सतह हर दिशा में फैली हुई थी। वह नीचे झुकी और उसने लगभग आधा दर्जन पेपरक्लिप उठा लीं।

मैंने पूछा, "तुम्हारे दादाजी कितनी दूर तक जा सकते थे?"

“ज्यादा दूर नहीं। उसने इस पठार का जिक्र कई बार किया है।”

"क्या आपका मतलब यह है कि आपके दादाजी अपनी मर्जी से यहां आए हैं?"

“बिल्कुल। दादाजी को अपना भूमिगत नक्शा बनाने के लिए इस इलाके को पार करना पड़ा था। उन्हें इस जगह के बारे में सब कुछ पता है।”

“क्या उसने यह सब स्वयं ही सर्वेक्षण किया?”

“बिल्कुल,” उसने कहा। “दादाजी अकेले काम करना पसंद करते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें लोग पसंद नहीं हैं या उन पर भरोसा नहीं कर सकते; बात बस इतनी है कि कोई भी उनके साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता।”

मैंने कहा, "मुझे इस पर यकीन हो रहा है। लेकिन मुझे बताओ, इस पठार के बारे में पूरी जानकारी क्या है?"

“यह पर्वत वह स्थान है जहाँ इंकलिंग्स सबसे पहले बसे थे। उन्होंने चट्टान में गड्ढे खोदे और उनमें एक साथ रहते थे। जिस जगह पर हम अभी खड़े हैं, वहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते थे। ऐसा माना जाता है कि यह उनके देवताओं का निवास स्थान था, जहाँ वे उन्हें जीवित बलि चढ़ाते थे।”

"तुम्हारा मतलब उन भयानक पंजे वाली मछलियों से है?"

“दादाजी के अनुसार, मछलियाँ ही इंकलिंग्स के पूर्वजों को यहाँ लेकर आई थीं।” उन्होंने अपनी रोशनी हमारे पैरों पर डाली और मुझे ज़मीन में खुदी हुई एक उथली नाली दिखाई। नाली सीधे अंधेरे में जाती थी। “अगर आप इस नाली का अनुसरण करेंगे, तो आप प्राचीन वेदी तक पहुँच जाएँगे। यह इस पवित्र स्थान का सबसे पवित्र स्थान है। कोई भी इंकलिंग इसके पास नहीं जाता। शायद दादाजी वहीं हैं, सुरक्षित और एकांत में।”

हम खाई के पीछे-पीछे चलते रहे। वह जल्द ही गहरी होती चली गई, रास्ता लगातार नीचे की ओर उतरता गया, और दोनों ओर की दीवारें ऊंची होती चली गईं। ऐसा लग रहा था मानो दीवारें किसी भी क्षण हमें कुचल देंगी, लेकिन कुछ भी नहीं हिला। केवल हमारे रबर के जूतों की अजीब सी सरसराहट की आवाज दीवारों के बीच गूंज रही थी। चलते-चलते मैं बार-बार ऊपर देखता रहा।

आसमान की ओर देखने की तीव्र इच्छा हो रही थी। लेकिन ज़ाहिर है, ऊपर न सूरज था, न चाँद, न तारे। चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था। मेरी हर साँस, मेरा हर गीला कदम, सब कुछ कीचड़ की तरह ज़मीन पर फिसलना चाहता था।

मैंने अपना बायां हाथ उठाया और अपनी डिजिटल घड़ी की बत्ती जला दी। दो बजकर इक्कीस मिनट हो गए थे। जब हम भूमिगत हुए तब आधी रात हो चुकी थी, इसलिए केवल दो घंटे से थोड़ा अधिक समय बीता था। हम मुंह कसकर बंद किए हुए, संकरी खाई में नीचे की ओर चलते रहे।

मुझे अब यह भी पता नहीं चल पा रहा था कि मेरी आँखें खुली हैं या बंद। इस समय मेरे कानों तक केवल कदमों की गूँज ही पहुँच रही थी। अजीबोगरीब भूभाग, हवा और अंधेरे ने मेरे कानों तक पहुँचने वाली आवाज़ को विकृत कर दिया था। मैंने उन आवाज़ों को शाब्दिक अर्थ देने की कोशिश की, लेकिन वे मेरे जाने-पहचाने किसी भी शब्द से मेल नहीं खा रही थीं। यह एक अपरिचित भाषा थी, स्वरों और उतार-चढ़ावों का एक ऐसा समूह जिसे जापानी शब्दांशों की सीमा में समाहित नहीं किया जा सकता था। फ्रेंच या जर्मन—या शायद अंग्रेजी—में यह कुछ इस तरह हो सकता है:

यहां तक कि—के माध्यम से—खरीदारी की गई—डिग्री प्राप्त की गई—अच्छी तरह से

फिर भी, जब मैंने वास्तव में उन शब्दों का उच्चारण किया, तो वे उन कदमों की आवाज़ से बिल्कुल अलग थे। अधिक सटीक प्रतिलेखन इस प्रकार होता:

एफ़ग्वेन—गथौउव—बगे—शपेवग—एग्वेले—वगेवल

फिनिश? मेरी भाषाई क्षमताओं में एक और कमी। अगर मुझसे इसका अर्थ बताने को कहा जाए, तो शायद मैं कुछ ऐसा कहूँ, "एक किसान को सड़क पर बूढ़ा शैतान मिला।" ज़ाहिर है, यह सिर्फ़ मेरा अनुमान है।

चलते-चलते मैं तरह-तरह के शब्दों और वाक्यांशों को जोड़ने की कोशिश करता रहा। मैंने उसके गुलाबी जॉगिंग के जूतों की कल्पना की, दाहिनी एड़ी ज़मीन पर, गुरुत्वाकर्षण का केंद्र पंजों पर आ जाता है, फिर उठने से ठीक पहले बाईं एड़ी ज़मीन पर। एक अंतहीन दोहराव। समय धीमा होता जा रहा था, घड़ी की स्प्रिंग घिस रही थी, सुइयाँ मुश्किल से आगे बढ़ रही थीं।

एफ़ग्वेन—गथौउव—बगे—शपेवग—एग्वेले—वगेवल

एफ़ग्वेन—गथौउव—बगे—शपेवग—एग्वेले—वगेवल

Efgvén—gthôuv—bge—

फिनलैंड की एक ग्रामीण सड़क के किनारे एक चट्टान पर बूढ़ा शैतान बैठा था। शैतान की उम्र दस हजार, शायद बीस हजार साल थी, और वह बहुत थका हुआ था। वह धूल से सना हुआ था। उसकी मूंछें मुरझा रही थीं। "ऐसे बदहाल होकर कहाँ जा रहे हो?" शैतान ने एक किसान को पुकारा। "मेरा हल टूट गया है और मुझे उसे ठीक करना होगा," किसान ने उत्तर दिया। "जल्दी मत करो," शैतान ने कहा, "सूरज अभी भी आसमान में चमक रहा है, क्यों भाग रहे हो? बैठ जाओ और मेरी कहानी सुनो।" किसान जानता था कि शैतान के साथ समय बिताने से कोई लाभ नहीं होगा, लेकिन उसे इतना थका हुआ देखकर, किसान ने...

मेरे गाल पर किसी चीज़ से चोट लगी। कोई चपटी, मांसल, ज़्यादा सख्त नहीं। पर क्या? मैंने सोचने की कोशिश की, और फिर से किसी चीज़ से चोट लगी। मैंने उसे हटाने के लिए हाथ उठाया, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। एक अप्रिय नज़र मेरे चेहरे पर पड़ रही थी। मैंने अपनी आँखें खोलीं, जो तब तक मुझे पता भी नहीं चला था कि बंद थीं। उसकी टॉर्च की रोशनी मुझ पर पड़ रही थी, और उसका हाथ मुझे थप्पड़ मार रहा था।

“इसे बंद करो,” मैंने चिल्लाकर कहा। “यह बहुत तेज रोशनी है। इससे आंखों में चुभन होती है।”

“तुम यहाँ ऐसे नहीं सो सकते! उठो! उठो!” वह चिल्लाकर बोली।

"उठो? तुम क्या बात कर रहे हो?"
मैंने अपनी टॉर्च जलाई और चारों ओर रोशनी डाली। मैं ज़मीन पर, दीवार से पीठ टिकाए, पूरी तरह भीगा हुआ था। मुझे पता ही नहीं चला और मैं सो गया था।
मैंने धीरे-धीरे खुद को पैरों पर खड़ा किया।
“क्या हुआ? एक मिनट पहले मैं दौड़ रहा था, अगले ही पल मुझे नींद आ गई। मुझे याद ही नहीं कि मैं कब बैठा या कब सोया।”
“यही तो जाल है,” उसने कहा। “वे हमें सुलाने के लिए कुछ भी करेंगे।”
"वे?"
“इस पहाड़ में जो भी रहता है, चाहे वो देवता हों, बुरी आत्माएं हों, पता नहीं—वे ही हों। वे बाधा उत्पन्न करते हैं।”
मैंने अपना सिर हिलाया।
“सब कुछ धुंधला सा हो गया था। तुम्हारे जूतों से वो आवाजें आ रही थीं और...”
“मेरे जूते?”
मैंने उसे उसके फ़िनिश पदचिह्नों के बारे में बताया। बूढ़ा शैतान। किसान—
“यह सब एक चाल थी,” उसने बीच में ही कहा। “सम्मोहन। अगर मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा होता, तो शायद तुम वहाँ सदियों से सोते रहते।”
“उम्र?”
“हाँ, बिल्कुल सही। तुम तो गए काम से,” उसने स्वर में कहा। किस हद तक गए थे, यह उसने नहीं बताया।
“तुम्हारे थैले में रस्सी है ना?”
"हम्म, लगभग पाँच मीटर।"
"इसके साथ।"
मैंने अपने पीठ से थैला खोला, डिब्बों, व्हिस्की और पानी की बोतल के बीच हाथ डालकर उसे बाहर निकाला। उसने रस्सी का एक सिरा मेरी बेल्ट से बांध दिया और दूसरा सिरा अपनी कमर के चारों ओर लपेट लिया।
“लो। अब ठीक रहेगा,” उसने कहा। “इस तरह हम अलग नहीं होंगे।”
मैंने कहा, "जब तक हम दोनों सो न जाएं।"
“हमारी समस्याओं को और मत बढ़ाओ। चलो चलते हैं।”
और हम दोनों एक साथ बंधे हुए चल पड़े। मैंने उसकी कदमों की आहट न सुनने की पूरी कोशिश की। मैंने उसकी जीआई जैकेट के पीछे टॉर्च की रोशनी डाली। मुझे लगभग यकीन था कि मैंने वह जैकेट 1971 में खरीदी थी। वियतनाम युद्ध अभी भी चल रहा था, निक्सन और उसका बदसूरत चेहरा अभी भी व्हाइट हाउस में थे। हर किसी के लंबे बाल थे, गंदे सैंडल और सेना की पुरानी जैकेट पहने हुए थे जिन पर पीछे शांति का

चिन्ह बना होता था, साइकेडेलिक संगीत पर झूमते थे, खुद को पीटर फोंडा समझते थे, जो चॉप्ड हॉग पर सवार होकर बॉर्न टू बी वाइल्ड गाने की तेज़ धुन पर चीखते हुए सड़क पर जा रहे थे, और फिर आई हर्ड इट थ्रू द ग्रेपवाइन में खो जाते थे। मिलते-जुलते इंट्रो—अलग-अलग फिल्म?
“तुम क्या सोच रही हो?” मोटी लड़की ने पूछा।
“अरे, कुछ नहीं,” मैंने कहा।
"क्या हम कुछ गाएँ?"
क्या हमें ऐसा करना ही होगा?
"अच्छा, तो फिर कुछ और सोचो।"
चलिए बातचीत करते हैं।
"किस बारे में?"
"बारिश के बारे में क्या ख्याल है?"
"ज़रूर।"
आप बारिश को किससे जोड़ते हैं?
"जिस रात मेरे माता-पिता की मृत्यु हुई, उस रात बारिश हुई थी।"
"कुछ और खुशनुमा कैसा रहेगा?"
“कोई बात नहीं। मुझे इस बारे में बात करने में कोई आपत्ति नहीं है,” उसने कहा। “जब तक कि आप इसे सुनना नहीं चाहते।”
मैंने जवाब दिया, "अगर आप इसके बारे में बात करना चाहते हैं, तो आपको इसके बारे में बात करनी चाहिए।"
“असल में बारिश नहीं हो रही थी। आसमान में बादल छाए हुए थे और मैं अस्पताल में थी। खिड़की के पास कपूर का पेड़ था। मैं बिस्तर पर लेटी रही और उसकी हर शाखा को ध्यान से देखती रही। बहुत सारे पक्षी आए। गौरैया, श्रीके, सारस और दूसरे खूबसूरत पक्षी। लेकिन जब बारिश होने वाली होती, तो पक्षी गायब हो जाते। फिर वे वापस आ जाते, साफ मौसम के लिए चहचहाते हुए धन्यवाद देते। मुझे नहीं पता क्यों। शायद इसलिए कि जब बारिश रुकती है, तो कीड़े जमीन से बाहर निकल आते हैं।”
"क्या आप लंबे समय तक अस्पताल में भर्ती रहे?"
लगभग एक महीना। मेरी दिल की सर्जरी हुई थी। अजीब बात है ना? मैं अकेली बीमार थी, अब मैं अकेली ज़िंदा हूँ। जिस दिन उनकी मौत हुई, उस दिन पक्षियों के लिए बहुत व्यस्त दिन था। अस्पताल में हीटर बहुत तेज़ था, इसलिए खिड़की पर भाप जम गई थी और मुझे खिड़की पोंछने के लिए बिस्तर से उठना पड़ा। मुझे बिस्तर से नहीं उठना चाहिए था, लेकिन मुझे पेड़, पक्षियों और बारिश को देखना ही था। वहाँ दो पक्षी थे जिनके सिर काले और पंख लाल थे। तभी मैंने सोचा, दुनिया कितनी अजीब है। मेरा मतलब है, दुनिया में लाखों कपूर के पेड़ होंगे—ज़ाहिर है, ज़रूरी नहीं कि सभी कपूर के पेड़ ही हों—लेकिन उस एक दिन, जब

बारिश हुई और रुकी, फिर हुई और फिर रुकी, कितने पक्षी इधर-उधर उड़ रहे होंगे? इससे मुझे बहुत दुख हुआ।
"क्या इससे आपको दुख हुआ?"
“क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, दुनिया में लाखों पेड़, लाखों पक्षी और लाखों बारिशें होंगी। लेकिन मैं उनमें से एक को भी नहीं समझ पाई, और शायद मैं इसी तरह मर जाती। मैं बस रोती रही, मुझे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था। और उसी रात मेरे पूरे परिवार की हत्या कर दी गई। हालाँकि उन्होंने मुझे बहुत बाद में बताया।”
"यह बहुत भयानक रहा होगा।"
“मेरे लिए तो मानो दुनिया का अंत हो गया था। सब कुछ इतना अंधकारमय, अकेला और दयनीय हो गया था। क्या आप जानते हैं कि ऐसा महसूस करना कैसा होता है?”
मैंने कहा, "मैं समझ सकता हूँ।"
बारिश के बारे में उसके विचार मेरे विचारों पर हावी हो गए। इतना कि मुझे पता ही नहीं चला कि वह रुक गई थी और मैं उससे फिर टकरा गया।
मैंने कहा, "माफ़ कीजिए।"
“चुप रहो!” उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। “मुझे कुछ सुनाई दे रहा है। सुनो!”
हम एकदम स्थिर खड़े रहे और कान लगाकर सुनने लगे। पहले तो आवाज़ बहुत धीमी, लगभग सुनाई न देने वाली थी। फिर एक गहरी गड़गड़ाहट सुनाई दी, जैसे कोई भूकंप आ रहा हो। आवाज़ तेज़ होती गई। हवा कांपने लगी। हर चीज़ से हमें लग रहा था कि कुछ होने वाला है।
“भूकंप?” मैंने पूछा।
“नहीं,” लड़की कांप उठी। “यह उससे कहीं ज्यादा बुरा है।”

22

धूसर धुआँ

जैसा कि कर्नल ने पहले ही चेतावनी दी थी, लगभग हर दिन धुआँ दिखाई देता है। सेब के बाग के आसपास से उठता हुआ धूसर धुआँ बादलों में समा जाता है। अगर कोई ध्यान से देखे तो ऐसा लगेगा मानो सेब का बाग ही इन बादलों को बना रहा हो। धुएँ के पहले संकेत ठीक दोपहर तीन बजे दिखाई देते हैं, और मृतकों की संख्या के अनुसार आग बुझाने का काम जारी रहता है। बर्फीले तूफान या जमा देने वाली ठंड वाली रात के बाद, धुएँ का घना गुबार कई घंटों तक बना रहता है।

इन जानवरों को मरने से रोकने के लिए कोई योजना क्यों नहीं है?

शतरंज खेलते हुए मैंने कर्नल से पूछा, "क्या उनके लिए कोई आश्रय नहीं बनाया जा सकता? क्या उन्हें बर्फ, हवा और ठंड से नहीं बचाया जा सकता? एक साधारण छत वाला घेरा उनमें से कई को बचा सकता है।"

“इससे कोई फायदा नहीं होगा,” वह शतरंज के बोर्ड से अपनी निगाहें हटाए बिना बस इतना ही जवाब देता है। “वे कभी आश्रय नहीं लेंगे। वे हमेशा की तरह ज़मीन पर ही सोते रहेंगे। वे खुले आसमान के नीचे ही सोएंगे, चाहे इसका मतलब उनकी मौत ही क्यों न हो।”

कर्नल धमकी देता है और अपने महापुजारी को सीधे मेरे राजा के सामने खड़ा कर देता है। दोनों ओर, दो सींगों को गोलीबारी की दिशा में तैनात किया गया है। मैं उनके हमले की शुरुआत का इंतजार करता हूँ।

“ऐसा लगता है मानो ये जानवर कष्ट सहना और मरना चाहते हों,” मैंने कहा।

“एक तरह से, हाँ। यह उनके लिए स्वाभाविक है। ठंड और असुविधा। शायद यही उनकी मुक्ति का कारण भी हो।”

कर्नल चुप हो जाता है, जिससे मुझे उसकी दीवार के पास अपने बंदर को तैनात करने का मौका मिल जाता है। शायद मैं दीवार को हिलने के लिए लुभा सकूँ। कर्नल चारा लेने के लिए आगे बढ़ता है, लेकिन तभी अपने एक शूरवीर को वापस बुला लेता है और अपनी रक्षा व्यवस्था को और मजबूत कर लेता है।

“अब तो तुम्हारी चालें समझ में आ रही हैं?” सैनिक हंसते हुए कहता है।

“बिल्कुल भी आपके आस-पास नहीं।” मैं भी हंस पड़ा। “‘उनकी मुक्ति’ से आपका क्या मतलब है?”

"यह कहना अजीब लग सकता है, लेकिन शायद मरना ही उन्हें बचाता है। वे मरते हैं और वसंत ऋतु में पुनर्जन्म लेते हैं। नए बच्चों के रूप में।"

लेकिन फिर भी वे नवजात शिशु बड़े होकर कष्ट सहते हैं और मर जाते हैं। उन्हें इतना कष्ट क्यों सहना पड़ता है?

“क्योंकि यही तय है,” वह घोषणा करता है। “अब तुम्हारी बारी है। तुम तब तक नहीं जीत सकते जब तक मेरे महायाजक को हटा नहीं देते।”

तीन दिन की बर्फबारी के बाद अचानक आसमान साफ हो गया। सूरज की किरणें जमी हुई सफेद नगरी पर चकाचौंध कर देने वाली रोशनी बिखेर रही थीं। मुझे हर जगह पेड़ों की डालियों से बर्फ गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी। मैं घर के अंदर ही रहा और रोशनी से बचने के लिए पर्दे खींच लिए, लेकिन मैं बच नहीं सका। बर्फ से ढकी नगरी एक विशाल, बहुआयामी रत्न की तरह चमक रही थी, मानो प्रकाश की किरणें मेरी आंखों में चुभ रही हों।

मैं दोपहर का समय बिस्तर पर मुंह के बल लेटे हुए बिताता हूँ। मैं बूढ़े लोगों द्वारा छोड़े गए रोटी के टुकड़ों के लिए खिड़कियों पर आने वाले पक्षियों के गीत सुनने की कोशिश करता हूँ। मैं खुद बूढ़े लोगों को घर के सामने धूप में बैठे बातें करते हुए सुन सकता हूँ। मैं अकेला ही धूप की गर्माहट से दूर रहता हूँ।

सूरज ढलते ही मैं बिस्तर से उठकर अपनी दुखती आँखों को ठंडे पानी से धोता हूँ। मैं अपने काले चश्मे पहनकर बर्फ से ढकी ढलान से होते हुए पुस्तकालय की ओर जाता हूँ। मैं पहले की तरह पढ़ नहीं पाता। एक खोपड़ी पढ़ने के बाद ही पुराने सपनों की चमक मेरी आँखों में चुभने लगती है। मेरी दृष्टि के पीछे धुंधले गड्ढे भारी होने लगते हैं, मेरी उंगलियों की संवेदनशीलता कम हो जाती है।

ऐसे समय में लाइब्रेरियन मेरी आँखों पर ठंडी तौलिये की सिकाई करने के लिए और पीने के लिए हल्का शोरबा या गर्म दूध लाती हैं। ये मेरी जीभ पर किरकिरे लगते हैं, बिल्कुल बेस्वाद। मुझे इसकी आदत हो जाती है, लेकिन फिर भी मुझे इसका स्वाद अच्छा नहीं लगता।

“आप धीरे-धीरे इस कस्बे में ढल रहे हैं,” वह कहती हैं। “यहाँ का खाना बाकी जगहों से अलग है। हम केवल कुछ बुनियादी सामग्री का इस्तेमाल करते हैं। जो मांस जैसा दिखता है, वह मांस नहीं है। जो अंडे जैसा दिखता है, वह अंडा नहीं है। जो कॉफी जैसा दिखता है, वह सिर्फ कॉफी जैसा दिखता है। हर चीज़ किसी न किसी चीज़ की छवि में बनाई जाती है। सूप सेहत के लिए अच्छा है। यह आपको गर्माहट देता है।”

“हां, ऐसा ही है,” मैंने कहा।

मेरा सिर अब उतना भारी नहीं है, मेरा शरीर अब उतना ठंडा नहीं है। मैं उसे धन्यवाद देती हूँ और आराम करने के लिए अपनी आँखें बंद कर लेती हूँ।

“क्या आपको और कुछ चाहिए?” वह पूछती है।

"क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?"

"निश्चित रूप से कुछ ऐसा होगा जो आपके शीतकालीन कवच को खोलने में मदद करेगा।"

“मुझे सूरज चाहिए,” मैं कहती हूँ। फिर मैं अपने काले चश्मे उतारकर कपड़े से लेंस पोंछती हूँ। “लेकिन यह नामुमकिन है। मेरी आँखें रोशनी बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।”

"सूर्य के प्रकाश से भी अधिक सच्चा कुछ। शायद आपके पूर्व संसार से कुछ ऐसा जिसने आपको सुकून दिया हो।"

मैं अपनी बची हुई यादों के टुकड़ों को खोजने की कोशिश करता हूं, लेकिन कोई भी टुकड़ा पहेली को पूरा नहीं करता।
“यह ठीक नहीं है। मुझे कुछ भी याद नहीं है। मैंने सब कुछ खो दिया है।”
"कोई छोटी सी चीज, कुछ भी, जो भी पहली चीज आपके दिमाग में आए। मुझे आपकी मदद करने दीजिए।"
मेरी याददाश्त एकदम पक्की है। वो हिलती नहीं। मेरा सिर दुख रहा है। अपनी परछाई खोकर मैंने बहुत कुछ खो दिया है। जो बचा है वो सर्दियों की ठंड में जम गया है।
वह अपना हाथ मेरी कनपटी पर रखती है।
हम इस बारे में बाद में सोच सकते हैं। शायद आपको याद आ जाए।
“मुझे एक आखिरी पुराना सपना पढ़ने दीजिए,” मैंने जोर देकर कहा।
“तुम थक गए हो। क्या तुम्हें कल तक इंतजार नहीं करना चाहिए? खुद पर इतना दबाव डालने की कोई जरूरत नहीं है। पुराने सपने तो पूरे होते रहेंगे।”
नहीं, मैं कुछ न करने से बेहतर सपने पढ़ना पसंद करूंगी। कम से कम तब मुझे किसी चीज के बारे में सोचना तो नहीं पड़ेगा।
वह खड़ी होती है और किताबों के ढेर में गायब हो जाती है। मैं वहीं बैठा रहता हूँ, आँखें बंद किए, अंधेरे में डूबता हुआ। यह सर्दी कब तक चलेगी? कर्नल ने कहा है, यह जानलेवा सर्दी है। और यह तो अभी शुरू ही हुई है। क्या मेरी परछाई बच पाएगी? नहीं, सवाल यह है कि क्या मैं खुद बच पाऊँगा, इस अनिश्चितता के बीच?
वह हमेशा की तरह मेज पर एक खोपड़ी रखती है और उसे गीले कपड़े से पोंछती है, फिर सूखे कपड़े से। मैं अपना सिर हाथ पर टिकाकर वहीं बैठा रहता हूँ और उसकी उंगलियों को काम करते हुए देखता हूँ।
"क्या मैं आपके लिए और कुछ नहीं कर सकती?" वह अचानक ऊपर देखते हुए कहती है।
“तुम मेरे लिए पहले से ही बहुत कुछ करते हो,” मैं कहती हूं।
वह अपना हाथ रोककर मेरी ओर मुंह करके बैठ जाती है। "मेरा मतलब कुछ और है। शायद तुम मेरे साथ सोना चाहते हो।"
मैं अपना सिर हिलाता हूँ।
“मुझे समझ नहीं आ रहा,” वह विनती करती है। “आपने कहा था कि आपको मेरी ज़रूरत है।”
“हाँ, मैं करता हूँ। लेकिन अब यह सही नहीं है।”
वह कुछ नहीं कहती और अंत में खोपड़ी को चमकाने में लग जाती है। मैं छत की ओर देखता हूँ, उस पर लटकती पीली रोशनी की ओर। मेरा मन चाहे कितना भी कठोर हो जाए, सर्दी मुझे चाहे कितना भी जकड़ ले, उसके साथ सोना मेरे बस की बात नहीं है। यह शहर है जो चाहता है कि मैं उसके साथ सोऊँ। इसी तरह वे मेरे दिमाग पर कब्ज़ा करना चाहते हैं।

वह तराशी हुई खोपड़ी मेरे सामने रख देती है, लेकिन मैं उसे नहीं उठाता। मैं मेज पर रखी उसकी उंगलियों को देख रहा हूँ। मैं उसकी उंगलियों से कुछ अर्थ समझने की कोशिश करता हूँ, लेकिन वे मुझे कुछ नहीं बतातीं।

“मुझे अपनी माँ के बारे में और बताओ,” मैंने कहा।

"मेरी माँ?"

“हां। कुछ भी।”

“खैर,” वह खोपड़ी पर हाथ रखते हुए कहने लगी, “ऐसा लगता है कि मेरी मां के प्रति मेरी भावनाएं दूसरों से अलग थीं। मुझे ठीक से याद नहीं है, बहुत समय बीत चुका है। ऐसा क्यों था, यह मुझे नहीं पता।”

"मन का यही हाल है। कुछ भी कभी बराबर नहीं होता। नदी की तरह, जैसे-जैसे वह बहती है, भूभाग के अनुसार उसका मार्ग बदलता रहता है।"

वह मुस्कुराती है। "यह गलत लगता है।"

“बात यही है,” मैंने कहा। “क्या तुम्हें अपनी माँ की याद नहीं आती?”

"मुझे नहीं पता।"

वह खोपड़ी को अलग-अलग कोणों से देखने के लिए उसे हिलाती है।

"क्या प्रश्न बहुत अस्पष्ट है?"

"हां, शायद।"

“क्या हम किसी और विषय पर बात करें?” मैंने सुझाव दिया। “आपकी माँ को किस तरह की चीजें पसंद थीं? क्या आपको याद है?”

“हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है। गर्म दिनों में हम टहलने जाते थे और जानवरों को देखते थे। कस्बे के लोग अक्सर टहलने नहीं जाते, आपकी तरह नहीं।”

“हाँ, मुझे चलना अच्छा लगता है,” मैंने कहा। “आपको और क्या याद है?”

"जब वह अपने कमरे में अकेली होती थी, तो मैं उसे बातें करते हुए सुनता था, हालांकि मुझे नहीं पता कि इससे उसे खुशी मिलती थी या नहीं।"

उसने किस तरह की बातें कहीं?

“मुझे याद नहीं है। वो आम बातचीत नहीं थी। मैं इसे कैसे समझाऊं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि माँ के लिए यह बात महत्वपूर्ण थी।”

"महत्त्व?"

“हाँ, उनकी बातों में एक लहजा था... माँ शब्दों को खींचकर बोलती थीं या उन्हें संक्षिप्त रूप में बोलती थीं। उनकी आवाज़ कभी ऊँची तो कभी नीची होती थी, हवा की तरह।”

मुझे अचानक एहसास हुआ, "यह गाना है।"

"क्या तुम इस तरह बात कर सकते हो?"

"गाना बोलना नहीं है। यह गीत है।"
“क्या तुम भी ऐसा कर सकते हो?” वह कहती है।
मैंने गहरी सांस ली लेकिन मुझे अपनी यादों में कोई संगीत नहीं मिला।
“मुझे माफ करना। मुझे एक भी गाना याद नहीं आ रहा,” मैंने कहा।
क्या इन गानों को वापस लाना असंभव है?
"एक संगीत वाद्ययंत्र शायद मदद कर सकता है। अगर मैं कुछ सुर बजा सकूँ, तो शायद मुझे कोई गीत सूझ जाए।"
“संगीत वाद्ययंत्र कैसा दिखता है?”
“यहां सैकड़ों वाद्य यंत्र हैं, सभी अलग-अलग आकार और प्रकार के। कुछ इतने बड़े हैं कि उन्हें उठाने के लिए चार लोगों की जरूरत पड़ती है; जबकि कुछ हथेली में ही समा जाते हैं। उनकी ध्वनियाँ भी अलग-अलग होती हैं।”
यह सब कहने के बाद, मुझे अपने भीतर यादों की एक कड़ी धीरे-धीरे खुलती हुई महसूस होने लगती है।
“संग्रहालय में शायद कोई वाद्य यंत्र हो। यह वास्तव में कोई संग्रह नहीं है, लेकिन इसमें अतीत की कई चीजें हैं। मैंने बस सरसरी नजर डाली है।”
“क्या हम देख सकते हैं?” मैंने पूछा। “लगता है कि मैं आज और स्वप्न-पाठ नहीं कर सकता।”
हम खोपड़ियों के ढेर के पास से गुज़रते हुए एक और गलियारे में पहुँचते हैं, जहाँ पुस्तकालय के प्रवेश द्वार जैसे धुंधले शीशे के दरवाज़े दिखाई देते हैं। वह अंदर जाती है, लाइट का स्विच ढूंढती है, और एक हल्की रोशनी उस तंग जगह में फैल जाती है। फर्श पर ट्रंक और सूटकेस बिखरे पड़े हैं, छोटे-बड़े सूटकेसों के ढेर लगे हैं। इतने ज़्यादा कि गिनना मुश्किल है, सभी धूल से ढके हैं। उनके बीच कुछ अजीबोगरीब चीज़ें भी हैं, या तो खुली पड़ी हैं या फिर बंद डिब्बों में। ये चीज़ें यहाँ क्यों हैं?
मैं एक डिब्बा खोलने के लिए घुटनों के बल बैठता हूँ। सफेद धूल का एक बादल उड़ उठता है। अंदर एक विचित्र मशीन रखी है, जिसके तिरछे फलक पर गोल चाबियों की कतारें हैं। यह स्पष्ट रूप से काफी इस्तेमाल की हुई है, इसके लोहे के ढांचे पर जगह-जगह से काला रंग उखड़ गया है।
"क्या आपको पता है कि यह क्या है?"
“नहीं,” वह मेरे ऊपर खड़ी होकर कहती है। “क्या यह कोई वाद्य यंत्र है?”
“नहीं, इससे संगीत नहीं बनता। इससे शब्द बनते हैं। मुझे लगता है कि इसे टाइपराइटर कहते थे।”
मैंने पुराने मैकेनिज़्म का ढक्कन बंद किया और अब बगल में रखी टोकरी की ओर बढ़ा। मैंने ढक्कन उठाया और उसमें चाकू-कांटे, कप, प्लेट और पीले पड़ चुके नैपकिन का पूरा सेट करीने से पैक किया हुआ पाया। एक बड़े चमड़े के सूटकेस में एक पुराना सूट, कमीज़ें, टाई, मोज़े और अंतर्वस्त्र रखे हैं। कपड़ों की परतों के बीच में कुछ टॉयलेटरीज़, गंदे साबुन से सना हुआ शेविंग ब्रश और एक गंधहीन शराब की बोतल रखी है।

हर बैग खोलने पर मुझे एक जैसी ही बेस्वाद चीज़ें मिलती हैं। कपड़े और कुछ इधर-उधर की चीज़ें, सब अचानक की यात्रा के लिए पैक की गई लगती हैं। फिर भी हर चीज़ में कोई खास पहचान नहीं दिखती, हर चीज़ किसी न किसी तरह से साधारण और बेजान लगती है। कपड़े न तो अच्छी तरह सिले हुए हैं, न ही फटे-पुराने पुराने कपड़े। उनमें समय, मौसम और लिंग के हिसाब से अंतर दिखता है, उम्र के हिसाब से उनकी सिलाई भी अलग-अलग है, फिर भी कुछ भी खास नहीं है। यहाँ तक कि उनकी गंध भी एक जैसी है। ऐसा लगता है जैसे किसी ने बड़ी मेहनत से हर चीज़ से उसकी व्यक्तिगत पहचान मिटा दी हो। बस बेजान अवशेष ही बचे हैं।

पांच-छह सूटकेसों की जांच करने के बाद, मैंने प्रयास छोड़ दिया। यदि कस्बे में कोई संगीत वाद्ययंत्र मिलने हैं, तो वे यहाँ नहीं होंगे।

“चलो चलते हैं,” मैंने कहा। “धूल से मेरी आँखों में खुजली हो रही है।”

"क्या आपको संगीत वाद्ययंत्र न मिलने से निराशा हुई?"

“हम कहीं और देखने की कोशिश कर सकते हैं,” मैंने कहा।

मैंने उसे शुभ रात्रि कहा और अकेले ही पश्चिमी पहाड़ी पर चढ़ गया। सर्दियों की हवा पेड़ों के बीच से होकर गुज़र रही थी, मानो मेरी पीठ पर धक्के मार रही हो। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो चांद क्लॉकटावर के ऊपर आधा छिपा हुआ था, आसमान घने बादलों से घिरा हुआ था। चांद की रोशनी से भी कम रोशनी में नदी तारकोल की तरह काली दिख रही थी।

मुझे संग्रह कक्ष में कपड़ों के बीच एक गर्म स्कार्फ याद है। उसमें कई जगह कीड़े के छेद हैं, लेकिन कई बार लपेटने से ठंड से बचाव होगा। मुझे पूछना होगा कि क्या उन सूटकेसों का कोई मालिक है, और क्या मैं उनके अंदर रखी चीज़ों का इस्तेमाल कर सकती हूँ। बिना स्कार्फ के हवा में खड़े-खड़े मैं कांप रही हूँ; मेरे कान ऐसे चुभ रहे हैं जैसे किसी ने काट दिए हों।

मैं कल द्वारपाल से मिलने जाऊंगा। मुझे अपनी परछाई भी देखनी है।

मैं कस्बे की ओर मुड़ता हूँ और सरकारी आवासों की ओर जमी हुई ढलान पर अपने कदम फिर से बढ़ा लेता हूँ।

23

छेद, जोंक, टावर

“यह भूकंप नहीं है,” लड़की कांपते हुए बोली। “यह उससे कहीं ज्यादा भयानक है।”

"कैसा?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बस अपनी सांस रोककर दुख में सिर हिलाया।

“अभी स्पष्टीकरण देने का समय नहीं है। भागो! यही एक तरीका है जिससे हम बच सकते हैं। भले ही तुम्हारे टांके खुल जाएं, लेकिन मरने से तो बेहतर है।”

नायलॉन की रस्सी से बंधे हुए, हम पूरी रफ्तार से सीधे आगे बढ़े। उसके हाथ में लगी बत्ती तेज़ी से हिल रही थी, दीवारों के बीच एक टेढ़ी-मेढ़ी भूकंपीय आकृति बना रही थी। मेरा बैग मेरी पीठ पर उछल रहा था। मैं उसे फेंक देना चाहता था, लेकिन समय नहीं था। अपनी गति धीमी करने का कोई रास्ता नहीं था; मैं रस्सी से बंधा हुआ था।

जैसे-जैसे हम दूर जाते गए, गड़गड़ाहट तेज़ होती गई। ऐसा लग रहा था मानो हम सीधे उसके स्रोत की ओर बढ़ रहे हों। जो पहले ज़मीन के नीचे एक हल्की सी कंपन थी, अब वह कर्कश, फुफकारती, बुदबुदाती, खुरदरी सी आवाज़ में बदल गई थी—पता नहीं और क्या कहूँ।

दौड़ते समय मुझे घबराहट हो रही थी—मेरा शरीर दूसरी दिशा में जाना चाहता था—लेकिन वह आगे चल रही थी और मैं उसके पीछे-पीछे। सौभाग्य से, रास्ते में कोई मोड़ या बाधा नहीं थी। खाई बिल्कुल सपाट थी। कोई गड्ढे या पत्थर नहीं थे जिनका डर हो।

फिर तेज चरमराहट और चटकने की आवाज़ें आईं, मानो बड़े-बड़े पत्थर ज़बरदस्त बल से आपस में रगड़ रहे हों। चारों ओर शोर ही शोर था; अचानक सन्नाटा छा गया। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। फिर चारों ओर एक अजीब सी फुफकार सुनाई देने लगी, मानो हज़ारों बूढ़े लोग अपने दाँतों के बीच से हवा खींच रहे हों। अंधेरे में एक कर्कश सीटी की आवाज़ गूँज उठी, मानो हज़ारों भूमिगत कीड़े एक ही उद्दीपन से भिनभिना रहे हों। यह आवाज़ हमारा भला नहीं चाहती थी।

उसी क्षण, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि वह आवाज़ हमें बुला रही थी, मानो कोई दैत्य अपने शिकार की प्रतीक्षा कर रहा हो। बाहर जो भी भयानक चीज़ थी, उसे पता था कि हम आ रहे हैं। वह क्या थी, मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। हम अपनी कल्पना को बहुत पीछे छोड़ आए थे।

हम दौड़ते रहे—कितनी देर तक? समय का मेरा बोध स्तब्ध रह गया था। मैं दौड़ता रहा, दौड़ता रहा, लेकिन थकान महसूस नहीं हुई, मेरे पेट का घाव मेरी चेतना के एक दूर कोने में चला गया था। मेरी कोहनियाँ अकड़ी

हुई लग रही थीं, बस यही एक एहसास था। मुझे शायद ही पता था कि मैं दौड़ रहा हूँ। मेरे पैर हवा में उछल रहे थे। हवा का एक घना झोंका मुझे पीछे से धकेल रहा था।

मैं मानो गति में कविता की तरह था जब उसने चेतावनी भरी चीख मारी, जो मैंने सुनी ही नहीं। मैं उससे टकरा गया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। मैं आगे बढ़ता रहा और उसके ऊपर से एक चाप बनाते हुए गिर पड़ा। मुझे अपने टकराने की आवाज़ भी नहीं सुनाई दी। जैसे ही मेरा सिर कठोर चट्टान से टकराया, मेरे मन में एक विचार आया: मानो मुझसे आवाज़ छीन ली गई हो। या फिर विकास मुझ पर हावी हो रहा था?

इसके बाद—या यूँ कहें कि इसके साथ ही—मेरे मस्तिष्क के अग्र भाग में असहनीय दर्द हुआ। मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। मुझे लगा जैसे मुझे सिर में चोट लगी हो। क्या मेरी खोपड़ी टूट गई थी? शायद मेरा दिमाग सुन्न हो गया था, और यह दर्द मेरे मस्तिष्क के भीतरी हिस्से में फैल रहा था।

वह सब पल भर में बीत गया। मैं जीवित था। मैं जीवित था और साँस ले रहा था। और साँस लेते हुए, मुझे दर्द महसूस हो रहा था। मुझे अपने गालों पर आँसू महसूस हो रहे थे, जो मेरे मुँह के कोने से बहकर चट्टान पर गिर रहे थे।

मुझे लगा कि मैं बेहोश हो जाऊंगी, लेकिन मैंने दर्द को अंधेरे से जोड़ दिया। मैं कुछ कर रही थी। हाँ, मैं भाग रही थी। मैं किसी चीज़ से भाग रही थी। मैं गिर गई। मेरी यादों के धुंधले किनारों में, मैंने घुटनों के बल उठने की कोशिश की।

जैसे-जैसे मेरी चेतना जुड़ती गई, मेरी नज़र नायलॉन की रस्सी पर पड़ी। मैं तूफ़ानी हवाओं से रस्सी से उड़कर नीचे गिरे हुए कपड़े के एक टुकड़े की तरह था। मैंने अपनी परिस्थितियों को तरह-तरह के सुविधाजनक उपमाओं में ढालने की आदत विकसित कर ली थी।

अगली बात जो मुझे समझ में आई, वो ये थी कि कमर के नीचे का मेरा शरीर गायब था। मैंने स्थिति का दोबारा जायजा लिया। मेरा निचला हिस्सा तो वहीं था, बस उसमें कुछ महसूस नहीं हो रहा था। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और ध्यान केंद्रित किया। कमर के नीचे के हिस्से में संवेदना जगाने की कोशिश मुझे इरेक्शन पाने की कोशिश की याद दिला रही थी। मानो किसी खाली जगह में ऊर्जा डालने की कोशिश कर रहा हो।

तो मैं यहाँ बैठा था, अपनी उस मिलनसार लाइब्रेरियन के बारे में सोच रहा था जिसे गैस्ट्रिक डाइलेशन हुआ था और बेडरूम में जो सारा हंगामा हुआ था। अब मुझे समझ आया कि यहीं से सब कुछ गड़बड़ होना शुरू हुआ था। फिर भी, लिंग को खड़ा करना ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं है। यह बात मुझे स्टेंडहल की 'चार्टरहाउस ऑफ पर्मा' पढ़ते समय कई साल पहले समझ में आ गई थी।

मेरा निचला हिस्सा किसी अधर में अटका हुआ सा लग रहा था। या फिर किसी खाली जगह पर लटका हुआ था या... चट्टान के किनारे से लटक रहा था। सिर्फ मेरा ऊपरी हिस्सा ही मुझे गिरने से बचा रहा था। इसीलिए मेरे हाथ रस्सी को इतनी बेताबी से पकड़े हुए थे।

मैंने तेज रोशनी में आंखें खोलीं। मोटी लड़की मेरे चेहरे पर टॉर्च की रोशनी डाल रही थी। मैंने रस्सी को कसकर पकड़ा और संघर्ष करते हुए अपने शरीर के निचले हिस्से को खींचकर ठोस चट्टान पर चढ़ने की कोशिश की।

“जल्दी करो!” लड़की चिल्लाई, “वरना हम दोनों मारे जाएंगे!”

मेरा शरीर बेजान सा हो गया था, ज़मीन खून से लथपथ और फिसलन भरी थी। मेरा घाव शायद फट गया था। मैंने रस्सी छोड़ दी और दर्द से कराहते हुए अपने हाथों के सहारे ऊपर उठने की कोशिश की। मेरी बेल्ट चट्टान के किनारे पर अटक गई, जबकि नायलॉन की रस्सी मुझे आगे खींच रही थी।

“खींचो मत!” मैंने आती हुई रोशनी की ओर चिल्लाकर कहा। “मैं खुद संभाल लूंगी। रस्सी को मत छुओ।”

"तुम ठीक हो?"

"ठीक है, काफी है।"

बेल्ट अभी भी चट्टान के किनारे पर फंसी हुई थी, मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर एक पैर ऊपर उठाया।

“मुझे खेद है कि मैं आपकी मदद नहीं कर सकी,” उसने कहा। “मैं चट्टानों को पकड़ने की कोशिश कर रही थी ताकि हम दोनों किनारे से नीचे न गिर जाएं।”

मैंने कहा, "मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन आपने मुझे इस छेद के बारे में क्यों नहीं बताया?"

“समय नहीं था। इसीलिए मैंने तुम्हें रुकने के लिए चिल्लाकर कहा।”

मुझे सुनाई नहीं दे रहा था।

“बहस न करें। हम लगभग पहुँच चुके हैं। हमें यहाँ से निकलना होगा। अगर हम नहीं निकले, तो हमारा खून चूस लिया जाएगा।”

"खून?"

उसने टॉर्च की रोशनी छेद में डाली। वह बिल्कुल गोल था, लगभग एक मीटर व्यास का। फिर उसने रोशनी को चारों ओर घुमाया, जिससे दूर-दूर तक एक जैसे छेदों की कतारें दिखाई देने लगीं। हम मधुमक्खी के छत्ते पर चल रहे थे।

बस फर्क इतना था कि ज़मीन हिलती हुई रेत जैसी लग रही थी। सिर पर चोट लगने के बाद मुझे लगा जैसे मेरी आँखों को धोखा हो रहा है। लेकिन जब मैंने अपने हाथों को रोशनी में देखा, तो उनमें कंपन का कोई खास निशान नहीं दिखा। जिसका मतलब था कि ज़मीन सचमुच हिल रही थी।

“जोंकें!” वह चीखी। “लाखों जोंकें छेदों से बाहर निकल रही हैं। अगर हम यहाँ रुके रहे, तो वे हमारा सारा रस चूस लेंगी।”

उफ्फ! मुझे उल्टी जैसा महसूस हुआ। क्या भूकंप से भी बदतर यही होता है?

नहीं। ये जोंक तो बस शुरुआत है। असली अविश्वसनीय हिस्सा तो बाद में आएगा।

अभी भी एक साथ बंधे हुए, हम चिपचिपी सतह पर निकल पड़े, हर कदम पर जोंकों को कुचलते हुए। इससे मुझे अनजाने में ही बेचैनी होने लगी।

"फिसलना मत। अगर तुम गड्ढे में गिर गए, तो तुम्हारा अंत हो जाएगा।"
वह मेरी कोहनी से लिपट गई। मैंने उसकी जैकेट का पिछला हिस्सा पकड़ लिया। जो लोग इस तरह की चीजों के आदी नहीं हैं, उनके लिए अंधेरे में तीस सेंटीमीटर चौड़े चिकने पत्थरों पर रेंगते हुए जोंकों पर पैर रखना एक अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। कुचली हुई जोंकों से चिपचिपा, जेली जैसा गाढ़ा पेस्ट बन गया था।
ठोकर लगने पर मुझ पर जोंकें चिपक गई होंगी। मुझे अपनी गर्दन और कानों पर कुछ जोंकों का खून चूसते हुए महसूस हुआ। मैंने इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि मैं इसके बारे में सोच भी नहीं सकता था। साथ ही, मेरे हाथ व्यस्त थे। सच कहूँ तो, मेरे बाएँ हाथ में टॉर्च थी और दाएँ हाथ में वो थी। मैं रुककर उन जोंकों को खींचकर हटा नहीं सकता था।
जब भी मैंने टॉर्च की रोशनी जमीन पर डाली, मुझे जोंकों का एक घिनौना झुंड दिखाई दिया। वे लगातार आते ही जा रहे थे।
मुझे पूरा यकीन है कि इंकलिंग्स अपने बलि के शिकारों को इन्हीं गड्ढों में फेंकते होंगे।
“तुम बहुत बुद्धिमान हो,” उसने कहा।
“लेकिन मैं नहीं हूँ,” मैंने जवाब दिया।
“दादाजी कहते हैं कि ये जोंकें उन मछलियों की अनुयायी हैं। इसलिए इंकलिंग्स भी जोंकों को चढ़ावा चढ़ाते हैं। ताजा मांस, गर्म खून, सतह की दुनिया से खींचे गए इंसान।”
अंधेरे छेदों से हांफने जैसी आवाजें आती हुई प्रतीत हो रही थीं। नीचे से आती हुई हवा के तेज झोंके, मानो स्पर्शक हों, हमें घने, कांटेदार रात के जंगल में पूरी तरह से घेर रहे थे।
“पानी लगभग आ ही गया है,” उसने घोषणा की। “जोंकें तो बस शुरुआत थीं। उनके हटते ही हमें पानी मिल जाएगा। यह छेदों से तेज़ी से ऊपर आता है। पानी बढ़ने से पहले हमें वेदी तक पहुंचना होगा।”
“तुम्हें ये सब पता था? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?”
“क्योंकि मुझे पता नहीं था, ठीक है? ऐसा नहीं है कि पानी का स्तर हर दिन बढ़ता है। यह महीने में एक या दो बार ही होता है। मुझे कैसे पता चलता कि आज भी उन्हीं दिनों में से एक होगा?”
छेदों का कोई अंत नहीं था। मेरे जूते जोंकों के अंदरूनी हिस्सों से इतने चिपचिपे हो गए थे कि मैं सीधा चल भी नहीं पा रहा था। अजीब बात है।
“बस थोड़ा और,” उसने मुझे आश्वस्त किया। “बस थोड़ा और, और हम सुरक्षित हो जाएंगे।”
बोलना बहुत मुश्किल था। मैंने सिर हिलाकर सहमति दी, जो घोर अंधेरे में बिल्कुल अर्थहीन थी।
“क्या तुम मुझे सुन पा रहे हो? तुम ठीक हो?” उसने पुकार कर पूछा।
मुझे उल्टी जैसा महसूस हो रहा है, लेकिन मैं ठीक हूँ।

मैं आमतौर पर इतना डरपोक नहीं हूँ, लेकिन अँधेरे, थकान और नींद की कमी के बीच चिपके हुए, कुचले हुए और चिपचिपे जोंकों का ढेर मेरी सहनशीलता की परीक्षा ले रहा था। पेट का रस खट्टी-मीठी मिठास लिए मेरे गले में अटक गया।

मैंने घड़ी देखने की हिम्मत नहीं की। आसमान के ख्याल मन में उमड़ रहे थे। सुबह, पेड़, गर्म कॉफी, अखबार... मुझे रोशनी चाहिए थी, कोई भी रोशनी, असली रोशनी।

"एक बार हम इस मुसीबत से निकल गए, तो तुम जितना चाहो उल्टी कर सकते हो। बस हिम्मत रखो।" उसने मेरी कोहनी पकड़ ली।

"मैं नहीं। आप मुझे उल्टी करते हुए नहीं देखेंगे। मुझे बस ऐसा महसूस होता है," मैंने मन ही मन कहा।

"ऐसा सबके साथ होता है। मुझे पता है यह भयानक है, लेकिन इसका अंत कभी न कभी तो होना ही है। मुझ पर भरोसा कीजिए," उसने अटूट आशावाद के साथ कहा।

नहीं, ये छेद तो कभी खत्म ही नहीं होंगे। और मैं कभी वो सुबह का अखबार नहीं पढ़ पाऊँगी। ताज़ी स्याही उंगलियों पर लग जाती है। विज्ञापनों से भरा हुआ। प्रधानमंत्री के उठने का समय, शेयर बाजार की रिपोर्ट, पूरे परिवार की आत्महत्याएँ, चवान-मुशी की रेसिपी, स्कर्ट की लंबाई, रिकॉर्ड एल्बम की समीक्षाएँ, रियल एस्टेट, ...

बस फर्क इतना था कि मैं अखबार का सब्सक्राइबर नहीं था। मैंने तीन साल पहले अखबार पढ़ना छोड़ दिया था। क्यों? मुझे दुनिया से कटा हुआ महसूस होता था। दिमाग में संख्याओं का हिसाब-किताब करना ही दुनिया से मेरा एकमात्र जुड़ाव था। मैं अपना ज़्यादातर खाली समय अकेले बिताता था, पुरानी नॉवेल पढ़ता था, वीडियो पर पुरानी हॉलीवुड फिल्में देखता था और शराब पीता था। मुझे अखबार की कोई ज़रूरत नहीं थी।

फिर भी, इस अंधकारमय संसार में प्रकाश से वंचित होकर, मुझे सुबह के अखबार की तीव्र इच्छा होने लगी। धूप में बैठकर उसे बिल्ली की तरह दूध के कटोरे से चाट-चाटकर पढ़ने की, पहले पन्ने से आखिरी पन्ने तक, छपे हुए हर शब्द को पढ़ने की।

"वेदी वहीं है," उसने अचानक कहा। "दस मीटर और आगे।"

ठीक उसी क्षण, मानो उसके शब्दों को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए, छेदों से निकलती हवा की सरसराहट रुक गई, मानो एक ही झटके में सब कुछ थम गया हो। कोई पूर्व सूचना नहीं, कोई गूंज नहीं, सारा शोरगुल गायब हो गया। और उसके साथ ही पूरा श्रवण क्षेत्र, और मेरा संतुलन भी।

पूरी तरह सन्नाटा छा गया। आवाज़ बंद होते ही सब कुछ थम गया। हम दोनों अपनी जगह पर जम गए, कान लगाकर सुनने की कोशिश कर रहे थे... क्या? मैंने घबराकर निगल लिया, लेकिन आवाज़ इतनी कर्कश थी जैसे किसी टर्नटेबल के किनारे पर सुई टकरा रही हो।

"पानी उतर गया है?" मैंने उम्मीद से पूछा।

"पानी अब उफान मारने ही वाला है," उसने कहा। "वह सारी आवाज़ पानी के स्तर से हवा के बाहर निकलने की थी। अब सारी हवा बाहर निकल चुकी है। असली हलचल इसके बाद शुरू होगी।"

आखिरी कुछ गड्ढे पार करते समय उसने मेरा हाथ थाम लिया। आखिरकार हम सबसे मुश्किल हिस्से से बाहर निकल आए थे। ऐसा लग रहा था जैसे जोंकें दूसरी दिशा में भाग गई हों। अगर अब हम डूब भी जाते, तो भी जोंकों के गड्ढे में धीरे-धीरे रेंगते हुए मरने से तो बेहतर ही था।

मैंने अपने गले से उस चिपचिपे पदार्थ को हटाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसने मुझे रोक दिया।

“नहीं! तुम्हारी त्वचा छिल जाएगी। कुछ जोंक किसी को नुकसान नहीं पहुंचातीं,” उसने कहा। “खैर, हमें जल्दी से टावर पर चढ़ना है। क्या तुम्हें स्कूल में जोंक के बारे में कभी नहीं पढ़ाया गया?”

“नहीं,” मैंने स्वीकार किया। मैं तो बिल्कुल मूर्ख हूँ, जैसे किसी तैरते हुए मूँढोए के नीचे लंगर।

थोड़ी दूर आगे जाकर उसने अपनी टॉर्च की रोशनी हमारे सामने खड़ी उस "मीनार" पर डाली। वह एक चिकना, सपाट बेलनाकार ढांचा था जो किसी प्रकाशस्तंभ की तरह दिखता था, मानो आधार से ऊपर की ओर पतला होता जा रहा हो। मैं उसकी ऊंचाई तो नहीं बता सकता था, लेकिन वह बहुत ऊंची थी। बिना कुछ कहे वह "सीढ़ियों" पर चढ़ने लगी। ज़ाहिर है, मुझे भी उसके पीछे-पीछे चलना पड़ा।

कम रोशनी में थोड़ी दूरी से देखने पर यह मीनार सदियों में निर्मित एक भव्य स्मारक प्रतीत होती थी, लेकिन पास से देखने पर पता चलता था कि यह एक प्राकृतिक चट्टानी संरचना थी। और वह भी एक भद्दा सा स्टैलेग्माइट। इस दिखने में साधारण से दिखने वाले स्तंभ पर तराशी गई घुमावदार सीढ़ियाँ भी असल में सीढ़ियाँ नहीं थीं। असमान और अनियमित, एक पैर रखने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त चौड़ी, और कहीं-कहीं पैर रखने की जगह ही गायब थी। हम चढ़ते-उतरते गिरे और चट्टान से चिपक गए।

छत्तीस कदम चलने के बाद—मैं हमेशा कदम गिनने की आदत रखता हूँ—हमें एक ज़ोरदार थप्पड़ की आवाज़ सुनाई दी, मानो किसी ने भुने हुए बीफ़ का एक बड़ा टुकड़ा पत्थर की दीवार पर फेंक दिया हो। उसके बाद एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। कुछ होने वाला था।

वो आ गया। सैकड़ों जोंक से भरे छेदों से पानी की तेज़ धारा उमड़ पड़ी। टन भर पानी अंधेरे में बहता चला गया। अगले ही पल, मैं सिनेमा हॉल में बैठा एक बच्चा था, जो किसी बांध के उद्घाटन की न्यूज़रील देख रहा था। बाढ़ के द्वार खुल गए, पानी का एक विशाल स्तंभ स्क्रीन से उछल पड़ा। हेलमेट पहने राज्यपाल ने बटन दबाकर उद्घाटन का जिम्मा उठाया। पानी की फुहारों के बादल उमड़ पड़े, एक कान फाड़ देने वाली गर्जना हुई।

“तुम नीचे क्या कर रहे हो?” वह गुस्से से बोली।

“तुम्हें क्या लगता है पानी कितना ऊपर तक चढ़ेगा?” मैं नींद से जाग उठा और ऊपर की ओर चिल्लाया।

“ऊंचाई पर,” उसने तीखे लहजे में जवाब दिया। “बस इतना ही पक्का है कि पानी ऊपर तक नहीं पहुंचेगा।”

“अभी कितने कदम और बाकी हैं?”

“बहुत ज़्यादा।” एक और बढ़िया जवाब।

हम चढ़ते रहे। उसकी टॉर्च कंधे पर लगी पट्टी से बुरी तरह हिल रही थी। मैंने दो सौ कदम गिनने के बाद गिनती छोड़ दी। उग्र जलप्रपात की आवाज़ धीमी होकर एक भयंकर भंवर में बदल गई और फिर एक तेज़

गड़गड़ाहट में। इसमें कोई शक नहीं था कि पानी का स्तर बढ़ रहा था। किसी भी क्षण पानी मेरी एड़ियों को छू सकता था।

मैंने उससे पूछा, "क्या हम तैर नहीं सकते?" उसने कहा, "हम तैरकर ऊपर आ सकते हैं। यह इससे कहीं ज्यादा आसान होगा।"

“नहीं,” उसने फैसला सुनाया। “पानी के नीचे एक भंवर है। अगर आप उसकी धारा में फंस गए, तो आप ज्यादा देर तक तैर नहीं पाएंगे।”

इसका मतलब था कि यही एकमात्र रास्ता था। इन बदहाल सीढ़ियों पर घिसटते हुए चढ़ना, यह जाने बिना कि पानी कब हम तक पहुँच जाएगा। मैं इससे तंग आ चुका था।

न्यूज़रील पर वापस आते हैं, स्क्रीन पर पानी की धाराएँ तेज़ी से निकल रही हैं, स्पिलवे नीचे बड़े कुंड में गिर रहा है। दर्जनों कैमरा एंगल: ऊपर, नीचे, सामने से, इस तरफ, उस तरफ, लंबा, मध्यम, गिरते पानी पर ज़ूम इन क्लोज़-अप। कंक्रीट के विशाल विस्तार पर पानी की एक बड़ी सी परछाई पड़ रही है। मैं देखता रहता हूँ, और वह परछाई धीरे-धीरे मेरी परछाई बन जाती है। मैं वहीं बैठा रहता हूँ, जैसे स्तब्ध। मुझे पता है कि बांध के घुमाव पर मेरी ही परछाई पड़ रही है, लेकिन दर्शक के रूप में मुझे समझ नहीं आ रहा कि कैसे प्रतिक्रिया दूं। मैं एक दस साल का लड़का हूँ, आँखें चौड़ी किए और कुछ करने से डर रहा हूँ। क्या मुझे स्क्रीन से अपनी परछाई वापस ले लेनी चाहिए? क्या मुझे प्रोजेक्शन रूम में जाकर फिल्म चुरा लेनी चाहिए? मैं कुछ नहीं करता।

मेरी परछाई स्क्रीन पर बनी रहती है, दूर से आती एक आकृति, चिलचिलाती गर्मी में लड़खड़ाती हुई। परछाई बोल नहीं सकती, सांकेतिक भाषा नहीं जानती, असहाय है, बिल्कुल मेरी तरह। परछाई जानती है कि मैं यहाँ बैठा देख रहा हूँ। परछाई मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रही है।

दर्शकों में से किसी को भी यह एहसास नहीं होता कि वह परछाई असल में मेरी ही है। मेरे बगल में बैठे मेरे बड़े भाई को भी इसका पता नहीं चलता। अगर उन्हें पता होता, तो वो मेरे कान खींचने का मौका नहीं छोड़ते। वो ऐसे ही भाई हैं।

और मैं यह भी नहीं जताता कि यह मेरी परछाई है। वैसे भी कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करेगा।

तुरंत ही बांध वाला दृश्य समाप्त होता है और समाचार एक राजा के राज्याभिषेक में बदल जाता है। सुंदर मुकुटों से सजे घोड़ों का एक दल एक पत्थर के चौक पर परीकथाओं जैसी रथ यात्रा को खींच रहा है। मैं जुलूस में अपनी परछाईं ढूंढने की कोशिश करता हूं, लेकिन मुझे केवल घोड़ों और रथ की परछाईं ही दिखाई देती हैं।

वह स्मृति वहीं समाप्त हो गई। हालाँकि मुझे यकीन नहीं था कि यह सब सचमुच मेरे साथ हुआ था। मुझे कुछ भी याद नहीं था। शायद यह अंधेरे में पानी की आवाज़ से उत्पन्न एक मतिभ्रम था, एक विकट परिस्थिति में उभरा हुआ दिवास्वप्न। लेकिन वह छवि बहुत स्पष्ट थी। उसमें स्मृति की महक थी, वास्तविक स्मृति की। यह मेरे साथ हुआ था, यह अचानक मेरे सामने आ गया।

इस क्षण तक ऐसा प्रतीत हो रहा था कि किसी हस्तक्षेप करने वाली शक्ति द्वारा मेरी चेतना के कीचड़ से स्मृति को अलग कर दिया गया था।
क्या कोई हस्तक्षेपकारी शक्ति है?
या फिर कोई ऑपरेशन, जैसे मेरे दिमाग पर किया गया ऑपरेशन जिससे मुझे चलने-फिरने की क्षमता मिली। उन्होंने मेरी यादों को मेरी चेतना से बाहर धकेल दिया था। उन्होंने मेरी यादें मुझसे चुरा ली थीं!
किसी को भी यह अधिकार नहीं था। किसी को भी नहीं! मेरी यादें मेरी थीं। यादें चुराना समय चुराने जैसा था। मैं इतना क्रोधित हुआ कि मेरा सारा डर खत्म हो गया। मुझे परवाह नहीं थी कि क्या होगा। मैं जीना चाहता हूँ! मैंने खुद से कहा। मैं जिऊंगा। मैं इस पागलपन भरी दुनिया से बाहर निकलूंगा और अपनी चुराई हुई यादें वापस पाकर जिऊंगा। दुनिया के अंत को भूल जाओ, मैं अपने पूरे अस्तित्व को वापस पाने के लिए तैयार था।
"एक रस्सी!" उसने अचानक चिल्लाकर कहा।
"रस्सी?"
“जल्दी से ऊपर आ जाओ। नीचे एक रस्सी लटक रही है।”
मैं जल्दी से अगले तीन-चार कदम चढ़कर उसके पास पहुँचा और चट्टान की सतह को हाथ से टटोला। पक्का, वहाँ एक रस्सी थी, पर्वतारोहण की एक लंबी डोरी, जिसका सिरा मेरे सीने तक पहुँच रहा था। मैंने उसकी मजबूती परखने के लिए उसे खींचा। ऐसा लग रहा था कि वह दूसरे सिरे पर बंधी हुई है।
“ये तो दादाजी का ही काम होगा,” उसने हैरानी से कहा। “दादाजी ने हमारे लिए संदेश छोड़ा है।”
"बेहतर शुरुआत के लिए, चलिए एक बार और चक्कर लगा लेते हैं।"
हर कदम पर सावधानी बरतना झंझट भरा था, खासकर मेरे टेनिस शूज़ में, फिर भी हमने टावर का एक और चक्कर लगाया और रस्सी को उसी जगह लटकते हुए पाया। हर तीस सेंटीमीटर के आसपास पैर रखने के लिए गांठें बनी हुई थीं। उम्मीद है कि वे बिल्कुल ऊपर तक गई होंगी।
“ये तो दादाजी ही हैं। ऐसे छोटे-छोटे विवरणों का ख्याल सिर्फ वही रख सकते हैं।”
मैंने कहा, "मैं पूछूंगा। क्या तुम रस्सी पर चढ़ सकते हो?"
“बेशक,” उसने जवाब दिया। “मैं बचपन से ही पर्वतारोही रही हूँ। क्या मैंने तुम्हें बताया नहीं था?”
“ठीक है, तो पहले आप,” मैंने कहा। “जब आप चोटी पर पहुँच जाएँ तो मुझे अपनी लाइट से एक संकेत दें। फिर मैं अपनी चढ़ाई शुरू करूँगा।”
लेकिन तब तक पानी यहाँ तक पहुँच चुका होगा। बेहतर होगा कि हम सब एक साथ चढ़ें।
“नहीं, एक रस्सी पर एक ही व्यक्ति। यह पर्वतारोहण का नियम है। रस्सी की मजबूती का भी ध्यान रखना होता है, साथ ही दो लोगों के लिए एक ही रस्सी पर चढ़ना अधिक समय लेता है। और अगर पानी इतना ऊपर तक भी चढ़ जाए, तो जब तक मैं रस्सी को पकड़े रहूंगा, मैं सुरक्षित रहूंगा।”
“तुम जितनी दिखती हो उससे कहीं ज्यादा बहादुर हो,” उसने कहा।

वह बिना कुछ कहे रस्सी पर चढ़ गई। मैंने दोनों हाथों से चट्टानों को पकड़ लिया और नशे में धुत आत्मा की तरह उसे झूलते हुए देखता रहा।

मुझे व्हिस्की का एक घूंट पीने की बहुत इच्छा हो रही थी, लेकिन वह मेरे बैग में थी और बोतल निकालने के लिए मुड़ने का विचार मुझे समझदारी भरा नहीं लगा। तो मैंने सोचा कि क्यों न कुछ और पी लूँ। एक शांत बार, एमजेक्यू का वेंडोम धीमी आवाज़ में बज रहा था, मेवों का एक कटोरा, और बर्फ के साथ डबल व्हिस्की। गिलास काउंटर पर रखा था, एक पल के लिए बिना छुए, बस उसे देखा जा रहा था। व्हिस्की, एक खूबसूरत औरत की तरह, प्रशंसा की मांग करती है। पहले आप उसे निहारते हैं, फिर पीने का समय आता है।

ये सब देखकर मुझे याद आया कि मेरे पास सही कपड़े नहीं थे। उन दो गुंडों ने ये काम कर दिया था। अब क्या करूँ? कुछ नए कपड़े ले लूँ। एक गहरे नीले रंग का ट्वीड सूट। तीन बटन, कंधे सीधे, नीचे से पतला नहीं, पुराने ज़माने की कटिंग। जॉर्ज पेपर्ड का साठ के दशक का डिज़ाइन। शर्ट हल्के नीले रंग की, ऑक्सफ़ोर्ड ब्रॉडक्लॉथ, सामान्य कॉलर वाली। टाई दो रंगों की धारीदार, हल्के लाल रंग की, जिसमें नीले-हरे रंग का धुंधलापन था। और पेय, स्कॉटलैंड का सबसे बढ़िया।

गिलास को होठों तक लाते ही मैंने देखा कि पानी की आवाज़ बंद हो गई थी। क्या इसका मतलब यह था कि छेदों से पानी का बहाव रुक गया था? या फिर पानी का स्तर इतना बढ़ गया था कि आवाज़ दब गई थी?

मुझे अब कोई परवाह नहीं थी। पानी चाहे जितना बढ़ जाए। मैं ज़िंदा रहने के लिए दृढ़ थी। अपनी यादें वापस पाने के लिए। अब मुझे कोई बहका नहीं सकता था। मैं ज़ोर से चिल्लाकर कहूँगी, मैं बहुत गुस्से में हूँ! अब कोई मुझे परेशान नहीं कर सकता! क्या तुम सुन रहे हो!

वैसे तो अंधेरे में किसी चट्टान से चिपके हुए चिल्लाने से कोई खास फायदा नहीं होता। मैंने ये ऐलान न करने का फैसला किया और गर्दन उठाकर ऊपर देखा। वो गोल-मटोल लड़की डिपार्टमेंट स्टोर की तीन-चार मंजिलें चढ़ चुकी थी। औरतों के कपड़ों या किमोनो वाले सेक्शन में। आखिर ये पहाड़ कितना ऊंचा था? उसके दादाजी किसी शांत, कम भव्य जगह पर हमारा इंतज़ार क्यों नहीं कर रहे थे?

अंत में, उसने अपनी टॉर्च से इशारा किया कि वह चोटी पर पहुँच गई है। मैंने भी इशारा किया, फिर टॉर्च नीचे की ओर करके देखा कि पानी कितना ऊपर चढ़ गया है। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

मेरी घड़ी में सुबह के चार बजकर बारह मिनट हो रहे थे। अभी भोर नहीं हुई थी। अखबार अभी तक नहीं आए थे, ट्रेनें भी नहीं चल रही थीं, धरती पर रहने वाले लोग गहरी नींद में सो रहे थे, इन सब बातों से बेखबर। मैंने दोनों हाथों से रस्सी को कसकर खींचा, एक गहरी सांस ली, और फिर धीरे-धीरे चढ़ाई शुरू की।

24

छाया मैदान

तीन दिनों का सुहावना मौसम समाप्त हो गया है। जागते ही मुझे इसका एहसास हो जाता है। मैं बिना किसी परेशानी के अपनी आँखें खोलता हूँ।

सूर्य का प्रकाश और ताप गायब हो गया है, आकाश घने बादलों से ढका हुआ है। पेड़ ठंडी, धुंधली हवा में टेढ़ी-मेढ़ी, पत्तीविहीन शाखाएँ फैलाए खड़े हैं, मानो आकाश में दरारें हों। निश्चित रूप से बर्फ गिरेगी, फिर भी हवा थम सी गई है।

“आज बर्फ नहीं गिरेगी,” कर्नल ने मुझे बताया। “ऐसे बादल बर्फ नहीं लाते।”

मैं खिड़की खोलकर बाहर देखता हूँ, लेकिन यह नहीं जान पाता कि कर्नल क्या समझ रहे हैं।

द्वारपाल लोहे के चूल्हे के सामने जूते उतारकर, पैरों को सेंक रहा है। चूल्हा पुस्तकालय वाले चूल्हे जैसा ही है। इसमें केतली रखने के लिए एक सपाट सतह है और राख डालने के लिए नीचे एक दराज है। इसका सामने का हिस्सा एक बड़े धातु के हैंडल से खुलता है, जिसे द्वारपाल पैर रखने के लिए इस्तेमाल करता है। द्वारगृह केतली की भाप और सस्ते तंबाकू (या शायद किसी और चीज़) की गंध से घुटन भरा है। द्वारपाल के पैरों से भी बदबू आ रही है।

“मुझे एक स्कार्फ चाहिए,” मैंने कहना शुरू किया। “मेरे सिर में सिहरन होने लगती है।”

“मैं यह देख सकता हूँ,” द्वारपाल ने चिढ़कर कहा। “मुझे इसमें ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ।”

“लाइब्रेरी के पीछे स्थित संग्रहण कक्ष में पुराने कपड़े रखे हैं। मैं सोच रही थी कि क्या मैं उनमें से कुछ उधार ले सकती हूँ।”

“ओह, ये सब चीज़ें,” द्वारपाल कहता है। “आप इनमें से कुछ भी ले सकते हैं। मफलर ले लीजिए, कोट ले लीजिए, जो चाहें ले लीजिए।”

और मालिक?

“मालिकों के बारे में भूल जाइए। भले ही मालिक आस-पास हों, वे इन चीजों के बारे में भूल चुके होंगे। लेकिन मान लीजिए, मैंने सुना है कि आप एक संगीत वाद्य यंत्र की तलाश कर रहे हैं?”

उसे सब कुछ पता है।

“आधिकारिक तौर पर, कस्बे में कोई संगीत वाद्ययंत्र नहीं हैं,” वह कहते हैं। “लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसकी संभावना नहीं है। आप गंभीर काम करते हैं, तो अगर आपके पास कोई वाद्ययंत्र हो तो क्या बुराई है? पावर स्टेशन जाइए और केयरटेकर से पूछिए। हो सकता है वह आपके लिए कुछ ढूंढ लें।”

“पावर स्टेशन?” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“हम बिजली का इस्तेमाल करते हैं, तुम्हें पता है ना,” वह ऊपर लगी बत्ती की ओर इशारा करते हुए कहता है।
“तुम्हें लगता है बिजली सेब के पेड़ों पर उगती है?” चौकीदार नक्शा बनाते हुए हंसता है। “नदी के दक्षिणी किनारे के साथ वाली सड़क पर चलो, ऊपर की ओर जाओ। तीस मिनट बाद, तुम्हें अपने दाहिनी ओर एक पुराना अनाज भंडार दिखाई देगा। एक शेड जिसकी छत गिरी हुई है और कोई दरवाजा नहीं है। वहां से दाहिने मुड़ो और सड़क पर तब तक चलो जब तक तुम्हें एक पहाड़ी न दिख जाए। पहाड़ी के आगे जंगल है। जंगल में पांच सौ गज अंदर जाओ, और वहां बिजली स्टेशन है। समझे?”
“मुझे ऐसा ही लगता है,” मैंने कहा। “लेकिन सर्दियों में जंगल में जाना खतरनाक होता है। सब लोग यही कहते हैं। पिछली बार तो मैं बीमार पड़ गया था।”
“अरे हाँ, मैं लगभग भूल ही गया था। मुझे आपको पहाड़ी पर ले जाना पड़ा था,” द्वारपाल ने कहा। “अब आप ठीक हैं?”
"अब बहुत बेहतर है, धन्यवाद।"
"थोड़ा कम मूर्ख?"
"हाँ, मुझे यही लगता है।"
द्वारपाल चौड़ी मुस्कान के साथ चूल्हे के हैंडल पर अपने पैर हिलाता है। “तुम्हें अपनी सीमाएँ जाननी होंगी। एक बार काफी है, लेकिन सीखना जरूरी है। थोड़ी सावधानी कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती। एक अच्छे लकड़हारे के शरीर पर सिर्फ एक ही निशान होता है। न ज्यादा, न कम। मेरा मतलब समझ रहे हो?”
मैंने उचित रूप से सिर हिलाया।
“बिजली स्टेशन के बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह जंगल के प्रवेश द्वार पर ही स्थित है। केवल एक ही रास्ता है, आप खो नहीं सकते। वहाँ कोई जंगली लोग नहीं हैं। असली खतरा जंगल के अंदर, दीवार के पास है। अगर आप उनसे दूर रहेंगे, तो सब ठीक रहेगा। रास्ते पर चलते रहिए, बिजली स्टेशन से आगे मत जाइए।”
क्या रखवाला वनवासियों में से एक है?
“वो नहीं। न जंगल का रहने वाला, न शहर का। हम उसे कुछ नहीं कहते। वो जंगल के किनारे ही रहता है, कभी शहर नहीं आता। सीधा-सादा, हिम्मतहीन।”
"वुड्सफोल्क कैसे होते हैं?"
द्वारपाल अपना सिर घुमाता है और रुकने के बाद कहता है, "जैसा कि मुझे लगता है मैंने आपको पहली बार बताया था, आप जो चाहें प्रश्न पूछ सकते हैं, लेकिन मैं अपनी इच्छा के अनुसार उत्तर दे सकता हूँ या नहीं दे सकता हूँ।"
मैंने अपना मुंह खोला, मेरे होठों पर एक सवाल था।

“भूल जाओ। आज कोई जवाब नहीं मिलेगा,” द्वारपाल कहता है। “लेकिन मान लो, तुम अपनी परछाई देखना चाहते हो? अब देखने का समय आ गया है, है ना? सर्दियों के आने से परछाई कमजोर हो गई है। तुम्हारे न देखने का कोई कारण नहीं है।”

क्या वह बीमार है?

नहीं, बीमार नहीं। एकदम स्वस्थ। इसे हर दिन दो घंटे की कसरत मिलती है। भूख भी अच्छी है, हा हा। बस जब सर्दियों के दिन छोटे और ठंडे हो जाते हैं, तो हर परछाई थोड़ी-बहुत कमज़ोर पड़ जाती है। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बस ऐसा ही होता है। खैर, इसे खुद ही सब कुछ बता देने दो।

द्वारपाल दीवार से चाबियों का गुच्छा निकालता है और उसे अपनी जेब में रख लेता है। चमड़े के जूते बांधते हुए उसे जम्हाई आती है। जूते भारी और मजबूत दिखते हैं, और बर्फ में चलने के लिए उनमें लोहे की कीलें लगी हैं।

मेरी परछाई शहर और बाहरी दुनिया के बीच रहती है। चूंकि मैं दीवार के उस पार की दुनिया में नहीं जा सकता, इसलिए मेरी परछाई शहर में नहीं आ सकती। इसलिए हम सिर्फ शैडो ग्राउंड्स में मिल सकते हैं, जो गेटहाउस के ठीक पीछे है। यह छोटा है और चारों तरफ से बाड़ से घिरा हुआ है।

द्वारपाल अपनी जेब से चाबियाँ निकालता है और बाड़े का लोहे का फाटक खोलता है। हम छायादार मैदान में प्रवेश करते हैं। यह एक पूर्णतः वर्गाकार है, जिसकी एक भुजा लगभग दीवार से सटी हुई है। केंद्र में एक पुराना एल्म का पेड़ है, जिसके नीचे एक बेंच है। उम्र के साथ पेड़ का रंग फीका पड़ गया है; मुझे नहीं पता कि वह जीवित है या मृत।

एक कोने में ईंटों और निर्माण सामग्री के टुकड़ों से बनी एक झोंपटी सी झोपड़ी खड़ी है। खिड़की में कांच नहीं है; केवल एक साधारण लकड़ी का पैनल है जो दरवाजे की तरह ऊपर की ओर खुलता है। मुझे कोई चिमनी नहीं दिख रही, इसलिए यहाँ गर्मी का कोई इंतजाम नहीं होगा।

“यहीं तुम्हारी परछाई सोती है,” द्वारपाल कहता है। “जितना बुरा दिखता है, उतना बुरा नहीं है। पानी और शौचालय भी है। होटल तो नहीं, पर रहने की जगह तो है। अंदर जाना चाहोगे?

“नहीं, मैं उससे यहीं मिलूंगी,” मैंने कहा, गेटहाउस की घुटन भरी हवा से अभी भी मुझे चक्कर आ रहा था। ठंड हो या न हो, ताजी हवा में बाहर रहना बेहतर है।

“मुझे कोई आपत्ति नहीं, मैं इसे बाहर ले आता हूँ।” द्वारपाल अकेले ही झोपड़ी में घुस जाता है।

मैंने कॉलर ऊपर किया और बेंच पर बैठ गया, जूते की एड़ी से ज़मीन को खुरचते हुए। ज़मीन सख्त थी, और दीवार की छाया में कहीं-कहीं बर्फ के टुकड़े जमे हुए थे।

तभी द्वारपाल प्रकट होता है और मैदान में तेज़ी से आगे बढ़ता है, मेरी परछाई धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चलती है। मेरी परछाई उतनी स्वस्थ नहीं है जितना द्वारपाल ने मुझे बताया था। उसका चेहरा मुरझाया हुआ है, बस आँखें और दाढ़ी ही दिखाई दे रही हैं।

“मुझे लगता है आप दोनों अकेले रहना चाहते हैं, हा हा,” द्वारपाल कहता है। “शायद आपके पास बात करने के लिए बहुत कुछ है। तो, आराम से लंबी बातचीत कीजिए। लेकिन बहुत लंबी भी नहीं, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा मतलब क्या है।”

मैं समझ गया कि उसका क्या मतलब है। मैं और मेरी परछाईं, द्वारपाल को बाड़े का द्वार बंद करते और द्वारगृह की ओर जाते हुए देखते हैं। उसके जूतों की खुरदरी आवाज़ दूर तक गूंजती है। हमें उसके पीछे लकड़ी का भारी दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनाई देती है। जब तक वह नज़रों से ओझल नहीं हो जाता, तब तक परछाईं मेरे पास नहीं आती और मेरे बगल में बैठ जाती है। उसने एक मोटा, खुरदुरा बुना हुआ स्वेटर, काम करने वाली पैंट और वे जूते पहने हुए हैं जो मैंने उसके लिए खरीदे थे।

मैंने पूछा, "आप कैसे हैं?"

मेरी परछाई कहती है, "तुम ऐसी उम्मीद कैसे कर सकते हो? यहाँ बहुत ठंड है और खाना बहुत ही घटिया है।"

लेकिन उन्होंने कहा कि आपको हर दिन व्यायाम करना चाहिए।

“व्यायाम?” मेरी परछाई कहती है। “हर रोज द्वारपाल मुझे बाहर घसीटकर ले जाता है और मेरे साथ मरे हुए जानवरों को जलाने के लिए मजबूर करता है। कैसा व्यायाम है!”

क्या यह इतना बुरा है?

“ये कोई मज़ाक नहीं है। हम गाड़ी में जानवरों के शव लादते हैं, उन्हें सेब के बाग में ले जाते हैं, उन पर तेल डालते हैं और आग से जला देते हैं। लेकिन उससे पहले, द्वारपाल एक धारदार औजार से उनके सिर काट देता है। आपने उसका शानदार औजारों का संग्रह देखा ही होगा, है ना? वो दिमागी रूप से ठीक नहीं है। अगर उसका बस चले तो वो पूरी दुनिया के टुकड़े-टुकड़े कर देगा।”

"क्या द्वारपाल को ही कस्बे के लोग कहते हैं?"

“नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह यहाँ का है। उस आदमी को मरे हुए जीवों में आनंद आता है। कस्बे के लोग उस पर ध्यान नहीं देते। जैसे कि वे दे भी सकते हों। हम पहले ही बहुत सारे जानवरों से छुटकारा पा चुके हैं। आज सुबह तेरह मरे हुए जानवर मिले हैं, जिन्हें हमें इसके बाद जलाना होगा।”

परछाई जमी हुई जमीन में अपने पैर जमा लेती है।

मेरी परछाई कहती है, "मुझे नक्शा मिल गया। मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर बना हुआ है। साथ ही, उस पर अच्छे नोट्स भी लिखे हैं। लेकिन थोड़ी देर हो गई।"

“मैं बीमार हो गया था,” मैंने कहा।

“मैंने ऐसा सुना था। फिर भी, सर्दी का मौसम बहुत देर से आया। मुझे इसकी पहले ज़रूरत थी। मेरे पास समय रहते योजना बनाने का मौका था।”

“कोई योजना?”

“भागने की योजना। और क्या? आपको नहीं लगा था कि मुझे मनोरंजन के लिए नक्शा चाहिए?”

मैंने अपना सिर हिलाया। "मुझे लगा था कि तुम मुझे इस शहर के बारे में सब कुछ समझा दोगे। आखिर, हमारी लगभग सारी यादें तो तुम्हारे पास ही तो हैं।"

“बड़ी बात क्या है?” मेरी परछाई कहती है। “मुझे हमारी ज़्यादातर यादें तो मिल गई हैं, लेकिन मैं उनका क्या करूँ? अगर बात समझ में आए तो हमें फिर से एक साथ लाना होगा, जो कि मुमकिन नहीं है। अगर हमने कुछ भी कोशिश की, तो वे हमें हमेशा के लिए अलग कर देंगे। हम कभी कामयाब नहीं हो पाएँगे। इसीलिए मैंने इस शहर में चीज़ों के तौर-तरीकों के बारे में खुद ही सोच-विचार किया।”

"और क्या आपको कुछ पता चला?"

“मैंने कुछ काम किए हैं। लेकिन अभी मैं आपको कुछ नहीं बता सकता। बिना और ज़्यादा जानकारी के, यह बात यकीन दिलाने वाली नहीं होगी। मुझे थोड़ा और समय दीजिए, मुझे लगता है मैं कर लूँगा। लेकिन तब तक शायद बहुत देर हो चुकी होगी। सर्दी शुरू होने के बाद से मैं काफ़ी कमज़ोर होता जा रहा हूँ। मैं भागने का प्लान तो बना लूँ, लेकिन क्या मुझमें उसे पूरा करने की ताकत होगी? इसीलिए मुझे नक्शे की ज़रूरत जल्दी थी।”

मैं ऊपर आसमान में खड़े एल्म के पेड़ की ओर देखता हूँ। शाखाओं के बीच से सर्दियों के आकाश का एक सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

“लेकिन यहाँ से कोई बच निकलने का रास्ता नहीं है,” मैंने कहा। “आपने नक्शा देखा था, है ना? यहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है। यही दुनिया का अंत है।”

“यह दुनिया का अंत हो सकता है, लेकिन इससे निकलने का कोई न कोई रास्ता तो ज़रूर होगा। मुझे इस बात का पूरा यकीन है। आसमान को देखो। जब वे पक्षी दीवार के ऊपर से उड़ते हैं तो कहाँ जाते हैं? किसी दूसरी दुनिया में। अगर वहाँ कुछ भी नहीं होता, तो उस जगह को दीवार से क्यों घेरा जाता? कहीं न कहीं से तो रास्ता निकलना ही होगा।”

या शायद—

“मुझ पर छोड़ दो, मैं ढूंढ लूंगा,” उसने मेरी बात काटते हुए कहा। “हम यहां से निकल जाएंगे। मैं इस भयानक गड्ढे में मरना नहीं चाहता।”

वह एक बार फिर अपनी एड़ी ज़मीन में गाड़ देता है। “मैं वही दोहराता हूँ जो मैंने शुरू में कहा था: यह जगह गलत है। मैं जानता हूँ। पहले से कहीं ज़्यादा। समस्या यह है कि यह शहर पूरी तरह से गलत है। हर एक चीज़ विकृत है, इस तरह कि संपूर्ण विकृति निर्बाध है। यह एक संपूर्ण इकाई है। इस तरह—”

मेरी परछाई अपने जूते से जमीन पर एक वृत्त बनाती है।

“शहर को सील कर दिया गया है,” वह कहता है। “इसीलिए आप जितना ज़्यादा यहाँ रहेंगे, उतना ही आपको लगने लगेगा कि सब कुछ सामान्य है। आपको अपने फैसले पर शक होने लगेगा। आप समझ रहे हैं ना मैं क्या कह रहा हूँ?”

“हां, मैंने भी ऐसा महसूस किया है। मैं बहुत उलझन में पड़ जाता हूं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मैं ही बहुत सारी परेशानियों की वजह हूं।”

“ऐसा बिल्कुल नहीं है,” मेरी परछाई ने वृत्त के बगल में एक घुमावदार आकृति बनाते हुए कहा। “हम सही हैं। वे पूरी तरह से गलत हैं। तुम्हें यह मानना होगा, जब तक तुममें विश्वास करने की शक्ति है। वरना यह शहर तुम्हें, तुम्हारे दिमाग समेत, निगल जाएगा।”

लेकिन हम पूरी तरह सही कैसे हो सकते हैं? उनके पूरी तरह गलत होने का क्या मतलब हो सकता है? और जब मेरे पास चीजों को परखने के लिए स्मृति ही न हो, तो मैं यह कैसे जान पाऊंगा?

मेरी परछाई अपना सिर हिलाती है। “इसे इस तरह से देखो। ऐसा लगता है कि इस कस्बे में शाश्वत शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए सब कुछ मौजूद है। चाहे कुछ भी हो जाए, व्यवस्था बिल्कुल स्थिर रहती है। लेकिन निरंतर गतिमान दुनिया सैद्धांतिक रूप से असंभव है। इसमें कोई न कोई तरकीब जरूर होगी। यह तंत्र कहीं न कहीं से ऊर्जा ग्रहण करता है और कहीं न कहीं से ऊर्जा मुक्त करता है।”

"और क्या आपको पता चल गया है कि वह जगह कहाँ है?"

“नहीं, अभी नहीं। जैसा कि मैंने कहा, मैं अभी भी इस पर काम कर रहा हूँ। मुझे और अधिक जानकारी चाहिए।”

“क्या आप मुझे कुछ बता सकते हैं? शायद मैं आपकी मदद कर सकूँ।”

मेरी परछाई अपने हाथों को जेब से बाहर निकालती है, अपनी सांसों से उन्हें गर्म करती है, फिर उन्हें अपनी गोद में रगड़ती है।

नहीं, तुमसे इतनी उम्मीद करना ठीक नहीं है। शारीरिक रूप से तो मैं बुरी तरह बीमार हूँ ही, तुम्हारा मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। सबसे पहले तुम्हें ठीक होना होगा। वरना हम दोनों फंस जाएंगे। मैं इन सब बातों पर खुद सोच-विचार कर लूंगी, और तुम अपनी सुरक्षा के लिए जो भी करना पड़े, कर लो।

“मेरा आत्मविश्वास डगमगा रहा है, यह सच है,” मैं ज़मीन पर बने गोले पर नज़रें झुकाते हुए कहती हूँ। “जब मुझे अपने मन का ही पता नहीं है तो मैं मज़बूत कैसे रह सकती हूँ? मैं खो गई हूँ।”

“ऐसा नहीं है,” मेरी परछाई ने सुधारते हुए कहा। “तुम खोए नहीं हो। बस तुम्हारे अपने विचार तुमसे छिपाए जा रहे हैं, या छुपाए जा रहे हैं। लेकिन मन शक्तिशाली है। यह बिना विचारों के भी जीवित रहता है। सब कुछ छीन लिए जाने पर भी, इसमें एक बीज रहता है—तुम्हारा स्व। तुम्हें अपनी शक्तियों पर विश्वास करना होगा।”

मैं कोशिश करूंगा," मैंने कहा।

मेरी परछाई आसमान की ओर देखती है और अपनी आंखें बंद कर लेती है।

“पक्षियों को देखो,” वह कहता है। “कोई भी चीज़ उन्हें रोक नहीं सकती। न दीवार, न फाटक, न ही तुरही की आवाज़। पक्षियों को देखना अच्छा लगता है।”

मुझे द्वारपाल की आवाज सुनाई दे रही है। मुझे अपनी यात्रा संक्षिप्त करनी होगी।

“कुछ समय तक मुझसे मिलने मत आना,” मेरी परछाई फुसफुसाती है जब मैं जाने के लिए मुड़ती हूँ। “जब समय आएगा, मैं तुमसे मिलने का इंतज़ाम कर दूँगी। अगर हम मिले तो द्वारपाल को शक हो जाएगा, जिससे मेरा काम और मुश्किल हो जाएगा। ऐसा दिखावा करना कि हमारी आपस में बनती नहीं थी।”
“ठीक है,” मैंने कहा।
मेरे द्वार पर लौटने पर द्वारपाल ने पूछा, "कैसा रहा?" "इतने समय बाद आकर अच्छा लगा, है ना?"
मैंने सिर हिलाते हुए कहा, "मुझे सच में नहीं पता।"
"बात यही है," द्वारपाल ने संतुष्ट भाव से कहा।

25

भोजन, हाथी कारखाना, जाल

रस्सी पर चढ़ना सीढ़ियों पर चढ़ने से कहीं आसान था। हर तीस सेंटीमीटर पर एक मज़बूत गांठ थी। दोनों हाथों में रस्सी पकड़े मैं झूलता हुआ टावर से उछल रहा था। सर्कस के किसी सर्कस के आम दृश्य जैसा। हालांकि, ज़ाहिर है, फिल्म में रस्सी में गांठ नहीं होती; दर्शक उसे पसंद नहीं करते।

मैं बीच-बीच में ऊपर देखता था। वह अपनी रोशनी मुझ पर डाल रही थी, लेकिन मुझे दूरी का कोई स्पष्ट अंदाजा नहीं लग रहा था। मैं बस चढ़ता रहा, और मेरे पेट का घाव लगातार दर्द कर रहा था। मेरे सिर पर लगी चोट भी बुरी हालत में थी।

जैसे ही मैं शिखर के करीब पहुंचा, उसके हाथ में पकड़ी रोशनी इतनी तेज हो गई कि मैं अपना पूरा शरीर और आसपास का दृश्य देख सका। लेकिन तब तक मुझे अंधेरे में चढ़ने की इतनी आदत हो चुकी थी कि मैं जो कर रहा था उसे ठीक से देख पाने से मेरी गति धीमी हो गई और मैं लगभग दो बार फिसलते-फिसलते बचा। मैं दूरी का अंदाजा नहीं लगा पा रहा था। रोशनी वाली सतहें एकदम साफ दिखाई दे रही थीं और छायादार हिस्से बिल्कुल धुंधले हो रहे थे।

साठ-सत्तर नॉट की रफ्तार से ऊपर जाते हुए मैं शिखर पर पहुँच गया। मैंने चट्टान के लटकते हिस्से को दोनों हाथों से पकड़ लिया और पूल के किनारे तैर रहे किसी प्रतियोगी की तरह ऊपर की ओर धकेलने लगा। लंबी चढ़ाई के कारण मेरी बाहों में दर्द हो रहा था, इसलिए यह एक संघर्ष था। उसने मेरी बेल्ट पकड़ी और मुझे ऊपर खींचने में मदद की।

“बाल-बाल बच गए,” उसने कहा। “कुछ और मिनट होते तो हम मर चुके होते।”

“बहुत बढ़िया,” मैंने समतल सतह पर लेटते हुए और कुछ गहरी साँसें लेते हुए कहा, “बस बहुत बढ़िया। पानी कितनी ऊपर तक आया था?”

उसने अपना टॉर्च नीचे रखा और रस्सी को हाथ से पकड़कर ऊपर खींचने लगी। तीसवीं गांठ पर रुककर उसने रस्सी मुझे थमा दी। रस्सी पूरी तरह भीगी हुई थी।

“क्या आपको अपने दादाजी मिल गए?”

“क्यों नन्हीं भी,” वह खुशी से बोली। “वह वापस वेदी पर खड़ा है। लेकिन उसके पैर में मोच आ गई है। उसका पैर एक गड्ढे में फंस गया था।”

"और वो मोच आए हुए पैर के साथ इतनी दूर तक कैसे पहुँच गया?"

“जी हां, जरूर। दादाजी की सेहत बहुत अच्छी है।”

मैंने कहा, "मुझे तो ऐसा ही लगता है।"

“चलो चलते हैं। दादाजी अंदर इंतजार कर रहे हैं। उन्हें तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं।”
“यहाँ भी ऐसा ही है,” मैंने कहा।
मैंने अपना थैला उठाया और उसके पीछे-पीछे वेदी की ओर चल पड़ा। यह चट्टान में कटा हुआ एक गोल छेद मात्र निकला। यह एक बड़े कमरे में खुलता था जो एक आले में रखे प्रोपेन लैंप की मंद सुनहरी रोशनी से जगमगा रहा था, और दीवारों पर चट्टान की बनावट से अनगिनत छायाएँ बनी हुई थीं। प्रोफ़ेसर लैंप के पास कंबल ओढ़े बैठे थे। उनका चेहरा आधा छाया में था। उनकी आँखें मंद रोशनी में धँसी हुई लग रही थीं, लेकिन वास्तव में वे बेहद खुश थे।
“लगता है हम आपको लगभग खो ही चुके थे,” प्रोफेसर ने बड़े हर्षोल्लास से मेरा अभिवादन किया। “मुझे पता था कि पानी का स्तर बढ़ने वाला है, लेकिन मुझे लगा था कि आप थोड़ा जल्दी आ जाएँगे।”
“मैं शहर में रास्ता भटक गई थी, दादाजी,” उनकी गोल-मटोल पोती ने कहा। “लगभग पूरा एक दिन बीत गया, तब जाकर आखिरकार मुझे उनसे मिलने का मौका मिला।”
“टॉश,” प्रोफेसर ने कहा। “लेकिन हम अब यहाँ हैं और सब कुछ एक जैसा ही है।”
मैंने पूछा, "माफ़ कीजिए, लेकिन 'सब एक जैसा' का मतलब क्या है?"
“अरे, अरे, ज़रा सब्र रखिए। मैं अभी सब कुछ ठीक कर देता हूँ। आप बैठ जाइए। सबसे पहले, चलिए आपकी गर्दन से उस चिपकी हुई चीज़ को हटा देते हैं।”
मैं प्रोफेसर के पास बैठ गया। उनकी पोती मेरे बगल में बैठ गई। उसने माचिस जलाई और उसे मेरी गर्दन पर चिपके उस विशालकाय परजीवी के पास ले गई। वह शराब की बोतल के कॉर्क जितना बड़ा था। जैसे ही लौ उस फूले हुए परजीवी को छूई, एक फुफकार सी निकली। वह परजीवी तड़पता हुआ जमीन पर गिर पड़ा, जब तक कि पोती ने उसे उसकी पीड़ा से मुक्ति नहीं दिला दी।
मेरी गर्दन झुलस रही थी। अगर मैं अपना सिर ज़्यादा घुमाता, तो मुझे लगता कि त्वचा सड़े हुए टमाटर के छिलके की तरह उतर जाएगी। इस तरह की जीवनशैली में एक हफ़्ता भी गुज़ार लेता तो मैं ज़ख्मों का एक नमूना बन जाता, जैसे दवा की दुकानों की खिड़कियों पर एथलीट फुट की रंगीन तस्वीरें लगी होती हैं। पेट में घाव, सिर पर गांठ, जोंक का निशान—मज़ाक के लिए लिंग में शिथिलता भी जोड़ दो।
“क्या आप अपने साथ खाने-पीने का कुछ सामान लाए हैं?” प्रोफेसर ने मुझसे पूछा। “जल्दी में निकलने की वजह से मैं सामान पैक करना भूल गया।”
मैंने थैला खोला और उसमें से कई डिब्बे, कुचली हुई रोटी और पानी की बोतल निकाली, जो मैंने उन्हें दे दी। प्रोफेसर ने पानी का एक लंबा घूंट लिया, फिर हर डिब्बे को ऐसे देखा जैसे पुरानी शराब की जाँच कर रहे हों। उन्होंने कॉर्नड बीफ़ और आड़ू खाने का फैसला किया।
"क्या आप मेरे साथ आना चाहेंगे?" प्रोफेसर ने पूछा।
मैंने मना कर दिया। हमने देखा कि प्रोफ़ेसर ने रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा और उस पर कॉर्नड बीफ़ का एक टुकड़ा रखा, फिर उसे बड़े चाव से खाने लगे। इसके बाद उन्होंने आड़ू खाए और यहाँ तक कि कैन को होठों

तक लाकर उसका सिरप भी पी लिया। मैंने दवा के तौर पर व्हिस्की से ही संतोष कर लिया। इससे मेरे कई दर्द कम हो गए। ऐसा नहीं था कि शराब से दर्द कम हुआ हो; बस दर्द को एक अलग ही एहसास मिल गया, जो मुझसे अलग था।

“जी हाँ, एकदम सही बात कही,” प्रोफेसर ने मुझे धन्यवाद देते हुए कहा। “मैं आमतौर पर यहाँ दो-तीन दिन का राशन रखता हूँ, लेकिन इस बार गलती से मैं सामान भरना भूल गया था। माफ़ करने लायक नहीं। बेफिक्री भरे दिनों की आदत पड़ जाए तो लापरवाही बरती जाती है। पुरानी कहावत तो आप जानते ही हैं: जब सूरज फिर से निकलने लगे, तो बारिश से बचने के लिए छत की मरम्मत कर लो। हो-हो-हो।”

“अब जब आपने अपना भोजन समाप्त कर लिया है,” मैंने शुरू किया, “हमें कुछ बातों पर चर्चा करनी है। चलिए, क्रम से शुरू करते हैं। जैसे, आप क्या करने की कोशिश कर रहे थे? आपने क्या किया? परिणाम क्या निकला? और इससे मेरी क्या भूमिका है?”

प्रोफेसर ने टालमटोल करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपको यह सब काफी तकनीकी लगेगा।"

"ठीक है, तो इसे सरल शब्दों में समझाइए। इसे कम तकनीकी बनाइए।"

"इसमें कुछ समय लग सकता है।"

ठीक है। आपको अच्छी तरह पता है कि मेरे पास कितना समय है।

“खैर, सबसे पहले,” प्रोफेसर ने स्वीकार किया, “मुझे माफ़ी मांगनी चाहिए। शोध तो शोध होता है, लेकिन मैंने आपको धोखा दिया, आपका इस्तेमाल किया और आपकी जान को खतरे में डाला। किसी वैज्ञानिक को ज्ञान के भंडार के सामने बिठा दो, तो वह खुदाई करने लगेगा। लाभ या हानि की परवाह किए बिना, केवल एकाग्रचित्तता ही विज्ञान की निरंतर प्रगति का कारण है... आपने अरस्तू को पढ़ा है।”

“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। “मैं आपके विशुद्ध वैज्ञानिक इरादों को मानता हूँ। कृपया मुद्दे पर आइए।”

मुझे क्षमा करें, मैं केवल इतना कहना चाहता था कि विज्ञान की शुद्धता अक्सर कई लोगों को दुख पहुंचाती है, ठीक वैसे ही जैसे शुद्ध प्राकृतिक घटनाएं करती हैं। ज्वालामुखी विस्फोट पूरे शहरों को दफना देते हैं, बाढ़ पुलों को बहा ले जाती है, भूकंप इमारतों को ध्वस्त कर देते हैं—”

“दादाजी!” उनकी गोल-मटोल पोती ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “क्या हमारे पास इसके लिए समय है? आप अपनी बात जल्दी खत्म क्यों नहीं करते?”

“बिल्कुल सही कहा, बच्ची, बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने अपनी पोती का हाथ पकड़कर थपथपाते हुए कहा। “अच्छा, तो फिर, तुम क्या जानना चाहती हो? मुझे समझाने में बहुत दिक्कत होती है। मैं कहाँ से शुरू करूँ?”

“आपने मुझे कुछ नंबर दिए थे जिन्हें मुझे फेरबदल करना था। वे सब किस बारे में थे?”

इसे समझाने के लिए, हमें तीन साल पीछे जाना होगा। मैं सिस्टम सेंट्रल रिसर्च में काम कर रहा था। एक औपचारिक कर्मचारी शोधकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक विशेष बाहरी विशेषज्ञ के रूप में। मेरे अधीन चार-पाँच कर्मचारी थे और मुझे शानदार सुविधाओं का लाभ मिलता था। मेरे पास खर्च करने के लिए पर्याप्त पैसा था। वैसे, मैं पैसे को ज्यादा महत्व नहीं देता, और मुझे दूसरों के अधीन काम करने से थोड़ी परहेज़ भी है।

लेकिन फिर भी, सिस्टम द्वारा मुझे उपलब्ध कराए गए संसाधन और अपने शोध निष्कर्षों को व्यवहार में लाने की संभावना निश्चित रूप से आकर्षक थी।

“उस समय सिस्टम एक नाजुक मोड़ पर था। कहने का तात्पर्य यह है कि सूचना की सुरक्षा के लिए उन्होंने डेटा को एन्क्रिप्ट करने के जितने भी तरीके ईजाद किए थे, उन सभी का पता सेमियोटेक को चल चुका था। तभी मुझे उनके अनुसंधान एवं विकास विभाग का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया गया।”

“मैं उस समय भी और आज भी, बेशक, न्यूरोफिजियोलॉजी के क्षेत्र में सबसे सक्षम और सबसे महत्वाकांक्षी वैज्ञानिक था। यह बात सिस्टम को पता थी और उन्होंने मुझे चुना। वे मौजूदा तरीकों को और जटिल या परिष्कृत नहीं बनाना चाहते थे, बल्कि अभूतपूर्व तकनीक चाहते थे। यह उस तरह की सोच नहीं थी जो आपको विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं में काम करने वाले उन विद्वानों में मिलती है जो सिर्फ अपनी तनख्वाह गिनते रहते हैं, चाहे प्रकाशित करो या मर जाओ। सच्चा मौलिक वैज्ञानिक एक स्वतंत्र व्यक्ति होता है।”

"लेकिन सिस्टम में प्रवेश करते ही आपने वह स्वतंत्रता त्याग दी," मैंने जवाब दिया।

“बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने कहा। “मैंने इस विषय पर बहुत सोच-विचार किया। मैं अपनी गलती नहीं सुधारना चाहता, लेकिन मैं अपने सिद्धांतों को व्यवहार में लाने के लिए बहुत उत्सुक था। उस समय मेरे पास एक पूरी तरह विकसित सिद्धांत तो था, लेकिन उसे सत्यापित करने का कोई तरीका नहीं था। यही तंत्रिका शरीर क्रिया विज्ञान की एक कमी है; आप शरीर क्रिया विज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह जानवरों पर प्रयोग नहीं कर सकते। किसी भी बंदर में इतने जटिल कार्य नहीं होते कि वह मानव अवचेतन मनोविज्ञान और स्मृति का प्रतिनिधित्व कर सके।”

"तो तुमने हमें अपने बंदरों की तरह इस्तेमाल किया।"

अब, चलिए जल्दबाजी में कोई निष्कर्ष न निकालें। पहले, मैं आपको अपने सिद्धांतों का संक्षिप्त विवरण दे देता हूँ। कोड के बारे में एक बात सर्वविदित है, और वह यह है कि ऐसा कोई कोड नहीं है जिसे क्रैक न किया जा सके। इसका कारण यह है कि कोड कुछ मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार बनाए जाते हैं। और ये सिद्धांत, चाहे कितने भी जटिल या सटीक क्यों न हों, अंततः एक से अधिक व्यक्तियों के लिए समझने योग्य समानताओं पर आधारित होते हैं। सिद्धांत को समझ लें और आप कोड को क्रैक कर सकते हैं। यहाँ तक कि सबसे विश्वसनीय पुस्तक-से-पुस्तक कोड भी, जहाँ दो लोग एक ही पुस्तक के एक ही संस्करण की दो प्रतियों में पृष्ठ और पंक्ति संख्या के अनुसार शब्दों को दर्शाने वाले संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं—तब भी, यदि किसी को सही पुस्तक मिल जाती है, तो खेल खत्म हो जाता है।

“इससे मुझे सोचने पर मजबूर होना पड़ा। केवल एक ही ऐसा तरीका है जिससे जानकारी को पूरी तरह से सुरक्षित किया जा सकता है: जानकारी को एक ‘ब्लैक बॉक्स’ से गुजारकर उसे अव्यवस्थित किया जाता है और फिर संसाधित जानकारी को उसी ब्लैक बॉक्स से वापस गुजारकर उसे फिर से व्यवस्थित किया जाता है। ब्लैक बॉक्स को संभालने वाले एजेंट को भी इसके अंदर की सामग्री या इसके सिद्धांत का पता नहीं होता।

एजेंट इसका उपयोग तो कर सकता है, लेकिन उसे यह समझ नहीं आएगा कि यह कैसे काम करता है। अगर एजेंट को यह नहीं पता कि यह कैसे काम करता है, तो कोई भी जानकारी चुरा नहीं सकता। एकदम सही।"
"तो ब्लैक बॉक्स अवचेतन मन है।"
"हाँ, यह सही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्मृति तंत्र के आधार पर व्यवहार करता है। कोई भी दो मनुष्य एक समान नहीं होते; यह पहचान का प्रश्न है। और पहचान क्या है? यह उस व्यक्ति के अतीत के अनुभवों की सामूहिक स्मृतियों से उत्पन्न संज्ञानात्मक तंत्र है। आम बोलचाल में इसे मन कहते हैं। दो मनुष्यों का मन एक जैसा नहीं होता। साथ ही, मनुष्य अपने स्वयं के संज्ञानात्मक तंत्र को लगभग पूरी तरह से नहीं समझ पाते। न मैं, न आप, न कोई भी नहीं। हम जो कुछ भी जानते हैं—या जानते हैं—वह तो बस एक छोटा सा अंश है। मानो केक पर लगी आइसिंग का एक छोटा सा टुकड़ा हो।"
अब मैं आपसे एक सरल प्रश्न पूछता हूँ: क्या आप साहसी हैं, या आप डरपोक हैं?
"हं?" मुझे सोचना पड़ा। "कभी मैं साहसी हो जाता हूँ और कभी डरपोक। मैं ठीक से कह नहीं सकता।"
"तो ये है आपका संज्ञानात्मक तंत्र। आप एक ही बार में सब कुछ नहीं कह सकते। आप जिस परिस्थिति का सामना कर रहे हैं, उसके अनुसार आप लगभग तुरंत ही चरम सीमाओं के बीच कोई बिंदु चुन लेते हैं। यही आपके भीतर अंतर्निहित सटीक प्रोग्रामिंग है। आप स्वयं उस प्रोग्राम की आंतरिक पेचीदगियों के बारे में कुछ नहीं जानते। आपको जानने की कोई आवश्यकता भी नहीं है। बिना जाने भी, आप स्वयं के रूप में कार्य करते हैं। यही आपका ब्लैक बॉक्स है। दूसरे शब्दों में, हम सभी अपने भीतर एक विशाल अनछुआ 'हाथी कब्रिस्तान' लिए घूमते हैं। अंतरिक्ष को छोड़ दें तो, यह वास्तव में मानवता का अंतिम अज्ञात क्षेत्र है।"
नहीं, 'हाथियों का कब्रिस्तान' कहना पूरी तरह सही नहीं है। यह मृत यादों का दफन स्थल नहीं है। इसे 'हाथियों की फैक्ट्री' कहना ज़्यादा सही होगा। यहाँ आप अनगिनत यादों और ज्ञान के टुकड़ों को छाँटते हैं, छाँटे गए टुकड़ों को जटिल पंक्तियों में व्यवस्थित करते हैं, इन पंक्तियों को और भी जटिल बंडलों में मिलाते हैं, और अंत में एक संज्ञानात्मक प्रणाली बनाते हैं। एक वास्तविक उत्पादन लाइन, जिसमें आप मालिक होते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, फैक्ट्री का फर्श वर्जित है। एलिस इन वंडरलैंड की तरह, आपको अंदर जाने के लिए एक विशेष दवा की ज़रूरत होती है।
"तो क्या हमारे व्यवहार के तरीके इस हाथी कारखाने द्वारा जारी किए गए आदेशों के अनुसार चलते हैं?"
"बिल्कुल जैसा आप कह रहे हैं," बूढ़े आदमी ने कहा। "दूसरे शब्दों में कहें तो—"
"बस एक मिनट। मुझे एक सवाल पूछना है।"
"बिल्कुल, बिल्कुल।"
"मैं बात समझ गया। लेकिन असल बात यह है कि ये व्यवहारिक पैटर्न सतही व्यवहार को निर्धारित नहीं करते। मान लीजिए मैं सुबह उठता हूँ और तय करता हूँ कि मुझे टोस्ट के साथ दूध, कॉफी या चाय पीनी है या नहीं। यह तो मेरे मूड पर निर्भर करता है, है ना?"

“बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने सिर हिलाते हुए कहा। “एक और जटिलता यह है कि अवचेतन मन हमेशा बदलता रहता है। जैसे कोई विश्वकोश हर दिन एक नया संस्करण प्रकाशित करता रहता है। मानव चेतना को स्थिर करने के लिए, आपको दो समस्याग्रस्त क्षेत्रों को सुलझाना होगा।”

“समस्या के क्षेत्र?” मैंने पूछा। “समस्या के क्षेत्र क्यों होंगे? हम तो बिल्कुल सामान्य मानवीय कार्यों की बात कर रहे हैं।”

“अब, अब,” प्रोफेसर ने कहा। “अगर हम इस विषय पर और गहराई से विचार करेंगे तो हम धर्मशास्त्रीय मुद्दों में उलझ जाएंगे। असल मुद्दा, अगर आप इसे मुद्दा कहना चाहें तो, यह है कि क्या मानवीय क्रियाएं ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित होती हैं, या फिर स्वयं की पहल से शुरू होती हैं। बेशक, आधुनिक युग से ही विज्ञान ने मानव शरीर की शारीरिक सहजता पर जोर दिया है। लेकिन जैसे ही हम यह पूछना शुरू करते हैं कि आखिर यह सहजता है क्या, कोई भी संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाता। हमारे भीतर की उस जटिल प्रक्रिया की कुंजी किसी के पास नहीं है। फ्रायड, जंग और बाकी सभी ने अपने सिद्धांत प्रकाशित किए, लेकिन उन्होंने बस लोगों को चर्चा में लाने के लिए कुछ तकनीकी शब्द गढ़े। मानसिक घटनाओं को थोड़ा विद्वतापूर्ण रंग दे दिया।”

इस पर प्रोफेसर एक बार फिर जोर-जोर से हंसने लगे। ओह-हो-हो। मैं और वह लड़की बस उनके हंसना बंद करने का इंतजार करते रहे।

“मैं तो व्यावहारिक स्वभाव का हूँ,” प्रोफ़ेसर ने आगे कहा। “सीज़र का जो है, वही उसे दो और बाकी सब छोड़ दो। वैसे भी, तत्वमीमांसा केवल शाब्दिक शिष्टाचार से अधिक कुछ नहीं है। इससे पहले कि तुम हर चीज़ से वास्तविकता को निचोड़ लो, यहाँ बहुत कुछ करना बाकी है। हमारे ब्लैक बॉक्स को ही ले लो। तुम इसे बिना छुए भी एक तरफ रख सकते हो, या तुम इसके ब्लैक बॉक्स होने का लाभ उठा सकते हो। बस—” प्रोफ़ेसर रुक गए, नाटकीय अंदाज़ में एक उंगली उठाते हुए, “बस—तुम्हें दो समस्याओं का समाधान करना होगा। पहली है क्रिया के सतही स्तर पर संयोग। और दूसरी है नए अनुभवों के कारण ब्लैक बॉक्स में होने वाले परिवर्तन। दोनों का समाधान करना आसान नहीं है। क्योंकि, जैसा कि तुमने कहा, दोनों ही मनुष्यों के लिए पूरी तरह से सामान्य हैं। जब तक कोई व्यक्ति जीवित है, वह किसी न किसी रूप में अनुभव प्राप्त करेगा, और वे अनुभव पल-पल संचित होते रहते हैं। अनुभव करना बंद करना मृत्यु के समान है।”

“इससे मुझे एक परिकल्पना करने की प्रेरणा मिली। क्या होगा यदि आप किसी व्यक्ति के ब्लैक बॉक्स को एक निश्चित समय पर स्थिर कर दें? यदि बाद में उसमें कोई परिवर्तन होता है, तो ठीक है, होने दीजिए। लेकिन उस एक क्षण का ब्लैक बॉक्स वैसा ही रहेगा, और आप उसे ठीक उसी अवस्था में प्राप्त कर सकते हैं। मानो वह पल भर के लिए स्थिर हो गया हो।”

“एक मिनट रुकिए। इसका मतलब यह होगा कि एक ही व्यक्ति में दो अलग-अलग संज्ञानात्मक प्रणालियाँ सह-अस्तित्व में थीं।”

“तुम जल्दी समझ जाते हो,” बूढ़े आदमी ने कहा। “इससे मेरी तुम्हारे बारे में जो धारणा थी, वह पुष्ट होती है। हाँ, संज्ञानात्मक प्रणाली 'ए' हमेशा के लिए रुकी रहेगी, जबकि दूसरी बिना रुके लगातार बदलती रहेगी... ए’, ए”, ए’”, ...। तुम्हारी दाहिनी जेब में एक रुकी हुई घड़ी होगी और बाईं जेब में एक चलती हुई घड़ी। तुम जब चाहो, जो चाहो निकाल सकते हो।”
“हम इसी सिद्धांत से दूसरी समस्या का समाधान कर सकते हैं: संज्ञानात्मक प्रणाली A के लिए सतही स्तर पर उपलब्ध सभी विकल्पों को बंद कर दें। क्या आप समझ रहे हैं?”
नहीं, मैंने नहीं किया।
“दूसरे शब्दों में कहें तो, हम सतह को ठीक वैसे ही हटा देते हैं जैसे दंत चिकित्सक प्लाक हटाता है, जिससे चेतना का मूल भाग बच जाता है। त्रुटि की कोई गुंजाइश नहीं रहती। हम संज्ञानात्मक प्रणाली की बाहरी परतों को हटा देते हैं, उसे स्थिर कर देते हैं और एक गुप्त कक्ष में रख देते हैं। यही फेरबदल की मूल योजना है। सिस्टम में शामिल होने से पहले मैंने सैद्धांतिक रूप से इतना समझ लिया था।”
"क्या मस्तिष्क की सर्जरी करने के लिए?"
“हाँ, लेकिन केवल ज़रूरत पड़ने पर,” प्रोफ़ेसर ने कहा। “निस्संदेह, अगर मैंने अपना शोध जारी रखा होता, तो सर्जरी की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। संवेदी-अवरोधक पैरा-हिप्नोटिक्स या इसी तरह की कोई बाहरी प्रक्रिया, जिससे समान परिस्थितियाँ उत्पन्न की जा सकें। लेकिन अभी के लिए, केवल इलेक्ट्रोस्टिम्यूलेशन ही उपलब्ध है। यानी, मस्तिष्क के परिपथों में प्रवाहित होने वाली धाराओं में कृत्रिम परिवर्तन। इसमें कुछ भी जटिल नहीं है। यह मनोरोगियों या मिर्गी के रोगियों पर वर्तमान में उपयोग की जाने वाली सामान्य प्रक्रियाओं का एक मामूली संशोधन मात्र है। मस्तिष्क में गड़बड़ी से उत्पन्न विद्युत आवेगों को निष्क्रिय करना... मुझे लगता है कि मुझे अधिक तकनीकी विवरणों को छोड़ देना चाहिए?”
मैंने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो।"
"असल में, मुख्य बात यह है कि हम मस्तिष्क तरंगों को प्रवाहित करने के लिए एक जंक्शन बॉक्स स्थापित करते हैं। एक तरह से, एक कांटा। फिर हम इलेक्ट्रोड के साथ एक छोटी बैटरी प्रत्यारोपित करते हैं ताकि एक निश्चित संकेत मिलने पर जंक्शन बॉक्स क्लिक-क्लिक की आवाज़ के साथ चालू हो जाए।"
"क्या तुमने मेरे सिर के अंदर इलेक्ट्रोड और बैटरी लगा दी?"
"बिल्कुल।"
मैंने कहा, "बहुत बढ़िया, बस बहुत बढ़िया।"
"घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें कुछ भी इतना डरावना नहीं है। यह इम्प्लांट तो बस एक अजुकी बीन के आकार का है, और वैसे भी, बहुत से लोग अपने शरीर के अन्य हिस्सों में इसी तरह के उपकरण और पेसमेकर लगवाए घूम रहे हैं।"
“अब मूल संज्ञानात्मक प्रणाली—रुकी हुई घड़ी का चक्र—एक अंधा चक्र है। एक बार जब आप उस चक्र में प्रवेश कर जाते हैं, तो आप अपने विचारों के प्रवाह में कुछ भी महसूस नहीं करते; आपको इस बात की

बिल्कुल भी जानकारी नहीं होती कि आप क्या सोचते हैं या क्या करते हैं। अगर हमने इसे इस तरह से व्यवस्थित नहीं किया होता, तो आप स्वयं ही संज्ञानात्मक प्रणाली के साथ खिलवाड़ कर रहे होते।"
"लेकिन चेतना के मूल भाग को अलग करने के बाद उस पर विकिरण डालने से कुछ समस्याएं तो जरूर होंगी। ऑपरेशन के बाद आपके एक कर्मचारी ने मुझे यही बताया था।"
"सब कुछ बिल्कुल सही है। लेकिन उस समय तक हमने इसे साबित नहीं किया था। हम अनुमान के आधार पर काम कर रहे थे। खैर, हमने कुछ मानव प्रयोग किए थे। हम आप जैसे बहुमूल्य मानव संसाधनों को, जैसे कि कैलकुटेक्स, शुरुआत में ही किसी खतरे में नहीं डालना चाहते थे, आप जानते हैं। सिस्टम ने हमारे लिए दस लोगों का चयन किया। हमने उन पर ऑपरेशन किए और परिणामों का इंतजार किया।"
"किस तरह के लोग?"
"सिस्टम ने हमें कुछ नहीं बताया। वे दस स्वस्थ पुरुष थे, जिन्हें पहले कभी कोई मानसिक विकार नहीं था। उनका आईक्यू 120 या उससे अधिक था। यही उनकी एकमात्र शर्तें थीं। परिणाम कुछ हद तक उत्साहजनक थे। दस में से सात में जंक्शन बॉक्स ने बिना किसी रुकावट के काम किया। बाकी तीन में जंक्शन बॉक्स काम नहीं किया; वे संज्ञानात्मक प्रणाली को बदल नहीं पाए या उन्हें भ्रमित कर दिया या उन्हें दोनों ही मिल गईं।"
"भ्रमित लोगों का क्या हुआ?"
"हमने उन्हें पहले की तरह ठीक कर दिया, जंक्शन बॉक्स को डिस्कनेक्ट कर दिया। कोई नुकसान नहीं हुआ। इस बीच, हमने सातों को प्रशिक्षण देना जारी रखा, जब तक कि कई समस्याएं सामने नहीं आईं: एक तकनीकी समस्या थी, और कुछ का संबंध प्रतिभागियों से ही था। सबसे पहले, जंक्शन बॉक्स को स्विच करने का कॉल साइन बहुत ज्यादा एक-दूसरे पर निर्भर था। हमने पांच अंकों की संख्या से शुरुआत की थी, लेकिन किसी कारण से उनमें से कुछ अंगूर के रस की गंध से ही जंक्शन बॉक्स स्विच कर देते थे। दोपहर के भोजन के समय हमें इसका पता चला।"
मेरे बगल में बैठी गोल-मटोल लड़की खिलखिला रही थी, लेकिन मेरे लिए यह हँसी की बात नहीं थी। अपनी होश में आने के तुरंत बाद, मैं तरह-तरह की गंधों से परेशान हो गया था। उदाहरण के लिए, मुझे पक्का यकीन है कि लड़की के तरबूज़ वाले इत्र की वजह से मुझे अजीब-अजीब आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। अगर हर बार कोई नई गंध सूंघने पर आपका दिमाग काम करना बंद कर दे, तो यह बहुत खतरनाक हो सकता है।
"हमने संख्याओं के बीच विशेष ध्वनि तरंगें फैलाकर इस समस्या का समाधान किया। ऐसे कॉल साइन जिनसे कुछ खास गंधों के प्रति होने वाली प्रतिक्रियाओं के समान प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती थीं। एक और समस्या, जो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करती थी, यह थी कि जंक्शन बॉक्स तो चालू हो जाता था, लेकिन संग्रहित संज्ञानात्मक प्रणाली काम नहीं करती थी। हमने हर तरह की संभावनाओं की जाँच करने के बाद पाया कि समस्या शुरू से ही विषयों की संज्ञानात्मक प्रणाली में थी। विषयों की मूल चेतना अस्थिर या बहुत विरल थी। वे स्वस्थ और काफी बुद्धिमान थे, लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से उन्होंने अपनी पहचान स्थापित नहीं की थी। या यूँ कहें कि

उनकी पहचान तो पर्याप्त थी, लेकिन उन्होंने चीजों को उस पहचान के अनुसार व्यवस्थित कर लिया था, इसलिए आप उनके साथ कुछ नहीं कर सकते थे। ऑपरेशन होने का मतलब यह नहीं था कि आप फेरबदल कर सकते थे। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि यहाँ एक स्क्रीनिंग कारक काम कर रहा था।"

"तो, अब हमारे पास तीन बचे थे। तीनों में ही, निर्धारित कॉल साइन पर जंक्शन बॉक्स सक्रिय हो गया और रुका हुआ संज्ञानात्मक तंत्र स्थिर और प्रभावी ढंग से काम करता रहा। इसलिए हमने उन पर एक महीने और प्रयोग किए, और उस समय हमें आगे बढ़ने की अनुमति मिल गई।"

और फिर, जैसा कि मुझे लगता है, आपने वास्तविककरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया?

"बिल्कुल सही। अगला चरण लगभग पाँच सौ कैलकुटेक लोगों के साथ परीक्षण और साक्षात्कार करना था। हमने छब्बीस स्वस्थ पुरुषों का चयन किया, जिन्हें मानसिक विकारों का कोई इतिहास नहीं था, जो मजबूत मनोवैज्ञानिक स्वतंत्रता प्रदर्शित करते थे और जो अपने व्यवहार और भावनाओं को नियंत्रित कर सकते थे। इसमें काफी मेहनत लगी। चूंकि परीक्षण और साक्षात्कार में बहुत सी बातें अधूरी रह जाती हैं, इसलिए मैंने सिस्टम से आप सभी के बारे में विस्तृत फाइलें तैयार करवाईं। आपका पारिवारिक पृष्ठभूमि, परवरिश, स्कूल रिकॉर्ड, यौन जीवन, शराब पीना, ... खैर, सब कुछ।"

"मुझे बस एक बात समझ नहीं आ रही," मैंने कहा। "मैंने जो सुना है, उसके अनुसार हमारी मूल चेतना, हमारे ब्लैक बॉक्स, सिस्टम वॉल्ट में संग्रहीत हैं। यह कैसे संभव है?"

"हमने आपकी संज्ञानात्मक प्रणालियों का गहन विश्लेषण किया। फिर हमने मुख्य कंप्यूटर बैंक में संग्रहीत करने के लिए सिमुलेशन तैयार किए। हमने इसे एक प्रकार की सुरक्षा के रूप में किया; अगर आपको कुछ हो जाता तो आप फंसे रहते।"

"एक पूर्ण अनुकरण?"

नहीं, बिल्कुल नहीं, लेकिन कार्यात्मक रूप से लगभग पूर्ण के करीब, क्योंकि सतह की परतों को प्रभावी ढंग से हटाने से ट्रेसिंग बहुत आसान हो गई। अधिक सटीक रूप से, प्रत्येक सिमुलेशन तीन सेट समतल निर्देशांक और होलोग्राफ से बना था। पिछले कंप्यूटरों में यह संभव नहीं था, लेकिन ये नई पीढ़ी के कंप्यूटर अपने आप में कई जटिल कार्यों को समाहित करते हैं, इसलिए वे जटिल मानसिक संरचनाओं को संभाल सकते हैं। दरअसल, यह निश्चित संरचनात्मक मानचित्रण का प्रश्न है। यह थोड़ा जटिल है, लेकिन आम आदमी के लिए इसे सरल शब्दों में कहें तो, ट्रेसिंग प्रणाली इस प्रकार काम करती है: सबसे पहले, हम आपके चेतन मन द्वारा उत्सर्जित विद्युत पैटर्न को इनपुट करते हैं। यह पैटर्न प्रत्येक रीडिंग के साथ थोड़ा बदलता रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपकी चिप्स अलग-अलग लाइनों में और लाइनें बंडलों में पुनर्व्यवस्थित होती रहती हैं। इनमें से कुछ पुनर्व्यवस्थाएं मात्रात्मक रूप से सार्थक होती हैं; अन्य उतनी नहीं। कंप्यूटर उनमें अंतर करता है, अर्थहीन लोगों को अस्वीकार करता है, और बाकी को एक मूल पैटर्न के रूप में मैप किया जाता है। यह प्रक्रिया सैकड़ों-हजारों बार दोहराई जाती है। इकाई-बार। जैसे प्लास्टिक फिल्म की कोशिकाओं को एक

दूसरे के ऊपर रखना। फिर, यह सुनिश्चित करने के बाद कि मिश्रण अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर नहीं आएगा, हम उस पैटर्न को आपके ब्लैक बॉक्स के रूप में रखते हैं।"

"क्या आप कह रहे हैं कि आपने हमारे दिमाग की प्रतिकृति बनाई है?"

“नहीं, बिलकुल नहीं। दिमाग की क्षमता को दोहराया नहीं जा सकता। मैंने तो बस आपके संज्ञानात्मक तंत्र को भौतिक स्तर पर ठीक किया है। फिर भी, इसकी एक समय सीमा होती है। दिमाग की लचीलेपन के आगे हमें हार माननी ही पड़ेगी। लेकिन हमने सिर्फ इतना ही नहीं किया। हमने आपके ब्लैक बॉक्स से सफलतापूर्वक एक कंप्यूटर विज़ुअलाइज़ेशन तैयार किया।”

यह कहते हुए प्रोफेसर ने पहले मेरी तरफ देखा, फिर अपनी गोल-मटोल पोती की तरफ।

“आपकी चेतना के मूल का एक वीडियो। ऐसा कुछ जो पहले किसी ने नहीं किया था। क्योंकि यह संभव ही नहीं था। मैंने इसे संभव कर दिखाया। आपको क्या लगता है मैंने यह कैसे किया?”

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है।

“हमने अपने प्रतिभागियों को एक वस्तु दिखाई, उनके मस्तिष्क में होने वाली विद्युत चुम्बकीय प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया, उन्हें संख्याओं में परिवर्तित किया, और फिर उन्हें बिंदुओं के रूप में दर्शाया। शुरुआती चरणों में डिज़ाइन बहुत ही सरल थे, लेकिन कई बार दोहराने, संशोधन करने और विवरण भरने के बाद, हम वही चीज़ कंप्यूटर स्क्रीन पर दोबारा बना पाए जो प्रतिभागियों ने देखी थी। जितना मैंने बताया है उतना आसान तो नहीं था, लेकिन सरल शब्दों में कहें तो, हमने यही किया। इन चरणों को बार-बार दोहराने के बाद, कंप्यूटर ने इन पैटर्नों को इतनी अच्छी तरह से समझ लिया कि वह मस्तिष्क की विद्युत चुम्बकीय गतिविधि से छवियों को स्वतः ही अनुकरण कर सकता था। कंप्यूटर इस मामले में वाकई कमाल का है।”

“इसके बाद मैंने जो किया वो ये था कि मैंने आपके ब्लैक बॉक्स को उन पैटर्न से पहले से प्रोग्राम किए गए कंप्यूटर में डाला, और उससे आपके अंतर्मन में चल रही घटनाओं का एक अद्भुत ग्राफिक चित्रण सामने आया। स्वाभाविक रूप से, छवियां अव्यवस्थित और खंडित थीं और अपने आप में उनका कोई खास अर्थ नहीं था। उन्हें संपादन की आवश्यकता थी। काटना-जोड़ना, कुछ हिस्सों को हटाना, क्रम बदलना, बिल्कुल फिल्म संपादन की तरह। सब कुछ एक कहानी में पिरोना।”

“एक कहानी?”

“इसमें कोई अजीब बात नहीं होनी चाहिए,” प्रोफ़ेसर ने कहा। “सर्वश्रेष्ठ संगीतकार चेतना को ध्वनि में रूपांतरित करते हैं; चित्रकार रंग और आकार के साथ भी ऐसा ही करते हैं। मानसिक घटनाएँ ही वो चीज़ें हैं जिन्हें लेखक उपन्यासों में ढालते हैं। मूल तर्क एक ही है। बेशक, मस्तिष्क और उंगलियों के बीच होने वाले रूपांतरण के रूप में, यह एक सटीक मानचित्रण नहीं है, लेकिन छवियों के एक सटीक, यादृच्छिक क्रम को देखने से भी हमें कोई खास मदद नहीं मिली। खैर, यह ‘दृश्य संस्करण’ पूरी तस्वीर को समझने में काफी सुविधाजनक साबित हुआ। सच है, सिस्टम के एजेंडे में यह शामिल नहीं था। यह दृश्य-निर्माण तो बस मेरा अपना प्रयास था।”

“क्या आप बस यूं ही हाथ आजमा रहे हैं?”
“युद्ध से पहले, मैं फिल्मों में सहायक संपादक के रूप में काम करता था। इसी वजह से मैं इस काम में इतना माहिर हो गया। अव्यवस्था को व्यवस्थित करना। मैं अपने प्रयोगशाला में अकेले ही संपादन करता था, बिना किसी अन्य कर्मचारी की सहायता के। किसी को भी पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा था। इसलिए, ज़ाहिर है, मैं उन दृश्यों को बिना किसी को बताए अपने साथ ले जा सकता था। वे मेरे लिए अनमोल थे।”
"क्या आपने सभी छब्बीस विज़ुअलाइज़ेशन प्रस्तुत किए?"
“जी हां, बिल्कुल। मैंने उन सभी को बनाया। हर एक को एक शीर्षक दिया, और वही शीर्षक ब्लैक बॉक्स का शीर्षक बन गया। तुम्हारा शीर्षक 'दुनिया का अंत' है, है ना?”
“आप जानते हैं कि यह ‘दुनिया का अंत’ है। यह एक काफी असामान्य शीर्षक है, क्या आप ऐसा नहीं कहेंगे?”
“हम इस बारे में बाद में बात करेंगे,” प्रोफ़ेसर ने कहा। “असल बात यह है कि किसी को पता ही नहीं था कि मैं छब्बीस चेतनाओं की कल्पना करने में सफल हो गया था। मैंने किसी को नहीं बताया। मैं अपने शोध को सिस्टम से परे ले जाना चाहता था। मुझे जो प्रोजेक्ट सौंपा गया था, वह मैंने पूरा कर लिया था और अपने शोध के लिए ज़रूरी मानव प्रयोग भी कर लिए थे। मैं अब और वहाँ नहीं रुकना चाहता था। मैंने सिस्टम को बताया कि मैं छोड़ना चाहता हूँ। वे नहीं चाहते थे कि मैं छोड़ूँ; मुझे बहुत कुछ पता था। अगर मैं इस स्तर पर सेमियोटेक्स के पास चला जाता, तो पूरी फेरबदल योजना बेकार हो जाती, या कम से कम उन्हें ऐसा ही लगा। उन्होंने मुझसे कहा, तीन महीने इंतज़ार करो। उनकी प्रयोगशाला में जो भी शोध करना चाहो, जारी रखो। वे मुझे एक विशेष बोनस देंगे। तीन महीने में, उनका अति-गुप्त सुरक्षा तंत्र परिपूर्ण हो जाएगा, इसलिए अगर मुझे जाना ही है, तो तब तक यहीं रुको।”
“अब, मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूँ और इस तरह की पाबंदियाँ मुझे रास नहीं आतीं, लेकिन खैर, यह कोई बुरा सौदा नहीं था। इसलिए मैंने यहीं रुकने का फैसला किया। फिर भी, आराम से रहने से कुछ खास फायदा नहीं होता। इतना समय और इतने सारे विषय मेरे हाथ में होने के कारण, मुझे आपके दिमाग के जंक्शन बॉक्स में एक और अलग सर्किट लगाने का विचार आया। इसे तीन-तरफ़ा संज्ञानात्मक सर्किट बनाऊँगा। और इस तीसरे सर्किट में, मैं आपकी मूल चेतना का अपना संपादित संस्करण लोड करूँगा।”
"आप ऐसा क्यों करना चाहते हो?"
“एक तो यह कि मैं देखना चाहता था कि इसका विषयों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। मैं यह पता लगाना चाहता था कि किसी और द्वारा व्यवस्थित की गई संपादित चेतना मूल विषयों में कैसे काम करेगी। मानव इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। और दूसरी बात—मान लीजिए, यह एक आकस्मिक प्रेरणा थी—अगर सिस्टम सचमुच मुझसे कह रहा था कि मैं जो चाहूँ करूँ, तो मैं उनकी बात मानकर वही करूँगा जो मुझे पसंद है। मैंने सोचा कि मैं एक और ऐसा कार्य बना लूँ जिसके बारे में उन्हें कभी संदेह न हो।”
"और इसी वजह से तुमने हमारे दिमाग से खिलवाड़ किया, और वो बिजली की पटरीं बिछा दीं?"

खैर, वैज्ञानिक अपनी जिज्ञासा को नियंत्रित नहीं कर सकते। बेशक, मैं उन वैज्ञानिकों की निंदा करता हूँ जिन्होंने नाज़ियों के साथ मिलकर यातना शिविरों में जानवरों पर प्रयोग किए। यह गलत था। साथ ही, मैं सोचता हूँ कि अगर आप जीवित प्रयोग करने ही वाले हैं, तो कुछ और बेहतर और अधिक उपयोगी क्यों न करें। मौका मिलने पर, सभी वैज्ञानिक दिल से यही महसूस करते हैं। मैं तो बस वहाँ एक तीसरा उपकरण जोड़ रहा था जहाँ पहले से ही दो उपकरण मौजूद थे, मस्तिष्क में पहले से मौजूद सर्किटों के प्रवाह को थोड़ा बदल रहा था। एक अतिरिक्त शब्द की स्पेलिंग लिखने के लिए उन्हीं अक्षरमाला वाले फ्लैशकार्ड का उपयोग करने में क्या हर्ज है?

लेकिन सच्चाई यह है कि मेरे अलावा, शफलिंग एक्चुअलाइजेशन से गुज़रे बाकी सभी लोग मर चुके हैं। अब ऐसा क्यों है?

“ये तो कुछ अजीब है... मुझे भी नहीं पता क्यों,” प्रोफेसर ने स्वीकार किया। “बिल्कुल जैसा आपने कहा, शफलिंग एक्चुअलाइजेशन से गुज़रे छब्बीस कैलकुटेक में से पच्चीस की मौत हो गई। सबकी मौत एक ही तरह से हुई, मानो उनकी किस्मत पहले से ही तय थी। एक रात वे सो गए; सुबह तक वे मर चुके थे।”

“तो फिर मेरा क्या होगा?” मैंने कहा। “कल तक शायद मैं मर चुका होऊँगा।”

“ज़रा सब्र रखो बेटे,” प्रोफ़ेसर ने अपने कंबल के अंदर से कहा। “वे सभी पच्चीस लोग एक-दूसरे के छह महीने के अंतराल में मर गए। घटना घटने के एक साल दो महीने से लेकर एक साल आठ महीने के बीच। और देखो, तीन साल तीन महीने बाद भी तुम बिना किसी परेशानी के चल-फिर रहे हो। इससे हमें लगता है कि तुममें कोई ऐसी खास शक्ति है जो दूसरों में नहीं थी।”

“विशेष? किस अर्थ में विशेष?”

“अरे, अरे। एक मिनट रुकिए। मुझे आपसे यह पूछने दीजिए: जब से आपको आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है, तब से आपको कोई अजीब लक्षण तो नहीं दिखे हैं? क्या आपको कुछ सुनाई दे रहा है, मतिभ्रम हो रहा है, बेहोशी आ रही है या ऐसा कुछ भी?”

“नहीं,” मैंने कहा। “मैंने कुछ देखा या सुना नहीं है। सिवाय इसके कि, जैसा कि मैंने कहा, मैं फलों की गंध के प्रति संवेदनशील हो गया हूँ।”

“यह तो सबके साथ होता था। फिर भी, इससे किसी तरह की श्रवण या दृश्य मतिभ्रम तो नहीं हुई, है ना? अचानक बेहोशी तो नहीं हुई?”

"नहीं।"

“हम्म,” प्रोफेसर ने बोलते-बोलते बात अधूरी छोड़ दी। “और कुछ?”

जी हाँ, बिल्कुल। एक ऐसी घटना जो मुझे बिल्कुल याद नहीं थी, अचानक मेरे दिमाग में लौट आई। अब तक मुझे बस कुछ अधूरी यादें ही याद थीं, इसलिए मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन यहाँ आते समय, पानी की आवाज़ से मुझे एक लंबा, जीवंत अनुभव हुआ। यह कोई भ्रम नहीं था। यह एक सच्ची याद थी। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।

“नहीं, ऐसा नहीं था,” प्रोफेसर ने सीधे-सीधे मेरी बात काट दी। “हो सकता है आपने इसे एक स्मृति के रूप में अनुभव किया हो, लेकिन वह आपकी अपनी बनाई हुई एक कृत्रिम पुलिया थी। देखिए, स्वाभाविक रूप से आपकी अपनी पहचान और मेरी संपादित चेतना के बीच अंतराल होंगे। इसलिए आपने अपने अस्तित्व को सही ठहराने के लिए उन अंतरालों पर पुल बना दिए हैं।”

मुझे समझ नहीं आ रहा। मेरे साथ ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। अचानक अब ऐसा क्यों हो रहा है?

“ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैंने जंक्शन को तीसरे सर्किट में बदल दिया,” प्रोफेसर ने कहा। “लेकिन चलिए, चीजों को क्रम से ही समझते हैं। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो चीजें मुश्किल हो जाएंगी, और फिर आपके लिए समझना और भी कठिन हो जाएगा।”

मैंने व्हिस्की का एक घूंट लिया। यह तो एक बुरे सपने में बदलता जा रहा था।

“जब पहले आठों आदमी एक के बाद एक मर गए, तो मुझे सिस्टम सेंट्रल से फोन आया। उन्होंने कहा, मौत का कारण पता करो। सच कहूँ तो, मैं उनसे और कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, लेकिन चूंकि यह मेरी तकनीक थी, और जीवन-मरण का मामला था, इसलिए मैं उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। खैर, मैं देखने गया। उन्होंने मुझे मौत के हालात के बारे में बताया और मुझे मस्तिष्क की पोस्टमार्टम रिपोर्ट दिखाई। जैसा कि मैंने आपको बताया, सभी आठों की मौत अज्ञात कारणों से एक ही तरह हुई थी। मस्तिष्क या शरीर में कोई स्पष्ट क्षति नहीं थी; सभी ने सोते समय चुपचाप सांस लेना बंद कर दिया था।”

“क्या आपको मृत्यु का कारण पता नहीं चला?”

“मुझे कभी पता नहीं चला। स्वाभाविक रूप से, मैंने कुछ परिकल्पनाएँ बनाईं। अगर किसी कारण से उनके दिमाग में लगाए गए जंक्शन बॉक्स जल गए या खराब हो गए, तो क्या संज्ञानात्मक प्रणालियाँ आपस में उलझकर मस्तिष्क के कार्यों पर अत्यधिक भार नहीं डाल देंगी? या मान लीजिए कि यह जंक्शन की समस्या नहीं थी, मान लीजिए कि थोड़े समय के लिए भी मूल चेतना को मुक्त करने में कुछ मूलभूत समस्या थी, शायद यह मानव मस्तिष्क के लिए बहुत अधिक था?” प्रोफेसर ने कंबल को अपनी ठुड्डी तक खींचने के लिए थोड़ी देर रुक गए।

“मस्तिष्क के पोस्टमार्टम से कुछ स्पष्ट नहीं हुआ?”

“दिमाग न तो टोस्टर है और न ही वाशिंग मशीन। कोड और स्विच आँखों से लगभग अदृश्य होते हैं। हम यहाँ सिर्फ अदृश्य विद्युत आवेशों के प्रवाह को पुनर्निर्देशित करने की बात कर रहे हैं, इसलिए किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद जंक्शन बॉक्स को निकालकर परीक्षण करने से कुछ पता नहीं चलेगा। हम जीवित मस्तिष्क में अनियमितताओं का पता लगा सकते हैं, लेकिन मृत मस्तिष्क में नहीं। बेशक, अगर रक्तस्राव या ट्यूमर हो तो हम बता सकते हैं, लेकिन यहाँ ऐसा कुछ नहीं था। ये मस्तिष्क बिल्कुल साफ थे।”

“इसके बाद हमने बचे हुए दस प्रतिभागियों को प्रयोगशाला में बुलाया और उनकी दोबारा जाँच की। हमने उनके मस्तिष्क के स्कैन किए, संज्ञानात्मक प्रणालियों को बदलकर देखा कि वे ठीक से काम कर रही हैं या नहीं। हमने उनसे विस्तृत साक्षात्कार लिए, उनसे पूछा कि क्या उन्हें कोई शारीरिक विकार, श्रवण या दृश्य

मतिभ्रम है। लेकिन उनमें से किसी को भी कोई समस्या नहीं थी। सभी स्वस्थ थे और उन्होंने बिना किसी खास बात के नौकरी बदलने का काम जारी रखा। हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते थे कि जिनकी मृत्यु हुई थी, उनके मस्तिष्क में पहले से ही कोई गड़बड़ी थी जिसके कारण वे नौकरी बदलने के लिए अनुपयुक्त थे। हमें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह गड़बड़ी क्या थी। यह आगे की जाँच का विषय था, जिसे नौकरी बदलने के दूसरे प्रयास से पहले सुलझाना आवश्यक था।"

लेकिन जैसा कि बाद में पता चला, हम गलत थे। एक महीने के भीतर ही पाँच और लोगों की मौत हो गई, जिनमें से तीन की हमने पूरी तरह से दोबारा जाँच की थी। जिन लोगों को हमने अपनी दोबारा जाँच के आधार पर योग्य माना था, वे पलक झपकाए बिना ही जल्द ही मर गए। कहने की जरूरत नहीं है, यह हमारे लिए बहुत बड़ा सदमा था। हमारे छब्बीस प्रतिभागियों में से आधे मर चुके थे, और हम यह जानने में असमर्थ थे कि ऐसा क्यों हुआ। यह अब योग्यता बनाम अयोग्यता का सवाल नहीं था; यह बुनियादी प्रोग्राम डिज़ाइन की गलती थी। मस्तिष्क के लिहाज से, दो अलग-अलग संज्ञानात्मक प्रणालियों के बीच स्विच करने का विचार शुरू से ही अव्यवहारिक था। उस समय मैंने सिस्टम को प्रोजेक्ट रोकने का प्रस्ताव दिया। बचे हुए लोगों के दिमाग से जंक्शन बॉक्स निकाल दिए जाएँ, आगे की सभी फेरबदल रद्द कर दी जाएँ। अगर हमने ऐसा नहीं किया, तो हम सभी को खो देंगे। सिस्टम ने मुझे बताया कि यह संभव नहीं है। उन्होंने मेरे प्रस्ताव को खारिज कर दिया।

"वे क्या?"

"उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। फेरबदल प्रणाली अपने आप में बेहद सफल रही थी, और यह उम्मीद करना अवास्तविक था कि प्रणाली फिर से पहले जैसी हो जाएगी। इसके अलावा, हमें यह भी पक्का नहीं था कि बाकी बचे हुए जीव मरेंगे या नहीं। अगर कोई बच भी जाता, तो वे अगली पीढ़ी के शोध के लिए आदर्श नमूने साबित होते। तभी मैंने पद छोड़ दिया।"

और सिर्फ मैं ही जीवित बचा।

"सही।"

मैंने अपना सिर चट्टान की दीवार से टिकाया और अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरा। मैंने आखिरी बार दाढ़ी कब बनाई थी?

तो फिर मैं मरा क्यों नहीं?

"यह भी महज़ एक परिकल्पना है," प्रोफ़ेसर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। "परिकल्पनाओं पर आधारित एक परिकल्पना। फिर भी, मैं पूरी तरह गलत नहीं हो सकता। ऐसा लगता है कि आप शुरू से ही कई संज्ञानात्मक प्रणालियों के तहत काम कर रहे थे। आपको खुद भी नहीं पता था कि आप अपना समय दो पहचानों के बीच बाँट रहे थे। हमारा वह तरीका जिसमें एक घड़ी एक जेब में और दूसरी घड़ी दूसरी जेब में होती है। शायद आपके पास अपना एक जंक्शन बॉक्स था जिसने आपको एक तरह की मानसिक सुरक्षा प्रदान कर दी थी।"

"क्या आपके पास कोई सबूत है?"
“हाँ, मैंने किया। दो-तीन महीने पहले, मैं वापस गया और उन छब्बीस दृश्यों को फिर से देखा। और एक बात मुझे समझ में आई। तुम्हारा दृश्य सबसे कम बेतरतीब और सबसे सुसंगत था। अच्छी तरह से रचा गया, यहाँ तक कि एकदम सही। यह किसी उपन्यास या फिल्म जैसा लग सकता था। बाकी पच्चीस अलग थे। वे सभी उलझे हुए, अस्पष्ट, बिखरे हुए और अस्त-व्यस्त थे। मैंने उन्हें संपादित करने की कितनी भी कोशिश की, वे आपस में जुड़ नहीं पाए। बेतरतीब स्वप्न छवियों की कड़ियाँ। वे बच्चों की उंगलियों से बनाई गई चित्रकारी की तरह थे।”
मैंने बहुत सोचा, आखिर ऐसा क्यों? और मैं एक निष्कर्ष पर पहुँचा: यह तुमने खुद बनाया है। तुमने अपनी छवियों को आकार दिया है। ऐसा लगता है मानो तुम अपनी चेतना के भीतर हाथी बनाने वाली फैक्ट्री में उतरे और अपने हाथों से एक हाथी बनाया। बिना जाने-समझे ही!
मैंने कहा, "मुझे इस बात पर विश्वास करना बहुत मुश्किल लगता है।"
“मैं इसके कई संभावित कारण सोच सकता हूँ,” प्रोफेसर ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा। “बचपन का आघात, गलत परवरिश, अत्यधिक अहंकार, अपराधबोध, ... जो भी कारण रहा हो, उसी ने आपको अत्यधिक आत्म-सुरक्षात्मक बना दिया, आपको अपने कवच को कठोर बनाने पर मजबूर कर दिया।”
अच्छा, ठीक है। अगर ऐसा है, तो इसका क्या परिणाम होगा?
“कोई खास बात नहीं। अगर तुम्हें अकेला छोड़ दिया जाए, तो शायद तुम एक अच्छी, लंबी ज़िंदगी जिओगे,” प्रोफेसर ने कहा। “लेकिन बदकिस्मती से, ऐसा नहीं होने वाला। मानो या न मानो, तुम इस पूरे बेवकूफी भरे सूचना युद्ध के नतीजे की कुंजी हो। जल्द ही सिस्टम तुम्हें मॉडल बनाकर दूसरी पीढ़ी का प्रोजेक्ट शुरू कर देगा। वे तुम्हारे हर उस हिस्से को छेड़ेंगे, जांचेंगे और परखेंगे जिस पर परीक्षण किया जा सकता है। मुझे नहीं पता कि वे कितनी दूर तक जाएंगे, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिला सकता हूं कि यह सुखद नहीं होगा। मैं तुम्हें इन सब से बचाना चाहता था।”
“बहुत बढ़िया,” मैंने आह भरी। “क्या तुम इस परियोजना का बहिष्कार करके मुझे बचाओगे?”
नहीं, लेकिन आपको मुझ पर भरोसा करना होगा।
“तुम पर भरोसा करूं? इतने समय तक मुझे धोखा देने के बाद? मुझसे झूठ बोलने के बाद, मुझसे वो फर्जी गणनाएं करवाने के बाद...”
“मैं सिस्टम या सेमियोटेक्स से पहले आप तक पहुंचना चाहता था, ताकि मैं अपनी परिकल्पना का परीक्षण कर सकूं। अगर मुझे पुख्ता सबूत मिल जाता, तो उन्हें आपको इतनी परेशानी में नहीं डालना पड़ता। मैंने आपको जो डेटा दिया था, उसमें एक कॉल सीक्वेंस शामिल था। जब आप अपने दूसरे संज्ञानात्मक सिस्टम में चले गए, तो आपने एक और क्लिक करके तीसरे संज्ञानात्मक सिस्टम में स्विच कर लिया।”
"वही जिसकी आपने कल्पना की और संपादित किया।"
“बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने सिर हिलाते हुए कहा।

"इससे आपकी परिकल्पना कैसे सिद्ध होगी?"
“यह कमियों का सवाल है,” प्रोफेसर ने उत्तर दिया। “आपकी मूल चेतना पर आपकी सहज पकड़ है। इसलिए आपकी दूसरी संज्ञानात्मक प्रणाली में आपको कोई समस्या नहीं है। लेकिन यह तीसरा सर्किट, जिसे मैंने संपादित किया है, आंशिक रूप से अपरिचित होगा, और इस अंतर से आपमें कुछ प्रतिक्रिया उत्पन्न होनी चाहिए। इसे मापकर, मैं आपके अवचेतन मन का पूर्ण इलेक्ट्रोपिक्टोग्राफिक रिकॉर्ड प्राप्त कर सकता था।”
"क्या ऐसा कर पाना चाहिए था?"
“हाँ, ऐसा कर पाना चाहिए था। यह तब की बात है जब सेमियोटेक्स ने इंकलिंग्स के साथ मिलकर मेरी प्रयोगशाला को नष्ट नहीं किया था। वे मेरे सारे शोध सामग्री, हर वो चीज़ जो मायने रखती थी, लेकर चले गए।”
“क्या आप निश्चित हैं? हमें लगा था कि उन्होंने महत्वपूर्ण चीजों को छुआ तक नहीं था।”
“नहीं, मैं प्रयोगशाला में वापस गया और जाँच की। वहाँ कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं बचा है। जो कुछ बचा है, उससे सार्थक माप करना संभव नहीं है।”
“तो इन सब बातों का दुनिया के अंत से क्या संबंध है?” एक मासूम सा सवाल।
"सटीक रूप से कहें तो, यह दुनिया नहीं है। यह आपके दिमाग में बसी दुनिया है जिसका अंत होने वाला है।" मैंने कहा, "तुमने मुझे उलझा दिया है।"
“यह आपकी मूल चेतना है। आपकी चेतना में जो दृश्य प्रदर्शित होता है, वह है दुनिया का अंत। यह विचार आपके भीतर क्यों छिपा है, यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन किसी भी कारण से, यह वहां मौजूद है। इस बीच, आपके मन में बसी यह दुनिया समाप्त हो रही है। या दूसरे शब्दों में कहें तो, आपका मन वहीं, दुनिया के अंत नामक स्थान पर निवास करेगा।”
“इस दुनिया में अभी और यहीं जो कुछ भी है, वह उस दुनिया से गायब है। वहाँ न समय है, न जीवन है, न मृत्यु है। किसी भी मायने में कोई मूल्य नहीं हैं। कोई आत्म-पहचान नहीं है। तुम्हारी उस दुनिया में, लोगों की आत्म-पहचान जानवरों में विलीन हो जाती है।”
“जानवर?”
प्रोफेसर ने कहा, "यूनिकॉर्न। यहाँ यूनिकॉर्न एक कस्बे में झुंड में रखे गए हैं, जो एक दीवार से घिरा हुआ है।"
"क्या इसका उस यूनिकॉर्न की खोपड़ी से कुछ लेना-देना है जो तुमने मुझे दी थी?"
“वो एक प्रतिकृति थी। मैंने बनाई थी। काफी यथार्थवादी है, है ना? मैंने इसे आपकी कल्पना की गई छवि के आधार पर बनाया था। इसमें काफी मेहनत लगी। इसका कोई विशेष महत्व नहीं है। बस यूं ही मस्तिष्क विज्ञान के विचार से बना दिया, हा हा। आपके लिए मेरा छोटा सा उपहार।”
“ज़रा एक मिनट रुकिए,” मैंने कहा। “मैं यह मानने को तैयार हूँ कि मेरे मन की गहराइयों में ऐसी दुनिया मौजूद है। मैं यह भी मान लेता हूँ कि आपने इसे संपादित करके स्पष्ट रूप दिया है और मेरे मस्तिष्क के तीसरे सर्किट में डाल दिया है। फिर, आपने मेरी चेतना को वहाँ निर्देशित करने के लिए संकेत भेजे हैं ताकि वह फेरबदल कर सके। अब तक सब ठीक है?”

"सही।"
“तो फिर, यह दुनिया के अंत की बात क्या है? एक बार फेरबदल खत्म हो जाने के बाद, क्या तीसरा चक्र टूट नहीं जाएगा और मेरी चेतना स्वचालित रूप से पहले चक्र में वापस नहीं आ जाएगी?”
“नहीं। यही तो समस्या है,” प्रोफेसर ने सुधार करते हुए कहा। “अगर ऐसा होता तो सब कुछ आसान होता, लेकिन ऐसा नहीं है। तीसरे सर्किट में ओवरराइड फंक्शन नहीं है।”
"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मेरा तीसरा सर्किट स्थायी रूप से व्यस्त है?"
"जी हां, बात लगभग यही है।"
लेकिन अभी मैं अपने पहले सर्किट के अनुसार सोच रहा हूं और काम कर रहा हूं।
“ऐसा इसलिए है क्योंकि आपका दूसरा सर्किट जाम हो गया है। अगर हम इसका आरेख बनाएं, तो व्यवस्था कुछ इस तरह दिखेगी,” प्रोफेसर ने कहा। उन्होंने एक मेमो पैड पर आरेख बनाया और मुझे दे दिया।

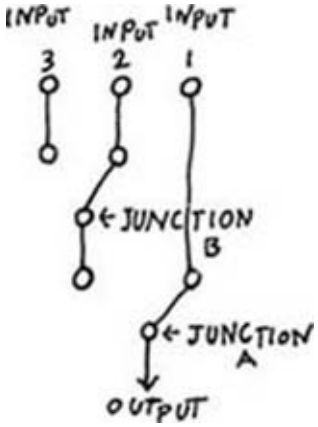

“यह आपकी सामान्य स्थिति है। जंक्शन A इनपुट 1 से जुड़ा है, जंक्शन B इनपुट 2 से। जबकि अब,” प्रोफेसर ने दूसरी शीट पर एक और आरेख बनाते हुए आगे कहा, “यह इस तरह है।”

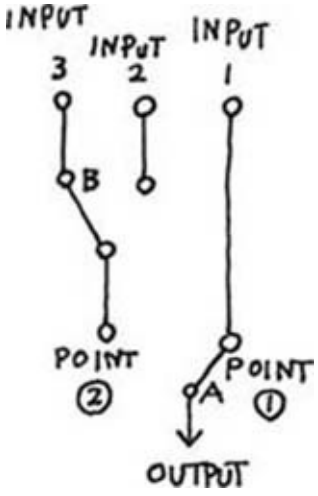

बात समझ में आई? जंक्शन B तीसरे सर्किट से जुड़ा है, जबकि जंक्शन A स्वचालित रूप से आपके पहले सर्किट से जुड़ जाता है। ऐसे में, आप पहले सर्किट मोड में सोच और काम कर सकते हैं। हालांकि, यह केवल अस्थायी है। हमें जंक्शन B को जल्द ही वापस दूसरे सर्किट से जोड़ना होगा। तीसरा सर्किट, सही मायने में, आपका अपना नहीं है। अगर हम इसे ऐसे ही छोड़ देते हैं, तो ऊर्जा का अंतर जंक्शन बॉक्स को पिघला देगा, और आप स्थायी रूप से तीसरे सर्किट से जुड़ जाएंगे। विद्युत निर्वहन जंक्शन A को बिंदु 2 पर खींचकर वहीं पिघला देगा। मेरा इरादा ऊर्जा के अंतर को मापना और ऐसा होने से पहले आपको सामान्य स्थिति में वापस लाना था।

"इरादा!"

“हां, मेरा यही इरादा था, लेकिन मुझे डर है कि अब मेरे हाथ से सब कुछ निकल चुका है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, उन मूर्खों ने मेरी प्रयोगशाला को नष्ट कर दिया और मेरी सबसे महत्वपूर्ण सामग्री चुरा ली।”

"क्या मतलब, मैं इस तीसरे सर्किट में फंसा रहूंगा और वापसी की कोई उम्मीद नहीं होगी?"

"हाँ, बिल्कुल। आप दुनिया के अंत में रह रहे होंगे। मुझे बहुत-बहुत खेद है।"

“बहुत अफ़सोस है?” शब्द अस्पष्टता से निकल गए। “बहुत अफ़सोस है? आपके लिए कहना आसान है, लेकिन मेरा क्या होगा? यह कोई खेल नहीं है! यह मेरी ज़िंदगी है!”

“मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा कुछ होगा। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि सेमियोटेक्स और इंकलिंग्स कोई समझौता कर लेंगे। और अब सिस्टम सेंट्रल शायद सोच रहा है कि हम भी कुछ कर रहे हैं। यानी, सेमियोटेक्स की नज़र आप पर भी थी। उन्होंने सिस्टम को इसकी सूचना दे ही दी थी। और सिस्टम के हिसाब से, हमने उन्हें धोखा दिया है, इसलिए भले ही इसका मतलब पूरी फेरबदल प्रक्रिया को रोकना हो, वे हमें खत्म करना ही चाहेंगे। और सेमियोटेक्स के मन में यही है। अगर हमारे अपने कैलक्यूटेक्स हमें मार डालें तो वे बहुत खुश होंगे—इसका मतलब होगा फेज टू शफलिंग में सिस्टम की बढ़त का अंत। या फिर वे खुश होंगे अगर हम उनके पास भागकर चले जाएं—इससे बेहतर क्या हो सकता है? दोनों ही मामलों में, उनका कुछ भी नुकसान नहीं होगा।”

“बहुत खूब,” मैंने कहा, “बस बहुत खूब।” तो फिर वो दोनों लोग जिन्होंने आकर मेरे अपार्टमेंट को तहस-नहस कर दिया और मेरा पेट चीर दिया, असल में सेमियोटेक ही निकले। उन्होंने सिस्टम का ध्यान भटकाने के लिए ये झूठी कहानी गढ़ी थी। जिसका मतलब था कि मैं उनके जाल में फंस गया था। “तो अब तो सब कुछ पहले से ही तय है। मैं गया काम से। दोनों तरफ से मेरी ही ज़ुबान लगी है, और अगर मैं चुपचाप बैठा रहा तो मेरा अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा।”

“नहीं, रद्द नहीं हुआ है। तुम्हारा अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ है। तुम एक दूसरी दुनिया में प्रवेश करोगे।”

“अजीब अंतर है,” मैंने बड़बड़ाते हुए कहा। “सुनो। मैं भले ही कुछ खास न हूँ, लेकिन मेरे पास बस यही है। हो सकता है कि हाई स्कूल की ग्रेजुएशन की फोटो में मेरा चेहरा देखने के लिए तुम्हें मैग्निफाइंग ग्लास की ज़रूरत पड़े। हो सकता है कि मेरा कोई परिवार या दोस्त न हो। हाँ, हाँ, मुझे ये सब पता है। लेकिन, भले ही

अजीब लगे, मैं इस ज़िंदगी से पूरी तरह नाखुश नहीं हूँ। शायद इसलिए क्योंकि मेरी इस दोहरी पर्सनैलिटी ने इसे एक स्टैंड-अप कॉमेडी का रूप दे दिया है। मुझे नहीं पता, है ना? लेकिन वजह जो भी हो, मैं जैसी हूँ वैसी ही ठीक हूँ। मैं कहीं जाना नहीं चाहती। मुझे बाड़ के पीछे कोई गेंडा नहीं चाहिए।"

"बाड़ नहीं," प्रोफेसर ने सुधार करते हुए कहा। "दीवार।"

"जो भी कहो। दीवार, बाड़, मुझे इनमें से किसी की ज़रूरत नहीं है," मैंने गुस्से में कहा। "क्या आप मुझे थोड़ा गुस्सा करने की इजाज़त देंगे?"

"खैर, इन परिस्थितियों में, मुझे लगता है कि कुछ नहीं किया जा सकता," प्रोफेसर ने अपना कान खुजाते हुए कहा।

"जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, इन सब की ज़िम्मेदारी पूरी तरह तुम्हारी है। तुमने ही शुरू किया, तुमने ही इसे आगे बढ़ाया, तुमने ही मुझे इसमें घसीटा। लोगों के दिमाग में नकली सर्किट लगाना, मुझे अपना फ़र्ज़ी काम करवाने के लिए फ़र्ज़ी रिक्वेस्ट फ़ॉर्म बनाना, मुझे सिस्टम के खिलाफ़ धकेलना, सेमियोटेक को मेरे पीछे लगाना, मुझे इस नरक में घसीटना, और अब तुम मेरी दुनिया को तबाह कर रहे हो! यह किसी हॉरर फ़िल्म से भी बदतर है! तुम खुद को समझते क्या हो? मुझे परवाह नहीं कि तुम क्या सोचते हो। मुझे पहले जैसा बना दो।"

प्रोफेसर ने घुरघुराहट की आवाज निकाली।

"मुझे लगता है दादाजी, वो सही कह रहे हैं," गोल-मटोल लड़की ने बीच में टोकते हुए कहा। "आप कभी-कभी अपने काम में इतने मग्न हो जाते हैं कि दूसरों को होने वाली परेशानी के बारे में सोचते ही नहीं। याद है वो टखने में पंख लगाने वाला प्रयोग? आपको उसकी मदद के लिए कुछ करना ही होगा।"

"मुझे लगा था कि सब ठीक चल रहा है, सच में। लेकिन हालात लगातार बदतर होते चले गए," बूढ़े आदमी ने विलाप करते हुए कहा। "अब सब कुछ मेरे हाथ से निकल चुका है। मैं अब कुछ नहीं कर सकता। आप भी कुछ नहीं कर सकते।"

मैंने कहा, "बहुत ही शानदार।"

"मुझे पता है, इससे थोड़ी सी तसल्ली मिलती है," प्रोफेसर ने विनम्रता से कहा, "लेकिन सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। एक बार जब आप उस दुनिया में पहुँच जाएँगे, तो आप इस दुनिया से सब कुछ वापस पा सकते हैं, वह सब कुछ जो आपको छोड़ना पड़ेगा।"

"छोड़ देना?"

"बिल्कुल सही," प्रोफेसर ने कहा। "आप यहाँ से सब कुछ खो देंगे, लेकिन सब कुछ वहाँ मौजूद रहेगा।"

26

बिजलीघर

जब मैंने लाइब्रेरियन को पावर स्टेशन जाने के अपने इरादे के बारे में बताया, तो वह स्पष्ट रूप से परेशान हो गई।

"बिजली स्टेशन जंगल में है," वह आपत्ति जताते हुए रेत से भरी बाल्टी में लाल कोयले बुझाती है।

मैंने उससे कहा, "जंगल के प्रवेश द्वार पर। द्वारपाल ने खुद कहा था कि कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।"

मुझे द्वारपाल की बात समझ नहीं आ रही है। शायद पावर स्टेशन ज्यादा दूर नहीं है, फिर भी जंगल खतरनाक हैं।

मुझे परवाह नहीं। मैं जाऊँगा। मुझे एक वाद्य यंत्र ढूंढना ही होगा।

सारे कोयले हटाने के बाद, वह चूल्हे की राख बाल्टी में डालती है। वह अपना सिर हिलाती है।

“मैं तुम्हारे साथ चलूंगी,” वह कहती है।

“क्यों? तुम्हें जंगल पसंद नहीं हैं। मैं तुम्हें खतरे में नहीं डालना चाहता।”

मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगा। जंगल बहुत निर्दयी हैं; तुम अब भी नहीं समझते।

बादलों से घिरे आसमान के नीचे हम नदी के किनारे-किनारे पूर्व दिशा की ओर चलने लगे। सुबह वसंत की गर्माहट का सुहावना संकेत दे रही थी। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी, नदी की आवाज़ शांत थी। पंद्रह मिनट बाद मैंने अपने दस्ताने और स्कार्फ उतार दिए।

“बसंत का मौसम,” मैंने कहा।

“शायद। लेकिन यह सिर्फ एक दिन के लिए है। सर्दियाँ फिर से आ जाएँगी,” वह कहती हैं।

हम दक्षिणी किनारे पर बने आखिरी घरों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं, और अब सड़क के दाहिनी ओर केवल खेत ही दिखाई देते हैं। कुछ ही पलों में, पत्थर की पक्की सड़क एक कच्ची पगडंडी में बदल जाती है। क्यारियों के ऊपर बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े जमे हुए हैं। हमारे बाईं ओर नदी के किनारे लगे विलो के पेड़ बहते पानी में अपनी शाखाएँ फैलाए हुए हैं। नन्हे-नन्हे पक्षी हिलती हुई डालियों पर बेढंगे ढंग से बैठे हैं, बार-बार हिलते-डुलते हैं और फिर उड़ जाते हैं। उसका बायाँ हाथ मेरे कोट की जेब में है, और उसने मेरा हाथ पकड़ रखा है। मेरे दूसरे हाथ में एक सूटकेस है जिसमें हमारा दोपहर का खाना और चौकीदार के लिए कुछ छोटे उपहार हैं।

वसंत ऋतु में कितनी सारी चीजें आसान हो जाएंगी, मैं उसकी गर्माहट महसूस करते हुए सोचती हूँ। अगर मेरा मन सर्दियों में भी शांत रहा, और अगर मेरी परछाई भी बची रही, तो मैं अपने पुराने स्वरूप के करीब पहुँच जाऊंगी।

हम धीमी गति से चलते हैं, मुश्किल से ही कुछ बोलते हैं, ऐसा इसलिए नहीं कि कहने को कुछ नहीं है, बल्कि इसलिए कि बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम आसपास के नज़ारों को निहारते हैं: ज़मीन में धंसी बर्फीली आकृतियाँ, लाल बेरों से भरी चोंचों वाले पक्षी, सर्दियों की सब्ज़ियों से लदे घने खेत, नदी के किनारे बने छोटे-छोटे साफ़ पानी के तालाब, दूर बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ। हर दृश्य हमारे मन को झकझोर देता है।

सूखी घासों में भोजन की तलाश करते हुए हमें जानवर दिखाई देते हैं। उनका हल्का सुनहरा रंग सफेदी लिए हुए है, उनके बाल पतझड़ की तुलना में लंबे हो गए हैं, और उनका शरीर मोटा हो गया है। फिर भी उनकी भूख स्पष्ट है; वे दुबले-पतले और दयनीय हैं। उनकी पीठ की त्वचा पर कंधे की हड्डियाँ पुराने फर्नीचर के ढांचे की तरह उभरी हुई हैं, उनकी पतली टांगें सूजे हुए जोड़ों पर अटकी हुई हैं। उनके मुंह के कोने पीले और थके हुए हैं, उनकी आँखों में कोई जान नहीं है।

तीन-चार के समूह में जानवर खेतों में घूमते हैं, लेकिन न के बराबर बेर या घास के गुच्छे दिखाई देते हैं। ऊँचे पेड़ों की शाखाओं पर शायद कुछ खाने योग्य मेवे बचे हों, लेकिन वे उनकी पहुँच से बहुत दूर हैं; जानवर पेड़ों के पास ही रुके रहते हैं और उदास होकर उन पक्षियों को देखते हैं जो इस थोड़ी सी भेंट को भी चोंच मारते हैं।

मैंने पूछा, "खेतों में फसलों को खाने से जानवरों को कौन सी चीज रोकती है?"

“मुझे खुद नहीं पता,” वह कहती हैं। “यही नियम है। जानवर उस खाने से दूर रहते हैं जो कस्बे के लिए होता है। हालांकि वे वही खाते हैं जो हम उन्हें देते हैं, लेकिन वे कुछ और नहीं खाते।”

कई जानवर नदी किनारे दुबककर, टांगें मोड़कर, एक छोटे से तालाब से पानी पी रहे हैं। हम वहां से गुज़रते हैं, लेकिन वे ऊपर नहीं देखते। उनके सफेद सींग पानी में ऐसे चमक रहे हैं जैसे नदी की तलहटी में धंसी हुई हड्डियां हों।

द्वारपाल के निर्देशानुसार, पूर्वी पुल के पार नदी के किनारे आधे घंटे चलने पर एक मोड़ आता है, जहाँ से दाईं ओर एक संकरा पैदल रास्ता मुड़ता है, जिसे आम तौर पर नज़रअंदाज़ किया जा सकता है। अब इस रास्ते के दोनों ओर खेत लंबी-लंबी घासों से घिरे हुए हैं, जो खेती वाले क्षेत्रों और पूर्वी जंगलों के बीच फैली एक घास की पट्टी है।

झाड़ियों के बीच से ज़मीन थोड़ी ऊपर उठती है, और जैसे-जैसे रास्ता उत्तरी ढलान पर एक चट्टानी उभार की ओर मुड़ता है, घास कहीं-कहीं कम होती जाती है। हालांकि, कोई भी उभार इतना खड़ी ढलान वाला नहीं है, जिस पर चट्टान में सीढ़ियाँ तराशी गई हों। यह नरम बलुआ पत्थर है और सीढ़ियों के किनारे घिसने से गोल हो गए हैं। कुछ और मिनट चलने के बाद, हम शिखर पर पहुँच जाते हैं, जो उस पश्चिमी पहाड़ी से थोड़ा नीचे है जहाँ मैं रहता हूँ। वहाँ से, चट्टान का दक्षिणी भाग धीरे-धीरे घास से ढकी ढलान में उतरता है, और उसके आगे जंगल का गहरा, विशाल सागर जैसा विस्तार फैला हुआ है।

हम चट्टान पर रुकते हैं और चारों ओर देखते हैं। पूरब से दिखने वाला शहर मेरे परिचित नज़रिए से बिलकुल अलग है। नदी आश्चर्यजनक रूप से सीधी है, कहीं भी रेत का टीला नहीं है, मानो किसी मानव निर्मित नहर

जैसी हो। नदी के उस पार विशाल उत्तरी दलदल दिखाई देता है, जिसका पूर्वी भाग छिटपुट वन क्षेत्रों से घिरा हुआ है; नदी के इस दक्षिणी किनारे पर वे खेत दिखाई देते हैं जिनसे होकर हम गुज़रे थे। यहाँ कोई घर नहीं है; यहाँ तक कि पूर्वी पुल भी वीरान और सुनसान लगता है। मज़दूरों का क्वार्टर और घंटाघर मृगतृष्णा की तरह अस्पष्ट हैं।

अब हम आराम कर चुके हैं और जंगल की ओर उतरना शुरू करते हैं। पेड़ों के किनारे एक उथला तालाब है, जिसकी बर्फीली, मैली तलहटी से एक विशाल कंकालनुमा ठूंठ दिखाई देता है। उस पर दो सफेद पक्षी बैठे हैं, जो हमारी ओर आते हुए टकटकी लगाए देख रहे हैं। बर्फ सख्त है और हमारे जूतों के निशान नहीं बन रहे हैं। हम आगे बढ़ते हैं और खुद को विशाल ओक के पेड़ों के बीच पाते हैं जो धरती की जमी हुई गहराई को छूते हुए बादलों से घिरे आसमान की ओर बढ़ते हैं।

जैसे ही हम जंगल में प्रवेश करते हैं, एक अजीब सी आवाज़ हमारे कानों में पड़ती है। एकरस, उतार-चढ़ाव वाली यह बड़बड़ाहट जैसे-जैसे रास्ता आगे बढ़ता है, और स्पष्ट होती जाती है। क्या सर्दियों की आहट पेड़ों से सुनाई दे रही है? फिर भी हवा के चलने का कोई आभास नहीं है। लाइब्रेरियन भी इस आवाज़ को पहचान नहीं पा रही है, ठीक वैसे ही जैसे मैं नहीं; वह भी पहली बार इन जंगलों में आई है।

रास्ता एक खुले मैदान पर आकर रुकता है। उसके दूसरे छोर पर गोदाम जैसी एक इमारत खड़ी है। कोई खास निशान इमारत की पहचान नहीं बताता। न कोई अजीबोगरीब यंत्र हैं, न बाहर जाने वाली कोई राहें, बस अंदर से आती एक रहस्यमयी गूंज सुनाई देती है। सामने के प्रवेश द्वार पर लोहे के दोहरे दरवाजे हैं; ईंट की दीवार पर कुछ छोटे-छोटे छेद बने हुए हैं।

मैंने कहा, "यह तो पावर स्टेशन लगता है।"

लेकिन सामने के दरवाजे बंद हैं। हमारी संयुक्त शक्ति भी उन्हें हिला नहीं सकती।

हमने इमारत के चारों ओर घूमने का फैसला किया। पावर स्टेशन चौड़ाई से थोड़ा लंबा है, इसकी बगल की दीवारें भी इसी तरह के छोटे-छोटे वेंटिलेशन छिद्रों से सजी हैं, लेकिन इसमें कोई दूसरा दरवाजा नहीं है। इसकी सादी ईंटों की दीवारों में शहर को घेरने वाली दीवार की झलक मिलती है, हालांकि करीब से देखने पर ये ईंटें कहीं अधिक खुरदरी साबित होती हैं। छूने पर ये सख्त लगती हैं और जगह-जगह से टूटी हुई हैं।

इमारत के पीछे, हमें उसी ईंटों से बना एक छोटा मकान मिलता है। इसमें एक साधारण दरवाजा है और खिड़कियों पर अनाज की बोरियों के पर्दे लगे हैं। छत से कालिख से सनी एक चिमनी निकली हुई है। कम से कम यहाँ तो इंसानी मौजूदगी का एहसास होता है। मैंने दरवाजे पर तीन बार दस्तक दी, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। यह दरवाजा भी बंद है।

"वहाँ से अंदर जाने का रास्ता है," वह मेरा हाथ पकड़ते हुए कहती है।

मैं उस दिशा में देखता हूँ जहाँ वह इशारा करती है। वहाँ, पावर स्टेशन की पिछली दीवार में एक छोटा सा द्वार है जिसका लोहे का दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ है। मैं द्वार पर खड़ा होकर अंदर जाने से पहले अपने काले चश्मे उतार देता हूँ। वह पीछे खड़ी रहती है, अंदर जाना नहीं चाहती। इमारत का भीतरी भाग अँधेरा है।

पावर स्टेशन में कोई रोशनी नहीं है—यह कितनी अजीब बात है कि इसमें खुद की एक भी बत्ती नहीं है—और जो थोड़ी-बहुत रोशनी अंदर आती भी है, उससे केवल खाली जगह ही दिखाई देती है।

मेरी आँखें रात में ही जागने वाली होती हैं। मुझे जल्द ही अँधेरे के बीच एक आकृति दिखाई दी। दुबला-पतला आदमी एक विशाल स्तंभ जैसी दिखने वाली चीज़ के सामने खड़ा था। फर्श से छत तक फैले लगभग तीन गज चौड़े इस केंद्रीय शाफ्ट के अलावा, वहाँ कोई जनरेटर नहीं था। न कोई गियर वाली मशीनरी, न ही कोई घूमती हुई ड्राइव शाफ्ट। यह इमारत किसी इनडोर घुड़सवारी अस्तबल जैसी लग सकती थी। या फिर कोई विशाल भट्टी, जिसका फर्श दीवारों जैसी ही ईंटों से बना हो।

मैं खंभे तक आधा रास्ता ही तय कर चुका था कि उस आदमी ने आखिरकार मुझे देखा। बिना हिले-डुले, उसने अपना सिर घुमाकर मेरी ओर आते हुए देखा। वह जवान था, शायद मेरी उम्र से भी कम। उसका रूप-रंग और व्यवहार द्वारपाल से हर तरह से विपरीत था। दुबला-पतला और पीला रंग, उसकी त्वचा चिकनी थी, दाढ़ी का नामोनिशान नहीं था। उसके बाल उसके चौड़े माथे के ऊपरी हिस्से तक आते थे; उसके कपड़े साफ-सुथरे और इस्त्री किए हुए थे।

“शुभ दिन,” मैंने शोर के बीच अपनी आवाज़ ऊँची करके कहा।

वह मेरी तरफ देखता है, होंठ कसे हुए, फिर औपचारिक रूप से सिर हिलाता है।

“क्या मैं आपको परेशान कर रहा हूँ?” मैंने फिर से चिल्लाकर कहा।

वह आदमी अपना सिर हिलाता है, फिर उस पैनल की ओर इशारा करता है जो खंभे से मजबूती से जुड़ा हुआ है और जिस पर उसकी नज़र टिकी हुई है। मैं पैनल में लगे कांच के छेद से झांकता हूँ और ज़मीन के समानांतर लगा एक विशाल पंखा देखता हूँ, जिसके ब्लेड किसी ज़बरदस्त शक्ति से घूम रहे हैं। शहर के लिए बिजली पैदा करने के लिए यहाँ किस प्रचंड शक्ति को नियंत्रित किया जा रहा है?

“पवन ऊर्जा?” मैं मुश्किल से खुद को यह पूछते हुए सुन पा रहा हूँ।

वह आदमी सिर हिलाता है, फिर मेरा हाथ पकड़कर मुझे पोर्टल की ओर ले जाता है। हम कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं, वह मुझसे आधा सिर छोटा है। हमें लाइब्रेरियन बाहर खड़ी मिलती है, जो बेसब्री से मेरे वापस आने का इंतज़ार कर रही होती है। केयरटेकर भी उसी औपचारिक अंदाज़ में सिर हिलाकर उसका अभिवादन करता है।

“शुभ दिन,” वह कहती है।

“शुभ दिन,” उस व्यक्ति ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया।

वह हम दोनों को उस जगह ले जाता है जहाँ शोर कम होता है, छोटे से घर के पीछे, जंगल में एक साफ-सुथरे खेत में। वहाँ हम ज़मीन से सटी हुई कटी हुई फसल की ठूंठों पर बैठ जाते हैं।

“माफ़ कीजिए। मैं ज़ोर से नहीं बोल सकता,” युवा केयरटेकर ने माफ़ी मांगते हुए कहा। “मुझे लगता है आप शहर से हैं?”

“हाँ, यह सही है,” मैंने उससे कहा।

“यह शहर हवा से रोशन है,” वे कहते हैं। “यहाँ धरती में एक शक्तिशाली पुकार है। हम उसी का उपयोग करके कारखानों को चलाते हैं।”
वह व्यक्ति अपने पैरों के पास की शीतकालीन भूमि की ओर देखता है।
“हर तीन दिन में एक बार तेज़ आवाज़ आती है। यहाँ ज़मीन के नीचे खालीपन के बड़े-बड़े भंडार हैं। जिन दिनों हवा नहीं चलती, मैं पंखे के बोल्ट कसता हूँ, शाफ़्ट में ग्रीस लगाता हूँ, और यह सुनिश्चित करता हूँ कि वाल्व और स्विच जाम न हो जाएँ। और यहाँ उत्पन्न बिजली को मैं भूमिगत मार्ग से ही शहर भेजता हूँ।”
चौकीदार ने मैदान में चारों ओर अपनी निगाहें घुमाईं। हम घने, ऊँचे जंगल से घिरे हुए हैं। मिट्टी काली और जोती हुई है, लेकिन कहीं भी कोई पौधा-संपत्ति नहीं दिखती।
मुझे अपने हाथों से काम करना अच्छा लगता है। जब समय मिलता है, तो मैं जंगल की सफाई करता हूँ। मैं इस काम में अकेला हूँ, इसलिए बड़े-बड़े काम नहीं कर सकता। मैं ऊँचे पेड़ों के आसपास काम करता हूँ और कम परेशानी वाली जगहें चुनता हूँ। बसंत ऋतु में मैं सब्जियाँ उगाता हूँ। मतलब... क्या आप दोनों यहाँ देखने आए हैं?
“हां, कुछ ऐसा ही,” मैंने कहा।
"कस्बे के लोग यहाँ लगभग कभी नहीं आते," चौकीदार कहता है। "जंगल में कोई नहीं आता। सिर्फ़ डिलीवरी वाला आता है। वह हफ्ते में एक बार मेरे लिए खाना और ज़रूरी सामान लाता है।"
“तो आप यहां अकेले रहते हैं?” मैंने पूछा।
जी हाँ, काफी समय से। मैं ध्वनि से ही रचनाओं का मिजाज समझ लेता हूँ। मैं प्रतिदिन उपकरणों से बात करता हूँ। यह स्वाभाविक है, क्योंकि मैं यहाँ इतने लंबे समय से हूँ। यदि रचनाएँ अच्छी स्थिति में हों, तो मैं निश्चिंत रहता हूँ... मैं जंगल की आवाज़ों को भी पहचानता हूँ। मुझे कई आवाज़ें सुनाई देती हैं।
"जंगल में अकेले रहना कितना मुश्किल है, है ना?"
“अकेले रहना मुश्किल है क्या?” चौकीदार पूछता है। “मैं चौकी की देखभाल करता हूँ। मतलब, मैं यहीं रहता हूँ, जंगल में, लेकिन पूरी तरह जंगल में नहीं। मुझे इससे आगे का ज़्यादा पता नहीं है।”
“क्या यहाँ आपके जैसे और भी लोग हैं?” लाइब्रेरियन ने पूछा।
कार्यवाहक प्रश्न पर विचार करता है, फिर सिर हिलाता है।
“कुछ लोग हैं। मुझे लगता है कि और भी अंदर हैं। वे कोयला खोदते हैं, पेड़ काटते हैं। मैं उनसे शायद ही कभी मिलता हूँ, उनसे मुश्किल से ही बात की है। वे मुझे स्वीकार नहीं करते। वे जंगल में रहते हैं, लेकिन मैं यहाँ रहता हूँ। मतलब... मैं और अंदर नहीं जाता और वे लगभग कभी बाहर नहीं आते।”
“क्या आपने यहाँ आस-पास कभी किसी महिला को देखा है?” वह पूछती है। “शायद कोई उम्रदराज महिला, जो मेरी तरह दिखती हो?”
चौकीदार ने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं, एक भी महिला नहीं। सिर्फ पुरुष।"
मैंने लाइब्रेरियन की तरफ देखा, लेकिन उसने और कुछ नहीं कहा।

27

विश्वकोश छड़ी, अमरता, पेपरक्लिप

“बहुत बढ़िया,” मैंने कहा। “तो मैं तो बुरी तरह फंस गया। तुम्हारी ये परिस्थितियाँ कितनी बिगड़ चुकी हैं?”

“आपका मतलब आपके दिमाग में मौजूद परिस्थितियों से है?” प्रोफेसर ने पूछा।

“और क्या?” मैंने गुस्से से कहा। “तुमने मेरे दिमाग के अंदरूनी हिस्से को कितना मिटा दिया है?”

“खैर, मेरे अनुमान के अनुसार, लगभग छह घंटे पहले जंक्शन बी में कुछ गड़बड़ हो गई थी। बेशक, मैं सुविधा के लिए गड़बड़ शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ; ऐसा नहीं है कि आपके दिमाग का कोई हिस्सा सचमुच पिघल गया हो। देखिए—”

"तीसरा सर्किट चालू है और दूसरा सर्किट बंद है, सही है?"

“यह सही है। तो, जैसा कि मैं कह रहा था, आपने पहले ही पुल बनाना शुरू कर दिया है। दूसरे शब्दों में, आपने यादें बनाना शुरू कर दिया है। या हमारे रूपक पर वापस जाएं, तो जैसे-जैसे आपके अवचेतन की हाथी फैक्ट्री बदलती है, आप एक चैनल के माध्यम से सतही चेतना में समायोजन कर रहे हैं।”

“जिसका मतलब यह है कि जंक्शन ए पूरी तरह से काम नहीं कर रहा है? यानी मेरे अवचेतन मन से जानकारी लीक हो रही है?”

“सख्ती से कहें तो, नहीं,” प्रोफेसर ने कहा। “वह चैनल पहले से ही मौजूद था। हम आपके संज्ञानात्मक परिपथों के साथ कुछ भी करें, उस चैनल को कभी नहीं काट सकते। इसका कारण यह है कि आपकी सतही चेतना—आपका पहला परिपथ—आपके अवचेतन मन—अर्थात आपके दूसरे परिपथ—से पोषण प्राप्त करके विकसित हुआ है। वह चैनल आपके वृक्ष की जड़ है। उसके बिना आपका मस्तिष्क कार्य नहीं कर सकता। लेकिन यहाँ सवाल यह है कि जंक्शन बी के पिघलने से हुए विद्युत निर्वहन के कारण, उस चैनल को एक असामान्य झटका लगा है। और आपका मस्तिष्क इतना आश्चर्यचकित है कि उसने आपातकालीन समायोजन प्रक्रियाएँ शुरू कर दी हैं।”

“मतलब, मैं लगातार नई-नई यादें बनाता रहूंगा?”

“शायद ऐसा ही है। या सरल शब्दों में कहें तो, एक तरह का déjà vu (पहले भी ऐसा हो चुका है) एहसास। सिद्धांत रूप में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहेगा। जब तक कि आखिरकार आप इन नई यादों से एक नई दुनिया का पुनर्निर्माण नहीं कर लेते।”

“क्या हम दुनिया को फिर से संगठित कर सकते हैं?”

आपने बिल्कुल सही सुना। इस पल आप एक दूसरी दुनिया में जाने की तैयारी कर रहे हैं। इसलिए जो दुनिया आप अभी देख रहे हैं, वह धीरे-धीरे बदल रही है। एक-एक करके, हर अनुभूति बदल रही है। यह दुनिया अभी और यहीं मौजूद है। लेकिन भौतिक स्तर पर, यह दुनिया अनगिनत संभावनाओं में से केवल एक है। हम बात कर रहे हैं कि आप अपना दायाँ पैर रखें या बायाँ—इसी तरह के बदलाव होते हैं। यह कोई अजीब बात नहीं है कि जब आपकी यादें बदलती हैं, तो दुनिया भी बदल जाती है।

मैंने कहा, "अगर मुझसे पूछो तो यह काफी अकादमिक है। बहुत ज्यादा वैचारिक। आप समय के पहलू को नजरअंदाज कर रहे हैं। आप चीजों का क्रम उलट रहे हैं।"

“नहीं, यहाँ समय का विरोधाभास आपके दिमाग में है,” प्रोफेसर ने कहा। “जैसे-जैसे आप यादें बनाते हैं, आप एक समानांतर दुनिया का निर्माण कर रहे होते हैं।”

तो क्या मैं उस दुनिया से दूर जा रहा हूँ जिसे मैं पहले जानता था?

मैं बस इतना कह रहा हूँ कि यह असंभव नहीं है। ध्यान रहे, मैं किसी काल्पनिक, काल्पनिक समानांतर ब्रह्मांड की बात नहीं कर रहा हूँ। यह सब अनुभूति का मामला है। दुनिया को जिस तरह से समझा जाता है। और मुझे लगता है कि यही आपके दिमाग में बदल रहा है।

“फिर इन बदलावों के बाद, जंक्शन ए बदल जाता है, एक बिल्कुल अलग दुनिया सामने आ जाती है, और मैं वहीं रहने लगता हूँ। उस बदलाव से बचना नामुमकिन है—मैं बस बैठकर उसके होने का इंतज़ार करता हूँ।”

मुझे इससे डर लगता है।

और यह दुनिया कब तक चलती रहेगी?

“हमेशा के लिए,” प्रोफेसर ने कहा।

मैंने कहा, “मुझे समझ नहीं आया। ‘हमेशा’ से तुम्हारा क्या मतलब है? भौतिक शरीर की भी सीमाएँ होती हैं। शरीर मरता है, मस्तिष्क मरता है। मस्तिष्क मरता है, तो मन भी निष्क्रिय हो जाता है। क्या यही प्रक्रिया नहीं है?”

“नहीं, ऐसा नहीं है। पुनरावृत्तियों के लिए समय नहीं होता। पुनरावृत्तियों और सपनों में यही अंतर है। पुनरावृत्तियाँ तात्कालिक होती हैं, सब कुछ एक ही बार में प्रकट हो जाता है। अनंतकाल का अनुभव वास्तव में किया जा सकता है। एक बार जब आप एक बंद परिपथ स्थापित कर लेते हैं, तो आप उसमें बस गोल-गोल घूमते रहते हैं। यही पुनरावृत्तियों का स्वभाव है। सपनों की तरह कोई रुकावट नहीं होती। यह ज्ञानकोश की छड़ी की तरह है।”

“विश्वकोश की छड़ी?” मैं एक प्रतिध्वनि में परिवर्तित हो रहा था।

“विश्वकोश की छड़ी एक सैद्धांतिक पहेली है, ज़ेनो के विरोधाभास की तरह। इसका विचार पूरे विश्वकोश को एक ही टूथपिक पर उकेरना है। क्या आप जानते हैं कि इसे कैसे किया जाता है?”

"आप मुझे बताएं।"

“आप अपनी जानकारी, अपने विश्वकोश का पाठ लेते हैं और उसे संख्याओं में बदलते हैं। आप हर संख्या को दो अंकों की संख्या देते हैं, जिसमें पूर्णविराम और अल्पविराम भी शामिल होते हैं। 00 खाली स्थान है, A 01 है, B 02 है, इत्यादि। फिर जब आप उन सभी को एक पंक्ति में लगा देते हैं, तो आप उन सभी के आगे दशमलव बिंदु लगा देते हैं। तो अब आपके पास एक बहुत लंबी उप-दशमलव भिन्न है। 0.173000631... इसके बाद, आप टूथपिक पर ठीक उसी बिंदु पर एक निशान लगाते हैं। यदि 0.50000 टूथपिक का ठीक मध्य बिंदु है, तो 0.3333 टूथपिक के सिरे से एक तिहाई दूरी पर होना चाहिए। समझ में आया?”

"ज़रूर।"

“इस तरह आप किसी भी लंबाई के डेटा को टूथपिक के एक बिंदु पर समाहित कर सकते हैं। बेशक, यह केवल सैद्धांतिक रूप से ही संभव है। कोई भी मौजूदा तकनीक वास्तव में इतना बारीक बिंदु नहीं उकेर सकती। लेकिन इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि पुनरावृत्तियाँ कैसी होती हैं। मान लीजिए समय आपकी टूथपिक की लंबाई है। इसमें समाहित की जा सकने वाली जानकारी की मात्रा का लंबाई से कोई संबंध नहीं है। आप भिन्न को जितना चाहें उतना लंबा बना सकते हैं। यह सीमित होगा, लेकिन लगभग अनंत होगा। हालांकि, अगर आप इसे आवर्ती दशमलव बना दें, तो यह अनंत हो जाएगा। क्या आप इसका अर्थ समझते हैं? समस्या सॉफ्टवेयर में है, हार्डवेयर से इसका कोई संबंध नहीं है। यह एक टूथपिक हो सकती है, या दो सौ मीटर लंबा लकड़ी का लट्ठा, या भूमध्य रेखा—कोई फर्क नहीं पड़ता। आपका शरीर मर जाता है, आपकी चेतना समाप्त हो जाती है, लेकिन आपका विचार एक क्षण पहले के उस पुनरावृत्ति बिंदु में फंसा रहता है, अनंत काल तक विभाजित होता रहता है। उस पहेली के बारे में सोचें: एक तीर उड़ान में रुक जाता है। ठीक वैसे ही, शरीर की मृत्यु तीर की उड़ान है।” यह दिमाग के लिए एक सीधी रेखा बना रहा है। इससे कोई बच नहीं सकता, कोई भी नहीं। लोगों को मरना है, शरीर को गिरना है। समय उस तीर को आगे की ओर फेंक रहा है। और फिर भी, जैसा कि मैं कह रहा था, विचार उस समय को अनंत काल तक विभाजित करता रहता है। विरोधाभास वास्तविक हो जाता है। तीर कभी नहीं लगता।

मैंने कहा, "दूसरे शब्दों में कहें तो, अमरता।"

“बस यही बात है। मनुष्य अपने विचारों में अमर होते हैं। हालांकि कड़ाई से कहें तो, अमर नहीं, लेकिन अनंत रूप से, अमरता के अत्यंत निकट। यही शाश्वत जीवन है।”

"और यही आपके शोध का असली लक्ष्य था?"

“बिल्कुल नहीं, बिलकुल नहीं,” प्रोफेसर ने कहा। “यह बात मुझे अभी हाल ही में समझ में आई है। मैं बस यह देख रहा था कि मेरा शोध मुझे कहाँ ले जाता है और अचानक मुझे यह बात समझ में आ गई। समय को विस्तारित करने से कोई अमर नहीं हो जाता; बल्कि समय को उपविभाजित करने से ही यह संभव होता है।”

"तो क्या तुमने मुझे अमरता में छोड़ने का फैसला किया है?"

“नहीं, नहीं, नहीं। यह भी पूरी तरह से संयोगवश हुआ। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। यकीन मानिए, यह सच है। मेरा ऐसा कुछ भी करने का कोई इरादा नहीं था। लेकिन अगर आप अभी कार्रवाई करते हैं, तो आपके पास विकल्प है, अगर आप विकल्प चाहते हैं। आपके पास एक आखिरी मौका है।”
और वह क्या हो सकता है?
प्रोफेसर ने बड़े ही गंभीर लहजे में कहा, "तुम अभी मर सकते हो। जंक्शन 'ए' के जुड़ने से पहले ही तुम यहाँ से चले जाओ। उसके बाद कुछ नहीं बचेगा।"
चारों ओर गहरी खामोशी छा गई। प्रोफेसर को खांसी आई, गोल-मटोल लड़की ने आह भरी, मैंने व्हिस्की का एक घूंट पिया। किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।
“वो... उह, दुनिया... कैसी है वो?” मैंने हिम्मत जुटाकर ये सवाल पूछा। “वो अमर दुनिया?”
“जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी बताया था,” प्रोफेसर ने कहा। “यह एक शांतिपूर्ण दुनिया है। तुम्हारी अपनी दुनिया, तुम्हारी बनाई हुई दुनिया। तुम वहाँ खुलकर जी सकते हो। वहाँ तुम्हारे पास सब कुछ है। और साथ ही, वहाँ कुछ भी नहीं है। क्या तुम ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हो?”
"ज़रूरी नहीं।"
फिर भी, इसे तुम्हारी चेतना ने ही रचा है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो हर कोई कर सके। बाकी लोग तो इस दुनिया की न जाने किस तरह की विरोधाभासी अराजकता में हमेशा भटकते रह सकते हैं। तुम अलग हो। तुम अमर प्रतीत होते हो।
"उस दुनिया में बदलाव कब होगा?" गोल-मटोल लड़की ने पूछा।
प्रोफेसर ने अपनी घड़ी देखी। मैंने भी अपनी घड़ी देखी। छह बजकर पच्चीस मिनट हो चुके थे। सुबह के अखबार बांटे जा चुके थे।
“मेरे अनुमान के अनुसार, अगले उनतीस घंटे और पैंतीस मिनट में,” प्रोफेसर ने कहा। “पैंतालीस मिनट कम या ज्यादा। मैंने इसे दोपहर बारह बजे का समय निर्धारित किया है, ताकि आसानी से समझ आ सके। कल दोपहर।”
मैंने अपना सिर हिलाया। आसानी से समझने के लिए? मैंने व्हिस्की का एक और घूंट लिया। शराब का कोई असर नहीं हुआ। मुझे उसका स्वाद तक नहीं आया। मेरा पेट एकदम सुन्न हो गया था।
"अब तुम क्या करने की योजना बना रहे हो?" गोल-मटोल लड़की ने मेरी गोद में हाथ रखते हुए पूछा।
“अरे यार, मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा,” मैंने कहा। “पर जो भी हो, मुझे ऊपर ज़मीन पर जाना है। यहाँ नीचे रहकर हालात को अपने आप सुलझने का इंतज़ार करना ठीक नहीं है। मैं ऊपर जा रहा हूँ जहाँ धूप खिली है। फिर आगे की सोचूँगा।”
“क्या मेरी व्याख्या आपके लिए पर्याप्त थी?” प्रोफेसर ने पूछा।
“ठीक है, धन्यवाद,” मैंने जवाब दिया।
"मान लो तुम अब भी नाराज़ हो?"

“ज़रूर,” मैंने कहा। “वैसे तो मुझे लगता है कि अब गुस्सा करने से कुछ खास फ़ायदा नहीं होगा, है ना? वैसे भी, मैं इतना नशे में हूँ कि अभी तक इस सच्चाई को समझ ही नहीं पाया हूँ। बाद में, जब मुझे इसका एहसास होगा, तब शायद मैं बहुत गुस्सा हो जाऊँ। लेकिन तब तक, ज़ाहिर है, मैं इस दुनिया से बेखबर हो चुका होऊँगा।”

“सच कहूँ तो, मेरा इरादा इतनी विस्तार से बताने का नहीं था,” प्रोफेसर ने कहा। “अगर मैंने आपको पहले से चेतावनी न दी होती, तो आपके जानने से पहले ही सब कुछ खत्म हो चुका होता। शायद तनाव भी कम होता। फिर भी, ऐसा नहीं है कि आप मरने वाले हैं। बस आपका चेतन मन हमेशा के लिए गायब हो जाएगा।”

“एक ही बात है,” मैंने कहा। “लेकिन दोनों ही मामलों में, मैं जानना चाहता था। कम से कम जहाँ तक मेरी ज़िंदगी का सवाल है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जानकारी के बिना कोई ऐसी चीज़ अचानक से हो जाए। मैं अपने मामलों को जितना हो सके खुद संभालना पसंद करता हूँ। अब, बाहर निकलने का रास्ता बताइए?”

"बाहर निकलना?"

"यहाँ से निकलने का रास्ता, ज़मीन के ऊपर जाने का।"

"इसमें थोड़ा समय लगता है, और यह आपको सीधे इंकलिंग के ठिकाने के पास से ले जाता है।"

मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इस समय, ऐसी कोई खास चीज नहीं है जो मुझे डरा सके।

“बहुत बढ़िया,” प्रोफेसर ने कहा। “आप पहाड़ से नीचे पानी की ओर जाइए, जो अब बिल्कुल शांत है, इसलिए तैरना आसान है। आप दक्षिण-दक्षिण-पश्चिम की ओर तैरिए। मैं उस दिशा में रोशनी डालूँगा, जैसे कोई मार्गदर्शक हो। सीधे उसी दिशा में तैरिए, और दूर किनारे पर, थोड़ा आगे, एक छोटा सा रास्ता है। उसके ज़रिए आप सीवर तक पहुँच जाएँगे। सीवर के साथ-साथ सीधे चलते जाइए और आपको सबवे की पटरियाँ मिल जाएँगी।”

“सबवे?”

"जी हाँ, गिन्ज़ा लाइन। गाइएनमाए और आओयामा इचोमे के ठीक मध्य में।"

"यह सब मेट्रो से कैसे जुड़ गया?"

“उन इंकलिंग्स ने सबवे की पटरियों पर कब्ज़ा कर लिया है। शायद दिन में नहीं, लेकिन रात में वे स्टेशनों पर ऐसे छा जाते हैं जैसे जगह उन्हीं की हो। टोक्यो सबवे सिस्टम के निर्माण ने इंकलिंग्स की गतिविधियों का दायरा बहुत बढ़ा दिया है। उनके लिए और रास्ते बन गए हैं। कभी-कभी वे किसी पटरी पर काम करने वाले मज़दूर पर हमला करके उसे खा जाते हैं।”

"अधिकारी इस तथ्य को स्वीकार क्यों नहीं करते?"

क्योंकि फिर मेट्रो में कौन काम करेगा? मेट्रो में कौन सफर करेगा? बेशक, जब उन्हें पहली बार पता चला, तो उन्होंने दीवारों में छेद भरने, रोशनी बढ़ाने, सुरक्षा बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन इनमें से कोई भी चीज़ आपके INKling को रोक नहीं पाएगी। एक ही रात में, वे दीवारें तोड़ सकते हैं और बिजली के तार चबा सकते हैं।

"अगर यह गाइएनमाए और आओयामा इचोमे के बीच मौजूद है, तो यह हमें अभी कहाँ ले जाएगा?"
“मेइजी श्राइन के नीचे कहीं, ओमोतेसांडो की ओर। मुझे ठीक-ठीक जगह याद नहीं है। खैर, वहाँ जाने का एक ही रास्ता है, आप भटक नहीं सकते। यह संकरा है और काफी घुमावदार है। यहाँ से आप सेंडागाया की दिशा में, इंकलिंग के अड्डे की ओर बढ़ेंगे, जो राष्ट्रीय खेल मैदान के थोड़ा पहले है। फिर सुरंग दाईं ओर मुड़ती है, जिंगू बेसबॉल स्टेडियम की दिशा में, फिर आर्ट फोरम से आगे आओयामा बुलेवार्ड होते हुए गिन्ज़ा लाइन तक। निकास तक पहुँचने में शायद आपको लगभग दो घंटे लगेंगे। समझ गए?”
"जोर से और स्पष्ट।"
"जितनी जल्दी हो सके इंकलिंग के अड्डे से निकल जाओ। वहाँ देर तक रुकने से कुछ अच्छा नहीं होगा। मेट्रो स्टेशन पर पहुँचते समय सावधान रहना। वहाँ हाई-टेंशन लाइनें और मेट्रो के डिब्बे हैं। इतनी दूर पहुँचकर मेट्रो के डिब्बे से टकरा जाना बहुत बुरा होगा।"
मैंने कहा, "मैं इसे याद रखूंगा। लेकिन तुम क्या करोगे?"
“मैं कुछ देर यहीं रुकूँगा। मेरे पैर में मोच आ गई है। वैसे भी, अगर मैं अभी ऊपर आ गया, तो मेरा पीछा सिर्फ़ सिस्टम या सेमियोटेक्स ही करेंगे। यहाँ कोई मेरा पीछा नहीं करेगा। सौभाग्य से, आपकी कृपा से मेरे पास खाने-पीने का सामान है। इससे मैं तीन-चार दिन तक ज़िंदा रहूँगा,” प्रोफ़ेसर ने शांत भाव से कहा। “आप जाइए। मेरी चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।”
“इंकलिंग-भगाने वाले उपकरणों का क्या होगा? निकास तक पहुँचने के लिए उन दोनों की आवश्यकता होगी, जिससे आपके पास एक भी पोर्टेबल बैग नहीं बचेगा।”
प्रोफेसर ने कहा, "मेरी पोती को अपने साथ ले चलो। बच्ची तुम्हें विदा कर देगी और फिर मुझे लेने वापस आ जाएगी।"
“मुझे कोई आपत्ति नहीं है,” उसने कहा।
लेकिन मान लीजिए कि उसके साथ कुछ हो जाए? अगर वह पकड़ी जाए या—
“मैं पकड़ी नहीं जाऊंगी,” उसने दृढ़ता से कहा।
“चिंता मत करो,” प्रोफेसर ने कहा। “बच्ची अपनी उम्र के हिसाब से काफी भरोसेमंद है। मुझे उस पर पूरा भरोसा है। और ऐसा भी नहीं है कि मेरे पास आपातकालीन उपाय नहीं हैं। सच तो यह है कि अगर मेरे पास बैटरी, पानी और धातु के टुकड़े हों, तो मैं एक कामचलाऊ इंकलिंग रिपेलेंट बना सकता हूँ। यह काफी आसान है, हालांकि पोर्टेबल टॉयलेट जितना असरदार नहीं है। यहाँ आते समय, क्या तुमने ध्यान नहीं दिया? मैंने जो धातु के टुकड़े बिखेरे थे? वे इंकलिंग्स को पंद्रह-बीस मिनट तक दूर रखते हैं।”
“तुम्हारा मतलब पेपरक्लिप से है?” मैंने पूछा।
"जी हाँ, पेपरक्लिप सबसे बढ़िया हैं। सस्ते, जंग नहीं लगते, झटपट चुम्बक बन जाते हैं, और गले में लटकाने के लिए लूप भी बना सकते हैं। कुल मिलाकर, मैं पेपरक्लिप ही पसंद करूँगा।"

मैंने अपने विंडब्रेकर की जेब में हाथ डाला, कुछ पेपरक्लिप निकाले और प्रोफेसर को दे दिए। "क्या ये काफी होंगे?"
“अरे वाह!” प्रोफेसर ने आश्चर्य से कहा। “बिल्कुल सही चीज़ मिली। मुझे थोड़ी चिंता हो रही थी। यहाँ आते समय मुझसे कुछ ज़्यादा ही बिखर गए थे और मुझे लग रहा था कि शायद मेरे पास काफ़ी न हों। आप तो वाकई बहुत समझदार हैं।”
“हमें अब चलना चाहिए, दादाजी,” लड़की ने कहा। “उनके पास ज्यादा समय नहीं है।”
“अब संभलकर रहना। धीरे-धीरे चलना,” प्रोफेसर ने कहा, “और इंकलिंग्स को काटने मत देना। हो-हो-हो।”
"मैं जल्द ही आपके लिए वापस आऊंगी," पोती ने उनके माथे पर एक चुंबन देते हुए कहा।
“मुझे बहुत अफ़सोस है कि सब कुछ इस तरह से हुआ,” प्रोफ़ेसर ने आख़िरी बार माफ़ी मांगते हुए कहा। “अगर मुमकिन होता तो मैं तुम्हारी जगह होता। मैंने एक भरपूर ज़िंदगी जी ली है। मुझे कोई अफ़सोस नहीं है। लेकिन तुम, तुम्हारे पास तो बहुत समय बचा था। इस दुनिया में तुम बहुत कुछ पीछे छोड़ जाओगे।”
एक ऐसा नुकसान जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता, है ना? मैंने कुछ नहीं कहा।
“फिर भी, डरने की कोई बात नहीं,” प्रोफेसर ने दार्शनिक लहजे में कहा। “यह मृत्यु नहीं है। यह शाश्वत जीवन है। और इसमें आप स्वयं बन सकते हैं। इसकी तुलना में, यह दुनिया एक क्षणिक कल्पना मात्र है। कृपया इसे मत भूलिएगा।”
"चलो चलते हैं," लड़की ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा।

28

संगीत वाद्ययंत्र

बिजली स्टेशन का युवा केयरटेकर हमें अपने साधारण से कमरे में आमंत्रित करता है। वह चूल्हे में आग की जाँच करता है, फिर उबलती हुई केतली को रसोई में ले जाकर चाय बनाता है। गर्म चाय पीना अच्छा लगता है; जंगल में दिन बिताने के कारण हमें ठंड लग रही है। हवा की आवाज़ थमने का नाम नहीं ले रही है।

“मैं इस जड़ी बूटी को जंगल से तोड़ता हूँ,” रखवाले ने हमें बताया। “मैं इसे पूरी गर्मी छाया में सुखाता हूँ और सर्दियों में इसकी चाय पीता हूँ। यह शरीर को स्फूर्ति और गर्माहट प्रदान करती है।”

यह पेय सुगंधित है और इसमें हल्की मिठास है।

मैंने पूछा, "इस पौधे का नाम क्या है?"

“इसका नाम? मुझे पता नहीं,” वह कहता है। “यह जंगल में उगता है, इसकी खुशबू अच्छी होती है, इसलिए मैं इससे चाय बनाता हूँ। इसके हरे तने लगभग एक इंच ऊँचे होते हैं, गर्मियों के बीच में फूल खिलते हैं, मैं इसकी नई पत्तियाँ तोड़ लेता हूँ... जानवर इसके फूल खाना पसंद करते हैं।”

“क्या यहाँ जानवर आते हैं?”

“हाँ, पतझड़ की शुरुआत तक। सर्दियों के आते-आते वे जंगल के पास नहीं आते। गर्म मौसम में वे झुंड में यहाँ आते हैं और मैं उनके साथ खेलता हूँ और अपना राशन बाँटता हूँ... लेकिन सर्दी में नहीं। उन्हें पता है कि मैं उन्हें खाना दूँगा, फिर भी वे नहीं आते। पूरी सर्दी मैं अकेला रहता हूँ।”

“क्या आप हमारे साथ दोपहर का भोजन करेंगे?” लाइब्रेरियन ने पूछा। “हम सैंडविच और फल भी लाए हैं, दो लोगों के लिए बहुत ज्यादा है।”

“आपकी मेहरबानी,” चौकीदार ने कहा। “मैंने बहुत दिनों से किसी और का खाना नहीं खाया है... हाँ, मैंने जंगल से कुछ मशरूम तोड़े हैं, अगर आप चखना चाहें तो।”

“हां, बिल्कुल,” मैंने कहा।

हम उसके सैंडविच और उसके मशरूम आपस में बाँटते हैं, और बाद में फल और चाय पीते हैं। हम मुश्किल से एक शब्द भी बोलते हैं। बातचीत के अभाव में, सूनी धरती की सिसकी कमरे में गूंजती है और हमारी खामोशी को भर देती है।

मैंने चौकीदार से पूछा, "क्या तुम कभी जंगल से बाहर नहीं निकलते?"

“कभी नहीं,” उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। “यह तय हो चुका है। मुझे हमेशा यहीं रहना है और पावर स्टेशन की ज़िम्मेदारी संभालनी है... हमेशा, जब तक कोई मेरी जगह लेने नहीं आ जाता। कब, यह मुझे नहीं

पता। तभी मैं जंगल छोड़कर शहर लौट सकता हूँ... लेकिन अभी का समय है, और मैं नहीं लौट सकता। मुझे हर तीन दिन में आने वाली हवा का इंतज़ार करना होगा।"

मैंने अपनी चाय का आखिरी घूंट पी लिया। हवा की वो कर्कश आवाज कब से शुरू हुई है? उसकी धीमी, गूंजती हुई आवाज़ सुनकर मन उस दिशा की ओर खिंचा चला जाता है। इस जंगल में सर्दियों का मौसम गुजारना कितना अकेलापन भरा होगा!

"लेकिन आप यहां पावर स्टेशन देखने आए हैं?" युवा केयरटेकर को याद आता है।

"हम संगीत वाद्ययंत्रों की तलाश में आए हैं," मैंने कहा। "मुझे बताया गया था कि आपको पता होगा कि वे कहाँ मिलेंगे।"

वह अपनी प्लेट में एक दूसरे के ऊपर रखे चाकू और कांटे को देखता है।

"जी हाँ, मेरे पास यहाँ वाद्य यंत्र हैं। ये पुराने हैं, मैं कह नहीं सकता कि ये बजेंगे या नहीं... मतलब, आप इन्हें ले सकते हैं। मैं खुद बजा नहीं सकता। मुझे तो बस इनकी आकृतियाँ देखना अच्छा लगता है। क्या आप इन्हें देखना चाहेंगे?"

"कृपया," मैं कहती हूँ।

वह अपनी कुर्सी से उठता है और हम उसके पीछे-पीछे उठते हैं।

"इस तरफ। मैंने उन्हें अपने कमरे में रखा है," वह कहता है।

"मैं यहीं रुककर सफाई करूंगी," वह कहती है।

चौकीदार ने दरवाजा खोला, बत्ती जलाई और मुझे अंदर आने के लिए कहा। "इधर आओ," उसने कहा।

दीवार के किनारे कई तरह के वाद्य यंत्र रखे हैं। सभी पुराने हैं। इनमें से अधिकतर तार वाले वाद्य यंत्र हैं, जिनके तार बुरी तरह जंग खा चुके हैं, टूटे हुए हैं या गायब हैं। कुछ को मैं कभी जानता था, लेकिन उनके नाम याद नहीं आ रहे; कुछ मेरे लिए बिल्कुल अनजान हैं। एक लकड़ी का वाद्य यंत्र है जो वॉशबोर्ड जैसा दिखता है और उस पर धातु की कई नोकें लगी हैं। मैं उसे बजाने की कोशिश करता हूँ, लेकिन कोई धुन नहीं निकल पाती। एक और वाद्य यंत्र है, छोटे ड्रमों का एक सेट, जिसमें डंडे भी हैं, फिर भी इससे कोई धुन नहीं निकल पाती। एक बड़ा नलीनुमा वाद्य यंत्र है, जिसे स्पष्ट रूप से सिरे से फूँककर बजाया जाता है, लेकिन मैं उसमें साँस कैसे डालूँ?

देखभालकर्ता अपने पलंग के किनारे पर बैठा है, चादर बड़े करीने से बिछी हुई है, और मुझे उपकरणों की जांच करते हुए देख रहा है।

"क्या इनमें से कोई चीज आपके काम की है?" वह बोलता है।

"मुझे नहीं पता," मैं हिचकिचाते हुए कहती हूँ। "वे सब बहुत बूढ़े हैं।"

वह दरवाजा बंद करने के लिए जाता है, फिर लौट आता है। वहाँ कोई खिड़की नहीं है, इसलिए दरवाजा बंद होने पर हवा की आवाज़ कम परेशान करती है।

“क्या आप जानना चाहते हैं कि मैंने ये चीज़ें क्यों इकट्ठा कीं?” चौकीदार पूछता है। “शहर में किसी को इनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। शहर में किसी को भी इनमें ज़रा भी रुचि नहीं है। सबके पास जीने के लिए ज़रूरी चीज़ें हैं। बर्तन, कमीज़ और कोट, हाँ... बस इतना ही काफ़ी है कि उनकी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। किसी को और कुछ नहीं चाहिए। लेकिन मुझे नहीं। मुझे इन चीज़ों में बहुत दिलचस्पी है। पता नहीं क्यों। मैं इनकी ओर खिंचा चला जाता हूँ। इनकी बनावट, इनकी सुंदरता।”

वह एक हाथ तकिए पर रखता है और दूसरा हाथ अपनी जेब में डाल लेता है।

“सच जानना चाहते हो तो, मुझे यह पावर स्टेशन पसंद है,” वह आगे कहता है। “मुझे पंखा, मीटर, ट्रांसफार्मर सब पसंद हैं। शायद मुझे ये चीजें पहले भी पसंद थीं, इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ भेज दिया। लेकिन बहुत समय हो गया है। मैं पहले की बातें भूल चुका हूँ... कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे कभी शहर लौटने की इजाज़त नहीं मिलेगी। वे मुझे कभी भी मेरे आज के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे।”

मैंने लकड़ी का एक वाद्य यंत्र उठाया। यह खोखला और रेतघड़ी के आकार का था, जिसमें केवल दो तार बचे थे। मैंने उन्हें बजाया। एक सूखी सी झंकार निकली।

मैंने पूछा, "ये वाद्य यंत्र आपको कहाँ से मिले?"

“हर जगह से,” वह कहता है। “जो आदमी मेरा राशन पहुँचाता है, वही लाता है। कस्बे में, पुराने वाद्य यंत्र कभी-कभी अलमारियों और शेडों में दबे पड़े रहते हैं। अक्सर उन्हें जलाकर लकड़ी बना दी जाती थी। यह बहुत दुख की बात है... मतलब, वाद्य यंत्र अद्भुत चीज़ें हैं। मुझे उन्हें बजाना नहीं आता, शायद मैं उन्हें बजाना चाहूँ भी नहीं, लेकिन उनकी सुंदरता ही मेरे लिए काफी है। क्या यह अजीब है?”

मैंने जवाब दिया, "संगीत वाद्ययंत्र बहुत सुंदर होते हैं। इसमें कुछ भी अजीब नहीं है।"

वाद्ययंत्रों के बीच पड़े चमड़े की तहों से जुड़े एक डिब्बे पर मेरी नज़र पड़ी। धौंकनी सख्त और कुछ जगहों से फटी हुई थी, लेकिन उसमें हवा भरी हुई थी। डिब्बे में उंगलियों के लिए बटन बने हुए थे।

“क्या मैं इसे चख सकता हूँ?” मैंने पूछा।

“कृपया आगे बढ़ें,” युवा केयरटेकर कहता है।

मैं अपने हाथों को दोनों सिरों पर लगे पट्टियों में डालकर दबाती हूँ। पंप करना मुश्किल है, लेकिन मैं सीख सकती हूँ। मैं बटनों को बढ़ते क्रम में दबाती हूँ, जिससे धौंकनी अंदर-बाहर होती है। कुछ बटनों से हल्की आवाज़ आती है, लेकिन एक क्रम है। मैं बटनों को फिर से दबाती हूँ, इस बार घटते क्रम में।

“वाह! कैसी आवाज़ें हैं!” मंत्रमुग्ध चौकीदार मुस्कुराते हुए कहता है। “ऐसा लगता है जैसे वे रंग बदल रहे हों!”

“ऐसा लगता है कि हर बटन एक ध्वनि उत्पन्न करता है,” मैंने समझाया। “हर एक ध्वनि अलग है। कुछ ध्वनियाँ एक साथ संगत हैं और कुछ नहीं।”

"आपका क्या मतलब है?"

मैं एक साथ कई बटन दबाता हूँ। अंतराल बेतरतीब हैं, लेकिन कुल मिलाकर प्रभाव बुरा नहीं है। फिर भी मुझे कोई गाना याद नहीं आ रहा, सिर्फ़ सुर याद आ रहे हैं।

“क्या ये आवाज़ें एक साथ मेल खाती हैं?”
"हाँ।"
“मुझे समझ नहीं आ रहा,” वह कहता है। “ऐसा लगता है जैसे मैं पहली बार कुछ सुन रहा हूँ। यह हवा की आवाज़ से अलग है और पक्षियों की आवाज़ से भी अलग है।”
वह अपने हाथों को अपनी गोद में टिकाए हुए है और मेरी ओर, और धौंकनी के डिब्बे की ओर बारी-बारी से देख रहा है।
“मैं आपको यह वाद्य यंत्र दे दूंगा। आप चाहें तो अन्य वाद्य यंत्र ले सकते हैं। ये किसी ऐसे व्यक्ति के पास होने चाहिए जो इनका उपयोग कर सके,” वह कहता है, फिर ध्यान से हवा की ओर कान लगाता है। “मुझे अब मशीनरी की जाँच करनी है। मुझे देखना होगा कि पंखा और ट्रांसफार्मर काम कर रहे हैं या नहीं। कृपया दूसरे कमरे में मेरा इंतज़ार करें।”
युवा केयरटेकर जल्दी से चला जाता है, और मैं वापस उस जगह पर लौट आता हूँ जहाँ लाइब्रेरियन मेरा इंतजार कर रही होती है।
“क्या यह कोई वाद्य यंत्र है?” वह पूछती है।
“एक प्रकार का संगीत वाद्ययंत्र,” मैंने कहा।
"क्या मैं इसे छू सकता हूँ?"
“ज़रूर,” मैंने कहा और उसे धौंकनी का डिब्बा थमा दिया। उसने उसे दोनों हाथों से ऐसे ग्रहण किया मानो किसी छोटे जानवर को गोद में लिए हो। मैं उत्सुकता से देखता रहा।
“कितनी अजीब बात है!” वह असहज मुस्कान के साथ बोली। “क्या आपको इसे पाकर अच्छा लग रहा है?”
यहां आना सार्थक रहा।
“देखभाल करने वाले ने उसकी परछाई को पूरी तरह से दूर नहीं किया। उसकी परछाई का एक हिस्सा अभी भी बाकी है,” वह मुझसे फुसफुसाते हुए कहती है। “इसीलिए वह यहाँ जंगल में है। मुझे उस पर तरस आता है।”
"क्षमा मांगना?"
"हो सकता है कि वह जंगल में और अंदर तक जाने के लिए उतना मजबूत न हो, लेकिन वह शहर वापस नहीं लौट सकता।"
क्या आपको लगता है कि आपकी मां जंगल में है?
“मुझे सच में नहीं पता,” वह कहती हैं। “यह विचार मेरे मन में आया।”
कुछ देर बाद चौकीदार आ जाता है। मैं सूटकेस खोलता हूँ और उसके लिए लाए गए उपहार निकालता हूँ। संग्रह कक्ष में रखे एक संदूक में मिली एक छोटी घड़ी और एक सिगरेट लाइटर।
“कृपया इन्हें स्वीकार करें। ये उस वाद्य यंत्र के प्रति मेरी कृतज्ञता का प्रतीक हैं,” मैंने कहा।
युवा केयरटेकर पहले तो मना कर देता है, लेकिन अंततः मान जाता है। वह वस्तुओं का अध्ययन करता है।

“क्या आप जानते हैं कि इनका उपयोग कैसे करना है?” मैंने पूछा।
“नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं ठीक हूँ,” वह कहता है। “ये अपने आप में ही खूबसूरत हैं। समय आने पर शायद मैं इनका कोई उपयोग ढूंढ लूँ। मेरे पास बहुत समय है।”
इस पर मैंने उससे कहा कि हम जा रहे हैं।
“क्या आपको जल्दी है?” वह उदास होकर पूछता है।
“मुझे सूर्यास्त से पहले शहर लौटना होगा, फिर काम पर जाना होगा,” मैंने कहा।
“मैं समझता हूँ। काश मैं आपके साथ जंगल के प्रवेश द्वार तक जा पाता, लेकिन मैं पावर स्टेशन नहीं छोड़ सकता।”
हम छोटे से घर के बाहर अलग हो गए।
“कृपया वापस आइए। मुझे आपका वाद्य यंत्र बजाते हुए सुनने दीजिए,” वह कहता है।
"धन्यवाद।"
जैसे-जैसे हम पावर स्टेशन से दूर चलते हैं, हवा की आवाज़ धीरे-धीरे कम होती जाती है। जंगल के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर तो हमें वह आवाज़ बिल्कुल भी सुनाई नहीं देती।

29

झील, मासाटोमी कोंडो, पैंटी होज़

मैं और वो लड़की अपने सामान को फालतू कमीज़ों में लपेटकर, मैंने उन गठ्ठों को अपने सिर पर संतुलित किया। हम देखने में अजीब लग रहे थे, लेकिन हमारे पास हंसने का समय नहीं था। हमने राशन और व्हिस्की पीछे छोड़ दी थी, इसलिए हमारा सामान ज़्यादा भारी नहीं था।

“अपना ख्याल रखना,” प्रोफेसर ने कहा। कम रोशनी में, वे मुझसे पहली मुलाकात की तुलना में कहीं अधिक बूढ़े लग रहे थे। उनकी त्वचा ढीली पड़ गई थी, उनके बाल झाड़ी की तरह झड़ रहे थे, और उनका चेहरा तिलचट्टों से भरा हुआ था। वे एक थके-हारे बूढ़े व्यक्ति की तरह दिख रहे थे। चाहे वे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक हों या नहीं, हर कोई बूढ़ा होता है, हर कोई मरता है।

मैंने कहा, "अलविदा।"

हम रस्सी के सहारे पानी की सतह तक उतरे। मैं पहले नीचे गया, तल पर पहुँचते ही मैंने अपनी टॉर्च से इशारा किया, फिर वह मेरे पीछे आई। घोर अंधेरे में पानी में डुबकी लगाना निश्चित रूप से उपचारात्मक था। वैसे मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। पानी ठंडा और राहत देने वाला था। यह सादा, साधारण पानी था, जिसका गुरुत्वाकर्षण सामान्य था। सब कुछ स्थिर था। न हवा, न पानी, न अंधेरा, ज़रा भी नहीं हिला। केवल हमारे पानी में छपछपाने की आवाज़ गूँज रही थी। पानी में उतरते ही मुझे याद आया कि मैं प्रोफेसर से अपने घाव का इलाज करने के लिए कहना भूल गया था।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि वो पंजे वाली मछलियाँ यहाँ तैर रही हों," मैंने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा।

“मूर्खता मत करो। ये सिर्फ एक मिथक हैं,” उसने कहा। “मुझे ऐसा लगता है।”

कुछ तसल्ली मिली। मैंने सोचा था कि कहीं कोई विशालकाय मछली अचानक सतह पर आकर मेरे एक-दो पैर न काट ले। चलो, आने दो।

हम एक-दूसरे से रस्सी से बंधे हुए, सिर पर बंडल रखे हुए, एक हाथ से धीरे-धीरे ब्रेस्टस्ट्रोक तैर रहे थे। हमारा लक्ष्य उस जगह की ओर था जहाँ प्रोफ़ेसर ने अपनी रोशनी को पानी की सतह पर प्रकाश की तरह चमकाया था। मैं सबसे आगे तैर रहा था। हम बारी-बारी से अपने हाथों से पानी को हिला रहे थे। मैं बीच-बीच में रुककर अपनी प्रगति की जाँच करता और अपना रास्ता ठीक करता।

“ध्यान रखना कि तुम्हारा बंडल सूखा रहे,” उसने चिल्लाते हुए कहा। “अगर यह गीला हो गया तो मच्छर भगाने वाला उपकरण किसी काम का नहीं रहेगा।”

मैंने कहा, "कोई बात नहीं।" लेकिन वास्तव में, यह एक बहुत बड़ा संघर्ष था।

मैं तैर रहा था। ओर्फियस स्टिक्स नदी पार करके मृतकों के लोक में गया था। दुनिया में धार्मिक अनुभवों के कितने ही प्रकार हैं, लेकिन जब मृत्यु की बात आती है, तो अंततः सब एक ही बात पर आकर टिक जाता है। कम से कम ओर्फियस को अपने सिर पर कपड़े तो नहीं ढोने पड़े। प्राचीन यूनानियों का अपना ही अंदाज़ था।
“आप दादाजी से सचमुच नाराज़ तो नहीं हैं ना?” लड़की ने पूछा। अंधेरे में गूंजती हुई इस आवाज़ से यह पता लगाना मुश्किल था कि सवाल कहाँ से आ रहा है।
“मुझे नहीं पता, लेकिन क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?” मैंने चिल्लाते हुए कहा, मेरी आवाज़ एक असंभव दिशा से आ रही थी। “जितना ज़्यादा मैंने तुम्हारे दादाजी की बातें सुनीं, उतना ही कम मुझे परवाह होने लगी।”
"आप इसे कैसे कहेंगे?"
वैसे भी कोई खास जिंदगी नहीं थी। दिमाग भी कुछ खास नहीं था।
लेकिन क्या आपने यह नहीं कहा था कि आप अपने जीवन से संतुष्ट हैं?
मैंने इसे शब्दों का खेल कहकर टाल दिया। “हर सेना को एक झंडे की जरूरत होती है।”
उसने कोई जवाब नहीं दिया। हम चुपचाप तैरते रहे।
वो मछलियाँ कहाँ थीं? वो पंजे किसी अमानवीय कल्पना की उपज नहीं थे। मुझे चिंता थी कि कहीं वो हमारी तरफ ही तो नहीं आ रही थीं। मुझे लग रहा था कि किसी भी पल कोई चिपचिपी, पंजेदार मछली मेरी एड़ी पकड़ लेगी। ठीक है, शायद मेरा बहुत जल्द ही शरीर-भ्रष्ट होना तय था, लेकिन मैं किसी काली झील के जीव का चूर-चूर होना नहीं चाहता था। मैं सूरज की गर्मी में मरना चाहता था।
“लेकिन तुम तो बड़े अच्छे इंसान हो,” उसने कहा, उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे वह अभी-अभी नहाकर निकली हो। “कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है।”
मैंने कहा, "तुम उन गिने-चुने लोगों में से एक हो।"
"खैर, मैं यह करता हूं।"
तैरते हुए मैंने पीछे मुड़कर देखा। मुझे प्रोफेसर की रोशनी दूर जाती हुई दिखाई दी, लेकिन मेरा हाथ अभी तक ठोस चट्टान को नहीं छू पाया था। इतनी दूर कैसे हो सकता है? अच्छा हुआ कि उन्होंने हमें सस्पेंस में रखा।
“मैं दादाजी का बचाव नहीं कर रही,” लड़की ने फिर बोलना शुरू किया, “लेकिन वो बुरे नहीं हैं। वो अपने काम में इतने मग्न हो जाते हैं कि उन्हें कुछ और दिखाई ही नहीं देता। उनकी नीयत अच्छी थी। वो तुम्हें सिस्टम के चंगुल में आने से पहले बचाना चाहते थे। अपने तरीके से, दादाजी को अपने किए पर शर्म आती है।”
इसे गलत कहना बहुत फायदेमंद साबित हुआ।
“तो दादाजी को माफ कर दीजिए,” उसने कहा।

मैंने जवाब दिया, "माफी से क्या होगा? अगर वह वाकई ज़िम्मेदार महसूस करता, तो वह एक राक्षस को जन्म नहीं देता और मामला बिगड़ने पर भाग नहीं जाता। उसे बड़ी संस्थाओं के लिए काम करना पसंद नहीं है, ठीक है, लेकिन उसकी रिसर्च से कई लोगों की जिंदगियां जुड़ी हुई हैं।"

“दादाजी को सिस्टम पर बिल्कुल भरोसा नहीं था,” उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। “कैलकुटेक और सेमिओटेक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।”

"तकनीकी दृष्टि से शायद, लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा, एक जानकारी की रक्षा करता है जबकि दूसरा उसे चुराता है।"

“लेकिन क्या होगा अगर सिस्टम और फैक्ट्री दोनों एक ही व्यक्ति द्वारा चलाए जा रहे हों?” उसने कहा। “क्या होगा अगर बायां हाथ चोरी करे और दायां हाथ रक्षा करे?”

विश्वास करना मुश्किल है, पर असंभव नहीं। सिस्टम में काम करने के दौरान, मुझे सिस्टम सेंट्रल के अंदर क्या चल रहा था, इसके बारे में कभी कुछ पता नहीं चला। हमें निर्देश मिलते थे; हम उनका पालन करते थे। टर्मिनल डिवाइसों को कभी भी सीपीयू तक पहुंच नहीं मिली।

“हाँ, यह वाकई बहुत ही लाभदायक व्यवसाय होगा,” मैंने सहमति जताते हुए कहा। “एक पक्ष दूसरे के खिलाफ खड़ा होगा; आप अपनी इच्छानुसार दांव बढ़ा सकते हैं। बाजार में अचानक गिरावट का भी कोई खतरा नहीं होगा।”

“यही बात दादाजी को तब समझ में आई जब वे सिस्टम में थे। आखिरकार, सिस्टम तो बस एक निजी उद्यम है जिसने राज्य के हितों को साधने के लिए इसका इस्तेमाल किया है। और निजी उद्यम हमेशा लाभ के पीछे ही भागता है। दादाजी को एहसास हुआ कि अगर वे अपना शोध जारी रखते हैं, तो वे केवल स्थिति को और खराब कर देंगे।”

तो सिस्टम एक बोर्ड लगाता है: सूचना की सुरक्षा के लिए काम कर रहे हैं। लेकिन यह सब दिखावा है। अगर वह बूढ़ा आदमी दिमाग को फिर से कॉन्फ़िगर करने की तकनीकें सौंप देता है, तो वह मानवता का भाग्य खुद तय कर देगा। दुनिया को बचाने के लिए, वह पद छोड़ देता है। उन बेकार हो चुके कैलकुटेक्स का क्या हुआ —और मेरा भी, जो दुनिया के अंत में फंस गया।

मैंने उससे पूछा, "क्या तुम शुरू से ही इस सब में शामिल थी?"

"हाँ, मुझे पता था," उसने थोड़ी हिचकिचाहट के बाद स्वीकार किया।

“तो फिर तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? इसका क्या मतलब था? तुम मेरा खून और समय बचा सकते थे।”

“मैं चाहती थी कि तुम दादाजी के नजरिए से सब कुछ देखो,” उसने जवाब दिया। “वैसे भी तुम मेरी बात पर यकीन नहीं करते।”

“मुझे नहीं लगता,” मैंने कहा। तीसरा सर्किट, अमरता— भला इस पर सीधे-सीधे कौन विश्वास करेगा?

अगले कुछ ब्रेस्टस्ट्रोक में मेरा हाथ एक पत्थर की दीवार से टकरा गया। किसी तरह हम इस भूमिगत झील को तैरकर पार करने में कामयाब हो गए थे।

मैंने घोषणा की, "हम सफल हो गए हैं।"
वह मेरे बगल में आकर रुक गई। हमने दूर दिख रही उस छोटी सी रोशनी की ओर देखा और अपनी स्थिति को दाईं ओर दस मीटर समायोजित किया।
“यह लगभग यहीं होना चाहिए,” उसने कहा। “पानी की सतह के ठीक ऊपर एक छेद।”
मैंने सावधानीपूर्वक अपने सिर पर बंधी हुई गड्डी को खोला और जेब में रखने लायक छोटी टॉर्च निकाली, फिर उसे दीवार की ओर चमकाया।
मैंने कहा, "मुझे कोई छेद नहीं दिख रहा है।"
"थोड़ा और दाईं ओर कोशिश करो," उसने सुझाव दिया।
मैंने टॉर्च की रोशनी दीवार पर घुमाई, लेकिन फिर भी कोई छेद नहीं दिखा।
“दाईं ओर? क्या आप निश्चित हैं?”
"थोड़ा और दाईं ओर।"
मैं धीरे-धीरे दाईं ओर बढ़ा, मेरा पूरा शरीर कांप रहा था। दीवार का सहारा लेते हुए, मेरा हाथ एक ढाल जैसी सतह से टकराया। यह एक एलपी रिकॉर्ड के आकार की थी, जिस पर नक्काशी थी। मैंने उस पर अपनी टॉर्च की रोशनी डाली।
“राहत मिली,” उसने कहा।
शायद ऐसा ही हो, लेकिन वे वही दो दुष्ट पंजों वाली मछलियाँ थीं। तराशी गई डिस्क पानी में डूबी हुई तीसरी वस्तु थी।
“यही बाहर निकलने का रास्ता है,” उसने अधिकारपूर्वक कहा। “इंकलिंग्स ने इन्हें सभी निकास द्वारों पर निशान के रूप में लगाया होगा। ऊपर देखो।”
टॉर्च की रोशनी ऊपर करते हुए, मुझे मुश्किल से एक धुंधला सा गड्ढा दिखाई दिया। मैंने टॉर्च उसे थमा दी और जाँच करने चला गया। मुझे वह गड्ढा ठीक से दिखाई नहीं दिया, लेकिन मुझे वहाँ नमी और फफूंद का एहसास हुआ।
मैंने नीचे चिल्लाकर कहा, "मुझे मिल गया!"
“भगवान का शुक्र है!” उसने खुशी से कहा।
मैंने उसे ऊपर उठाया। हम भीगे हुए और कांपते हुए, गलियारे के मुहाने पर रुक गए। अपने कपड़े खोलकर हमने सूखे कपड़े पहन लिए। मैंने उसे अपना स्वेटर दे दिया और अपनी गीली कमीज़ और जैकेट फेंक दी। इससे मैं कमर से नीचे तक पूरी तरह भीगा हुआ था, लेकिन मेरे पास बदलने के लिए पैंट नहीं थी।
जब वह इंकलिंग को भगाने वाले उपकरण की जाँच कर रही थी, मैंने प्रोफ़ेसर को संकेत दिया कि हम सुरक्षित पहुँच गए हैं। पीले रंग का प्रकाश बिंदु दो बार, तीन बार चमका, फिर बुझ गया। चारों ओर फिर से घना अंधेरा छा गया।

“चलो चलते हैं,” उसने कहा। मैंने अपनी घड़ी देखी। सात बजकर अठारह मिनट हो रहे थे। ज़मीन के ऊपर, हर टीवी चैनल पर सुबह की खबरें चल रही थीं। लोग नाश्ता कर रहे थे, आधी नींद में मौसम की जानकारी, सिरदर्द के इलाज, अमेरिका के साथ कार निर्यात व्यापार की समस्याओं जैसी खबरों से अपना सिर भर रहे थे। किसे पता चलेगा कि मैंने पूरी रात दुनिया के सबसे गंदे इलाके में बिताई? क्या उन्हें इस बात की परवाह थी कि मैं बदबूदार पानी में तैर रहा था और मेरी गर्दन पर जोंक चिपकी हुई थीं, कि पेट दर्द से मैं लगभग बेहोश हो गया था? क्या किसी को इस बात से कोई फर्क पड़ता था कि मेरी यह हकीकत अगले अट्ठाईस घंटे और बयालीस मिनट में खत्म हो जाएगी? यह खबर कभी नहीं बनेगी।

यह रास्ता अब तक हमने जितने भी रास्ते देखे थे, उनसे कहीं छोटा था। हमें चारों हाथों-पैरों के बल रेंगना पड़ा। यह रास्ता हमें आंतों की तरह टेढ़े-मेढ़े रास्तों से ले गया, कभी लगभग सीधा ऊपर की ओर जाता था, कभी सीधा नीचे की ओर गिरता था, तो कभी रोलर कोस्टर की तरह चक्कर लगाता था। आगे बढ़ना मुश्किल था। यह ऐसा रास्ता नहीं था जिसे इंकलिंग्स ने बनाया हो। कोई भी, यहाँ तक कि इंकलिंग्स भी, इतना जटिल रास्ता नहीं बना सकते थे।

तीस मिनट बाद, हमने इंकलिंग-रोधी पोर्टेबल बैग बदले, फिर दस मिनट बाद वह संकरा रास्ता अचानक एक ऊँची छत वाली जगह में खुल गया। एकदम सन्नाटा था, अँधेरा और सीलन भरा माहौल था। रास्ता बाएँ और दाएँ दो भागों में बँट गया था, हवा दाएँ से बाएँ बह रही थी। उसने अपनी रोशनी उस विभाजन पर डाली। दोनों रास्ते सीधे अँधेरे में जाकर मिलते थे।

मैंने पूछा, "किस तरफ?"

“दाईं ओर,” उसने कहा। “दादाजी के निर्देशानुसार हमें सेंडागाया जाना है, इसलिए दाईं ओर मुड़ने से हम जिंगू स्टेडियम की ओर पहुँच जाएँगे।”

मैंने ज़मीन के ऊपर की दुनिया की कल्पना की। हम सीधे कावाडे बुकशॉप, विक्टर रिकॉर्डिंग स्टूडियो और उन दो मशहूर रामेन दुकानों - होप-केन और कोपेन - के नीचे थे।

मैंने कहा, "हम मेरी नाई की दुकान के भी पास ही हैं।"

“ओह?” उसने बिना किसी खास दिलचस्पी के कहा।

मैंने सोचा कि दुनिया खत्म होने से पहले बाल कटवा लूँ। आखिर मेरे पास बचे हुए चौबीस घंटों में करने के लिए और भी बहुत कुछ था। बस नहाना, कपड़े पहनना और नाई की दुकान जाना ही मेरे लिए काफी था।

“अब सावधान रहना,” उसने चेतावनी दी। “हम इंकलिंग के घोंसले के करीब पहुँच रहे हैं। वहाँ उनकी आवाज़ें और वह भयानक बदबू आ रही है। मेरे साथ रहो।”

मैंने हवा को सूंघा। मुझे कुछ भी गंध नहीं आई। मुझे कुछ भी सुनाई भी नहीं दिया।

हमने हमें जोड़ने वाली रस्सी को पंद्रह सेंटीमीटर तक छोटा कर दिया।

“सावधान रहो, यहाँ दीवार नहीं है,” उसने तेज़ी से कहा और अपनी टॉर्च बाईं ओर चमकाई। वह सही थी: कोई दीवार नहीं थी, बस एक अँधेरा अँधेरा था। रोशनी की किरण तीर की तरह निकली और घने काले अँधेरे में गायब हो गई, जो मानो साँस ले रहा हो, काँप रहा हो, और जिसकी बनावट घिनौनी जेली जैसी थी।
“सुना तुमने?” उसने पूछा।
“हां, मैं उन्हें सुन सकता हूँ,” मैंने कहा।
कुछ अनसुनी आवाज़ें। असल में, कानों में एक झनझनाहट सी थी। तेज़ आवाज़ के ऐसे झटके जैसे किसी ड्रिल मशीन के बिट्स हों, जैसे बेकाबू कीड़ों की भिनभिनाहट हो, वो आवाज़ दीवारों से टकराकर मेरे कान के पर्दों में घुस गई।
“चलते रहो!” उसने मेरे कान में चिल्लाकर कहा। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं चल नहीं रहा था।
उसने रस्सी को जोर से खींचा। “हम यहाँ नहीं रुक सकते। अगर हम रुके तो हमें घसीटकर ले जाया जाएगा और हम पिघलकर चूर-चूर हो जाएँगे।”
मैं हिल नहीं पा रहा था। मैं ज़मीन से चिपक गया था। समय आदिम दलदलों की ओर पीछे की ओर बह रहा था।
अंधेरे से उसका हाथ निकला और उसने मेरे चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो गए।
“दाईं ओर!” वह चिल्लाई। “दाईं ओर! सुना? दायाँ पैर आगे! दाईं ओर, बेवकूफ!”
मेरा दाहिना पैर चरमराते हुए आगे बढ़ा।
“बाईं ओर!” वह चिल्लाई।
मैंने अपना बायां पैर हिलाया।
बस यही है। धीरे-धीरे और लगातार, एक-एक कदम करके आगे बढ़ना है।
वे निश्चित रूप से हमारे पीछे पड़े थे, हमारे कानों में भय भर रहे थे, हमारे कदमों को रोकने के लिए साजिश रच रहे थे, और फिर अपने घिनौने हाथों से हमें जकड़ने की कोशिश कर रहे थे।
“अपने पैरों पर रोशनी डालो!” उसने आदेश दिया। “दीवार से पीठ सटाकर खड़े हो जाओ! एक-एक कदम करके बगल से चलो। समझ गए?”
मैंने कहा, "समझ गया।"
किसी भी परिस्थिति में अपनी रोशनी न बढ़ाएं।
"क्यों नहीं?"
“क्योंकि यहाँ इंकलिंग्स हैं। बिल्कुल यहीं,” उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा। “लेकिन आपको कभी भी, किसी भी हालत में, इंकलिंग की तरफ नहीं देखना चाहिए। अगर आपकी नज़र किसी इंकलिंग पर पड़ गई, तो आप उससे नज़र नहीं हटा पाएंगे।”

हम धीरे-धीरे, एक-एक कदम बढ़ाते हुए, बगल की ओर बढ़ते गए। ठंडी हवा हमारे चेहरों को छू रही थी, जिससे मरी हुई मछलियों की दुर्गंध फैल रही थी। मुझे उल्टी आने का मन हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी विशाल मछली के मृत शरीर के कीड़े-मकोड़ों से भरे अंदरूनी हिस्से में हों। इंकलिंग्स उन्माद में, बेकाबू होकर चीख रहे थे। मेरे कान सुन्न हो गए। पित्त के घूंट गले तक आ गए।

मेरे पैर सहज प्रतिक्रिया से आगे बढ़ते रहे। कभी-कभी वह मुझे पुकारती, लेकिन मुझे उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। उसके इंकलिंग-भगाने वाले यंत्र की नीली बत्ती अभी भी जल रही थी, इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि हम अभी भी सुरक्षित हैं। लेकिन कब तक?

मैंने वातावरण में बदलाव महसूस किया। दुर्गंध कम हो गई; कानों पर दबाव कम हो गया। आवाज़ें अलग तरह से गूंजने लगीं। सबसे बुरा समय बीत चुका था। हमने राहत की सांस ली और ठंडे पसीने को पोंछा।

काफी देर तक वह चुप रही। सन्नाटे में पानी की बूंदों की गूंज सुनाई दे रही थी।

मैंने पूछा, "वे इतने गुस्से में क्यों थे?"

“हमने उनके पवित्र स्थान में घुसपैठ की। वे प्रकाश की दुनिया और वहां रहने वाले सभी लोगों से नफरत करते हैं।”

"यह मानना मुश्किल है कि सेमियोटेक लोग उनके साथ काम करेंगे, चाहे इसके कितने भी फायदे क्यों न हों।"

उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया मेरी कलाई को दबाना थी।

फिर थोड़ी देर बाद: "जानते हो मैं क्या सोच रहा हूँ?"

मैंने कहा, "मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

मुझे लगता है कि अगर मैं आपके साथ उस दुनिया में जा सकूँ जहाँ आप जा रहे हैं, तो यह बहुत अच्छा होगा।

और इस दुनिया को पीछे छोड़ दें?

“बिल्कुल सही,” उसने कहा। “वैसे भी यह दुनिया बहुत उबाऊ है। मुझे यकीन है कि तुम्हारी चेतना में रहना कहीं ज्यादा मजेदार होगा।”

मैंने अपना सिर हिलाया। धिक्कार है, मैं अपनी ही चेतना में जीना नहीं चाहता था।

“चलिए, आगे बढ़ते हैं,” उसने कहा। “हमें सीवर के रास्ते बाहर निकलने का रास्ता खोजना होगा। अभी कितना समय हुआ है?”

"आठ बीस।"

"पोर्टा-पैक बदलने का समय आ गया है," उसने कहा, दूसरे यूनिट को चालू किया, और फिर खाली हो चुके यूनिट को अनाड़ीपन से अपनी कमरबंद में ठूंस दिया।

सुरंग में प्रवेश किए हुए ठीक एक घंटा हो चुका था। प्रोफ़ेसर के निर्देशों के अनुसार, पेड़ों से घिरी सड़क के नीचे से आर्ट फ़ोरम की ओर बाईं ओर मुड़ना था। मुझे याद आ रहा था कि यह पतझड़ की शुरुआत थी। पत्तियाँ अभी भी हरी होंगी। धूप, घास की महक, पतझड़ की हल्की हवा मेरे मन में गूंज रही थी। आह, लेटकर

आसमान को देखना कितना अच्छा लगता! मैं नाई के पास जाता, दाढ़ी बनवाता, गैयन पार्क की ओर टहलता, लेट जाता और नीले आसमान को निहारता। शायद एक ठंडी बीयर पी लेता। दुनिया के अंत का इंतज़ार करते हुए बस यही तो चाहिए था।

"क्या आपको लगता है कि बाहर मौसम अच्छा है?"

“मुझे नहीं पता। मुझे कैसे पता चलेगा?” उसने पलटकर जवाब दिया।

क्या कल शाम जब मैं घर से निकला था तब तारे निकले हुए थे? मुझे बस इतना याद है कि स्काईलाइन में एक जोड़ा ड्यूरान ड्यूरान सुन रहा था। तारे? तारों को कौन याद रखता है? अब सोचता हूँ तो सही, क्या मैंने हाल ही में आसमान की तरफ देखा भी था? अगर तीन महीने पहले ही आसमान से तारे गायब हो गए होते, तो मुझे पता भी नहीं चलता। मुझे बस महिलाओं की कलाई पर चांदी के कंगन और गमलों में लगे रबर के पौधों में आइसक्रीम स्टिक ही दिखाई दे रही थीं। मेरी ज़िंदगी में ज़रूर कुछ गड़बड़ है। मुझे तो युगोस्लाविया का चरवाहा होना चाहिए था जो हर रात सप्तर्षि मंडल को देखता। न कार, न कार स्टीरियो, न चांदी के कंगन, न इधर-उधर घूमना, न गहरे नीले रंग के ट्वीड सूट।

मेरी दुनिया सिमटकर एक क्रेडिट कार्ड में सिमट गई। सामने से देखने पर चीज़ें महज़ टेढ़ी-मेढ़ी लगती थीं, लेकिन किनारे से देखने पर नज़ारा लगभग अर्थहीन था—एक आयामी पतली परत जैसा। मेरे बारे में सब कुछ उसमें समाया हुआ था, लेकिन वह सिर्फ़ प्लास्टिक था। किसी मशीन के सिवा किसी के लिए भी समझ से परे।

मेरा पहला सर्किट शायद कमजोर पड़ रहा था। मेरी असली यादें समतल प्रक्षेपण में विलीन होती जा रही थीं, चेतना का पर्दा अपनी पहचान खो रहा था।

स्काईलाइन में रहने वाले उस जोड़े की याद आ गई। आखिर मुझे उन पर इतना ध्यान क्यों था? भला और क्या सोचूँ? अब तक तो वे दोनों बिस्तर पर सो रहे होंगे, या शायद कम्प्यूटर ट्रेनों में धक्का-मुक्की कर रहे होंगे। वे टीवी सीरियल के लिए सपाट चरित्र चित्रण हो सकते थे: विदेश में पढ़ाई के दौरान एक जापानी महिला एक फ्रांसीसी से शादी करती है; पति का सड़क दुर्घटना में एक्सीडेंट हो जाता है और वह लकवाग्रस्त हो जाता है। महिला पेरिस के जीवन से ऊब जाती है, पति को छोड़कर टोक्यो लौट आती है, जहाँ वह बेल्जियम या स्विस दूतावास में काम करती है। चांदी के कंगन, पति की निशानी। नीस के समुद्र तट का दृश्य: महिला के बाएं हाथ में कंगन। महिला स्नान करती है, प्रेम करती है, चांदी के कंगन हमेशा उसके बाएं हाथ में रहते हैं। दृश्य बदलता है: यासुदा हॉल के छात्र कब्जे का अनुभवी जापानी व्यक्ति प्रवेश करता है, जिसने एशेज एंड डायमंड्स फिल्म के सीसे की तरह रंगीन चश्मा पहना हुआ है। एक शीर्ष टीवी निर्देशक, वह आंसू गैस के सपनों से परेशान है, अपनी पत्नी की यादों से, जिसने पांच साल पहले अपनी कलाई काट ली थी। (वैसे, इस स्क्रिप्ट में बहुत सारे जंप कट हैं): वह महिला की बाईं कलाई पर कंगन देखता है, फिर उसे पत्नी की खून से सनी कलाई की याद आती है। तो वह महिला से पूछता है: क्या वह कंगन को अपनी दाहिनी कलाई पर पहन सकती है?

“मैं मना करती हूँ,” वह कहती है। “मैं अपनी चूड़ियाँ बाईं कलाई पर पहनती हूँ।”
दृश्य बदलता है: कैसाब्लांका फिल्म के पियानो वादक की तरह, पियानो वादक प्रवेश करता है। वह शराबी है और हमेशा पियानो के ऊपर नींबू के टुकड़े के साथ जिन का एक शॉट ग्लास रखता है। एक प्रतिभाशाली जैज़ संगीतकार, जिसका करियर बर्बाद होने से पहले तक ठीक-ठाक था, वह पुरुषों और महिलाओं दोनों से दोस्ती करता है, उनके राज़ जानता है...
टीवी के लिए तो ये आम बात है, लेकिन ये तो बिलकुल ही हास्यास्पद है। कुछ तो कल्पनाशीलता है! या फिर ये सब हकीकत थी? मैंने तो महीनों से सितारों को देखा ही नहीं था।
मैंने कहा, "मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकती।"
“क्या बात बर्दाश्त नहीं होती?” उसने पूछा।
"अंधेरा, बदबूदार दुर्गंध, इंकलिंग्स, न जाने क्या-क्या। ये गीली पैंट, मेरे पेट में चुभता घाव। मैं बाहर की दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकता।"
“ज्यादा देर नहीं लगेगी,” उसने कहा। “हम जल्द ही यहाँ से निकल जाएंगे।”
मैंने कहा, "मेरा दिमाग पूरी तरह से खराब हो चुका है। विचार अजीबोगरीब दिशाओं में भटक रहे हैं। मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा हूँ।"
"आप किस बारे में सोच रहे थे?"
"मूवी लोग: मासाटोमी कोंडो, रयोको नाकानो, और त्सुतोमु यामाज़ाकी।"
“रुको। कुछ मत सोचो,” उसने कहा। “हम लगभग पहुँच ही गए हैं।”
मैंने न सोचने की कोशिश की और मेरा ध्यान उन पसीने से भीगी हुई पैंटों पर चला गया जो मेरे पैरों से चिपकी हुई थीं। मैंने आखिरी बार पेशाब कब किया था?
कम से कम, अंडरग्राउंड जाने के बाद से मैंने पेशाब नहीं किया था। उससे पहले? मैं गाड़ी चला रहा था, एक हैमबर्गर खाया, स्काईलाइन में उस जोड़े को देखा। और उससे पहले? मैं सो रहा था। फिर वह मोटी लड़की आई और मुझे जगाया। हम थोड़ी देर बाद निकल गए। तो उससे पहले? शायद मैंने अस्पताल में टॉयलेट का इस्तेमाल किया होगा, जब उन्होंने मुझे टांके लगाए थे। लेकिन अगर मैं तब गया होता, तो दर्द याद रखने लायक होता; मुझे याद नहीं है, इसका मतलब है कि मैंने पेशाब नहीं किया था—कितने समय से?
सब कुछ एक झूले की तरह पास और दूर, पास और दूर घूमता रहा। वे दोनों कब आए थे और मेरे पेट पर अपना गंदा काम किया था? यह तो सुपरमार्केट के स्नैक बार में बैठने से पहले ही हुआ होगा—या नहीं? मैंने आखिरी बार पेशाब कब किया था? मुझे इसकी परवाह क्यों थी?
“ये रहा,” उसने मेरी कोहनी खींचते हुए कहा। “नाली। बाहर निकलने का रास्ता।”
मैंने पेशाब करने का ख्याल मन से निकाल दिया और अपनी नज़रें दीवार के उस हिस्से पर टिका दीं जो उसकी टॉर्च की रोशनी से जगमगा रहा था। मुझे धूल की नाली का चौकोर मुँह दिखाई दिया, जो इतना छोटा था कि उसमें से एक व्यक्ति मुश्किल से निकल सके।

मैंने कहा, "यह सीवर पाइप नहीं है।"
"सीवर आगे है। यह एक साइड वेंट है। बस बदबू आ रही है।"
मैंने अपना सिर अंदर डाला और एक गहरी सांस ली। बिल्कुल नाली की बदबू थी। इस बदबूदार भूमिगत भूलभुलैया में भटकने के बाद, सीवेज की गंध भी सुकून देने वाली थी। आगे से तेज़ हवा चल रही थी।
तभी ज़मीन में हल्की कंपन महसूस हुई, साथ ही दूर से आती मेट्रो ट्रेनों की आवाज़ भी सुनाई दी। आवाज़ दस-पंद्रह सेकंड तक रही, फिर अचानक बंद हो गई, जैसे कोई नल बंद हो गया हो। जी हाँ, यही निकास द्वार था।
“हम यहाँ पहुँच गए,” उसने मेरी गर्दन पर एक चुंबन देते हुए कहा। “कैसा महसूस कर रहे हो?”
मैंने कहा, "तुम्हें पूछना ही था। मुझे खुद नहीं पता।"
वह सिर के बल उस छेद में घुस गई। उसकी मुलायम पूंछ छेद में गायब हो जाने के बाद, मैंने भी उसका पीछा किया। संकरा रास्ता कुछ दूर तक सीधा जाता रहा। मेरी टॉर्च की रोशनी में बस उसकी गोल-मटोल पीठ हिलती हुई दिखाई दे रही थी। यह मुझे गीली स्कर्ट में लिपटी हुई, जांघों पर कसी हुई चीनी गोभी की याद दिला रही थी।
“क्या तुम वहाँ पीछे हो?” उसने चिल्लाकर पूछा।
“बिल्कुल तुम्हारे पीछे,” मैंने चिल्लाकर कहा।
"वहाँ एक जूता पड़ा हुआ है।"
“किस तरह का जूता?”
“एक आदमी के काले फीते वाले जूते।”
यह एक पुराना जूता था, जैसा कि वेतनभोगी लोग पहनते हैं। एड़ी घिसी हुई थी और आगे के हिस्से पर कीचड़ जमा हुआ था।
“क्या आपको लगता है कि इंकलिंग्स...?” मैंने ज़ोर से पूछा।
“आप क्या सोचते हैं?” उसने जवाब दिया।
मेरे पास देखने के लिए और कुछ नहीं था, इसलिए मैंने अपनी नज़र उसकी स्कर्ट के किनारे पर टिका दी। वह उसकी जांघों पर ऊपर तक उठती थी, जिससे उसकी बेदाग सफेद त्वचा दिखाई देती थी। ठीक उस जगह पर जहाँ औरतें मोज़े बांधती थीं, मोज़ों और कमरबंद के बीच की खुली त्वचा की पट्टी पर। यह सब पैंटी होज़ के चलन से पहले की बात है।
एक बात से दूसरी बात निकली और देखते ही देखते मेरे विचार पुरानी यादों में खो गए। जिमी हेन्ड्रिक्स, क्रीम, बीटल्स और ओटिस रेडिंग के ज़माने में। मैंने पीटर और गॉर्डन के गाने 'आई गो टू पीसेज़' की शुरुआती धुन सीटी बजाकर गुनगुनाना शुरू कर दिया। बढ़िया गाना है, ड्यूरान ड्यूरान से कहीं बेहतर। शायद इसका मतलब था कि मैं बूढ़ा हो रहा था। मतलब, ये गाना बीस साल पहले तो लोकप्रिय था। और बीस साल पहले कौन पैंटी होज़ के चलन की भविष्यवाणी कर सकता था?

“तुम सीटी क्यों बजा रहे हो?” वह चिल्लाई।
“मुझे नहीं पता। मेरा मन किया,” मैंने जवाब दिया।
“वो कौन सा गाना है?”
"ऐसी चीज़ जिसके बारे में आपने शायद कभी नहीं सुना होगा।"
"आप ठीक कह रहे हैं।"
"यह तुम्हारे जन्म से पहले ही हिट हो चुका था।"
यह गाना किस बारे में है?
मैंने सीधे-सादे शब्दों में कहा, "यह तो पूरी तरह से बिखर जाने जैसा है।"
"तुम इस तरह का गाना क्यों सीटी बजाकर गाना चाहते हो?"
मुझे कोई ठोस कारण समझ नहीं आया। यह अचानक मेरे दिमाग में आया। मैंने कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा।"
इससे पहले कि मैं कोई और धुन सोच पाता, हम सीवर के पास पहुँच गए। असल में, वह एक कंक्रीट का पाइप था। शायद डेढ़ मीटर व्यास का, जिसके तल में लगभग बीस सेंटीमीटर गहरा गंदा पानी बह रहा था। उसका किनारा काई से ढका हुआ था। आगे से कई मेट्रो ट्रेनों के गुजरने की आवाज़ आ रही थी। वास्तव में काफी तेज़। मुझे पीली बत्तियों की एक हल्की सी झलक भी दिखाई दी।
"सीवर का रास्ता मेट्रो की पटरियों से क्यों जुड़ा हुआ है?"
“यह असल में सीवर नहीं है,” उसने कहा। “यह भूजल को ट्रैक की नालियों में ले जाता है। यह रिसते हुए कचरे से भरा है। ठीक है, बस थोड़ा और आगे। लेकिन हम अभी भी सतर्क रहना छोड़ सकते हैं। इंकलिंग्स की शक्ति स्टेशनों तक फैली हुई है। तुमने वह जूता देखा था ना?”
“जी हां,” मैंने कहा।
हम पाइप से नीचे बहती धारा के साथ-साथ चलते रहे, हमारे जूते पानी में छप-छप कर रहे थे, और ट्रेनों की गड़गड़ाहट की आवाज़ उस पर गूंज रही थी। मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी मेट्रो की आवाज़ सुनकर इतनी खुशी महसूस नहीं की थी। लोग ट्रेनों में चढ़ रहे थे, अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ रहे थे, काम और मनोरंजन के लिए जा रहे थे। मैंने गलियारों के ऊपर लटके रंगीन विज्ञापनों और दरवाजों के ऊपर लगे मेट्रो सिस्टम के नक्शों के बारे में सोचा। गिन्ज़ा लाइन हमेशा पीली रहती है। पीली क्यों, मुझे नहीं पता, लेकिन पीली ही रहती है। जब भी मैं गिन्ज़ा लाइन के बारे में सोचता हूँ, मुझे पीला रंग ही दिखाई देता है।
पाइप के मुहाने तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा। खुले हिस्से पर लोहे की जाली लगी थी, जिसमें एक छेद था जो किसी व्यक्ति के निकलने के लिए काफ़ी बड़ा था। कंक्रीट में जगह-जगह लोहे की छड़ें उखड़ी हुई थीं। शुक्र है, ये काम इंकलिंग का था। अगर जाली टूटी न होती, तो हम यहीं फँसे रहते और बाहरी दुनिया हमारी आँखों के सामने लटकती रहती।

उस गड्ढे के आगे सिग्नल लैंप और अन्य उपकरणों के लिए एक बॉक्स था। पटरियों के बीच चप्पू के आकार के खंभों की काली पड़ी कतार पर लैंप लगे थे, जो स्टेशन प्लेटफॉर्म से देखने पर हमेशा धुंधले दिखाई देते थे, लेकिन अब वे असाधारण रूप से तेज चमक रहे थे।

“हम यहाँ तब तक इंतज़ार करेंगे जब तक हमारी आँखें रोशनी के अनुकूल न हो जाएँ,” उसने निर्देश दिया। “लगभग दस मिनट। फिर हम थोड़ा आगे जाएँगे और तब तक रुकेंगे जब तक हमें तेज़ रोशनी की आदत न हो जाए। नहीं तो हमारी आँखें चौंधिया जाएँगी। अगर मेट्रो ट्रेन गुज़रे तो उसे मत देखना, अभी नहीं।”

उसने मुझे कंक्रीट के एक सूखे हिस्से पर बिठा दिया, फिर खुद मेरे बगल में बैठ गई।

जब हमें ट्रेन के आने की आवाज़ सुनाई दी, तो हमने नीचे देखा और अपनी आँखें बंद कर लीं। मेरी पलकों पर एक चमकती हुई पीली रोशनी की लकीर कौंधी। मेरी आँखों में पानी आ गया। मैंने अपनी कमीज़ की आस्तीन से आँसू पोंछ लिए।

“कोई बात नहीं। तुम्हें इसकी आदत हो जाएगी,” उसने कहा, उसकी आँखों से भी आँसू बह रहे थे। “हम बस अगली तीन-चार ट्रेनों को गुजरने देंगे। फिर हमारी आँखें स्टेशन के लिए तैयार हो जाएँगी। वहाँ पहुँचते ही हम इंकलिंग्स के बारे में भूल जाएँगे।”

मैंने कहा, "मुझे याद आ रहा है कि मेरे साथ पहले भी ऐसा हो चुका है।"

"क्या आप मेट्रो की सुरंग में इंतजार कर रहे हैं?"

नहीं, रोशनी, चकाचौंध, मेरी आंखों में आंसू आ रहे थे।

“ऐसा तो सबके साथ होता है।”

“नहीं, यह विशेष प्रकाश था, विशेष दृष्टि थी। मेरी आँखें बदल गई थीं। वे प्रकाश सहन नहीं कर सकती थीं।”

क्या आपको कुछ और याद है?

“नहीं, बस इतना ही। मेरी वापसी की सूचना रद्द हो गई है।”

“तुम्हारी याददाश्त उल्टी दिशा में चल रही है,” उसने कहा।

वह मेरे कंधे से टिक गई। मैं अपनी गीली पैंट में बैठा था और ठंड से मेरी हड्डियाँ तक काँप रही थीं। मेरे शरीर पर बस वहीं थोड़ी गर्माहट थी जहाँ उसके स्तनों का उभार मेरी बांह को छू रहा था।

“अब जब हम ज़मीन के ऊपर आ गए हैं, तो मुझे लगता है कि आपके कुछ प्लान होंगे। घूमने की जगहें, करने के लिए चीज़ें, शायद किसी से मिलना चाहते हों?” उसने मेरी घड़ी की ओर देखते हुए कहा। “आपके पास पच्चीस घंटे और पचास मिनट बचे हैं।”

मैंने कहा, "मैं घर जाकर नहाना चाहता हूँ, फिर नाई की दुकान पर जाना चाहता हूँ।"

आपके पास अभी भी काफी समय बचा है।

मैंने कहा, "मैंने अभी इतना आगे का नहीं सोचा है।"

“क्या मैं आपके घर चल सकती हूँ?” उसने पूछा। “मैं भी नहाना चाहूँगी।”

"हाँ हाँ, क्यों नहीं।"

आओयामा इचोमे की दिशा से एक दूसरी ट्रेन गुजर रही थी। हमने अपनी निगाहें नीचे कर लीं और फिर से आंखें बंद कर लीं।
“आपको बाल कटवाने की ज़रूरत नहीं है,” उसने मेरी तरफ़ रोशनी डालते हुए कहा। “दरअसल, लंबे बालों में आप ज़्यादा अच्छे लगेंगे।”
मैं लंबे बालों से थक गई हूँ।
“ठीक है, लेकिन फिर भी आपको नाई के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। आपने आखिरी बार बाल कब कटवाए थे?”
“मुझे याद नहीं,” मैंने कहा। मुझे सचमुच याद नहीं था। मुझे यह भी याद नहीं था कि क्या मैंने कल पेशाब किया था; कुछ हफ़्ते पहले जो हुआ था वह तो बीती बात हो गई थी।
"क्या आपके पास कोई ऐसे कपड़े हैं जो मुझे फिट हो जाएं?"
मुझे ऐसा नहीं लगता।
“कोई बात नहीं, मैं कुछ सोच लूंगी,” उसने कहा। “क्या तुम अपना बिस्तर इस्तेमाल करने वाले हो?”
"क्या तुम मेरा बिस्तर इस्तेमाल करोगे?"
"पता है, किसी लड़की को सेक्स के लिए बुलाना?"
मैंने कहा, "मैंने इसकी योजना नहीं बनाई थी।"
“अच्छा, क्या मैं वहाँ सो सकता हूँ? दादाजी के पास वापस जाने से पहले मैं थोड़ा आराम करना चाहता हूँ।”
मुझे कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन सेमियोटेक्स और सिस्टम वाले किसी भी पल अंदर घुस सकते हैं। आप जानते हैं, मैं अब भी काफी लोकप्रिय हूं। और मेरे पास कोई दरवाजा भी नहीं है।
“मुझे कोई आपत्ति नहीं है,” उसने कहा।
शिबुया की दिशा से एक तीसरी ट्रेन आ रही थी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे गिनती शुरू की। आखिरी डिब्बा गुजरने तक मैं चौदह तक पहुँच चुका था। मेरी आँखों पर ज़रा भी असर नहीं पड़ा।
उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और खड़ी हो गई। "चलो चलते हैं।"
मैं उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे-पीछे पटरियों की ओर आओयामा इचोमे की तरफ चल दिया।

30

छेद

अगली सुबह जंगल में घटी घटनाएँ किसी सपने जैसी लगती हैं। फिर भी मेज पर पुराना धौंकनी का डिब्बा किसी घायल जानवर की तरह सिकुड़ा पड़ा है। सब कुछ वास्तविक था: भूमिगत हवा में घूमता पंखा, युवा चौकीदार का उदास चेहरा, उसके वाद्य यंत्रों का संग्रह।

मुझे अपने सिर में एक अजीब सी, रहस्यमयी आवाज़ सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है जैसे कोई चीज़ मेरी खोपड़ी में घुस गई हो। कोई सपाट चीज़ लगातार थपथपा रही हो। इसके अलावा, मेरा सिर ठीक महसूस हो रहा है। यह एहसास बिल्कुल अवास्तविक है।

मैं अपने बिस्तर से कमरे में चारों ओर देखता हूँ। कुछ भी असामान्य नहीं है। छत, दीवारें, टेढ़ी-मेढ़ी फर्श की लकड़ियाँ, खिड़की पर लगे पर्दे। दीवार पर टंगा कोट और स्कार्फ, कोट की जेब से झांकते दस्ताने। वहाँ मेज है और वहाँ मेज पर रखा वाद्य यंत्र।

मैं अपने शरीर के हर जोड़ और मांसपेशी की जांच करता हूँ। हर जोड़ बिल्कुल सही है। मेरी आँखों में कोई दर्द नहीं है; कुछ भी गलत नहीं है।

इसके बावजूद, वह सपाट ध्वनि बनी रहती है। अनियमित रूप से, मिश्रित रूप से, विभिन्न स्वरों का एक ताना-बाना। यह ध्वनि कहाँ से आ रही है? लाख कोशिश करने पर भी, मुझे इसका स्रोत समझ नहीं आ रहा।

मैं बिस्तर से उठकर मौसम देखता हूँ। मेरी खिड़की के ठीक नीचे, तीन बूढ़े आदमी एक बड़ा गड्ढा खोद रहे हैं, उनके फावड़ों की नोकें जमी हुई मिट्टी में धंस रही हैं। हवा इतनी ठंडी है कि आवाज़ कानों तक नहीं पहुँचती, जिससे मुझे अचंभित होना पड़ता है।

घड़ी में लगभग दस बज रहे हैं। मैं इतनी देर से कभी नहीं सोया। कर्नल कहाँ हैं? बुखार वाले दिनों को छोड़कर, वह हमेशा मुझे ठीक नौ बजे नाश्ते की थाली लेकर जगाते थे।

मैं आधे घंटे तक इंतज़ार करता हूँ। जब कर्नल फिर भी नहीं आते, तो मैं खुद रसोई में जाता हूँ। कर्नल के साथ इतने सारे नाश्ते करने के बाद, आज मुझे भूख नहीं है। मैं अपनी आधी रोटी खाता हूँ और बाकी जानवरों के लिए रख देता हूँ। फिर मैं अपने बिस्तर पर लौटता हूँ, अपना कोट ओढ़ता हूँ और चूल्हे के गर्म होने का इंतज़ार करता हूँ।

कल तक हमें जो गर्माहट महसूस हो रही थी, वो रातोंरात गायब हो गई। पूरा शहर ठंड में डूबा हुआ है; चारों ओर कड़ाके की ठंड पड़ रही है। उत्तरी पर्वतमाला से लेकर दक्षिणी मैदान तक, आसमान बर्फ से ढके बादलों से बेहद नीचे छाया हुआ है।

खिड़की के नीचे, चारों बूढ़े आदमी अभी भी खुले मैदान में खुदाई कर रहे हैं।

चार आदमी?

पहले यहाँ तीन ही थे। लेकिन सरकारी आवासों में अनगिनत बूढ़े लोग रहते हैं। हर कोई चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा होकर अपने पैरों के पास की ज़मीन खोद रहा है। कभी-कभार हवा के झोंके उनकी पतली जैकेटों को चीरते हुए निकल जाते हैं, लेकिन बूढ़े लोग ज़रा भी असुविधा नहीं दिखाते क्योंकि वे लगातार अपने फावड़े जमी हुई ज़मीन में गाड़ते रहते हैं। उन्हें पसीना आ रहा है, चेहरे लाल हो गए हैं। उनमें से एक ने तो अपनी जैकेट उतारकर पेड़ की डाल पर ऐसे लटका दी है जैसे कोई केंचुली उतारी हो।

कमरा अब गर्म है। मैं हाथ में वाद्य यंत्र लिए मेज पर बैठा हूँ और धीरे-धीरे धौंकनी चला रहा हूँ। चमड़े की तहें सख्त हैं, लेकिन बेकाबू नहीं; चाबियाँ फीकी पड़ गई हैं। इसे आखिरी बार किसने छुआ था? यह पुश्तैनी वस्तु किस रास्ते से गुजरी, कितने हाथों से गुजरी? यह मेरे लिए एक रहस्य है।

मैं बेल्लो बॉक्स का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करता हूँ। यह एक अनमोल वस्तु है। इसमें इतनी सटीकता है। इतना छोटा कि जेब में आसानी से समा जाता है, फिर भी यांत्रिक बारीकियों में कोई कमी नहीं दिखती।

दोनों सिरों पर लकड़ी के तख्तों पर लगी पॉलिश अभी तक उखड़ी नहीं है। उन पर बारीक नक्काशी है, और हरे रंग के जटिल अरबी डिज़ाइन अच्छी तरह से संरक्षित हैं। मैं अपनी उंगलियों से धूल पोंछता हूँ और A-C-C-O-R-D अक्षर पढ़ता हूँ...

यह एक अकॉर्डियन है!

मैं इसे बार-बार बजाता हूँ, अंदर-बाहर करता हूँ, ताकि इसकी लय को समझ सकूँ। इस छोटे से वाद्य यंत्र पर बटन जगह के लिए होड़ करते हैं। बच्चों या महिलाओं के हाथों के लिए ज़्यादा उपयुक्त, एकॉर्डियन को उंगलियों से बजाना एक वयस्क पुरुष के लिए बेहद मुश्किल है। और फिर ताल में धौंकनी भी चलानी पड़ती है!

मैं अपने दाहिने हाथ से बटनों को क्रम से दबाने की कोशिश करता हूँ, जबकि बाएं हाथ से कॉर्ड की कुंजियों को दबाए रखता हूँ। मैं सभी नोट्स को एक बार बजाता हूँ, फिर रुक जाता हूँ।

खुदाई की आवाज़ लगातार आ रही है। हवा बीच-बीच में खिड़की के शीशे से टकरा रही है। क्या बूढ़े लोग मेरी अकॉर्डियन की आवाज़ सुन भी पा रहे हैं?

मैं एक-दो घंटे तक यही कोशिश करता रहता हूँ, जब तक कि मैं कुछ सरल सुरों को बिना किसी गलती के बजाने में सक्षम नहीं हो जाता। कोई धुन नहीं बनती। फिर भी, मैं कोशिश जारी रखता हूँ, गीत की कुछ झलक पाने की उम्मीद में, लेकिन सुरों का क्रम कहीं नहीं ले जाता। स्वरों का एक आकस्मिक संयोजन लगभग मधुर लग सकता है, लेकिन अगले ही पल सब कुछ हवा में गायब हो जाता है।

शायद बाहर खुदाई की आवाज़ ही है जो सुरों को मधुर धुन में बदलने से रोक रही है। शोर के कारण मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ। एक कर्कश, बेतरतीब लय, मिट्टी में धंसते फावड़े, कितनी स्पष्ट रूप से यह मेरे भीतर तक पहुँच रही है! आवाज़ इतनी तीखी हो जाती है, मानो आदमी मेरे दिमाग में खुदाई कर रहे हों। वे मेरी खोपड़ी को खोखला कर रहे हों।

दोपहर से पहले हवा तेज़ हो जाती है, बर्फ़ के हल्के-हल्के टुकड़े गिरने लगते हैं। सफ़ेद बर्फ़ के छोटे-छोटे टुकड़े खिड़की के शीशे पर सूखी टप-टप की आवाज़ करते हुए गिरते हैं और जल्द ही उड़ जाते हैं। कुछ ही समय में बर्फ़ के टुकड़े नमी से फूल जाएंगे। जल्द ही धरती फिर से सफ़ेद बर्फ़ से ढक जाएगी।

मैं गीत गाने का अपना प्रयास छोड़ देता हूँ, अकॉर्डियन को मेज पर छोड़ देता हूँ और खिड़की के पास चला जाता हूँ। बूढ़े लोग बर्फ की परवाह किए बिना खुदाई करते रहते हैं। उन पर गिरती बर्फ की सफेद बूंदों पर वे ध्यान नहीं देते। कोई आसमान की ओर नहीं देखता, कोई अपना हाथ नहीं रोकता, कोई बोलता नहीं। त्यागी हुई जैकेट डाल से चिपकी हुई हवा में लहरा रही है।

अब वहाँ छह बूढ़े आदमी हैं; गड्ढा कमर तक गहरा है। एक बूढ़ा आदमी गड्ढे में है, और बड़ी कुशलता से कुल्हाड़ी से उसकी सख्त सतह को खोद रहा है। फावड़े लिए चार आदमी मिट्टी बाहर फेंक रहे हैं, और टीम का आखिरी सदस्य ठेले से मिट्टी को ढलान पर ले जा रहा है। मुझे उनमें से कोई नेता नज़र नहीं आता। सभी बराबर मेहनत कर रहे हैं, कोई आदेश नहीं देता, कोई काम नहीं बाँटता।

मुझे उस गड्ढे को देखकर कुछ अजीब सा लग रहा है। यह कचरा फेंकने के लिए बहुत बड़ा है। और इस बर्फीले तूफान के बीच अभी खुदाई क्यों की जा रही है? लगता है किसी मकसद से खुदाई की जा रही है, हालांकि कल सुबह तक यह गड्ढा पूरी तरह बर्फ से भर जाएगा।

मैं अपनी कुर्सी पर लौट आता हूँ और सुलगते कोयलों को अनमने भाव से देखता रहता हूँ। मेरे पास एक वाद्य यंत्र है। क्या मैं कभी कोई धुन याद नहीं कर पाऊँगा? क्या मेज पर रखा अकॉर्डियन सुंदर तो रहेगा लेकिन बेकार? मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और बर्फ के खिड़की के शीशे पर धीरे-धीरे गिरने की आवाज़ सुनता हूँ।

दोपहर के भोजन का समय हो गया है। बूढ़े लोग आखिरकार अपना काम छोड़कर अंदर चले जाते हैं, और अपने फावड़े और कुदाल ज़मीन पर ही छोड़ देते हैं।

मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई। कर्नल अंदर आए, उन्होंने हमेशा की तरह अपना भारी कोट और माथे पर नीचे तक झुकी हुई टोपी पहन रखी थी। कोट और टोपी दोनों पर बर्फ जमी हुई थी।

“क्या हम दोपहर का भोजन करें?” वह पूछता है।

“यह बहुत अच्छा होगा,” मैंने कहा।

कुछ मिनट बाद, वह लौटता है और चूल्हे पर एक बर्तन रखता है। तभी वह अपना कोट, टोपी और दस्ताने उतारता है। अंत में वह बैठ जाता है और अपने बिखरे हुए, बर्फ से जमे हुए सफेद बालों वाले सिर को सहलाता है।

“मैं नाश्ते के लिए यहाँ नहीं आ सका,” बुजुर्ग अधिकारी ने कहा। “आज सुबह मुझे कुछ काम निपटाने थे। मेरे पास खाने का समय नहीं था।”

"क्या तुम गड्ढा खोद रहे थे?"

“गड्ढा? नहीं, ऐसा कुछ मैंने नहीं किया,” कर्नल ने झिझकते हुए हंसते हुए जवाब दिया। “मुझे शहर में कुछ काम था।”

बर्तन अब गरम हो चुका है। वह दो कटोरियाँ भरकर मेज पर रख देता है। नूडल्स के साथ एक स्वादिष्ट सब्ज़ी का सूप। एक घूंट पीने से पहले वह उसे ठंडा करने के लिए फूंक मारता है।

मैंने कर्नल से पूछा, "मुझे बताओ, वह छेद किसलिए है?"

“बिल्कुल कुछ नहीं,” वह चम्मच से सूप मुंह में डालते हुए कहते हैं। “वे सिर्फ खोदने के लिए खोदते हैं। इसलिए इस लिहाज से, यह एक बहुत ही शुद्ध गड्ढा है।”

"मैं नहीं समझता।"

“यह काफी सरल है। वे अपना गड्ढा इसलिए खोदते हैं क्योंकि वे खोदना चाहते हैं। इससे ज्यादा या कम कुछ नहीं।”

मैं उस खालीपन और उससे जुड़े सभी संभावित अर्थों के बारे में सोचता हूँ।

“वे समय-समय पर गड्ढे खोदते हैं,” कर्नल समझाते हैं। “शायद उनके लिए यह वैसा ही है जैसा मेरे लिए शतरंज है। इसका कोई विशेष अर्थ नहीं है, यह उन्हें कहीं नहीं ले जाता। हम सभी अपने-अपने शुद्ध गड्ढे खोदते हैं। हमें अपने कार्यों से कुछ भी हासिल नहीं करना है, कहीं पहुंचना नहीं है। क्या इसमें कुछ अद्भुत नहीं है? हम किसी को चोट नहीं पहुंचाते और न ही किसी को चोट पहुंचती है। न जीत, न हार।”

मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ।

बूढ़ा अधिकारी सूप का आखिरी चम्मच खत्म करता है।

“शायद आप नहीं समझते। लेकिन हमारा तरीका हमारे लिए उचित है। यह उचित, शांतिपूर्ण और पवित्र है। जल्द ही, यह आपको समझ में आने लगेगा।”

कई वर्षों तक मैंने एक सैनिक का जीवन व्यतीत किया। मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है; यह एक शानदार जीवन था। बंदूक के धुएँ और खून की गंध, तलवारों की चमक, बिगुल की ध्वनि। मैं आज भी कभी-कभी उस रोमांच के बारे में सोचता हूँ। फिर भी मुझे याद नहीं आता कि आखिर किस बात ने हमें युद्ध के मैदान में धकेल दिया था। सम्मान? देशभक्ति? युद्ध की प्यास? घृणा? मैं केवल अनुमान ही लगा सकता हूँ।

“अब आपको अपना मानसिक संतुलन खोने का डर सता रहा है, जैसा कि मुझे भी कभी सताता था। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूँ कि अपने अहंकार को त्यागने में कोई शर्म नहीं है,” कर्नल रुक जाते हैं और शब्दों की तलाश में इधर-उधर देखने लगते हैं। “अपने मन को शांत कर दीजिए और आपको शांति मिलेगी। ऐसी शांति जो आपने पहले कभी नहीं जानी होगी।”

मैं चुपचाप सिर हिलाता हूँ।

“मैंने शहर में तुम्हारी परछाई के बारे में सुना है,” कर्नल ने कहा। “तुम्हारी परछाई ठीक नहीं है। वह खाना पचा नहीं पा रही है, तीन दिन से बिस्तर पर पड़ी है, शायद ज्यादा दिन न बचे। क्या तुम उससे आखिरी बार मिलना चाहोगे? अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो। मुझे यकीन है कि वह तुमसे मिलना चाहता है।”

“ज़रूर, मैं उनसे मिलूंगा,” मैंने कहा। “लेकिन क्या द्वारपाल मुझे मिलने देगा?”
“तुम्हारी परछाई मृत्यु के कगार पर है। ऐसी परिस्थितियों में किसी व्यक्ति को अपनी परछाई देखने का अधिकार है। इसके लिए नियम हैं। नगर में परछाई के गुजरने को एक गंभीर घटना माना जाता है, और द्वारपाल इसमें हस्तक्षेप नहीं करता। उसके हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं है।”
“मैं अभी आता हूँ,” मैंने थोड़ी देर रुककर कहा।
“अच्छा। मुझे पता था कि तुम ऐसा करोगे,” बूढ़ा सिपाही मेरे पास आकर कंधे पर थपथपाते हुए बोला। “शाम होने से पहले, बर्फ़बारी ज़्यादा होने से पहले जल्दी करो। परछाई ही इंसान का सबसे करीबी सहारा होती है। उसे ध्यान से देखो और कोई पछतावा मत रखना। यह भी ध्यान रखना कि तुम्हारी परछाई का अंत शांति से हो। यह तुम्हारे भले के लिए ही है।”
“हां,” मैंने कहा। मैंने अपना कोट पहना और अपने गले में स्कार्फ लपेट लिया।

31

किराया, पुलिस, डिटर्जेंट

आओयामा इचोमे की दूरी ज़्यादा नहीं थी। हम पटरियों के किनारे-किनारे चलते रहे, और जब भी कोई ट्रेन गुज़रती, खंभों के पीछे छिप जाते। हम सभी यात्रियों को साफ़ देख सकते थे, लेकिन उनमें से कोई भी बाहर नहीं देख रहा था। वे अख़बार पढ़ रहे थे या खाली नज़रों से घूर रहे थे। संख्या में कम होने के बावजूद, लगभग सभी के पास सीटें थीं। भीड़भाड़ का समय बीत चुका था; फिर भी मुझे याद आ रहा था कि रात दस बजे वाली गिन्ज़ा लाइन ज़्यादा भीड़भाड़ वाली होती थी।

मैंने लड़की से पूछा, "आज कौन सा दिन है?"

“मैं आपको नहीं बता सकती,” उसने कहा।

"सप्ताह के किसी आम दिन के हिसाब से ज्यादा यात्री नहीं होते। क्या रविवार को आना संभव है?"

और अगर रविवार हो तो?

“अरे, कुछ नहीं। बस रविवार होगा।”

सबवे की पटरियाँ चौड़ी थीं और उन पर कोई रुकावट नहीं थी, चलना किसी सपने जैसा था। दीवारों पर लगी फ्लोरोसेंट लाइटें पर्याप्त रोशनी दे रही थीं, और वेंटिलेशन सिस्टम की बदौलत ताज़ी हवा भी भरपूर थी। कम से कम नीचे की घुटन भरी हवा की तुलना में तो ऐसा ही था।

हमने गिन्ज़ा जाने वाली एक शटल को जाने दिया, फिर दूसरी शटल को जो विपरीत दिशा में शिबुया की ओर जा रही थी। तब तक हम आओयामा इचोमे के इतने करीब पहुँच चुके थे कि स्टेशन के प्लेटफार्म को छाया में से देख सकें। अगर किसी स्टेशन कर्मचारी ने हमें पटरियों पर पकड़ लिया होता तो कितनी परेशानी होती! प्लेटफार्म के आखिरी छोर तक एक स्टील की सीढ़ी लगी हुई थी, जिसके बाद हमें बस एक छोटी सी बाधा को पार करना था।

हमने देखा कि गिन्ज़ा जाने वाली एक और शटल बस प्लेटफार्म पर आकर रुकी, यात्रियों को उतारा और फिर नए यात्रियों को बिठाया। कंडक्टर ने सब कुछ ठीक देखकर प्रस्थान का संकेत दिया। ट्रेन के नज़र से ओझल होते ही स्टेशन कर्मचारी गायब हो गए।

मैंने कहा, "चलो चलते हैं। दौड़ना मत, बस सामान्य गति से चलना।"

"जाँच करना।"

एक खंभे के पीछे से निकलकर, हम प्लेटफार्म के आखिरी छोर पर लगी सीढ़ी पर चढ़ गए, बिल्कुल बेपरवाह और उदासीन, मानो हम ये सब रोज़ करते हों। हम रेलिंग के चारों ओर घूमे। कई लोगों ने हमारी तरफ देखा, साफ़ तौर पर घबराए हुए। हम कीचड़ से सने हुए थे, कपड़े भीगे हुए थे, बाल उलझे हुए थे, और साधारण

रोशनी में हमारी आँखें सिकुड़ी हुई थीं—शायद हम मेट्रो कर्मचारियों जैसे नहीं दिख रहे थे। आख़िर हम थे कौन?
उनके किसी नतीजे पर पहुंचने से पहले ही हम वहां से गुजर चुके थे और विकेट पर पहुंच चुके थे। तभी मुझे याद आया कि हमारे पास टिकट नहीं थे।
उन्होंने कहा, "हम कहेंगे कि वे हमसे छूट गए और किराया चुका देंगे।"
तो मैंने गेट पर मौजूद युवा कर्मचारी को यही बात बताई।
“क्या आपने ध्यान से देखा?” उसने पूछा। “आपकी जेबें बहुत सारी हैं। क्या आप कृपया दोबारा जांच कर सकते हैं?”
हम वहां पसीने से तरबतर और गंदे खड़े थे और अपने कपड़ों में उन टिकटों की तलाश कर रहे थे जो कभी वहां थे ही नहीं, जबकि कर्मचारी हमें अविश्वास भरी निगाहों से देख रहा था।
नहीं, ऐसा लग रहा था कि हमने उन्हें सचमुच खो दिया है, मैंने कहा।
“आपका प्रदर्शन कैसा रहा?”
“शिबुया।”
"आपने कितना भुगतान किया था?"
"एक सौ बीस, एक सौ चालीस येन, कुछ ऐसा ही।"
“तुम्हें याद नहीं है?”
मैं दूसरी बातों के बारे में सोच रहा था।
"सच कहूँ तो, आपको शिबुया में नौकरी मिल गई?"
“यह लाइन शिबुया से शुरू होती है, है ना? हम किराए में हेराफेरी कैसे कर सकते हैं?”
“आप सामने वाले प्लेटफार्म से अंडरपास के रास्ते आ सकते थे। गिन्ज़ा लाइन काफी लंबी है। जहाँ तक मुझे पता है, आप त्सुदानुमा से सीधे तोज़ाई लाइन पकड़कर निहोनबाशी में ट्रेन बदल सकते थे।”
"त्सुदानुमा?"
"यह पूरी तरह से काल्पनिक है," स्टेशन अटेंडेंट ने कहा।
“त्सुदानुमा से इसकी कीमत कितनी है? मैं उतना भुगतान कर दूंगा। क्या इससे आपको खुशी होगी?”
क्या आप त्सुदानुमा से आए हैं?
“नहीं,” मैंने कहा। “मैं अपने जीवन में कभी त्सुदानुमा नहीं गया।”
तो फिर किराया क्यों देना?
मैं वही कर रहा हूँ जो आपने कहा था।
मैंने कहा था कि यह पूरी तरह से काल्पनिक स्थिति है।

तब तक अगली ट्रेन आ चुकी थी। बारह यात्री उतरे और एक छोटे से दरवाज़े से बाहर निकल गए। हमने उन्हें देखा। उनमें से किसी का भी टिकट नहीं खोया था। इसके बाद हमने अटेंडेंट से बातचीत फिर से शुरू कर दी।

“ठीक है, मुझे बताओ मुझे भुगतान कहाँ से करना होगा?” मैंने कहा।

"आप जहां से आए थे," उन्होंने जोर देकर कहा।

"शिबुया, जैसा कि मैं तुम्हें समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।"

लेकिन आपको किराया याद नहीं है।

“किराया किसे याद रहता है? क्या आपको याद है कि मैकडॉनल्ड्स में कॉफी कितने की मिलती है?”

“मैं मैकडॉनल्ड्स की कॉफी नहीं पीता,” स्टेशन अटेंडेंट ने कहा। “यह पैसों की बर्बादी है।”

मैंने कहा, "यह तो सिर्फ एक काल्पनिक स्थिति है। लेकिन आप इस तरह की छोटी-छोटी बातों को भूल जाते हैं।"

"ऐसा हो सकता है, लेकिन जो लोग कहते हैं कि उनके टिकट खो गए हैं, वे हमेशा सस्ते किराए का बहाना बनाते हैं। वे सभी इस प्लेटफार्म पर आकर कहते हैं कि वे शिबुया से चढ़े थे।"

मैंने पहले ही कहा था कि मैं आपकी इच्छानुसार किराया चुका दूंगा, है ना? बस मुझे बता दीजिए कि कितना किराया देना है।

मुझे कैसे पता चलेगा?

मैंने एक हज़ार येन का नोट फेंका और हम बाहर निकल गए। अटेंडेंट हम पर चिल्लाया, लेकिन हमने ऐसा दिखाया जैसे हमने सुना ही नहीं। भला जब दुनिया खत्म होने वाली हो तो मेट्रो टिकट को लेकर कौन बहस करेगा? और हमने तो मेट्रो में सफर भी नहीं किया था।

ऊपर ज़मीन पर बारिश की बारीक बूँदें गिर रही थीं। मेरे आखिरी, अनमोल दिन पर। जे. जी. बैलार्ड के उपन्यासों की तरह पूरे महीने बारिश हो सकती थी, लेकिन मेरे जाने के बाद ही बारिश होगी। आज का दिन धूप में लेटने, संगीत सुनने और ठंडी बीयर पीने का था।

लेकिन बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। मैंने सोचा कि सुबह का अखबार खरीदकर मौसम का पूर्वानुमान पढ़ लूँ, लेकिन नज़दीकी अखबारघर मेट्रो स्टेशन के नीचे था। अखबार का विचार छोड़ो। चाहे जो भी दिन हो, मौसम खराब ही रहने वाला था।

सभी लोग छाते लेकर चल रहे थे। सिवाय हमारे। हम एक इमारत के बरामदे के नीचे छिप गए और बूंदा-बांदी वाले चौराहे को देखने लगे, जहाँ अलग-अलग रंगों की गाड़ियाँ दौड़ रही थीं।

"भगवान का शुक्र है, बारिश हो रही है," लड़की ने कहा।

"यह कैसा रहा?"

"देखने में अच्छा।"

"महान।"

"अब क्या करें?"
"पहले हम कुछ गर्म पेय लेंगे, फिर नहाने के लिए घर चलेंगे।"
हम एक सुपरमार्केट में गए जहाँ हर जगह सैंडविच का स्टॉल लगा हुआ था। जब कैशियर ने हमें कीचड़ से सना हुआ देखा तो वह चौंक गई, लेकिन जल्दी ही संभलकर हमारे ऑर्डर लेने लगी।
"ये दो कॉर्न सूप और एक हैम और एग सलाद सैंडविच है, क्या ये सही है, सर?" उसने पुष्टि की।
“ठीक है,” मैंने कहा। “बताओ, आज कौन सा दिन है?”
"रविवार।"
मैंने उस गोल-मटोल लड़की से कहा, "मैंने तुमसे क्या कहा था?"
मैंने बगल वाले स्टूल से स्पोर्ट्स निप्पॉन की एक कॉपी उठाई। टैब्लॉइड से कुछ खास फायदा तो नहीं था, पर चलो ठीक है। अखबार रविवार, 2 अक्टूबर का था। मौसम का पूर्वानुमान नहीं था, लेकिन रेसिंग पेज पर ट्रैक की स्थिति का विस्तार से वर्णन था। बारिश के कारण क्वार्टरहोर्स की रेसिंग मुश्किल हो गई थी। जिंगू स्टेडियम में याकुल्ट, चुनिची से 6-2 से हार गया। और किसी को पता भी नहीं चला कि उनके ठीक नीचे इंकलिंग्स का एक बड़ा झुंड मौजूद था।
उस लड़की ने अखबार के पिछले पन्नों पर छपे लेख पर अपना दावा जताया। एक घटिया लेख जिसमें यह सवाल पूछा गया था कि "क्या वीर्य निगलना त्वचा के लिए अच्छा है?"
"क्या तुम्हें अपना वीर्य निगलवाना पसंद है?" लड़की जानना चाहती थी।
मैंने जवाब दिया, "कोई बात नहीं।"
“ध्यान से सुनिए, यहाँ लिखा है: ‘एक आम पुरुष को तब आनंद आता है जब कोई महिला उसका वीर्य निगलती है। यह महिला द्वारा पुरुष के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। यह एक साथ एक रस्म और एक पुष्टि है।’”
मैंने कहा, "मुझे समझ नहीं आया।"
"क्या कभी किसी ने तुम्हारा निगला है?"
"उह, मुझे याद नहीं आ रहा है।"
“हम्म,” उसने मुंह बनाया और अपने लेख में वापस डूब गई। मैंने सेंट्रल और पैसिफिक लीग के बल्लेबाजों के औसत पढ़े।
हमारा ऑर्डर आ गया। कोई भी चीज़ अच्छी लगती।
हम वहां से निकले और एक टैक्सी पकड़ी। हमें टैक्सी मिलने में बहुत देर लग गई, हम इतने गंदे थे। ड्राइवर एक जवान लड़का था जिसके लंबे बाल थे और बगल वाली सीट पर एक बड़ा सा स्टीरियो प्लेयर रखा था। मैंने पुलिस की तेज आवाज के बीच अपनी मंजिल चिल्लाकर बताई और फिर टैक्सी की बैकरेस्ट पर धंस गई।
“अरे, तुम लोग कहाँ थे?” ड्राइवर ने पूछा।
"बारिश में हमारी जमकर लड़ाई हुई," लड़की ने जवाब दिया।

“वाह, बुरी हालत है,” ड्राइवर ने कहा। “खुद को देखो। तुम लोग पागल लग रहे हो। तुम्हारी गर्दन के ऊपर ज़बरदस्त चोट का निशान है।”
मैंने कहा, "मुझे पता है।"
"मुझे तो यह पसंद है," ड्राइवर ने कहा।
“ऐसा क्यों?” लड़की ने पूछा।
मैं तो सिर्फ रॉकर्स को ही पसंद करता हूँ। साफ-सुथरी हों या गंदी, कोई फर्क नहीं पड़ता। संगीत ही मेरा नशा है। आप लोग 'द पुलिस' बैंड के दीवाने हैं?
“ज़रूर।” मैंने उसे वही कहा जो वह सुनना चाहता था।
“कंपनी में ये सब बजाने नहीं देते। कहते हैं, कायोक्योकु बजाओ। बिलकुल नहीं यार। मतलब, सच में? माची? सेइको? मुझे तो मीठा पॉप पसंद नहीं। लेकिन द पुलिस, उनके गाने ज़बरदस्त हैं। चौबीसों घंटे, बिना रुके। और रेगे भी खूब बज रहा है। आप लोगों को रेगे कैसा लगता है?”
मैंने कहा, "मैं इसमें रुचि ले सकता हूँ।"
पुलिस टेप के बाद, ड्राइवर ने बॉब मार्ले लाइव गाना चला दिया। डैशबोर्ड टेपों से भरा हुआ था।
मैं थका हुआ, ठंडा और नींद से व्याकुल था। मेरी हालत बहुत खराब थी और मैं अंदर से टूट चुका था। मैं उस माहौल को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, लेकिन कम से कम हमें सवारी तो मिल गई। मैं आराम से बैठ गया और ड्राइवर के कंधों को रेगे संगीत की धुन पर थिरकते हुए देखता रहा।
टैक्सी मेरे अपार्टमेंट के सामने आकर रुकी। मैं बाहर निकला और ड्राइवर को टिप के तौर पर एक हज़ार येन अतिरिक्त दिए। मैंने उससे कहा, "अपने लिए एक टेप खरीद लो।"
“नीचे उतर जाओ,” उसने कहा। “तुम कभी भी मेरे साथ सवारी कर सकते हो।”
“ज़रूर,” मैंने कहा।
"दस-पंद्रह सालों में, हर जगह रॉक टैक्सी ही टैक्सी होंगी, है ना? दुनिया बहुत बुरी हालत में होगी।"
“हां,” मैंने कहा, “बहुत बुरा।”
जैसे कि मैं सचमुच इस बात पर यकीन करता था। जिम मॉरिसन के गुज़र जाने को पंद्रह साल हो गए थे, और मुझे आज तक कभी भी 'डोर्स' की कोई टैक्सी नहीं दिखी थी। इस दुनिया में कुछ चीज़ें बदलती हैं और कुछ नहीं। डिपार्टमेंट स्टोर में रेमंड लेफेब्रे ऑर्केस्ट्रा का संगीत बजना बंद नहीं हुआ है, बीयर हॉल में अब भी पोल्का बजता है, शॉपिंग आर्केड में नवंबर के मध्य से ही वेंचर्स के क्रिसमस कैरोल बजने लगते हैं।
हम लिफ्ट से ऊपर गए तो देखा कि अपार्टमेंट का दरवाजा फ्रेम से टिका हुआ था। किसी ने ऐसा करने की ज़हमत क्यों उठाई? मैंने स्टील का दरवाजा ऐसे धक्का देकर खोला जैसे क्रो-मैग्नन मानव अपनी गुफा के मुँह से पत्थर लुढ़का रहा हो। मैंने पहले लड़की को अंदर जाने दिया, फिर दरवाजे को वापस अपनी जगह पर सरका दिया ताकि कोई अंदर न देख सके, और फिर दिखावटी सुरक्षा के लिए दरवाजे की चेन लगा दी।

कमरा एकदम साफ-सुथरा था। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं किसी गलत अपार्टमेंट में आ गया हूँ। फर्नीचर को ठीक से रखा गया था, फर्श से खाना साफ कर दिया गया था, टूटी हुई बोतलें और बर्तन गायब हो गए थे। किताबें और रिकॉर्ड वापस शेल्फ पर रखे थे, कपड़े अलमारी में टंगे हुए थे। रसोई, बाथरूम और बेडरूम एकदम साफ थे।

हालांकि, गहन निरीक्षण से तबाही का मंजर सामने आया। अंदर धंसा हुआ टीवी ट्यूब किसी शॉर्ट-सर्किट हुए टाइम टनल की तरह खुला हुआ था। फ्रिज बंद पड़ा था और खाली था। अलमारी में बस कुछ प्लेटें और गिलास बचे थे। दीवार घड़ी रुक गई थी और कोई भी बिजली का उपकरण काम नहीं कर रहा था। फटे-पुराने कपड़े गायब थे, बस एक छोटे से सूटकेस में भरने लायक ही कपड़े बचे थे। किसी ने लगभग हर वो चीज़ फेंक दी थी जो ठीक नहीं हो सकती थी, जिससे जगह एकदम सादी और खाली-खाली सी लग रही थी। मेरा अपार्टमेंट इतना खुला-खुला पहले कभी नहीं लगा था।

मैं बाथरूम में गया, गैस हीटर जलाया और यह देखकर कि वह ठीक से काम कर रहा है, नहाने के लिए पानी भर दिया। मेरे पास अभी भी ज़रूरत का सारा सामान मौजूद था: साबुन, रेज़र, टूथब्रश, तौलिया, शैम्पू। मेरा बाथरोब भी सही सलामत था।

जब तक टब भर रहा था, मैंने अपार्टमेंट में चारों ओर देखा। लड़की एक कोने में बैठी बाल्ज़ाक की चौआन पढ़ रही थी।

“बताइए, क्या सचमुच फ्रांस में ऊदबिलाव थे?” उसने पूछा।

मुझे लगता है।

“क्या आज भी?”

"कौन जानता है?"

मैं रसोई में बैठ गया और सोचने लगा कि अपार्टमेंट की सफाई किसने की होगी। शायद उन दो सेमिओटेक लोगों ने की हो, या सिस्टम के किसी सदस्य ने। अगर उनमें से किसी एक ने भी की हो, तो भी मैं कृतज्ञता महसूस किए बिना नहीं रह सका।

मैंने मोटी लड़की को पहले नहाने का सुझाव दिया। जब वह टब में थी, मैंने कुछ पुराने कपड़े पहने और अपने बिस्तर पर लेट गया। लगभग साढ़े ग्यारह बज रहे थे। मुझे आगे की योजना बनानी थी। अपने जीवन के आखिरी चौबीस घंटों के लिए।

बाहर हल्की फुहार पड़ रही थी। अगर छत पर बूँदें न होतीं, तो मुझे पता ही न चलता। मुझे नींद आने लगी थी, पर सोने का समय नहीं था। मैं एक मिनट भी बर्बाद नहीं करना चाहता था।

खैर, मैं इस अपार्टमेंट में नहीं रहना चाहता था। इससे मुझे क्या फायदा होता?

जिस व्यक्ति के पास जीने के लिए केवल चौबीस घंटे बचे हों, उसके पास करने के लिए अनगिनत काम होने चाहिए, लेकिन मुझे एक भी काम सूझ नहीं रहा था। मुझे सुपरमार्केट की दीवार पर लगा फ्रैंकफर्ट यात्रा का पोस्टर याद आया। फ्रैंकफर्ट में अपनी जान देना बुरा नहीं होगा, हालांकि चौबीस घंटे में वहाँ पहुँचना शायद

नामुमकिन था। अगर पहुँच भी जाता, तो मुझे दस घंटे हवाई जहाज की सीट पर बैठकर स्वादिष्ट इन-फ्लाइट स्नैक्स खाने पड़ते। वैसे भी, पोस्टर असलियत से ज़्यादा अच्छे दिखते हैं: हकीकत कभी उम्मीदों पर खरी नहीं उतरती। मैं निराश होकर अपनी जान नहीं देना चाहता था।

तो अब एक ही विकल्प बचा था: दो लोगों के लिए बढ़िया भोजन। इसके अलावा मुझे और कुछ खास करने की इच्छा नहीं थी।

मैंने पुस्तकालय में फोन किया।

“हैलो,” मेरी संदर्भ पुस्तकालयाध्यक्ष ने उत्तर दिया।

मैंने कहा, "यूनिकॉर्न की किताबों के लिए धन्यवाद।"

“शानदार भोजन के लिए धन्यवाद,” उसने कहा।

"क्या आप आज रात फिर से मेरे साथ डिनर करना चाहेंगे?"

“रात का खाना?” उसने गाते हुए मुझसे पूछा। “आज रात मेरा स्टडी ग्रुप है।”

"अध्ययन दल?"

“मेरा जल प्रदूषण अध्ययन समूह। आप जानते हैं, डिटर्जेंट नदियों और नालों में मिल रहे हैं, जिससे मछलियाँ मर रही हैं। हर किसी के पास एक शोध विषय है, और आज रात हम अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे।”

"मुझे यकीन है कि यह बहुत ही नागरिक भावना वाला काम है।"

“हाँ, बिल्कुल। क्या हम कल रात नहीं मिल सकते? लाइब्रेरी सोमवार को बंद रहती है, इसलिए हमें साथ में ज़्यादा समय मिल जाएगा।”

“मैं कल दोपहर से यहाँ नहीं रहूँगा। मैं फोन पर ठीक से समझा नहीं सकता, लेकिन मैं बहुत दूर जा रहा हूँ।”

“बहुत दूर? आपका मतलब यात्रा से है?”

“कुछ हद तक,” मैंने कहा।

“बस एक पल रुकिए?” उन्होंने एक संदर्भ प्रश्न का उत्तर देने के लिए बात रोक दी। रिसीवर से रविवार की लाइब्रेरी की आवाज़ें आ रही थीं। एक छोटी बच्ची चिल्ला रही थी और एक पिता उसे चुप कराने की कोशिश कर रहा था। लोग किताबें उधार ले रहे थे, कंप्यूटर की बटन दबने की आवाज़ आ रही थी।

“फार्महाउसों का जीर्णोद्धार और/या पुनर्निर्माण,” वह अपने प्रश्नकर्ता को समझाती हुई प्रतीत हो रही थी, “शेल्फ F-5, ये तीन खंड...” मैं प्रश्नकर्ता की प्रतिक्रिया की आवाज मुश्किल से ही सुन पाया।

“आपको इंतज़ार कराने के लिए माफ़ कीजिए,” उसने फ़ोन उठाते हुए कहा। “ठीक है, आप जीत गए। मैं स्टडी ग्रुप में नहीं जाऊंगी। लेकिन सब लोग इसके बारे में शिकायत करेंगे।”

"उन्हें मेरी ओर से माफी मांग देना।"

“कोई बात नहीं। भगवान ही जानता है कि यहाँ आसपास कोई नदी नहीं है जिसमें मछलियाँ ज़िंदा हों। मेरी रिपोर्ट में एक हफ़्ते की देरी से किसी भी प्रजाति को कोई खतरा नहीं होगा। क्या मैं आपसे आपके घर पर मिलूँ?”

“नहीं, मेरा घर इस्तेमाल के लायक नहीं है। फ्रिज खराब है, बर्तन इस्तेमाल करने लायक नहीं हैं। मैं यहाँ खाना नहीं बना सकती।”
“मुझे पता है,” उसने कहा।
"आपको पता है?"
लेकिन क्या अब यह पहले से ज्यादा साफ नहीं है?
"क्या तुमने ही इस जगह को ठीक किया था?"
“हाँ, ठीक है। आशा है आपको बुरा नहीं लगेगा। आज सुबह मैं एक और किताब लेकर आया था और देखा कि दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है। कमरा बहुत गंदा था, इसलिए मैंने उसे साफ किया। इस वजह से मुझे काम पर जाने में थोड़ी देर हो गई, लेकिन खाने के लिए आपको कुछ देना तो बनता था। उम्मीद है मैंने कुछ ज्यादा ही ढिठाई नहीं दिखाई।”
“नहीं, बिलकुल नहीं,” मैंने कहा। “मैं बहुत आभारी हूँ।”
अच्छा, तो फिर आप शाम छह बजकर दस मिनट पर यहाँ क्यों नहीं आ जाते? रविवार को पुस्तकालय शाम छह बजे बंद हो जाता है।
“ठीक है,” मैंने कहा। “और फिर से धन्यवाद।”
"आपका बहुत-बहुत स्वागत है," उसने कहा और फिर फोन काट दिया।
मैं रात के खाने के लिए कपड़े ढूंढ रही थी, तभी एक गोल-मटोल लड़की बाथरूम से बाहर निकली। मैंने उसे एक तौलिया और अपना बाथरोब पकड़ा दिया। वह एक पल के लिए मेरे सामने नग्न खड़ी रही, गीले बाल उसके माथे और गालों पर चिपके हुए थे, और उसके कानों के ऊपरी हिस्से बालों के बीच से झांक रहे थे। उसके कानों की बालियों में सोने की बालियां लटक रही थीं।
मैंने पूछा, "क्या तुम हमेशा कान की बालियां पहने हुए ही नहाती हो?"
“बिल्कुल, क्या मैंने ऐसा नहीं कहा था?”
लड़की ने अपने अंडरवियर, स्कर्ट और ब्लाउज बाथरूम में सूखने के लिए टांग रखे थे। गुलाबी ब्रा, गुलाबी पैंटी, गुलाबी पैंटी होज़, गुलाबी स्कर्ट और हल्के गुलाबी रंग का ब्लाउज। मेरी ज़िंदगी का आखिरी दिन था, और मैं यहाँ बाथटब में बैठी थी, देखने के लिए और कुछ नहीं था। मुझे बाथरूम में अंडरवियर और स्टॉकिंग्स लटके रहना कभी पसंद नहीं आया। मुझसे मत पूछो क्यों, बस पसंद नहीं आता।
मैंने जल्दी से शैम्पू किया और पूरे शरीर को स्क्रब किया, दांत साफ किए और शेव की। फिर मैंने अंडरपैंट और पैंट पहन ली। इतनी भागदौड़ के बावजूद, मेरे पेट को वाकई आराम महसूस हो रहा था; मुझे घाव का तब तक एहसास ही नहीं हुआ जब तक मैं टब में नहीं उतरा।
लड़की बिस्तर पर लेटी हुई थी, हेयर ड्रायर से अपने बाल सुखा रही थी और बाल्ज़ाक की रचनाएँ पढ़ रही थी। बाहर बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

बाथरूम में लटकते हुए अंडरवियर, बिस्तर पर हेयर ड्रायर और किताब लिए लेटी एक लड़की, इन सबने वैवाहिक जीवन की यादें ताजा कर दीं।

मैं उसके बगल में बैठ गई, अपना सिर बेडस्टैंड पर टिकाया और आँखें बंद कर लीं। रंग धुंधले पड़ते गए। मुझे कई दिनों से चैन की नींद नहीं आई थी। हर बार जब मैं सोने ही वाली होती, तो मेरी नींद अचानक टूट जाती। नींद का आकर्षण मेरी भारी आँखों के सामने तैर रहा था, एक अनवरत लहर मुझे अँधेरे की गहराइयों की ओर खींच रही थी। ऐसा लग रहा था मानो इंकलिंग्स मुझे नीचे खींचने के लिए ऊपर आ रहे हों।

मैंने आँखें खोलीं और अपने हाथों से अपना चेहरा रगड़ा। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी और का चेहरा रगड़ रही हूँ। मेरी गर्दन पर जहाँ जोंक चिपकी थी, वहाँ अभी भी जलन हो रही थी।

मैंने पूछा, "तुम अपने दादाजी को लेने कब वापस जा रहे हो?"

“मेरे सोने और मेरे कपड़े सूखने के बाद,” उसने कहा। “वहाँ पानी का स्तर शाम तक कम हो जाएगा। मैं उसी रास्ते से वापस जाऊंगी जिससे हम आए थे।”

इस मौसम में तो कल सुबह तक आपके कपड़े सूखेंगे।

“तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?”

“क्या आपने कभी कपड़े सुखाने वाली मशीन के बारे में सुना है? यहाँ पास में ही एक लॉन्ड्री है।”

लेकिन मेरे पास बाहर पहनने के लिए कोई और कपड़े नहीं हैं।

मैंने बहुत दिमाग लगाया, लेकिन कोई सूझ ही नहीं पाया। इसलिए मुझे उसके कपड़े लॉन्ड्री में ले जाने पड़े। मैं बाथरूम में गया और उसके गीले कपड़े लुफ्थांसा बैग में डाल दिए।

इसलिए मेरे आखिरी कीमती घंटों का कुछ हिस्सा एक लॉन्ड्रोमैट में फोल्डिंग कुर्सी पर बैठकर बीता।

32

मृत्यु की पीड़ा में छाया

मैंने द्वारगृह का दरवाजा खोला और देखा कि द्वारपाल पिछले दरवाजे पर लकड़ियां काट रहा था।

“भारी बर्फबारी होने वाली है। हवा में इसका एहसास हो रहा है,” कुल्हाड़ी हाथ में लिए द्वारपाल कहता है। “आज सुबह ही चार जानवर मर गए। कल तक और भी कई मरेंगे। इस सर्दी में ठंड बहुत भयानक है।”

मैं अपने दस्ताने उतारकर चूल्हे पर उंगलियां सेंकने लगता हूँ। चौकीदार लकड़ियों का गट्ठा बांधकर उसे लकड़ियों के ढेर पर फेंक देता है, फिर दरवाजा बंद करके अपनी कुल्हाड़ी दीवार के सहारे टिका देता है। आखिर में वह भी पास आकर अपनी उंगलियां सेंकने लगता है।

अब से मुझे अकेले ही इन दरिंदों को जलाना पड़ेगा। मदद मिलने से मेरा काम आसान हो गया था, लेकिन हर चीज़ का अंत तो होना ही है। खैर, शुरू से तो यही मेरा काम था।

क्या मेरी परछाई भी इतनी बीमार है?

“मामला ठीक नहीं है,” द्वारपाल ने अपने कंधों पर सिर घुमाते हुए उत्तर दिया। “बिल्कुल भी ठीक नहीं है। मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि इसकी देखभाल कर सकूँ, लेकिन एक इंसान की भी अपनी सीमाएँ होती हैं।”

"क्या मैं उससे मिल सकता हूँ?"

"ज़रूर, मैं आपको आधा घंटा देता हूँ। उसके बाद मुझे मरे हुए जानवरों को जलाने जाना है।"

द्वारपाल ने हुक से अपनी चाबियों का गुच्छा उतारा और छाया क्षेत्र के लोहे के द्वार का ताला खोला। वह मेरे आगे बाड़े के पार तेज़ी से चला गया और मुझे झोपड़ी में ले गया। अंदर इतनी ठंड थी जैसे कोई बर्फ का चूल्हा हो।

“मेरी गलती नहीं है,” द्वारपाल कहता है। “तुम्हारी परछाई को यहाँ डालने का विचार मेरा नहीं था। मुझे इसमें कोई मज़ा नहीं आता। हमारे यहाँ नियम हैं, और परछाइयों को यहीं रखना पड़ता है। मैं बस नियमों का पालन करता हूँ। तुम्हारी परछाई की हालत तो कुछ परछाइयों से बेहतर है। बुरे दिन हैं, यहाँ दो-तीन परछाइयाँ एक साथ ठूंस दी गई हैं।”

अब आपत्ति का कोई मतलब नहीं है। मैं सिर हिलाकर चुप हो जाता हूँ। मुझे कभी भी ऐसी जगह पर अपनी परछाई भी नहीं छोड़नी चाहिए थी।

“तुम्हारी परछाई नीचे है,” वह कहता है। “नीचे थोड़ी गर्मी है, अगर तुम गंध बर्दाश्त कर सको तो।”

द्वारपाल एक कोने में जाकर एक गीले लकड़ी के गुप्त दरवाजे को उठाता है, जिसके नीचे सीढ़ी नहीं बल्कि एक सीढ़ी दिखाई देती है। द्वारपाल सीढ़ी के कुछ पायदान नीचे उतरता है, फिर मुझे अपने पीछे आने का इशारा करता है। मैं अपने कोट से बर्फ झाड़ता हूँ और उसके पीछे चल पड़ता हूँ।

नीचे, मल-मूत्र की बासी बदबू इंद्रियों को झकझोर देती है। खिड़की न होने के कारण हवा बाहर नहीं निकल पाती। यह तहखाना एक छोटे से संदूकघर जितना छोटा है। एक पलंग फर्श के एक तिहाई हिस्से में फैला है। पलंग के नीचे मिट्टी के बर्तनों का एक छोटा सा बर्तन रखा है। एक पुरानी, जर्जर मेज पर मोमबत्ती टिमटिमा रही है, जो रोशनी और गर्मी का एकमात्र स्रोत है। फर्श मिट्टी का है और कमरे की नमी ठंडक पहुंचा रही है। मेरी परछाई पलंग पर बेसुध पड़ी है, कंबल उसके कानों तक लिपटा है। वह मुझे निर्जीव आँखों से घूर रही है। जैसा कि बूढ़े कर्नल ने कहा था, मेरी परछाई के पास अब ज्यादा समय नहीं बचा है।

दुर्गंध से बेहाल होकर द्वारपाल बोला, "मुझे ताजी हवा चाहिए। तुम दोनों जितनी चाहो बातें कर लो। इस साये में अब तुम दोनों से चिपके रहने की ताकत नहीं बची है।"

द्वारपाल चला जाता है। मेरी परछाई एक पल के लिए हिचकिचाती है, कमरे में चारों ओर सावधानीपूर्वक देखती है, फिर मुझे अपने पलंग के पास आने का इशारा करती है।

"ऊपर जाओ और देख लो कि द्वारपाल सुन तो नहीं रहा है," परछाई फुसफुसाती है।

मैं चुपके से सीढ़ी पर चढ़ता हूँ, गुप्त दरवाजे को थोड़ा खोलता हूँ, और देखता हूँ कि वहाँ कोई नहीं है।

“वह चला गया,” मैंने कहा।

“हमें बहुत कुछ बात करनी है,” मेरी परछाई कहती है। “मैं उतनी कमज़ोर नहीं हूँ जितना दिखती हूँ। ये सब द्वारपाल को बेवकूफ बनाने का नाटक है। मैं कमज़ोर हूँ, ये सच है, लेकिन उल्टी करना और बिस्तर पर पड़े रहना दिखावा है। मैं अभी भी उठकर चल सकती हूँ।”

"नौ-दो ग्यारह होना?"

“और क्या? अगर मुझे यहाँ से निकलना ही नहीं होता, तो मैं इतनी सारी मुसीबतें क्यों उठाता? इस चक्कर में मुझे तीन दिन का समय मिल गया है। लेकिन तीन दिन शायद मेरी सीमा है। उसके बाद मैं खड़ा नहीं रह पाऊँगा। इस बदबूदार तहखाने की हवा मुझे मार रही है। और ठंड तो हड्डियों तक चुभ रही है। बाहर मौसम कैसा है?”

“बहुत ठंड है और खूब बर्फ गिर रही है,” मैंने अपने कोट की जेबों में हाथ डाले कहा। “रात में तो हालत और भी खराब हो जाती है। तापमान बहुत गिर जाता है।”

“जितनी ज़्यादा बर्फ़बारी होती है, उतने ही ज़्यादा जानवर मरते हैं,” शैडो कहता है। “जितने ज़्यादा जानवर मरे, गेटकीपर का काम उतना ही ज़्यादा। जब वो व्यस्त होगा, जब वो सेब के बाग़ में लाशें जला रहा होगा, तब हम चुपके से निकल जाएँगे। तुम उसकी चाबियाँ उठाओगे, बाड़ा खोलोगे, और हम दोनों भाग जाएँगे।”

"द्वार के पास?"

“नहीं, गेट का कोई फायदा नहीं। वो पल भर में हम पर हमला कर देगा। दीवार का भी कोई फायदा नहीं। दीवार पार करने के लिए सिर्फ पक्षी ही जा सकते हैं।”
तो हम कैसे बच निकलेंगे?
“इसे मुझ पर छोड़ दो। मैंने जो जानकारी इकट्ठा की है, उससे सब कुछ समझ लिया है। मैंने तुम्हारा नक्शा इतना ध्यान से देखा कि उसमें छेद हो गए, साथ ही मैंने द्वारपाल से भी बहुत कुछ सीखा। बैल को लगा कि अब मैं उसके लिए कोई समस्या नहीं हूँ, इसलिए वह कस्बे के बारे में बात करने को तैयार हो गया। द्वारपाल सही कहता है कि मुझमें अब तुम्हारे साथ रहने की ताकत नहीं है। कम से कम अभी तो नहीं। लेकिन एक बार जब हम बाहर निकल जाएँगे और मैं ठीक हो जाऊँगा, तो हम फिर से साथ हो सकते हैं। मुझे यहाँ इस तरह मरना नहीं पड़ेगा; तुम अपनी याददाश्त वापस पा लोगे और पहले जैसे हो जाओगे।”
मैं मोमबत्ती की लौ को देखता रहता हूं और कुछ नहीं कहता।
“क्या बात है? बताओ तो सही।”
"मेरा यह पूर्व स्वरूप आखिर था क्या?"
“ये क्या हो रहा है? कहीं तुम्हें शक तो नहीं हो रहा,” मेरी परछाई ने ताना मारा।
“हाँ, मुझे संदेह है,” मैं कहता हूँ। “सबसे पहले तो, मुझे अपना पुराना स्वरूप याद ही नहीं है। मैं कैसे यकीन कर सकता हूँ कि वह स्वरूप या वह दुनिया वापस लौटने लायक है?”
वह साया कुछ कहने ही वाला था कि मैंने उसे बीच में ही रोकने के लिए हाथ उठा दिया। “बस रुकिए। मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। बात सिर्फ इतनी नहीं है कि मैं भूल गया हूँ कि चीजें पहले कैसी थीं। मुझे इस कस्बे से लगाव होने लगा है। मुझे जानवरों को देखना अच्छा लगता है। मुझे कर्नल और पुस्तकालय वाली लड़की से लगाव हो गया है। यहाँ कोई किसी को चोट नहीं पहुँचाता, कोई लड़ाई नहीं करता। जीवन शांत है, लेकिन अपने तरीके से काफी भरा-पूरा है। सब बराबर हैं। कोई किसी की बुराई नहीं करता, कोई चोरी नहीं करता। वे काम करते हैं, लेकिन अपने काम का आनंद लेते हैं। यह काम सिर्फ काम के लिए है, जबरन मजदूरी नहीं। कोई किसी से ईर्ष्या नहीं करता। कोई शिकायत नहीं, कोई चिंता नहीं।”
“तुमने न तो धन, न संपत्ति, न ही पदवी भूली है। और न ही कोई आंतरिक संघर्ष,” परछाई कहती है। “इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि न बुढ़ापा है, न मृत्यु है, न ही मृत्यु का भय है।”
"तो मुझे बताइए—इस शहर को छोड़ने का मेरे पास क्या कारण हो सकता है?"
“तुम्हारी सारी बातें समझ में आती हैं,” वह अपनी बात मानते हुए, कंबल के नीचे से अपना धुंधला हाथ बढ़ाकर अपने सूखे होंठों को छूता है, “देखने में तो ऐसा ही लगता है। जिस दुनिया का तुम वर्णन कर रहे हो, वह सचमुच एक आदर्श दुनिया होगी। मैं इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं निकाल सकता। तुम्हें इससे प्रभावित होने का पूरा अधिकार है, और अगर ऐसा है, तो मैं तुम्हारा फैसला स्वीकार करूंगा और मर जाऊंगा। फिर भी, तुम कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातों को नज़रअंदाज़ कर रहे हो।”
परछाई को खांसी आने लगती है। मैं उसके खांसने का इंतजार करता हूं।

“अभी आपने कस्बे की पूर्णता की बात की। बेशक, यहाँ के लोग—द्वारपाल को छोड़कर—किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। कोई एक-दूसरे को चोट नहीं पहुँचाता, किसी को किसी चीज़ की कमी नहीं है। सभी संतुष्ट और शांत हैं। ऐसा क्यों है? क्योंकि उनके पास दिमाग नहीं है।”

“यह बात तो मुझे बहुत अच्छी तरह से पता है,” मैंने कहा।

“मन को त्यागकर ही नगरवासी समय को खो देते हैं; उनकी चेतना अनंत काल के एक निर्मल पृष्ठ के समान हो जाती है। जैसा कि मैंने कहा, कोई बूढ़ा नहीं होता या मरता नहीं। बस इतना ही आवश्यक है कि आप अपने भीतर के उस अंधकार को हटा दें जो आपके आत्म का आधार है और उसे मरते हुए देखें। एक बार जब आपका अंधकार मर जाता है, तो दुनिया में आपकी कोई समस्या नहीं रहती। आपको बस प्रतिदिन उठने वाले मन के आवेशों को हटाना होता है।”

“थोड़ा-थोड़ा करके निकालना?”

मैं इस पर बाद में बात करूँगा। पहले, मन के बारे में। आप कहते हैं कि शहर में कोई लड़ाई-झगड़ा, नफ़रत या वासना नहीं है। यह एक खूबसूरत सपना है, और मैं आपकी खुशी चाहता हूँ। लेकिन लड़ाई-झगड़े, नफ़रत या वासना की अनुपस्थिति का मतलब यह भी है कि विपरीत चीजें भी मौजूद नहीं हैं। न आनंद, न मेलजोल, न प्रेम। खुशी केवल वहीं उत्पन्न होती है जहाँ मोहभंग, अवसाद और दुःख होता है; हानि की निराशा के बिना कोई आशा नहीं होती।

फिर, ज़ाहिर है, प्यार भी है। और तुम्हारी इस लाइब्रेरी वाली लड़की के साथ तो इससे फर्क पड़ता ही है। प्यार एक भावना है, पर उसे समझ ही नहीं है। बिना दिमाग वाले लोग तो प्रेत समान होते हैं। ऐसे इंसान से प्यार करने का क्या मतलब? क्या तुम अमर जीवन चाहते हो? क्या तुम भी प्रेत बनना चाहते हो? अगर तुमने मुझे मरने दिया, तो तुम भी कस्बे के लोगों में से एक बन जाओगे। तुम हमेशा के लिए यहीं फँस जाओगे।

तहखाने में घुटन भरी खामोशी छा जाती है। परछाई फिर खांसती है।

“मैं उसे यहाँ नहीं छोड़ सकता,” मैंने हिम्मत जुटाकर कहा। “वह जैसी भी हो, मैं उससे प्यार करता हूँ और उसे चाहता हूँ। मैं अपने मन से झूठ नहीं बोल सकता। अगर मैं अभी भाग गया, तो मुझे हमेशा पछतावा रहेगा।”

“ये तो कमाल है,” मेरी परछाई बिस्तर पर उठकर दीवार से टेक लगाते हुए बोली। “तुम मेरे बहुत पुराने दोस्त हो। मैं जानती हूँ कि तुम कितने जिद्दी हो सकते हो। तुम्हें आखिरी समय में ही मुद्दा बनाना था, है ना? तुम्हें क्या चाहिए? हम तीनों, तुम, मैं और वो लड़की, यहाँ से भाग नहीं सकते। परछाई के बिना कोई भी यहाँ से बाहर नहीं रह सकता।”

“मुझे भी यह पता है,” मैंने कहा। “मुझे आश्चर्य है, तुम अकेले क्यों नहीं भाग जाते? मैं तुम्हारी मदद करूँगा।”

“अब भी समझ नहीं आया, है ना?” मेरी परछाई ने थके हुए अंदाज़ में सिर टिकाते हुए कहा। “अगर मैं भाग जाऊं और तुम्हें पीछे छोड़ दूं, तो तुम्हारा जीवन यहाँ घोर दुखमय होगा। द्वारपाल ने मुझे यही बताया है। परछाइयाँ, सारी परछाइयाँ, यहाँ मर जाती हैं। निर्वासित परछाइयाँ सब वापस मरने आती हैं। जो परछाइयाँ

यहाँ नहीं मरतीं, वे केवल अधूरी मृत्यु ही छोड़ जाती हैं। तुम अपने बचे हुए मन के आलिंगन में अनंत काल तक रहोगे। जंगल में। जिन लोगों की परछाइयाँ मरी हुई होती हैं, उन्हें शहर से निकाल दिया जाता है और वे हमेशा के लिए जंगल में भटकते रहते हैं, अपने विचारों के वश में। क्या तुम जंगल से परिचित हो?"
वह जानता है कि मैं हूँ।
"और न ही तुम उसे जंगल में ले जा पाओगे," मेरी परछाई आगे कहती है। "क्योंकि वह परिपूर्ण है, उसमें कोई बुद्धि नहीं है, कोई आंतरिक संघर्ष नहीं है। परिपूर्ण आधे-अधूरे लोग शहर में रहते हैं, जंगल में नहीं। तुम अकेले रह जाओगे, मैं तुमसे वादा करता हूँ।"
लेकिन फिर लोगों का ध्यान किस ओर जाता है?
"तुम ही हो स्वप्न-पाठक, है ना?" मेरी परछाई ने पलटकर जवाब दिया। "मुझे समझ नहीं आता कि तुम अब तक यह बात कैसे नहीं समझ पाए!"
मुझे खेद है। मैंने ऐसा नहीं किया है...
ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ। जानवरों द्वारा लोगों के दिमाग को दीवार के बाहर ले जाया जाता है। मेरा मतलब यही था, दिमाग को सोख लेना। जानवर इधर-उधर घूमते हैं, दिमाग के अंशों को सोख लेते हैं, फिर उन्हें बाहरी दुनिया में ले जाते हैं। जब सर्दी आती है, तो वे अपने भीतर कुछ अंश लिए मर जाते हैं। उन्हें ठंड या भोजन की कमी नहीं मारती; उन्हें शहर द्वारा उन पर थोपा गया स्वार्थ का बोझ मारता है। वसंत में, नए बच्चे पैदा होते हैं—ठीक उतनी ही संख्या में जितने जानवर मरे थे—और यह सब फिर से होता है। यही तुम्हारी पूर्णता की कीमत है। एक ऐसी पूर्णता जो सब कुछ कमजोर और शक्तिहीनों पर थोप देती है।
मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं अपने जूतों की तरफ देखता हूँ।
"जब जानवर मर जाते हैं, तो द्वारपाल उनके सिर काट देता है," मेरी परछाई बिना रुके बोलती रहती है। "तब तक, उनकी खोपड़ियों पर स्वयं की छाप अमिट रूप से अंकित हो जाती है। इन खोपड़ियों को खुरचकर पूरे एक साल तक ज़मीन में गाड़ दिया जाता है ताकि उनकी ऊर्जा सोख ली जाए, फिर उन्हें पुस्तकालय के संग्रह में ले जाया जाता है, जहाँ वे तब तक पड़ी रहती हैं जब तक स्वप्न-पाठक के हाथों से मन की अंतिम झलक हवा में न फैल जाए। यही 'पुराने सपने' होते हैं। स्वप्न-पाठक शहर में नए आने वालों का काम है—वे लोग जिनकी परछाइयाँ अभी तक मरी नहीं हैं। स्वप्न-पाठक स्वयं की हर चिंगारी को हवा में पढ़ता है, जहाँ वह फैलती और विलीन हो जाती है। तुम एक बिजली के खंभे की तरह हो; तुम्हारा काम है ज़मीन से जोड़ना। समझे?"
मुझे लगता है कि मैं ऐसा करता हूँ।
"जब स्वप्न-पाठक की परछाई मर जाती है, तो वह स्वप्न-पाठक नहीं रह जाता और नगर का एक हो जाता है। इसी तरह नगर अपनी पूर्णता बनाए रख पाता है। सभी अपूर्णताएँ अपूर्ण पर थोपी जाती हैं, ताकि 'पूर्ण' संतुष्ट और बेफिक्र होकर जी सके। क्या यही सही तरीका है? क्या आपने कभी जानवरों, परछाइयों और वनवासियों के नज़रिए से चीजों को देखने की कोशिश की है?"

मैं मोमबत्ती की लौ को इतनी देर से घूर रहा हूँ कि मेरा सिर दुखने लगा है। मैंने अपने काले चश्मे उतारे और अपनी नम आँखों को मल लिया।

“मैं कल तीन बजे यहाँ आऊँगा,” मैंने वादा किया। “सब कुछ वैसा ही है जैसा आपने कहा है। यह जगह मेरे लिए नहीं है।”

33

बरसात के दिनों में कपड़े धोना, कार किराए पर लेना (बॉब डायलन)

बरसात वाले रविवार को लॉन्ड्री में चारों ड्रायर व्यस्त होने ही थे। इसलिए दरवाज़े के हैंडल पर चार अलग-अलग रंगों के प्लास्टिक के शॉपिंग बैग लटके देखकर मुझे कोई हैरानी नहीं हुई। अंदर तीन महिलाएं थीं: एक तीस साल की गृहिणी; और बाकी दो पास के गर्ल्स हॉस्टल की छात्राएं। गृहिणी एक फोल्डिंग कुर्सी पर बैठी अपने कपड़ों को गोल-गोल घूमते देख रही थी। मानो टीवी देख रही हो। छात्राएं जेजे की एक पत्रिका पढ़ रही थीं। मेरे अंदर आते ही तीनों ने मेरी तरफ देखा, लेकिन जल्दी ही उन्हें अपने कपड़े धोने और पत्रिका में ज़्यादा दिलचस्पी हो गई।

मैं अपनी बारी का इंतज़ार करने के लिए बैठ गया, लुफ्थांसा का बैग मेरे घुटने पर था। ऐसा लग रहा था कि अब मेरी बारी है। बढ़िया। कोई आदमी किसी और के कपड़े बदलते हुए कब तक देख सकता है? खासकर अपने आखिरी दिन।

मैं कुर्सी पर आराम से लेट गया और खाली जगह को निहारने लगा। लॉन्ड्री में डिटर्जेंट और कपड़े सुखाने की वही खास गंध आ रही थी। मेरी उम्मीदों के विपरीत, कोई भी ड्रायर चालू नहीं हुआ। लॉन्ड्री के कुछ अलिखित नियम होते हैं और उनमें से एक है, "जिस ड्रायर पर नज़र रखी जाती है, वह कभी बंद नहीं होता।" जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से कपड़े एकदम सूखे लग रहे थे, लेकिन ड्रायर के ड्रम रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

मुझे आंखें बंद करके सोने का बहुत मन कर रहा था, लेकिन मैं अपनी बारी चूकना नहीं चाहती थी। काश मैं पढ़ने के लिए कुछ लाई होती। इससे मेरी नींद उड़ जाती और समय जल्दी बीत जाता। लेकिन फिर, क्या मैं सच में समय जल्दी गुजारना चाहती थी? बेहतर होता कि मैं समय को धीरे-धीरे गुजारती—पर एक लॉन्ड्री में? समय के बारे में सोचना कष्टदायक था। समय एक बहुत ही अवधारणात्मक विषय है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं कि हम इसे अपने अर्थों में ढालना छोड़ दें। बात इतनी जटिल है कि हम यह भी नहीं बता सकते कि हमारे अनुभव समय से संबंधित हैं या भौतिक जगत से।

लेकिन लॉन्ड्री से निकलने के बाद क्या करें? सबसे पहले, कुछ कपड़े खरीदें। अच्छे कपड़े। कपड़ों में बदलाव करवाने का समय नहीं है, इसलिए ट्वीड सूट का ख्याल छोड़ दें। चिनो पैंट, ब्लेज़र, शर्ट और टाई से काम चला लें। साथ में एक हल्का कोट भी पहन लें। किसी भी रेस्टोरेंट के लिए बिल्कुल सही पहनावा। इसमें डेढ़ घंटा लग जाएगा। यानी तीन बज चुके होंगे। उसे लेने जाने तक मेरे पास तीन घंटे का समय होगा।

हम्म। तीन घंटे क्या करें? नींद और थकान से दिमाग सुन्न हो गया है, दिमाग बिल्कुल काम नहीं कर रहा।

दाईं ओर की ड्रायर मशीन रुक गई। गृहिणियों और कॉलेज की छात्राओं ने मशीन की ओर देखा, लेकिन किसी ने कोई हरकत नहीं की। ड्रायर मशीन अब मेरी थी। लॉन्ड्री के अलिखित नियमों का पालन करते हुए,

मैंने गर्म कपड़ों का ढेर निकाला और उन्हें हैंडल पर लटके बैग में भर दिया। इसके बाद मैंने गीले कपड़ों से भरा अपना लुफ्थांसा बैग मशीन में डाला, मशीन में कुछ सिक्के डाले और अपनी कुर्सी पर लौट आया। घड़ी में बारह बजकर पचास मिनट हो रहे थे।

गृहिणी और कॉलेज की लड़कियाँ मुझे घूरने लगीं। फिर उन्होंने ड्रायर में पड़े कपड़ों को देखा। फिर उन्होंने मुझे दोबारा देखा। तो मैंने भी ड्रायर में पड़े कपड़ों को देखना शुरू कर दिया। तभी मेरी नज़र ड्रायर में पड़े मेरे छोटे-छोटे कपड़ों पर पड़ी, जो सबके सामने नाच रहे थे—सारे लड़कियों के कपड़े, सारे गुलाबी रंग के। बेहतर होगा कि मैं यहाँ से निकल जाऊँ, बीस मिनट के लिए कुछ और काम ढूँढ लूँ।

सुबह की हल्की बारिश रुक नहीं रही थी, मानो दुनिया को एक छुपी सी चेतावनी दे रही हो। मैंने छाता खोला और चलने लगा। शांत रिहायशी इलाके से होते हुए दुकानों से सजी एक गली में पहुँचा। नाई की दुकान, बेकरी, सर्फ़ शॉप—सेटा-गाया में सर्फ़ शॉप?—तंबाकू की दुकान, पेस्ट्री की दुकान, वीडियो शॉप, लॉन्ड्री। जिसके बाहर एक बोर्ड लगा था, "बारिश के दिनों में सभी कपड़ों पर 10% की छूट।" अजीब तर्क है। दुकान के अंदर, गंजे, गंभीर दिखने वाले मालिक एक कमीज़ प्रेस कर रहे थे। छत से बिजली के तार लटक रहे थे, और प्रेस और इस्त्री तक बेलों का घना जाल फैला हुआ था। सचमुच एक मोहल्ले की लॉन्ड्री, जहाँ सारा काम वहीं होता था। जानकर अच्छा लगा। मुझे यकीन है कि वे कमीज़ के नीचे नंबर टैग नहीं लगाते होंगे—जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। मैं इसी वजह से अपनी कमीज़ें लॉन्ड्री में कभी नहीं भेजता।

सफाई की दुकान के सामने वाले बरामदे में कुछ गमले रखे थे। मुझे पता था कि मैं उन्हें जानता हूँ, लेकिन मैं उनमें से किसी एक को भी पहचान नहीं पा रहा था। छत से बारिश की बूँदें गमलों की काली मिट्टी पर गिर रही थीं, जिस पर एक अकेला घोंघा मटकते हुए धीरे-धीरे लुढ़क रहा था। मुझे बेकार सा महसूस हो रहा था। मैं इस दुनिया में पैंतीस साल जी चुका था और एक भी सजावटी पौधे का नाम नहीं बता पा रहा था। स्थानीय सफाई की दुकान से मैं बहुत कुछ सीख सकता था।

मैं तंबाकू की दुकान पर वापस गया और लार्क एक्स्ट्रा लॉन्ग सिगरेट का एक पैकेट खरीदा। मैंने पांच साल पहले सिगरेट पीना छोड़ दिया था, लेकिन अपनी जिंदगी के आखिरी दिन एक पैकेट सिगरेट पीने से मेरी जान नहीं जाने वाली थी। मैंने सिगरेट जलाई। सिगरेट मुझे अजीब सी लगी। मैंने धीरे-धीरे धुआं अंदर खींचा और धीरे-धीरे बाहर निकाला।

मैं पेस्ट्री की दुकान पर गई, जहाँ मैंने चार केक खरीदे। उनके फ्रेंच नाम इतने कठिन थे कि डिब्बे में डालने के बाद मैं भूल ही गई कि मैंने कौन सा केक चुना था। मैंने विश्वविद्यालय में फ्रेंच पढ़ी थी, लेकिन लगता है वो सब भूल गई थी। काउंटर पर बैठी लड़की सलीके से पेश आ रही थी, लेकिन उसे रिबन बांधना नहीं आता था। कतई नहीं।

बगल वाली वीडियो की दुकान पर मैं कई बार जा चुका था। प्रवेश द्वार पर लगे सत्ताईस इंच के मॉनिटर पर 'हार्ड टाइम्स' नाम की कोई फिल्म चल रही थी। चार्ल्स ब्रॉन्सन एक बिना दस्ताने वाला मुक्केबाज था, और जेम्स कोबर्न उसका मैनेजर। मैं अंदर गया और लड़ाई का दृश्य दोबारा देखने की इच्छा जताई।

काउंटर के पीछे बैठी महिला ऊबी हुई लग रही थी। मैंने उसे एक केक दिया जबकि ब्रॉन्सन अपने गंजे प्रतिद्वंदी को बुरी तरह पीट रहा था। रिंग के किनारे बैठे दर्शक उस ताकतवर पहलवान की जीत की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि ब्रॉन्सन कभी हारता नहीं। मैं उठकर जाने लगा।

"क्यों न आप यहीं रुककर पूरी फिल्म देख लें?" श्रीमती वीडियो शॉप ने आमंत्रित किया।

मैंने उससे कहा, "काश मैं ऐसा कर पाती, अगर ड्रायर में कपड़े न होते।" मैंने घड़ी पर नज़र डाली। एक बजकर पच्चीस मिनट हो चुके थे। ड्रायर पहले ही बंद हो चुका था।

उसने आखिरी बार अपनी बात रखी। "अगले हफ्ते हिचकॉक की तीन क्लासिक फिल्में आ रही हैं।"

मैं वापस लॉन्ड्री की ओर चल पड़ा। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि लॉन्ड्री खाली थी। बस कपड़े ड्रायर के नीचे पड़े थे, जो मेरे लौटने का इंतज़ार कर रहे थे। मैंने कपड़े बैग में डाले और घर की ओर चल दिया।

गोल-मटोल बच्ची ने मुझे अंदर आते हुए नहीं सुना और बिस्तर पर गहरी नींद में सो रही थी। मैंने उसके कपड़े तकिए के पास और केक का डिब्बा नाइट स्टैंड पर रख दिया। बिस्तर पर लेटने का मन तो कर रहा था, पर ऐसा करना मुमकिन नहीं था।

मैं रसोई में गया। नल, गैस हीटर, वेंटिलेटर पंखा, गैस ओवन, तरह-तरह के बर्तन, फ्रिज, टोस्टर, अलमारी, चाकू रखने का रैक, ब्रुक बॉन्ड चाय का एक बड़ा डिब्बा, राइस कुकर, और रसोई शब्द में समाहित होने वाली हर चीज़। इस दुनिया में इतनी व्यवस्था थी।

जब मैं पहली बार इस अपार्टमेंट में रहने आया था, तब मेरी शादी हो चुकी थी। आठ साल पहले की बात है, लेकिन तब भी मैं अक्सर आधी रात को अकेले इस मेज पर बैठकर पढ़ता था। मेरी पत्नी इतनी गहरी नींद सोती थी कि कभी-कभी मुझे चिंता होती थी कि कहीं वो ज़िंदा ही न हो। और अपनी अपूर्णता के बावजूद, मैं उससे प्यार करता था।

इसका मतलब था कि मैं इस जर्जर जगह में आठ साल से रह रहा था। हम तीन लोग एक साथ रहने लगे थे: मैं, मेरी पत्नी और बिल्ली। मेरी पत्नी सबसे पहले घर छोड़कर चली गई, उसके बाद बिल्ली। अब मेरी बारी थी। मैंने एक तश्तरी को ऐशट्रे बनाकर सिगरेट जलाई। मैंने एक गिलास पानी पिया। आठ साल! मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था।

खैर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। सब कुछ जल्द ही खत्म हो जाएगा। शाश्वत जीवन का आगमन होगा। अमरता।

मैं अमरता की दुनिया की ओर जा रहा था। प्रोफेसर ने यही कहा था। दुनिया का अंत मृत्यु नहीं, बल्कि एक रूपांतरण था। मैं स्वयं बन जाऊंगा। मैं उन सभी चीजों से फिर से मिल जाऊंगा जिन्हें मैं पहले ही खो चुका था और अब खो रहा था।

शायद हाँ। नहीं, शायद हाँ। उस बूढ़े आदमी को तो पता ही होगा कि वो क्या कह रहा है। अगर उसने कहा कि यह एक अमर दुनिया है, तो सच में अमर ही होगी। फिर भी, प्रोफेसर की बातों में वास्तविकता की कोई झलक नहीं थी। वे अमूर्त विचार थे, अनिश्चितता की धुंधली परछाइयाँ। मेरा मतलब है, मैं तो पहले से ही स्वयं

था, है ना? और एक अमर व्यक्ति अपनी अमरता को कैसे समझेगा? ये गेंडा और ऊँची दीवार वाली बात क्या थी? 'द विजार्ड ऑफ ओज़' तो ज़्यादा विश्वसनीय होनी चाहिए थी।

तो मैंने क्या खोया था? मैंने बहुत कुछ खोया था। शायद कॉलेज की पूरी एक छोटी सी किताब भर, जिसमें सब कुछ छोटे अक्षरों में लिखा हुआ था। वो चीजें जो मुझे छोड़ते समय इतनी महत्वपूर्ण नहीं लगीं। वो चीजें जिन्होंने बाद में मुझे दुख दिया, हालांकि इसका उल्टा भी सच था। लोग, स्थान और भावनाएं मुझसे दूर होती चली गईं।

अगर मुझे अपना जीवन दोबारा जीने का मौका भी मिले, तो भी मैं उन चीजों को न करने की कल्पना नहीं कर सकती जो पहले जैसी नहीं थीं। आखिरकार, यह सब कुछ—यह जीवन जो मैं खो रही थी—मैं ही थी। और मैं अपने अलावा कोई और रूप नहीं हो सकती थी। क्या मैं हो सकती थी?

एक बार, जब मैं छोटी थी, तो मैंने सोचा था कि मैं कोई और बन सकती हूँ। मैं कैसाब्लांका चली जाऊँगी, एक बार खोलूँगी और इंग्रीड बर्गमैन से मिलूँगी। या ज़्यादा यथार्थवादी रूप से कहूँ—चाहे वास्तव में यह ज़्यादा यथार्थवादी हो या नहीं—मैं एक बेहतर जीवन की ओर बढ़ूँगी, कुछ ऐसा जो मेरे सच्चे स्वरूप के ज़्यादा अनुकूल हो। उस लक्ष्य को पाने के लिए, मुझे प्रशिक्षण लेना पड़ा। मैंने 'द ग्रीनिंग ऑफ़ अमेरिका' पढ़ी और 'ईज़ी राइडर' तीन बार देखी। लेकिन जैसे कोई नाव जिसका पतवार मुड़ा हुआ हो, मैं बार-बार उसी जगह लौट आती थी। मैं कहीं नहीं जा रही थी। मैं वही थी, किनारे पर अपने लौटने का इंतज़ार कर रही थी।

क्या यह इतना निराशाजनक था?

कौन जाने? शायद वह "निराशा" थी। जिसे तुर्गनेव ने "मोहभंग" कहा था। या दोस्तोयेव्स्की ने "नरक" कहा था। या समरसेट मॉघम ने "वास्तविकता" कहा था। नाम चाहे जो भी हो, मुझे लगा कि वह मैं ही था।

अमरता की दुनिया? शायद मैं सचमुच एक नया स्वरूप बना लूँ। मैं खुश हो सकता हूँ, या कम से कम कम दुखी तो हो ही सकता हूँ। और क्या मैं यह कहने की हिम्मत करूँ, मैं एक बेहतर इंसान भी बन सकता हूँ। लेकिन अभी इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। यह एक अलग स्वरूप होगा। अभी के लिए, मैं एक अपरिवर्तनीय, ऐतिहासिक तथ्य हूँ।

फिर भी, मेरे पास इसके अलावा कोई चारा नहीं था कि मैं अगले बाईस घंटों में अपने जीवन के अंत की परिकल्पना पर ही आगे बढ़ूँ। तो मैं मरने वाला था—मैंने सुविधा के लिए खुद से यही कहा। अगर मैं खुद कहूँ तो, यही मेरे स्वभाव के ज़्यादा करीब था। और शायद, इससे मुझे कुछ राहत मिली।

मैंने सिगरेट बुझाई और बेडरूम में चला गया। मैंने उस गोल-मटोल लड़की के सोते हुए चेहरे को देखा। मैंने अपनी जेबें टटोल कर देखा कि विदाई के इस दृश्य के लिए मुझे जो कुछ चाहिए, वो सब मेरे पास है या नहीं। मुझे वास्तव में क्या चाहिए था? लगभग कुछ भी नहीं। बटुआ, क्रेडिट कार्ड और... क्या कुछ और भी था? अपार्टमेंट की चाबी किसी काम की नहीं थी, न ही मेरी कार की चाबी, न ही मेरा कैलक्यूटेक आईडी कार्ड। मुझे एड्रेस बुक की ज़रूरत नहीं थी, चाकू की भी नहीं। मज़ाक के लिए भी नहीं।

मैं मेट्रो से गिन्ज़ा गया और पॉल स्टुअर्ट से नए कपड़े खरीदे, जिनका बिल मैंने अमेरिकन एक्सप्रेस से चुकाया। मैंने शीशे में खुद को देखा। बुरा नहीं था। नेवी ब्लू ब्लेज़र और नारंगी रंग की शर्ट का कॉम्बिनेशन किसी अमीर विज्ञापन कंपनी के एग्जीक्यूटिव जैसा लग रहा था, लेकिन किसी गंवार से तो बेहतर था।

बारिश अभी भी हो रही थी, लेकिन मैं कपड़े देखते-देखते थक गया था, इसलिए मैंने कोट नहीं लिया और सीधे एक बीयर बार में चला गया। वह लगभग खाली था। वहाँ ब्रुकनर की सिम्फनी बज रही थी। मुझे पता नहीं था कि कौन सा नंबर था, लेकिन किसे पता होता है? मैंने एक ड्राफ्ट बियर और कुछ सीपियाँ मंगवाईं।

मैंने सीपियों पर नींबू निचोड़ा और उन्हें घड़ी की दिशा में खाते हुए आगे बढ़ा, पृष्ठभूमि में ब्रुकनर का रोमांटिक संगीत बज रहा था। विशाल दीवार घड़ी में तीन बजने में पाँच मिनट बाकी थे, डायल पर दो शेर बने थे जो स्प्रिंग के सहारे घूम रहे थे। ब्रुकनर का संगीत समाप्त हुआ और संगीत रावेल के बोलेरो में बदल गया।

मैंने दूसरा ड्राफ्ट ऑर्डर किया, तभी मुझे बहुत दिनों से रुकी हुई पेशाब करने की तीव्र इच्छा हुई। और मैंने पेशाब कर ही दी। भला एक मूत्राशय इतना सारा पेशाब कैसे रोक सकता है? मुझे कोई जल्दी नहीं थी, इसलिए मैं पूरे दो मिनट तक पेशाब करता रहा—बोलेरो का संगीत अपने चरम पर पहुँच रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं हमेशा पेशाब कर सकता हूँ।

उसके बाद मुझे ऐसा लगा मानो मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।

मैंने अपने हाथ धोए, टेढ़े-मेढ़े दर्पण में अपना चेहरा देखा, फिर मेज पर रखी अपनी बीयर के पास लौटा और एक सिगरेट जलाई।

समय मानो थम सा गया था, हालांकि वास्तव में शेर एक सौ अस्सी डिग्री घूम चुके थे और अब तीन बजकर दस मिनट हो चुके थे। मैंने एक कोहनी मेज पर टिकाई और घड़ी को देखने लगा। घड़ी की सुइयों को आगे बढ़ते देखना समय बिताने का एक निरर्थक तरीका है, लेकिन मुझे इससे बेहतर कुछ सूझ नहीं रहा था। अधिकांश मानवीय गतिविधियाँ इस धारणा पर आधारित हैं कि जीवन चलता रहता है। यदि आप इस आधार को हटा दें, तो फिर क्या बचेगा?

घड़ी की सुइयाँ साढ़े तीन पर पहुँच गईं, तो मैंने पैसे चुकाए और चला गया। इस बीयर पीने के दौरान बारिश लगभग रुक गई थी, इसलिए मैंने अपना छाता भी वहीं छोड़ दिया। हालात इतने बुरे नहीं लग रहे थे। मौसम सुधर गया था, तो मैं क्यों न सुधर जाऊँ?

छाता हट जाने से मुझे हल्कापन महसूस हुआ। मुझे आगे बढ़ने का मन हुआ। खासकर ऐसी जगह जहाँ बहुत सारे लोग हों। मैं सोनी बिल्डिंग गया, जहाँ अत्याधुनिक टीवी मॉनिटरों की कतार को निहार रहे अरब पर्यटकों के साथ धक्का-मुक्की हुई, फिर भूमिगत ट्रेन से मारुनोची लाइन पकड़ी और शिंजुकु की ओर चल पड़ा। ऐसा लगता है कि सीट पर बैठते ही मुझे नींद आ गई, क्योंकि अगली बात जो मुझे याद है, वो ये कि मैं वहाँ पहुँच चुका था।

खिड़की से बाहर निकलते ही मुझे अचानक वह खोपड़ी और कुछ दिनों पहले स्टेशन के बैगेज चेक काउंटर पर छिपाए गए अव्यवस्थित डेटा की याद आ गई। अब उस खोपड़ी का कोई महत्व नहीं था और मेरे पास

क्लेम स्टब भी नहीं था, लेकिन मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं था, इसलिए मैं काउंटर पर जाकर क्लर्क से अपना बैग वापस देने की गुहार लगाने लगा।
“क्या आपने अपना टिकट ध्यान से देखा?” क्लर्क ने पूछा।
मैंने उसे बताया कि मैंने ऐसा किया था।
आपका बैग कैसा दिखता है?
मैंने कहा, "एक नीला नाइकी स्पोर्ट्स बैग।"
नाइकी का ट्रेडमार्क कैसा दिखता है?
मैंने एक कागज़ और पेंसिल माँगी, उस पर एक पिचका हुआ बूमरैंग बनाया और उसके ऊपर नाइकी लिख दिया। क्लर्क ने उसे संदेह भरी नज़रों से देखा और अलमारियों की कतारों में चला गया। थोड़ी देर बाद वह मेरा बैग लेकर लौटा।
"इस यह?"
“बिल्कुल सही,” मैंने कहा।
"क्या आपके पास कोई पहचान पत्र है?"
अपना इनाम वापस मिलने पर अचानक मेरे मन में ख्याल आया, जिम का सामान ढोते हुए डिनर पर जाना ठीक नहीं होता। उसे ढोने के बजाय, मैंने एक कार किराए पर लेने का फैसला किया और बैग को बेफिक्री से पिछली सीट पर रख दिया। और वो भी एक शानदार यूरोपीय कार। ऐसा नहीं था कि मैं यूरोपीय कारों का इतना बड़ा प्रशंसक था, लेकिन मुझे लगा कि मेरे जीवन के इस बेहद महत्वपूर्ण दिन पर एक अच्छी कार में घूमना जायज़ है।
मैंने येलो पेज चेक किए और शिंजुकु क्षेत्र में चार कार-रेंटल डीलरों के नंबर नोट कर लिए। किसी के पास भी यूरोपीय कारें नहीं थीं। रविवार को बहुत भीड़ होती थी और वैसे भी उनके पास विदेशी कारें कभी होती ही नहीं थीं। आखिरी डीलर के पास एक टोयोटा कैरिना 1800 जीटी ट्विन-कैम टर्बो और एक टोयोटा मार्क II थी। दोनों नई थीं, दोनों में कार स्टीरियो लगे थे। मैंने कैरिना लेने का फैसला किया। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि दोनों कारें कैसी दिखती हैं।
ऐसा करने के बाद, मैं एक रिकॉर्ड की दुकान पर गया और कुछ कैसेट खरीदे। जॉनी मैथिस के ग्रेटेस्ट हिट्स, ज़ुबिन मेहता द्वारा संचालित शॉनबर्ग का वर्क्लेर्टे नाच्ट, केनी बुरेल का स्टॉर्मी संडे, पॉपुलर एलिंगटन, ट्रेवर पिनॉक द्वारा हार्पसीकोर्ड पर ब्रैंडेनबर्ग कॉन्सर्टोस, और बॉब डायलन का लाइक ए रोलिंग स्टोन वाला एक टेप। सब मिलाकर। मैं हर तरह का संगीत सुनना चाहता था—मुझे कैसे पता चलता कि कैरिना 1800 जीटी ट्विन-कैम टर्बो के साथ किस तरह का संगीत अच्छा लगेगा?
मैंने टेप पैक किए और कार किराए पर लेने के लिए निकल पड़ा। मेरी साधारण कार की तुलना में कैरिना 1800 जीटी की ड्राइवर सीट किसी अंतरिक्ष यान के केबिन जैसी लग रही थी। मैंने बॉब डायलन का टेप

लगाया और 'वॉचिंग द रिवर फ्लो' गाना बजने लगा। इस दौरान मैंने डैशबोर्ड कंट्रोल पैनल के हर स्विच को चेक किया।

मुझे सेवा देने वाली वह भली महिला दफ्तर से बाहर आई और गाड़ी के पास आकर पूछने लगी कि क्या कोई समस्या है। उसने टीवी विज्ञापन में दिखने वाली साफ-सुथरी, ताजगी भरी मुस्कान बिखेरी।

मैंने उससे कहा, कोई दिक्कत नहीं है, मैं सड़क पर निकलने से पहले सब कुछ चेक कर रहा था।

“बहुत बढ़िया,” उसने कहा। उसकी मुस्कान ने मुझे हाई स्कूल की एक लड़की की याद दिला दी। साफ-सुथरी और समझदार, उसने एक काकुमारू कट्टरपंथी से शादी की, दो बच्चे हुए और फिर गायब हो गई। भला किसने सोचा होगा कि सत्रह साल की एक प्यारी सी लड़की, जो जे. डी. सैलिंगर और जॉर्ज हैरिसन की प्रशंसक थी, इतने बड़े बदलावों से गुज़रेगी।

“काश सभी ड्राइवर आपकी तरह सावधान होते। इससे हमारा काम बहुत आसान हो जाता,” उसने कहा। “नवीनतम मॉडलों में लगे ये कंप्यूटरीकृत पैनल काफी जटिल हैं।”

मैंने पूछा, "185 का वर्गमूल निकालने के लिए मुझे कौन सा बटन दबाना होगा?"

“मुझे लगता है कि आपको अगले मॉडल तक इंतजार करना पड़ेगा,” वह हंसते हुए बोली। “अरे, क्या आपने बॉब डायलन के गाने नहीं पहने हैं?”

“बिल्कुल,” मैंने कहा। बिलकुल फोर्थ स्ट्रीट जैसा।

उन्होंने कहा, "मैं बॉब डायलन को पल भर में पहचान सकती हूं।"

"क्योंकि उसका हारमोनिका स्टीवी वंडर से भी बदतर है?"

वह फिर हंस पड़ी। यह जानकर अच्छा लगा कि मैं अब भी किसी को हंसा सकती हूँ।

“नहीं, मुझे उसकी आवाज़ बहुत पसंद है,” उसने कहा। “ऐसा लगता है जैसे कोई बच्चा खिड़की पर खड़ा होकर बारिश देख रहा हो।”

डायलन के बारे में इतनी सारी किताबें लिखी जा चुकी हैं, फिर भी मुझे ऐसा सटीक वर्णन कहीं नहीं मिला था। यह सुनकर वह शरमा गई।

"ओह, मुझे नहीं पता। मुझे तो उसकी आवाज़ से ऐसा ही लगता है।"

मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि तुम्हारे जैसा युवा व्यक्ति बॉब डायलन को जानता होगा।

मुझे पुराने गाने पसंद हैं। बॉब डायलन, द बीटल्स, द डोर्स, जिमी हेन्ड्रिक्स—आप जानते ही हैं।

मैंने उससे कहा, "हमें कभी मिलना चाहिए।"

उसने मुस्कुराते हुए अपना सिर थोड़ा झुकाया। जो लड़कियाँ हर बात को अच्छे से समझती हैं, उनके पास थके-हारे पैंतीस साल के तलाकशुदा मर्दों को जवाब देने के तीन सौ तरीके तो होंगे ही। मैंने उसे धन्यवाद दिया और कार स्टार्ट कर दी। मोबाइल में फिर से मेम्फिस ब्लूज़ में फँस गया। उससे मिलकर मुझे अच्छा लगा।

डैशबोर्ड पर लगी डिजिटल घड़ी में चार बजकर बयालीस मिनट हो रहे थे। सूरज ढलने की कगार पर था और मैं भीड़भाड़ वाली सड़कों से रेंगते हुए घर की ओर जा रहा था। यह आम बारिश वाले रविवार की भीड़भाड़ नहीं थी; एक हरी स्पोर्ट्स कार कंक्रीट के ब्लॉकों से लदे आठ टन के ट्रक से टकरा गई थी। ट्रैफिक रुका हुआ था। कार किसी गत्ते के डिब्बे जैसी लग रही थी जिस पर कोई बैठ गया हो। कई रेनकोट पहने पुलिसकर्मी आसपास खड़े थे जबकि बचाव दल मलबा साफ कर रहा था।

दुर्घटनास्थल तक पहुँचने में बहुत समय लग गया, लेकिन निर्धारित समय से पहले अभी भी काफी समय था, इसलिए मैंने सिगरेट पी और डायलन के गाने सुनता रहा। 'लाइक ए रोलिंग स्टोन'। मैं गुनगुनाने लगा।

हम सब बूढ़े हो रहे थे। यह बात गिरती हुई बारिश की तरह स्पष्ट थी।

34

स्कल्स

मुझे पक्षी उड़ते हुए दिखाई देते हैं। वे पश्चिमी पहाड़ी की सफेद जमी हुई ढलान पर झपट्टा मारते हैं और मेरी दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। मैं चूल्हे पर अपने पैर और हाथ सेंकता हूँ और कर्नल द्वारा लाई गई गर्म चाय पीता हूँ।

“क्या तुम आज रात सपने पढ़ने जा रहे हो? बर्फ बहुत गहरी होगी। पहाड़ी पर चलना खतरनाक होगा। शायद तुम एक दिन आराम कर लो,” वह सुझाव देता है।

मैंने उससे कहा, "मैं एक दिन भी बर्बाद नहीं कर सकता।"

कर्नल अपना सिर हिलाते हैं, बाहर जाते हैं और बर्फ के जूते की एक जोड़ी लेकर लौटते हैं।

“ये लो, इन्हें पहन लो। कम से कम तुम फिसलोगे तो नहीं।”

मैंने इन्हें पहनकर देखा। ये ठीक से फिट हो गए, यह एक अच्छा संकेत है।

अब जाने का समय हो गया है। मैं अपने गले में स्कार्फ लपेटती हूँ, दस्ताने पहनती हूँ, कर्नल से टोपी उधार लेती हूँ। फिर मैं मुड़ा हुआ अकॉर्डियन अपनी जेब में रख लेती हूँ। मैं इसके बिना नहीं रह सकती।

“अपना ख्याल रखना,” बूढ़े अधिकारी ने कहा।

जैसा मैंने सोचा था, गड्ढा बर्फ से भर रहा है। बूढ़े लोग गायब हो गए हैं; उनके औजार भी गायब हो गए हैं। अगर बर्फबारी इसी तरह जारी रही, तो कल सुबह तक गड्ढा बर्फ से लबालब भर जाएगा। मैं तेज़ सफेद बर्फ के झोंकों को देखता हूँ, फिर पहाड़ी से नीचे उतरने लगता हूँ।

बर्फ़ तेज़ी से और ज़ोर से गिर रही है। कुछ ही गज आगे देखना मुश्किल है। मैं अपना चश्मा उतार देती हूँ और अपना स्कार्फ़ आँखों के नीचे खींच लेती हूँ। इन बूटों की चरमराहट के बीच मुझे ऊपर पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देती है। पक्षियों को बर्फ़ कैसी लगती है? और जानवरों को, वे इस बर्फीले तूफान के बारे में क्या सोचते हैं?

मैं लाइब्रेरी में पूरे एक घंटे पहले पहुँच गया और उसे चूल्हे के गर्म होने का इंतज़ार करते हुए पाया। उसने मेरे कोट से बर्फ झाड़ी और बूटों की कीलों के बीच फंसी बर्फ को हटाया।

हालांकि मैं कल ही यहां आया था, लेकिन धुंधले कांच से छनकर आती पीली रोशनी, चूल्हे की गर्म अंतरंगता और बर्तन से निकलती कॉफी की खुशबू मुझे पुरानी यादों में ले जाती है।

“क्या आप अभी खाना खाना चाहेंगे? या शायद थोड़ी देर बाद?”

“मैं खाना नहीं खाना चाहती। मुझे भूख नहीं है,” मैंने कहा।

"क्या आप कॉफी पीना चाहेंगे?"

"जी कहिये।"
मैंने अपने दस्ताने उतारे और उन्हें सूखने के लिए चूल्हे पर टांग दिया। फिर मैंने अपनी उंगलियों को आग के सामने धूप में सुखाया, इस बीच वह दो कप कॉफी बना रही थी। उसने मुझे एक कप दिया, फिर वह पीने के लिए मेज पर बैठ गई।
“बाहर बहुत बर्फबारी हो रही है। मुझे ठीक से कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था,” मैंने कहा।
“हां। अगले कुछ दिनों तक बर्फ गिरती रहेगी। जब तक आसमान में मंडराते बादल अपनी सारी बर्फ न गिरा दें।”
मैंने अपनी आधी कॉफ़ी पी ली, फिर बिना कुछ कहे उसके सामने बैठ गई। उसे देखते ही मुझे फिर से उदासी छा गई।
"जब तक यह रुकेगा, तब तक जमीन पर इतनी बर्फ होगी जितनी आपने शायद पहले कभी नहीं देखी होगी," वह कहती हैं।
"हो सकता है मैं इसे देख न पाऊं।"
वह कप से नज़रें उठाकर मेरी तरफ देखती है।
“तुम्हारा क्या मतलब है? बर्फ तो कोई भी देख सकता है।”
“आज मैं स्वप्न-पाठ नहीं करूंगी। चलो हम दोनों बस बातें करते हैं,” मैंने कहा। “मुझे तुम्हें बहुत सी बातें बतानी हैं और बहुत सी बातें हैं जो मैं चाहती हूं कि तुम मुझे बताओ। क्या यह ठीक है?”
वह मेज पर हाथ जोड़कर बैठ जाती है और मुझे खाली निगाहों से देखती है।
“मेरी परछाई मर रही है,” मैं कहना शुरू करता हूँ। “वह सर्दी का मौसम नहीं झेल पाएगी। बस कुछ ही समय की बात है। अगर मेरी परछाई मर गई, तो मैं हमेशा के लिए अपना मानसिक संतुलन खो दूँगा। इसीलिए मुझे अभी कई फैसले लेने होंगे। अपने बारे में, और आपसे जुड़े मामलों के बारे में। इन बातों पर सोचने के लिए बहुत कम समय बचा है, लेकिन अगर मैं जितना चाहूँ उतना सोच भी लूँ, तो भी मुझे यकीन है कि मैं इसी नतीजे पर पहुँचूँगा। यानी, मुझे यहाँ से जाना होगा।”
मैं कॉफी की एक घूंट लेता हूँ और खुद को यकीन दिलाता हूँ कि मेरा निष्कर्ष गलत नहीं है। वैसे, चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अपने आप का एक हिस्सा खो दूँगा।
“मैं कल शहर छोड़ दूँगा,” मैं फिर बोलता हूँ। “ठीक कैसे और कहाँ से, यह मुझे नहीं पता। मेरी परछाई मुझे बताएगी। हम दोनों साथ निकलेंगे और अपनी दुनिया में लौट जाएँगे। मैं अपनी परछाई को अपने पीछे घसीटता हुआ ले जाऊँगा, जैसे पहले करता था। मैं चिंता करूँगा और कष्ट सहूँगा, बूढ़ा हो जाऊँगा और मर जाऊँगा। मुझे शक है कि तुम समझ पाओगे, लेकिन मैं उसी दुनिया का हूँ, जहाँ मेरा मन मुझे राह दिखाएगा, यहाँ तक कि मुझे गुमराह भी कर देगा।”
वह मुझे घूरती है। नहीं, वह उस जगह को घूरती है जहाँ मैं मौजूद हूँ।
क्या आपको यह शहर पसंद नहीं है?

“शुरुआत में तुमने कहा था कि अगर मुझे शांति चाहिए, तो मुझे यहाँ अच्छा लगेगा। हाँ, मुझे इस कस्बे की शांति और सुकून बहुत पसंद है। मैं यह भी जानता हूँ कि अगर मैं अपने मन की कीमत पर यहाँ रुका रहा, तो यह शांति और सुकून पूरी तरह से छिन जाएगा। शायद मुझे इस कस्बे को छोड़ने का जीवन भर पछतावा रहेगा। फिर भी मैं रुक नहीं सकता। मेरा मन मुझे अपनी परछाई और जानवरों की बलि देकर हासिल की गई इस उपलब्धि को माफ नहीं कर सकता। भले ही इस पल मेरा मन कमजोर होता जा रहा है, मैं उससे झूठ नहीं बोल सकता। यह तो बिलकुल ही बेमानी बात है। जो मैं खोऊँगा वह हमेशा के लिए रहेगा। क्या तुम समझते हो?”

वह काफी देर तक अपने हाथों को देखती रहती है। उसकी कॉफी के कप से भाप बहुत पहले ही गायब हो चुकी है; कमरे में कोई भी चीज हिलती-डुलती नहीं है।

"क्या तुम कभी यहाँ वापस नहीं आओगे?"

मैं अपना सिर हिलाता हूँ। “एक बार मैं यहाँ से चला गया, तो मैं कभी वापस नहीं आ पाऊँगा। यह स्पष्ट है। और अगर मैं लौट भी आया, तो मेरे लिए द्वार कभी नहीं खुलेगा।”

और क्या यह बात आपके लिए मायने नहीं रखती?

“तुम्हें खोना मेरे लिए सबसे कठिन है, लेकिन तुम्हारे लिए मेरे प्यार का स्वरूप ही मायने रखता है। अगर यह अपूर्ण सत्य में तब्दील हो जाता है, तो शायद तुम्हें प्यार न करना ही बेहतर होगा। मुझे अपना दिमाग शांत रखना होगा, लेकिन तुम्हें खोना होगा।”

कमरे में फिर से सन्नाटा छा गया है, सिवाय कोयलों की चटकने की आवाज़ के। चूल्हे के पास मेरा कोट, स्कार्फ, टोपी और दस्ताने लटके हुए हैं—ये सारी चीज़ें मुझे शहर ने यहीं दी थीं।

“मैंने सोचा था कि मैं अपनी परछाई को अकेले भागने में मदद करूँ और फिर खुद पीछे रह जाऊँ,” मैं कहता हूँ। “लेकिन मुझे जंगल में धकेल दिया जाएगा, और मुझे यकीन है कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। तुम जंगल में नहीं रह सकते। केवल वे लोग जंगल में रह सकते हैं जिनकी परछाई पूरी तरह से नष्ट नहीं हुई है, जिनमें अभी भी कुछ बुद्धि बाकी है। मेरे पास अभी भी बुद्धि है। तुम्हारे पास नहीं। और इसी कारण से, तुम्हें मेरी कभी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।”

वह अपना सिर हिलाती है।

नहीं, मेरे पास वह चीज़ नहीं है जिसे तुम बुद्धि कहते हो। माँ के पास बुद्धि थी, लेकिन मेरे पास नहीं। और क्योंकि माँ ने अपनी बुद्धि बचाए रखी, इसलिए उन्हें जंगल में भेज दिया गया। मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है जब माँ को जंगल में भेजा गया था। मैं आज भी कभी-कभी उनके बारे में सोचती हूँ। काश मेरे पास भी बुद्धि होती, तो मैं माँ के साथ होती। और काश मेरे पास बुद्धि होती, तो मैं तुम्हें वैसे ही चाहती जैसे तुम मुझे चाहते हो।

“भले ही इसका मतलब जंगल में निर्वासन हो? क्या तुम इतनी कीमत पर भी अपना दिमाग बचा पाओगे?”

वह अपने सामने मेज पर रखे हुए हाथों को आपस में जोड़कर ध्यान लगाती है, फिर उन्हें खोल देती है।

“मुझे याद है माँ ने मुझसे कहा था कि अगर किसी के पास बुद्धि है, तो चाहे वह कहीं भी जाए, कुछ भी कभी नहीं खोता। क्या यह सच है?”
“मुझे नहीं पता,” मैंने उससे कहा। “लेकिन सच हो या न हो, यही तुम्हारी माँ का मानना था। सवाल यह है कि क्या तुम भी इस पर विश्वास करती हो।”
"मुझे लगता है मैं कर सकती हूँ," वह मेरी आँखों में देखते हुए कहती है।
“क्या सच में?” मैंने चौंककर पूछा। “क्या तुम्हें लगता है कि तुम इस बात पर यकीन कर सकते हो?”
"शायद," वह कहती है।
“नहीं। इस पर ध्यान से सोचो। यह बहुत महत्वपूर्ण है,” मैं कहता हूँ, “क्योंकि किसी भी बात पर विश्वास करना, चाहे वह कुछ भी हो, मन की देन है। समझ रहे हो? जब तुम कहते हो कि तुम विश्वास करते हो, तो तुम निराशा की संभावना को स्वीकार करते हो। और निराशा या विश्वासघात से हताशा उत्पन्न हो सकती है। मन का यही स्वभाव है। क्या तुम ये बातें जानते हो?”
वह अपना सिर हिलाती है। “मैं नहीं बता सकती। मैं बस माँ के बारे में सोच रही थी। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। मुझे लगता है कि मैं विश्वास कर सकती हूँ।”
“आपके भीतर कुछ ऐसा होना चाहिए जो अब भी आपके मन से जुड़ा हो! भले ही वह कसकर बंद हो और बाहर न निकल सके।”
"जब आप कहते हैं कि मुझमें अभी भी बुद्धि है, तो क्या आपका मतलब यह है कि उन्होंने वास्तव में मेरी परछाई को नहीं मारा, जैसा कि उन्होंने माँ के साथ किया था?"
“नहीं, तुम्हारी परछाई मर चुकी है और सेब के बाग में दफन हो चुकी है। लेकिन शायद तुम्हारी मां की यादों में तुम्हारे मन की कुछ झलकियाँ बाकी हों, अगर तुम उन्हें फिर से खोज सको।”
सब कुछ शांत है, मानो बाहर गिरती बर्फ ने कमरे की सारी आवाज़ निगल ली हो, जैसे दीवार अपनी सांस रोककर सुनने की कोशिश कर रही हो।
“चलिए पुराने सपनों के बारे में बात करते हैं,” मैंने विषय बदलते हुए कहा। “क्या यह सच है कि जानवर हमारे द्वारा प्रतिदिन उत्सर्जित मानसिक ऊर्जा को अवशोषित कर लेते हैं? क्या यही पुरानी यादें बन जाती हैं?”
“जी हाँ, बिल्कुल। जब हमारी परछाइयाँ मर जाती हैं, तो जानवर मन में साँस लेते हैं।”
"इसका मतलब है कि मैं तुम्हारे पुराने सपनों से तुम्हारे मन की बात पढ़ सकता हूँ।"
“नहीं, यह असंभव है। हमारा मन संपूर्ण नहीं है। मेरा मन बिखरा हुआ है, अलग-अलग जीवों के बीच अलग-अलग टुकड़ों में बंटा हुआ है, और सभी टुकड़े दूसरों के टुकड़ों से मिलकर बने हुए हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।”
वह सही कह रही है। मैं दिन-रात सपनों का अध्ययन कर रही हूँ और अभी तक एक भी सपना नहीं समझ पाई हूँ। और अब, अगर मुझे अपनी जान बचानी है, तो मेरे पास सिर्फ़ इक्कीस घंटे बचे हैं। उसके मन के टुकड़ों को जोड़ने के लिए इक्कीस घंटे। इस कालजयी शहर में, मेरे पास इतना कम समय कैसे हो सकता है?

मैं अपनी आँखें बंद करती हूँ और गहरी साँस लेती हूँ। मुझे वह सूत्र खोजना होगा जो मेरी एकाग्रता को बांधे रखे, फिर भी ताने-बाने को बिखेर दे।
“हमें किताबों के भंडारगृह में जाना होगा,” मैंने कहा।
“पत्थर के ढेर?”
हमें खोपड़ियों को देखते समय सोचना चाहिए। हो सकता है हमें कुछ पता चल जाए।
मैं उसका हाथ पकड़कर काउंटर के पीछे से होते हुए किताबों के ढेर वाले दरवाजे तक जाती हूँ। वह हल्की रोशनी जलाती है और अनगिनत खोपड़ियों से भरी अलमारियाँ अँधेरे में चमक उठती हुई दिखाई देती हैं। पीली आकृतियाँ, धूल से मोटी परत से ढकी हुई, जबड़े एक ही कोण पर मुड़े हुए, आँखों के गड्ढे खालीपन से घूरते हुए, उनकी खामोशी किताबों के ढेर पर एक प्रेतवाधित धुंध की तरह छाई हुई है। मेरे शरीर में फिर से सिहरन दौड़ जाती है।
"क्या तुम्हें सच में लगता है कि तुम मेरे मन की बात पढ़ सकते हो?" वह मुझसे आमने-सामने पूछती है।
“मुझे ऐसा लगता है,” मैं खुद को समझाने की कोशिश करते हुए कहता हूं। “कोई न कोई रास्ता तो जरूर होगा।”
"यह नदी में खोई हुई बारिश की बूंदों को खोजने जैसा है।"
“तुम गलत हो। मन बारिश की बूंदों जैसा नहीं होता। यह आकाश से नहीं गिरता, न ही यह अन्य चीजों में खो जाता है। अगर तुम मुझ पर ज़रा भी विश्वास करते हो, तो इस बात पर विश्वास करो: मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं इसे ढूंढ निकालूंगा। सब कुछ इसी पर निर्भर करता है।”
कुछ क्षण बाद वह फुसफुसाते हुए कहती है, "मुझे आप पर विश्वास है। कृपया मेरे मन का पता लगाइए।"

35

नेल क्लिपर, बटर सॉस, लोहे का फूलदान

जब मैं पुस्तकालय के सामने पहुँचा तो पाँच बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे। हमारी मुलाकात के लिए अभी समय नहीं था, इसलिए मैं कार से उतरा और धुंध भरी गलियों में टहलने निकल गया। एक कॉफी शॉप में मैंने टीवी पर गोल्फ का मैच देखा, फिर मैं एक मनोरंजन केंद्र में गया और वीडियो गेम खेला। खेल का उद्देश्य नदी के उस पार से आ रहे टैंकों को नष्ट करना था। शुरुआत में मैं जीत रहा था, लेकिन जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, दुश्मन के टैंक झुंड की तरह बढ़ते चले गए, अपनी भारी संख्या से मुझे कुचलते हुए और मेरे अड्डे को नष्ट करते हुए। स्क्रीन पर एक परमाणु विस्फोट हुआ और सब कुछ खत्म हो गया, जिसके बाद संदेश आया: खेल समाप्त - सिक्का डालें।

मैंने स्लॉट में एक और सौ येन का सिक्का डाला। मेरा बेस पूरी तरह से सुरक्षित, तुरहियों की गूंज के साथ फिर से प्रकट हो गया। सच में, यह एक मुश्किल लड़ाई थी। मुझे हारना ही था। अगर मैं नहीं हारा, तो खेल हमेशा चलता रहेगा। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं। मैं जल्द ही फिर से नष्ट हो गया, फिर वही परमाणु विस्फोट हुआ, और फिर वही "गेम ओवर—सिक्का डालें" का संदेश आया।

बगल में एक हार्डवेयर की दुकान थी, जिसकी खिड़की में तरह-तरह के औजार रखे थे। रिंच और स्क्रूड्राइवर के सेट, पावर टैक गन और ड्रिल, साथ ही पश्चिम जर्मनी में बना एक खास टूल किट भी था। उसके बगल में लकड़ी तराशने वाले लगभग तीस चाकू और छेनी का एक सेट रखा था।

मैं दुकान में दाखिल हुआ। मनोरंजन केंद्र के शोरगुल और गड़गड़ाहट के बाद, हार्डवेयर की दुकान हिमखंड के भीतरी भाग की तरह शांत लग रही थी। रेज़र सेट के बगल में, मुझे नाखून काटने वाली कतरनें ऐसे सजी हुई मिलीं जैसे किसी कीटविज्ञानिक नमूने रखे हों। मैंने उनमें से सबसे साधारण सी कतरन उठाई और उसे काउंटर पर ले गया।

काउंटर पर खड़े पतले बालों वाले अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने इलेक्ट्रिक एगबीटर को नीचे रख दिया जिसे वह खोल रहा था और मुझे क्लिपर के उपयोग के बारे में निर्देश दिए।

“ठीक है, ध्यान से देखो।” उन्होंने मुझे तीन चरणों वाली आसान प्रक्रिया दिखाई और क्लिपर मुझे वापस दे दिए। “शानदार चीज़ है,” उन्होंने बताया। “ये हेनकेल कंपनी के बने हैं, ज़िंदगी भर चलेंगे। इनमें कभी जंग नहीं लगती, ब्लेड बढ़िया है। कुत्ते के पंजे काटने के लिए काफी मजबूत हैं।”

मैंने बाल काटने वाली कैंची के लिए दो हज़ार आठ सौ येन खर्च किए। इसके साथ एक काले चमड़े का केस भी आया था।

वह आदमी तुरंत अपने एगबीटर को खोलने के काम में वापस लग गया। उसने अलग-अलग आकार के पेंचों को साफ सफेद ट्रे में करीने से रखा था। वे बहुत खुश दिख रहे थे।
मैं कार में वापस आया और इंतज़ार करते हुए ब्रैंडेनबर्ग कॉन्सर्टो सुनता रहा। मैंने उन पेंचों और उनकी खुशी के बारे में सोचा। शायद वे अंडे फेंटने वाले यंत्र से मुक्त होकर, स्वतंत्र पेंच बनकर, सफेद थालियों पर आराम से बैठकर खुश थे। उन्हें खुश देखकर वाकई अच्छा लगा।
लाइब्रेरी बंद होने के समय के करीब, लोग बाहर निकलने लगे। ज़्यादातर हाई स्कूल के छात्र थे, जिनके पास मेरे जैसे प्लास्टिक के स्पोर्ट्स बैग थे, लेकिन कुछ बड़े-बुजुर्ग भी थे। छह बजे घंटी बजी। और मुझे याद नहीं कि कब से, पहली बार मुझे इतनी ज़ोर की भूख लगी थी। खेल शुरू होने के बाद से मैंने बहुत कम खाया था। मैंने रिक्लाइनिंग सीट को पीछे धकेला और कार की नीची छत की तरफ देखा, मेरे दिमाग में तरह-तरह के खाने के ख्याल आने लगे। सफेद ट्रे में रखे स्क्रू, सफेद सॉस में डूबे स्क्रू और कुछ जलकुंभी की टहनियों जैसे लगने लगे।
पंद्रह मिनट बाद, मेरी रेफरेंस डेस्क पर काम करने वाली सहेली सामने के दरवाजे से बाहर निकली। उसने गहरे नीले रंग की मखमली पोशाक पहनी हुई थी, जिसमें सफेद लेस का कॉलर और दो लड़ियों वाला चांदी का हार था।
“क्या यह आपकी कार है?” उसने पूछा।
नहीं, किराए पर लेना है। आपका क्या ख्याल है?
"ठीक है, मुझे लगता है। हालांकि यह आपकी शैली के अनुरूप नहीं लगता।"
मुझे नहीं पता। कार किराए पर देने वाली दुकान पर वही उपलब्ध था।
उसने कार को बाहर और अंदर से अच्छी तरह से जांचा, ऐशट्रे खोली और ग्लव कंपार्टमेंट की जांच की।
फिर उसने पूछा, "यह ब्रैंडेनबर्ग किसका है?"
“ट्रेवर पिनॉक।”
क्या आप पिनॉक के प्रशंसक हैं?
मैंने कहा, "खास तौर पर नहीं। टेप ने बस मेरा ध्यान खींचा। यह बुरा नहीं है।"
“रिचटर का संस्करण मेरा पसंदीदा है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि पाब्लो कैसाल्स का भी एक संस्करण है?”
“कोल्स?”
“यह वैसी आवाज़ नहीं है जैसी आप ब्रैंडेनबर्ग से उम्मीद करेंगे। यह बहुत दिलचस्प है।”
मैंने कहा, "मैं इसे ढूंढूंगा। हम खाना कहां खाएंगे?"
"इटैलियन के बारे में क्या ख्याल है?"
"महान।"
मुझे एक ऐसी जगह पता है जो ज्यादा दूर नहीं है और वाकई बहुत अच्छी है।

“चलो चलते हैं। मुझे इतनी भूख लगी है कि मैं पेंच भी खा सकता हूँ।”
“मुझे भी भूख लगी है,” उसने पेंचों को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। “हम्म, अच्छी शर्ट है।”
"धन्यवाद।"
पुस्तकालय से रेस्तरां तक पहुँचने में पंद्रह मिनट का समय लगता था, घुमावदार आवासीय सड़कों पर साइकिल सवारों और पैदल यात्रियों से बचते हुए। पहाड़ी के बीचोंबीच, ऊँचे चीड़ और हिमालयी देवदार के पेड़ों से घिरे घरों और ऊँची दीवारों के बीच, एक इतालवी रेस्तरां दिखाई दिया। एक सफेद लकड़ी के फ्रेम वाला पश्चिमी शैली का घर, जो अब एक ट्रेटोरिया (पारंपरिक इतालवी भोजनालय) के रूप में काम करता था। उसका साइनबोर्ड इतना छोटा था कि अगर आपको पता न होता कि वह वहाँ है, तो आप आसानी से उसे नज़रअंदाज़ कर सकते थे।
रेस्टोरेंट छोटा सा था—तीन मेजें और चार काउंटर सीटें। हमें सबसे पीछे वाली मेज पर बैठाया गया, जहाँ एक खिड़की से हमें बेर के पेड़ों का नजारा दिखाई दे रहा था।
“क्या हम थोड़ी शराब लें?” उसने कहा।
“आप ही क्यों न चुन लें?” मैंने कहा। जब वह वेटर से चुनाव के बारे में बात कर रही थी, मैं बेर के पेड़ को निहारने लगा। एक इतालवी रेस्टोरेंट में बेर का पेड़ होना कुछ अजीब सा लग रहा था। लेकिन शायद नहीं। हो सकता है इटली में बेर के पेड़ हों। अरे, फ्रांस में तो ऊदबिलाव होते हैं।
एपेरिटिवो (हल्का नाश्ता) ऑर्डर करने के बाद, हमने अपने मेनू खोले। हमने आराम से अपने ऑर्डर चुने। सबसे पहले, एंटीपास्टी (हल्का नाश्ता) के लिए, हमने स्ट्रॉबेरी के साथ झींगा सलाद, ताज़े सीप, लिवर मोर्टाडेला, स्याही में पका हुआ कटलफिश, बैंगन पारमिजियाना और मैरिनेटेड वकासागी चुना। प्राइमी (लव) के लिए, उसने जेनोइज़ पेस्टो के साथ स्पेगेटी चुनी, और मैंने टैगलीटेल अल्ला कासा (घर का बना हुआ स्वादिष्ट व्यंजन) चुना।
"फिश सॉस के साथ एक अतिरिक्त मैकरोनी क्यों न हम आधा-आधा बाँट लें?" उसने सुझाव दिया।
मैंने कहा, "मुझे तो यह ठीक लग रहा है।"
"आज की स्पेशल मछली कौन सी है?" उसने वेटर से पूछने के लिए मुड़कर कहा।
"आज हमारे पास ताजा ब्रान्ज़िनो (सुजुकी) मछली है," वेटर ने कहा, "जिसे हम कार्टोशियो में भाप में पकाते हैं और बादाम छिड़कते हैं।"
“मैं वही लूंगी,” उसने कहा।
मैंने कहा, "मैं भी।" "और साथ में परोसने के लिए, पालक और मशरूम का रिसोट्टो।"
"मेरे लिए पकी हुई सब्जियां और टमाटर का रिसोट्टो।"
"मुझे लगता है कि आपको हमारा रिसोट्टी काफी तृप्त कर देगा," वेटर ने थोड़ी झिझक के साथ कहा।
"हो सकता है, लेकिन मैंने कई दिनों से ठीक से कुछ खाया नहीं है, और उसे गैस्ट्रिक डाइलिटेशन है," मैंने समझाया।

उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा, "यह एक सामान्य ब्लैक होल है।"
“बहुत बढ़िया,” वेटर ने कहा।
उसके जाने से पहले ही उसने कहा, "मिठाई के लिए, मैं ग्रैनिटा डी उवा, क्रेमा फ्रेड्डा, सफ्ले अल लिमोन और एस्प्रेसो लूंगी।"
मैंने कहा, "क्यों नहीं—मैं भी।"
जब वेटर ने आखिरकार हमारा ऑर्डर लिख लिया, तो उसने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया।
"तुम्हें मेरे साथ तालमेल बनाए रखने के लिए इतना सारा सामान ऑर्डर करने की ज़रूरत नहीं थी, तुम्हें पता है।"
“नहीं, मुझे सचमुच बहुत भूख लगी है,” मैंने कहा। “इतने लंबे समय से मुझे इतनी भूख नहीं लगी थी।”
“बहुत खूब,” उसने कहा। “मैं कभी भी ऐसे लोगों पर भरोसा नहीं करती जिन्हें भूख नहीं लगती। ऐसा लगता है जैसे वे हमेशा आपसे कुछ छिपा रहे हों, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता।" सचमुच नहीं पता।
"ऐसा लगता है कि 'मुझे नहीं पता' कहना आपका पसंदीदा मुहावरा है," उसने टिप्पणी की।
"शायद ऐसा हो।"
और ‘शायद ऐसा हो’ एक और विकल्प है।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
“तुम्हारे सारे विचार इतने अनिश्चित क्यों हैं?”
मुझे तो पता नहीं, लेकिन शायद ऐसा हो, मैं मन ही मन बार-बार यही दोहरा रहा था जब वेटर आया और युवराज की रीढ़ की हड्डी में आई चोट का इलाज करने आए दरबारी चिकित्सक की तरह बड़े आदर से शराब की बोतल खोली और हमारे गिलासों में डाल दी।
“एल’ एट्रांजर में, नायक को ‘यह मेरी गलती नहीं है’ कहने की आदत थी। या कम से कम मुझे ऐसा ही याद है। उम्म—उसका नाम क्या था?”
मैंने कहा, "मर्सॉल्ट।"
“जी हां, मर्सॉल्ट,” उसने दोहराया। “मैंने इसे हाई स्कूल में पढ़ा था। लेकिन आप जानते हैं, आजकल के हाई स्कूल के बच्चे इस तरह की कोई किताब नहीं पढ़ते। हमने कुछ समय पहले पुस्तकालय में एक सर्वेक्षण किया था। आप किन लेखकों की किताबें पढ़ते हैं?”
“तुर्गेनेव।”
“तुर्गेनेव इतने महान नहीं थे। वे कालभ्रमित व्यक्ति थे।”
मैंने कहा, "शायद ऐसा हो, लेकिन फिर भी मैं उन्हें पसंद करता हूँ। फ्लाउबर्ट और थॉमस हार्डी को भी।"
“क्या आप कुछ नया नहीं पढ़ते?”
"कभी-कभी मैं समरसेट मॉघम को पढ़ता हूँ।"

“बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो समरसेट मॉघम को नया मानेंगे,” उसने अपना गिलास पीछे की ओर झुकाते हुए कहा। “ठीक वैसे ही जैसे आजकल ज्यूकबॉक्स में बेनी गुडमैन के गाने नहीं बजते।”
मुझे मॉघम बहुत पसंद हैं। मैंने 'द रेज़र एज' तीन बार पढ़ी है। शायद यह कोई शानदार उपन्यास नहीं है, लेकिन यह बहुत पठनीय है। इससे बेहतर है कि यह पठनीय न हो।
“शायद हां,” वह हंस पड़ी। “वह नारंगी शर्ट तुम पर अच्छी लग रही है।”
मैंने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद। आप बहुत खूबसूरत लग रही हैं।"
“धन्यवाद,” उसने कहा।
“मैं लंच के दौरान घर गई और कपड़े बदले। मेरा घर ऑफिस से ज्यादा दूर नहीं है, इसलिए यह बहुत सुविधाजनक था।”
कुछ ऐपेटाइज़र आ गए, और अगले कुछ मिनटों तक हम चुपचाप खाते रहे। स्वाद हल्का, नाजुक और सूक्ष्म था। झींगे एकदम ताज़े थे, और सीपियाँ समुद्र की छुई हुई सीपियों जैसी थीं।
"तो क्या तुमने यूनिकॉर्न का काम खत्म कर लिया?" उसने पूछा, और साथ ही एक सीप को अपने मुंह में डाल लिया।
मैंने अपने होठों से स्किड की स्याही पोंछते हुए कहा, "लगभग।"
और ये यूनिकॉर्न कहाँ थे?
मैंने अपनी कनपटी पर हाथ रखते हुए कहा, "यहाँ।" "ये सारे यूनिकॉर्न मेरे दिमाग की उपज थे।"
"क्या आपका मतलब प्रतीकात्मक रूप से है?"
“नहीं, बिलकुल नहीं। क्या मैं प्रतीकात्मक व्यक्ति जैसा लगता हूँ? वे सचमुच मेरी चेतना में निवास कर रहे थे। किसी ने उन्हें मेरे लिए खोज निकाला।”
“अच्छा हुआ कि वे मिल गए। बहुत दिलचस्प लग रहा है। मुझे और बताओ।”
मैंने बैंगन उसे देते हुए कहा, "यह उतना दिलचस्प नहीं है।" बदले में उसने मुझे स्मेल्ट मछली थमा दी।
फिर भी, मैं और अधिक जानना चाहूंगा। सचमुच जानना चाहूंगा।
“तो बात कुछ इस तरह है। आपकी चेतना की गहराई में एक ऐसा केंद्र है जो आपको स्वयं दिखाई नहीं देता। मेरे मामले में, वह केंद्र एक कस्बा है। एक ऐसा कस्बा जिसके बीच से एक नदी बहती है और जिसके चारों ओर ईंटों की एक ऊंची दीवार है। कस्बे का कोई भी निवासी बाहर नहीं जा सकता। केवल यूनिकॉर्न ही अंदर-बाहर आ-जा सकते हैं। यूनिकॉर्न कस्बेवासियों के अहंकार को सोख्ता कागज की तरह सोख लेते हैं और उन्हें दीवार के बाहर ले जाते हैं। इसलिए कस्बे के लोगों में कोई अहंकार नहीं है, कोई आत्म-बोध नहीं है। मैं कस्बे में रहता हूँ—कहानी कुछ इस तरह है। मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं पता, क्योंकि मैंने वास्तव में यह सब अपनी आँखों से नहीं देखा है।”
"हाँ, यह निश्चित रूप से मौलिक है, मैं यह कहूंगा।"
नदी? बूढ़े आदमी ने नदी के बारे में कुछ नहीं कहा था।

"लेकिन यह मेरी रचना नहीं है, कम से कम मुझे इसकी जानकारी नहीं है," मैंने कहा।
“यह अब भी तुम्हारा ही है, है ना? इसे किसी और ने नहीं बनाया।”
"ठीक है, मुझे लगता है।"
“गंध इतनी बुरी नहीं है, है ना?”
"इतना खराब भी नहीं।"
“यह सब कुछ उस रूसी यूनिकॉर्न की कहानी से मिलता-जुलता है जो मैंने तुम्हें पढ़कर सुनाई थी, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?” बैंगन काटते हुए उसने कहा। “माना जाता है कि यूक्रेनी यूनिकॉर्न एक बिल्कुल अलग-थलग समुदाय में रहते थे।”
"हाँ, इस मायने में यह समान है।"
"शायद कोई संबंध हो..."
“बस एक मिनट रुकिए,” मैंने बात काटते हुए अपने ब्लेज़र की जेब में हाथ डाला। “मेरे पास आपके लिए एक उपहार है।”
मैंने उसे छोटा सा काला चमड़े का डिब्बा दे दिया।
"यह क्या है?" उसने डिब्बे से निकाली गई उस विचित्र धातु की वस्तु को पलटते हुए पूछा।
मैं आपको दिखाऊंगा। ध्यान से देखिए।
वह देखती रही।
"नेल कटर?"
“ठीक है! इसे उल्टे क्रम में मोड़ें। इस तरह।”
“बहुत दिलचस्प,” उसने कहा। “लेकिन मुझे बताइए, क्या आप अक्सर महिलाओं को नाखून काटने वाली कैंची देते हैं?”
“नहीं, आप पहले व्यक्ति हैं। अभी-अभी जब मैं इंतजार कर रहा था, तो मैं एक हार्डवेयर स्टोर में गया और कुछ खरीदने का मन हुआ। लकड़ी पर नक्काशी करने वाले सेट बहुत बड़े थे।”
“धन्यवाद। मैं इन्हें अपने बैग में रखूंगी और जब भी इनका इस्तेमाल करूंगी, आपको याद करूंगी।”
स्टार्टर्स हटा दिए गए और थोड़ी देर में मुख्य व्यंजन परोसे गए। मेरी भूख अभी भी काफी थी। छह प्लेट स्टार्टर्स खाने के बाद भी मेरी भूख पर कोई खास असर नहीं पड़ा था। मैंने कुछ ही समय में काफी सारा टैगलीटेल (एक प्रकार का पास्ता) मुंह में ठूंस लिया, फिर आधी मैकरोनी चट कर गया। इतना खाने के बाद, मुझे ऐसा लगा जैसे अंधेरे में हल्की रोशनी दिखाई दे रही हो।
पास्ता खाने के बाद, हमने बास मछली के आने तक वाइन की चुस्कियां लीं।
“वैसे,” उसने कहा, “आपके अपार्टमेंट के बारे में, क्या तोड़फोड़ किसी विशेष मशीन से की गई थी? या फिर किसी विध्वंस दल ने की थी?”
मैंने कहा, "हो सकता है आप उसे मशीन कह सकें, लेकिन यह एक ही व्यक्ति का काम था।"

"उसमें बहुत दृढ़ संकल्प रहा होगा।"
आपको विश्वास नहीं होगा।
"क्या वह आपका कोई दोस्त है?"
एक बिलकुल अजनबी।
"क्या इसका उस यूनिकॉर्न वाली बात से कोई लेना-देना नहीं था?" उसने पूछा।
“हाँ, ऐसा हुआ था। लेकिन शुरू से ही किसी ने मुझसे यह पूछने की जहमत नहीं उठाई कि मैं इसके बारे में क्या सोचता हूँ।”
"और क्या इसका आपके कल जाने से कुछ संबंध है?"
“हम्म... हाँ।”
"तुम ज़रूर किसी भयानक मुसीबत में फंस गए हो।"
“यह इतना जटिल है कि मुझे खुद नहीं पता कि क्या हो रहा है। खैर, मेरे मामले में, सबसे सरल व्याख्या यह है कि मैं सूचना युद्ध में बुरी तरह फंस चुका हूं।”
वेटर अचानक हमारी मछली और चावल लेकर आ गया।
“मुझे ये सब समझ नहीं आ रहा,” उसने अपनी सुजुकी को कांटे के किनारे से कुरेदते हुए कहा। “हमारी लाइब्रेरी किताबों से भरी पड़ी है और हर कोई पढ़ने के लिए ही आता है। जानकारी सबके लिए मुफ्त है और कोई इसके लिए झगड़ा नहीं करता।”
मैंने कहा, "काश मैंने खुद किसी पुस्तकालय में काम किया होता।"
"मछली बहुत ही स्वादिष्ट थी," हमारे व्यंजन खत्म होने के बाद उसने धीरे से कहा। "खासकर उसकी चटनी।"
मैंने कहा, “अच्छी बटर सॉस बनाना एक कला है। इसमें समय लगता है। पिघले हुए मक्खन में बारीक कटी हुई प्याज़ मिलाई जाती है, फिर उसे धीमी आंच पर पकाया जाता है। इसमें कोई शॉर्टकट नहीं है।”
"हाँ, आपको खाना बनाना पसंद है, है ना?"
“हाँ, मैं पहले करता था। इसके लिए सच्ची लगन चाहिए। ताज़ी सामग्रियाँ, परखने की अच्छी समझ, और परोसने का हुनर। यह कोई आधुनिक कला नहीं है। उन्नीसवीं सदी से लेकर अब तक अच्छे खाना पकाने में शायद ही कोई बदलाव आया है।”
“यहाँ का लेमन सूफ़ले बहुत ही शानदार है,” उसने मिठाई आते ही कहा। “क्या अभी भी आपके पेट में जगह है?”
अंगूर की आइसक्रीम हल्की थी, सूफ़्ले टार्ट और एस्प्रेसो गाढ़ा और नशीला था। खाना खत्म होने के बाद, शेफ हमसे मिलने बाहर आए।
हमने उनसे कहा, "शानदार भोजन था।"
“खाने के शौकीन मेहमानों के लिए खाना बनाना एक सुखद अनुभव है,” शेफ ने कहा। “इटली में भी मेरा परिवार इतना नहीं खाता।”

“धन्यवाद।” हमने इसे प्रशंसा के रूप में लिया।
शेफ रसोई में वापस चला गया और हमने एक-एक करके एक और एस्प्रेसो का ऑर्डर दिया।
"आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे मैं मिली हूं जो मेरी भूख से मेल खा सकते हैं," उसने कहा।
मैंने कहा, "मैं अभी भी खा सकता हूँ।"
मेरे घर में कुछ फ्रोजन पिज्जा और चिवास की एक बोतल है।
"चलो यह करते हैं।"
उसका घर वाकई पुस्तकालय के पास ही था। एक छोटा सा अस्थायी मकान, लेकिन उसमें एक असली प्रवेश द्वार और एक आंगन था, हालांकि इतना ही बड़ा कि एक व्यक्ति आराम से लेट सके। बेशक वहां धूप नहीं आती थी, लेकिन एक कोने में अज़ेलिया की झाड़ी थी। यहां तक कि एक दूसरी मंजिल भी थी।
“एक व्यक्ति के लिए यह जगह बहुत बड़ी है,” उन्होंने समझाया। “हमने यह घर इसलिए खरीदा था क्योंकि हम दोनों बच्चे पैदा करने की योजना बना रहे थे। मैंने उनके जीवन बीमा के पैसों से लोन चुकाया।”
उसने फ्रीजर से पिज्जा निकाला और ओवन में डाल दिया, फिर चिवास रीगल की बोतल लिविंग रूम की मेज पर ले आई। जब उसने अपने लिए वाइन की बोतल खोली, तो मैंने जैकी मैकलीन, माइल्स डेविस और विंटन केली के कुछ टेप चुने और कैसेट डेक पर प्ले बटन दबा दिया। हम आराम से बैठ गए और पहले बैग्स ग्रूव सुना, फिर सरे विद अ फ्रिंज ऑन टॉप, और पिज्जा खत्म होने तक ड्रिंक्स पीते रहे।
“क्या आपको पुराना जैज़ संगीत पसंद है?” उसने पूछा।
"जब मैं हाई स्कूल में था, तो मैं कॉफी शॉप में हर समय जैज़ संगीत सुनता था।"
और आजकल?
“हर तरह की चीज़ें। लोग मुझे जो भी सुनाते हैं, मैं उसे सुनता हूँ।”
लेकिन आप अपनी मर्जी से नहीं सुनते?
"इसकी जरूरत नहीं है।"
“मेरे पति को जैज़ संगीत बहुत पसंद था। शायद आपकी पसंद भी कुछ ऐसी ही रही होगी। उनकी बस में लोहे के फूलदान से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी।”
“वह क्या?”
"एक बदमाश बस में हेयर स्प्रे का इस्तेमाल कर रहा था, और जब मेरे पति ने उसे ऐसा करने से रोकने के लिए कहा, तो उस आदमी ने लोहे के फूलदान से उनके सिर पर हमला कर दिया।"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। "वह बच्चा लोहे का फूलदान क्यों लिए घूम रहा था?"
“कौन जाने?” उसने जवाब दिया। “मरने का यह एक दयनीय तरीका था।”
ओवन का टाइमर बज उठा: पिज्जा तैयार था। सोफे पर अगल-बगल बैठे हम दोनों ने आधा-आधा पिज्जा खाया।
मैंने पूछा, "क्या तुम एक यूनिकॉर्न की खोपड़ी देखना चाहते हो?"

“एक असली वाला?” उसने कहा। “क्या सच में तुम्हारे पास एक है?”
“यह एक प्रतिकृति है। असली चीज नहीं।”
मैं कार की ओर गया। अक्टूबर की शुरुआत की वह रात शांत थी। कहीं-कहीं बादलों के बीच से आसमान का एक टुकड़ा छनकर लगभग पूरा चाँद दिखा रहा था। कल मौसम सुहाना रहेगा।
मैं नाइकी का स्पोर्ट्स बैग लेकर लौटा और तौलिए में लिपटी खोपड़ी निकाली। उसने अपना वाइन का गिलास नीचे रखा और खोपड़ी को करीब से देखा।
"बेहद अच्छी तरह से बनाया गया है, मैं बस इतना ही कहूंगा।"
मैंने व्हिस्की का एक घूंट लेते हुए समझाया, "इसे एक खोपड़ी विशेषज्ञ ने बनाया था।"
"यह बिल्कुल असली जैसा है।"
मैंने कैसेट डेक बंद किया, बैग से चिमटा निकाला और खोपड़ी पर थपथपाया। खोपड़ी से वही सूखी कराह निकली।
“यह क्या है?”
“हर खोपड़ी की एक अनूठी प्रतिध्वनि होती है। और खोपड़ी विशेषज्ञ इन ध्वनियों से कई तरह की बातें जान सकते हैं।”
“अविश्वसनीय!” उसने हैरानी से कहा। फिर उसने खुद चिमटे से खोपड़ी पर प्रहार करने की कोशिश की। “मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यह प्रतिकृति है।”
उसने खोपड़ी को मेज पर रखा और अपना वाइन का गिलास उठा लिया। हम सब एक साथ बैठ गए, अपने गिलास उठाए और खोपड़ी को निहारने लगे।
"और संगीत चलाओ," उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
मैंने कुछ और कैसेट चुने और सोफे पर वापस लौट आया।
“क्या यहाँ ठीक है? या हमें ऊपर चलना चाहिए?”
मैंने कहा, "यह बिल्कुल सही है।"
पैट बून ने धीमी आवाज़ में गाया, "आई विल बी होम"। समय मानो उल्टी दिशा में बह रहा था, जो मुझे ठीक लग रहा था। समय जहाँ चाहे वहाँ जा सकता था।
उसने आंगन की ओर वाली खिड़की पर लगा लेस का पर्दा खींचा और बत्तियाँ बुझा दीं। चाँदनी में हमने अपने कपड़े उतारे। उसने अपना हार उतारा, अपनी घड़ी उतारी, और अपनी मखमली पोशाक भी उतार दी। मैंने अपनी घड़ी खोली और सोफे के पीछे फेंक दी। फिर मैंने अपना ब्लेज़र उतारा, अपनी टाई ढीली की और अपनी बची हुई व्हिस्की एक ही बार में पी ली।
जैसे ही रे चार्ल्स का ब्लूज़ भरा गाना 'जॉर्जिया ऑन माय माइंड' बजने लगा, उसने अपनी पैंटी होज़ नीचे सरका ली। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, दोनों पैर मेज पर रख दिए और पलों को अपने दिमाग में ऐसे घुमाने लगी जैसे किसी पेय में बर्फ़। सब कुछ, सब कुछ, मानो किसी ज़माने की बात हो। ज़मीन पर पड़े कपड़े,

संगीत, बातचीत। ये सब गोल-गोल घूमता रहता है, और कहाँ रुकेगा ये सबको पता है। जैसे झूले पर बराबरी का मुकाबला। कोई आगे नहीं निकलता, कोई पीछे नहीं छूटता। आप हमेशा उसी जगह पहुँचते हैं।
मैंने आंखें बंद रखते हुए कहा, "ऐसा लगता है जैसे बहुत समय बीत गया हो।"
“बिल्कुल, मूर्ख,” उसने रहस्यमयी अंदाज़ में कहा, मेरे हाथ से गिलास लेते हुए और मेरी कमीज़ के बटन खोलते हुए। धीरे-धीरे, सलीके से, मानो हरी फलियाँ पिरो रही हो।
"तुम्हें कैसे पता?"
“मुझे बस पता है,” उसने कहा। उसने अपने होंठ मेरे नंगे सीने पर रख दिए। उसके लंबे बाल मेरे पेट पर फैल गए।
आँखें बंद करके, मैंने अपने शरीर को संवेदनाओं के हवाले कर दिया। मैंने सुजुकी के बारे में सोचा, मैंने नेल क्लिपर के बारे में सोचा, मैंने सफाईकर्मी के घर के सामने वाली सीढ़ी पर बैठे घोंघे के बारे में सोचा। मैंने अपनी आँखें खोलीं और उसे अपनी ओर खींच लिया, पीछे से हाथ बढ़ाकर उसकी ब्रा का हुक खोलने की कोशिश की। लेकिन वहाँ कोई हुक नहीं था।
“शुरू में ही,” उसने पूछा।
आखिरकार, चीजें बदलती ही रहती हैं।
हमने तीन बार प्रेम किया। फिर हमने नहाया, और बिंग क्रॉस्बी के मधुर गीत सुनते हुए कंबल ओढ़कर सोफे पर एक-दूसरे से लिपट गए। परमानंद का अनुभव हुआ। मेरा इरेक्शन गीज़ा के पिरामिडों की तरह एकदम सही था। उसके बालों से ताज़ी और मनमोहक खुशबू आ रही थी। सोफे के कुशन बढ़िया और मज़बूत थे। पुराने ज़माने के हिसाब से बुरा नहीं था, जब सोफे सच में सोफे हुआ करते थे।
मैंने बिंग के साथ गाना गाया:
ओह डैनी बॉय, पाइप, पाइप पुकार रहे हैं
एक घाटी से दूसरी घाटी तक, और पहाड़ की ढलान से नीचे।
ग्रीष्म ऋतु बीत गई, और सारे गुलाब मुरझा गए—
यह तुम हो, तुम्हें जाना होगा, और मुझे यहीं रहना होगा।
लेकिन गर्मियों में जब मैदानों में हरियाली छा जाए, तब वापस आना।
और जब घाटी बर्फ से ढकी हुई शांत और सफेद हो।
मैं धूप हो या छांव, यहीं रहूंगा।
ओह डैनी बॉय, ओह डैनी बॉय, मैं तुम्हें बहुत याद करूंगा!
“क्या यह आपकी पसंदीदा है?” उसने पूछा।
“हाँ, मुझे यह काफी पसंद है,” मैंने कहा। “मैंने स्कूल में हारमोनिका बजाने की प्रतियोगिता में यह धुन बजाकर एक दर्जन पेंसिलें जीती थीं।”
वह हंस पड़ी। "जिंदगी ऐसी ही मजेदार होती है।"

"हर मिनट हंसी।"
उसने डैनी बॉय गाना चलाया ताकि मैं उसे दोबारा गा सकूं।
लेकिन अगर तुम भी फूलों की तरह मुरझा जाओ, और मर जाओ, जैसे तुम मर ही गए हो, तो मैं आऊँगा और उस जगह को ढूँढूँगा जहाँ तुम पड़े हो, और घुटने टेककर तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा। लेकिन गर्मियों के मौसम में वापस आना।
दूसरी बार देखने पर मुझे बहुत दुख हुआ।
"तुम जहां भी जा रहे हो, वहां से मुझे पत्र भेजना," उसने मुझे छूते हुए कहा।
मैंने वादा किया, "मैं ज़रूर जाऊँगा। अगर वो ऐसी जगह हो जहाँ से मैं चिट्ठियाँ भेज सकूँ।"
उसने हम दोनों के गिलासों में शराब डाली।
मैंने पूछा, "कितने बजे हैं?"
“रात का समय,” उसने उत्तर दिया।

36

अकॉर्डियन

“क्या आपको सचमुच लगता है कि आप मेरे मन की बात पढ़ सकते हैं?” वह पूछती है।

“हाँ। तुम्हारा मन तो हमेशा से यहीं था, लेकिन मुझे पता नहीं था कि उसे कहाँ ढूँढना है। और फिर भी मुझे रास्ता पहले ही दिखाया जा चुका होगा।”

हम किताबों के ढेर के फर्श पर, दीवार से पीठ टिकाकर बैठते हैं और खोपड़ियों की उन पंक्तियों को देखते हैं जो हमें कुछ नहीं बतातीं।

"शायद अगर आप पीछे मुड़कर सोचने की कोशिश करें। एक बार में एक ही बात," वह सुझाव देती हैं।

ज़मीन ठंडी है। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ, और मेरे कानों में खोपड़ियों की खामोशी गूंज उठती है।

“आज सुबह, बूढ़े लोग घर के बाहर एक गड्ढा खोद रहे थे। एक बहुत बड़ा गड्ढा। उनके फावड़ों की आवाज़ से मेरी नींद खुल गई। ऐसा लगा जैसे वे मेरे दिमाग में खुदाई कर रहे हों। फिर बर्फ गिरी और उसे भर दिया।”

और उससे पहले?

“तुम और मैं जंगल में, बिजली कारखाने में गए थे। हम वहां के रखवाले से मिले। उसने मुझे वहां की कार्यप्रणाली दिखाई। हवा से एक अद्भुत शोर हो रहा था।”

"हाँ मैं मुझे याद है।"

“फिर मुझे उनसे एक अकॉर्डियन मिला। एक छोटा सा फोल्डिंग अकॉर्डियन, पुराना, लेकिन फिर भी इस्तेमाल करने लायक।”

वह बैठी सोचती रहती है, बार-बार विचार करती रहती है। कमरे का तापमान पल-पल गिरता जा रहा है।

“क्या आपके पास आपका अकॉर्डियन है?” वह पूछती है।

“अकॉर्डियन?” मैंने सवाल किया।

“हाँ, शायद यही कुंजी हो सकती है। अकॉर्डियन का संबंध गीत से है, गीत का संबंध मेरी माँ से है, और मेरी माँ का संबंध मेरे मन से है। क्या यह सही हो सकता है?”

“बात तो समझ में आती है,” मैंने कहा, “हालांकि इस कड़ी में एक अहम कड़ी गायब है। मुझे एक भी गाना याद नहीं आ रहा।”

"यह गाना होना जरूरी नहीं है।"

मैंने अपने कोट की जेब से अकॉर्डियन निकाला और वाद्य यंत्र हाथ में लेकर उसके बगल में फिर से बैठ गया। मैंने अपने हाथों को धौंकनी के दोनों सिरों पर लगी पट्टियों में डाला और कई तार बजाए।

“बहुत सुंदर!” वह खुशी से बोली। “क्या ये हवा की आवाजें हैं?”

“ये हवा हैं,” मैं कहता हूँ। “मैं ऐसी हवा बनाता हूँ जो आवाज़ें पैदा करती है, फिर उन्हें एक साथ जोड़ता हूँ।”
वह अपनी आंखें बंद कर लेती है और मधुर संगीत सुनने के लिए अपने कान खोलती है।
मैंने अभ्यास किए हुए सभी सुर बजाए। मैंने अपने दाहिने हाथ की उंगलियों को क्रम से बटनों पर चलाया, जिससे एक-एक स्वर निकला। कोई धुन नहीं निकली, लेकिन इतना ही काफी था कि ध्वनि में हवा का एहसास हो। मुझे बस खुद को हवा के हवाले कर देना था, जैसे पक्षी करते हैं।
नहीं, मैं अपना दिमाग नहीं त्याग सकता।
कभी-कभी मेरा मन उदास और अंधकारमय हो जाता है; कभी-कभी यह ऊंचाइयों को छूता है और अनंत तक देखता है। इस नन्हे अकॉर्डियन की धुन से मेरा मन असीम दूरियों तक पहुँच जाता है।
आँखें बंद करके मैं कस्बे की अलग-अलग तस्वीरें अपने सामने लाता हूँ। यहाँ रेत के टीले पर विलो के पेड़ हैं, पश्चिम में दीवार के पास बना चौकीदार टावर है, पावर स्टेशन के पीछे खेती की छोटी सी ज़मीन है। मेरे कमरे के सामने धूप में बैठे बूढ़े लोग, नदी के शांत पानी में दुबके जानवर, नहर की पत्थर की सीढ़ियों पर हवा में लहराती गर्मियों की घास। मुझे लाइब्रेरियन के साथ दक्षिण में स्थित तालाब की सैर याद आती है। मुझे उत्तरी दीवार के पास बनी परित्यक्त बैरक, जंगल में दीवार के पास बने घर और कुएँ के खंडहर दिखाई देते हैं।
मुझे यहां मिले सभी लोगों की याद आती है। बगल वाले कमरे में रहने वाले कर्नल, सरकारी आवासों के बुजुर्ग, पावर स्टेशन के केयरटेकर, गेटकीपर—ये सभी अब निस्संदेह अपने-अपने कमरे में होंगे और बाहर चल रहे बर्फीले तूफान की आवाज सुन रहे होंगे।
मैं हर जगह और हर इंसान को हमेशा के लिए खो दूँगा; हर चेहरा और हर विशेषता जीवन भर याद रखूँगा। अगर यह दुनिया गलत है, अगर इसके निवासियों में बुद्धि नहीं है, तो इसमें किसकी गलती है? मुझे इस शहर से लगभग एक तरह का प्यार महसूस होता है। मैं इस जगह पर नहीं रह सकता, फिर भी मैं इसे खोना नहीं चाहता।
इस समय, मुझे अपने भीतर एक हल्का सा स्पर्श महसूस हो रहा है। एक सुर की मधुरता मेरे मन में गूंज रही है। यह आपस में जुड़ती है, अलग होती है, खोजती है—लेकिन किस चीज़ की? मैं अपनी आँखें खोलता हूँ, अपने दाहिने हाथ की उंगलियों को बटनों पर रखता हूँ, और कई तरह के संयोजन बजाता हूँ।
कुछ समय बाद, मानो इच्छाशक्ति से ही, मैं पहले चार स्वरों को पहचान लेता हूँ। वे भीतरी आकाश से धीरे-धीरे, सुबह की पहली धूप की तरह, उतरते हैं। वे मुझे मिल जाते हैं; यही वो स्वर हैं जिनकी मुझे तलाश थी।
मैं कॉर्ड की कुंजी दबाए रखता हूँ और एक-एक स्वर को बार-बार दबाता हूँ। चारों स्वर मानो और स्वरों, एक और कॉर्ड की ओर आकर्षित हो रहे हों। मैं अगले कॉर्ड को सुनने के लिए उत्सुकता से सुनता हूँ। पहले चार स्वर मुझे अगले पाँच स्वरों तक ले जाते हैं, फिर एक और कॉर्ड और तीन और स्वरों तक।
यह एक धुन है। पूरा गाना नहीं, बल्कि गाने का पहला हिस्सा। मैं तीनों सुर और बारह नोट्स बार-बार बजाता हूँ। मुझे एहसास होता है कि यह एक ऐसा गाना है जिसे मैं जानता हूँ।
डैनी बॉय।

शीर्षक सुनते ही मुझे वह गीत याद आ गया: सुर, स्वर, सामंजस्य अब मेरी उंगलियों से सहजता से बहने लगे। मैंने फिर से धुन बजाई।

मैंने आखिरी बार गाना कब सुना था? मेरा शरीर संगीत के लिए तरस रहा है। मैं इतने लंबे समय से संगीत से दूर रहा हूँ कि मुझे अपनी इस भूख का एहसास भी नहीं हुआ। संगीत की गूंज मेरे भीतर समा जाती है; तनाव कम हो जाता है। संगीत मेरी दृष्टि में एक गर्म चमक लाता है, मन और मांसपेशियों को उनकी अंतहीन सर्दी से जगाता है।

पूरा शहर मेरे संगीत में रचा-बसा है। मेरी हर हरकत से गलियाँ हिलती-डुलती हैं। दीवार ऐसे खिंचती और सिकुड़ती है मानो मेरी अपनी त्वचा हो। मैं गीत को कई बार दोहराता हूँ, फिर अकॉर्डियन को ज़मीन पर रख देता हूँ, पीछे झुकता हूँ और आँखें बंद कर लेता हूँ। यहाँ सब कुछ मेरा ही हिस्सा है—दीवार, द्वार, जंगल, नदी और तालाब। यह सब मेरा ही स्वरूप है।

वाद्य यंत्र रखने के काफी देर बाद भी, वह दोनों हाथों से मुझे थामे बैठी रही, आँखें बंद किए। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और अपने होंठ उसकी पलकों से छुए। आँसुओं ने उसे एक नम, कोमल गर्माहट दी।

उसके गालों पर हल्की सी लाली छा जाती है, जिससे उसके आंसू चमक उठते हैं। तारों की रोशनी की तरह निर्मल, फिर भी स्वर्ग से नहीं आई रोशनी। बल्कि कमरा ही जगमगा रहा है।

मैंने छत का लैंप बुझा दिया, और तभी मुझे उस चमक का स्रोत दिखाई दिया। ये खोपड़ियाँ थीं। इनमें दबी हुई एक प्राचीन अग्नि अब जागृत हो रही थी। फॉस्फोरस की चमक आँखों को सुकून दे रही थी; यह यादों से भर गई, जो मेरे हृदय को गर्माहट और ऊर्जा से भर देती हैं। मैं अपनी दृष्टि को ठीक होते हुए महसूस कर सकता हूँ। अब इन आँखों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

यह एक अद्भुत नज़ारा है। एकदम सन्नाटा। अनगिनत प्रकाश के कण पूरे स्थान को भर देते हैं। मैं एक खोपड़ी उठाता हूँ और अपनी उंगलियों को उसकी सतह पर फेरता हूँ। यहाँ, मुझे एक झलक, मन की एक स्मृति, उसके मन का एक संकेत महसूस होता है। नन्ही चिंगारियाँ मेरी उंगलियों तक उठती हैं, मुझे छूती हैं, प्रत्येक कण में हल्की सी रोशनी, बस एक हल्की सी गर्माहट होती है।

“यही तो तुम्हारा दिमाग है,” मैं कहता हूँ।

वह नम आंखों से मेरी ओर देखती है।

“तुम्हारा मन न तो खोया है और न ही हवा में बिखरा है। यह यहीं है, और कोई इसे छीन नहीं सकता। इसे पढ़कर सुनाने के लिए, मुझे इन सभी चीजों को एक साथ लाना होगा।”

मैंने उसकी पलकों पर फिर से चुंबन किया।

“मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे अकेला छोड़ दो,” मैंने कहा। “इसे पूरा पढ़ने में मुझे सुबह तक का समय लग जाएगा। तब तक मुझे आराम नहीं मिल सकता।”

वह खोपड़ियों की कतारों पर एक नज़र डालती है जो हल्की रोशनी बिखेर रही हैं, फिर ढेर से बाहर निकल जाती है। दरवाज़ा उसके पीछे बंद हो जाता है। प्रकाश की किरणें खोपड़ियों पर नाचती हैं। कुछ उसकी पुरानी ख्वाहिशें हैं, कुछ मेरी अपनी ख्वाहिशें हैं।

मेरी खोज लंबी रही है। इसने मुझे इस चारदीवारी वाले शहर के हर कोने तक पहुँचाया है, लेकिन अंततः मुझे वह बुद्धि मिल गई है जिसे हम खो चुके हैं।

37

प्रकाश, आत्मनिरीक्षण, स्वच्छता

मुझे नहीं पता कि मैं कितनी देर सोई। कोई मेरे कंधों को हिला रहा था। मुझे सोफे की खुशबू आ रही थी। मैं जागना नहीं चाहती थी। नींद बहुत ही प्यारी थी।

फिर भी, उसी समय, मेरे भीतर कुछ ऐसा था जो मुझे जगाने की मांग कर रहा था, जो इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि यह सोने का समय नहीं है। एक कठोर धातु की वस्तु खटखटा रही थी।

जागो! जागो!

मैं उठकर बैठ गया।

मैंने नारंगी रंग का बाथरोब पहना हुआ था। वह सफेद रंग की टी-शर्ट और छोटी सफेद पैंटी पहने मेरे ऊपर झुकी हुई थी और मुझे कंधे से हिला रही थी। उसका पतला शरीर नाजुक, असुरक्षित और मासूम सा लग रहा था, मानो पिछली रात की इटली की अति का कोई निशान न हो। बाहर अभी भोर नहीं हुई थी।

“टेबल! टेबल को देखो!” वह चिल्लाई।

मेज पर क्रिसमस ट्री जैसी एक छोटी सी वस्तु रखी थी। लेकिन यह क्रिसमस ट्री नहीं था: यह बहुत छोटा था और अक्टूबर की शुरुआत ही थी। मैंने ध्यान से उस वस्तु को देखा। वह खोपड़ी थी, ठीक उसी जगह जहाँ मैंने या उसने रखी थी। दोनों ही मामलों में, चमकती हुई वह वस्तु मेरी यूनिकॉर्न की खोपड़ी थी।

खोपड़ी के ऊपर रोशनी खेल रही थी। सूक्ष्म चमक के मंद होते बिंदु। जैसे कोई टिमटिमाता आसमान, कोमल और सफेद। धुंधला, मानो हर चमकता बिंदु एक तरल विद्युत परत से ढका हो, जिससे रोशनी सतह के ऊपर मंडराती हुई प्रतीत हो रही थी। हम बैठे-बैठे उन नन्हे तारामंडलों को घूमते और चक्कर लगाते देख रहे थे। उसने मेरा हाथ थाम रखा था और मैंने अपने बाथरोब का कॉलर कसकर पकड़ रखा था। रात गहरी और शांत थी।

"क्या यही तुम्हारा मजाक है?" उसने कहा।

मैंने अपना सिर हिलाया। मैंने खोपड़ी को पहले कभी चमकते हुए नहीं देखा था। यह कोई फास्फोरसेंट लाइकेन नहीं था, न ही कोई मानवीय करतूत। कोई भी मानव निर्मित ऊर्जा स्रोत इतनी कोमल, शांत रोशनी उत्पन्न नहीं कर सकता था।

मैंने धीरे से उसे अपनी बांह से अलग किया, खोपड़ी की ओर हाथ बढ़ाया और उसे अपनी गोद में ले आया।

“क्या तुम्हें डर नहीं लगता?” उसने अब दबी आवाज़ में पूछा।

“नहीं।” किसी कारणवश, मैं नहीं था।

खोपड़ी पर हाथ रखते हुए, मैंने हल्की सी गर्माहट महसूस की, क्योंकि मेरी उंगलियां उस धुंधली रोशनी की झिल्ली में लिपटी हुई थीं। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं, गर्माहट को अपनी उंगलियों में समाने दिया, और दूर क्षितिज पर बादलों की तरह छवियां मेरी आंखों के सामने तैरने लगीं।

“यह नकली नहीं हो सकता,” उसने कहा। “यह बिल्कुल असली होना चाहिए।”

वह वस्तु मेरे हाथों में प्रकाश बिखेर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसका कोई उद्देश्य हो, कोई अर्थ हो। मानो कोई संकेत देने का प्रयास हो, उस दुनिया के बीच एक कसौटी प्रदान करने का प्रयास हो जिसमें मैं प्रवेश कर रहा था और उस दुनिया के बीच जिसे मैं छोड़ रहा था।

आँखें खोलकर मैंने अपनी उंगलियों के पास टिमटिमाते हुए नीहारिका को देखा। उसकी चमक में कोई खतरा या दुर्भावना नहीं थी। इतना ही काफी था कि मैंने खोपड़ी को अपने हाथों में उठाया और अपनी उंगलियों से प्रकाश की सूक्ष्म नसों को छुआ। डरने की कोई बात नहीं थी।

मैंने खोपड़ी को वापस मेज पर रख दिया और अपनी उंगलियों को उसके गाल पर फेरा।

“तुम्हारे हाथ गर्म हैं,” उसने कहा।

प्रकाश गर्म है।

मैंने उसके हाथों को खोपड़ी पर फेरा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। सफेद रोशनी का एक घेरा धीरे से उसकी उंगलियों को भी घेर लिया।

“मुझे कुछ महसूस हो रहा है,” उसने कहा। “मुझे नहीं पता क्या, लेकिन यह समझ से परे है।”

मैंने कहा, "मैं भी इसका जवाब नहीं दे सकता।"

मैंने झुककर फर्श से अपनी घड़ी उठाई। चार बजकर सोलह मिनट हो गए थे। भोर होने में अभी एक घंटा बाकी था।

मैंने टेलीफोन उठाया और अपना नंबर डायल किया। घर पर फोन किए हुए काफी समय हो गया था, इसलिए नंबर याद करने में मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी। मैंने पंद्रह बार घंटी बजने दी; कोई जवाब नहीं आया। मैंने फोन काट दिया, फिर से डायल किया और पंद्रह बार घंटी बजने दी। फिर भी कोई नहीं।

क्या वो गोल-मटोल लड़की अपने दादाजी को लेने के लिए वापस भूमिगत चली गई थी? या सेमियोटेक या सिस्टम के लड़कों ने उससे शिष्टाचार भेंट की थी? मुझे चिंता नहीं थी। मुझे यकीन था कि वो ठीक-ठाक ही होगी। वो लड़की कमाल की थी। वो मेरी आधी उम्र की थी, और मुझसे दस गुना बेहतर तरीके से हर चीज़ संभाल सकती थी। मैंने थोड़ी उदासी के साथ रिसीवर नीचे रख दिया, यह जानते हुए कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। मैं एक समय के भव्य होटल से झूमर बाहर ले जाते हुए देख रही थी, जो अब दिवालिया हो चुका था। एक-एक करके खिड़कियाँ सील की जा रही थीं, पर्दे उतारे जा रहे थे।

मैं वापस वहीं गया जहाँ वह सोफे पर बैठी थी।

"क्या खोपड़ी आपकी प्रतिक्रिया में चमक रही है?" उसने पूछा।

ऐसा लगता तो है, है ना?

स्तब्ध संसार किसी घने जंगल की तरह शांत था। मैंने नीचे देखा और अपनी कमीज़, पैंट और टाई में खो गया, जो उसके कपड़े, स्लिप और मोज़ों के बीच कालीन पर बिखरे पड़े थे। वे पैंतीस वर्षों के जीवन की परछाईं थे, उसकी परिणति।

“यह क्या है?” उसने पूछा।

“ये कपड़े। कुछ समय पहले तक ये मेरे ही थे। लेकिन अब नहीं। ये किसी और के कपड़े हैं। मैं इन्हें अपने कपड़ों के रूप में नहीं पहचानती।”

"यह सब सेक्स के बाद ही होता है," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "सेक्स के बाद, आप आत्मनिरीक्षण करने लगते हैं।"

“नहीं, ऐसा नहीं है,” मैंने अपना खाली गिलास उठाते हुए कहा। “मैं आत्मचिंतन में नहीं डूब रही हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं दुनिया की छोटी-छोटी बारीकियों पर ध्यान दे रही हूँ। घोंघे, बारिश की आवाज़, हार्डवेयर स्टोर के डिस्प्ले, ऐसी ही चीज़ें।”

"क्या मुझे सीधा खड़ा होना चाहिए?"

“नहीं, कपड़ों को वैसे ही रहने दो। वे बिल्कुल स्वाभाविक लगते हैं।”

मैंने सिगरेट का पैकेट उठाया और बीयर हॉल से माचिस लेकर एक सिगरेट जलाई। फिर मैंने अपने कपड़ों पर एक नज़र डाली। शर्ट की आस्तीनें मोजों पर खिंची हुई थीं, मखमली ड्रेस कमर पर मुड़ी हुई थी, और एक पतली सी स्लिप ढीली-ढाली झंडे की तरह लटकी हुई थी। हार और घड़ी सोफे पर पड़े थे, काला शोल्डर बैग कोने की मेज पर एक तरफ पड़ा था। भले ही कपड़े फेंक दिए गए हों, उनमें एक ऐसी स्थायित्व होती है जो उन्हें पहनने वालों को समझ नहीं आती।

मैंने पूछा, "आपने लाइब्रेरियन बनने का फैसला कैसे किया?"

उन्होंने कहा, “मुझे पुस्तकालय हमेशा से पसंद रहे हैं। वे शांत होते हैं, किताबों से भरे होते हैं और ज्ञान से भरपूर होते हैं। मैं जानती थी कि मैं बैंक या ट्रेडिंग कंपनी में काम नहीं करना चाहती, और मुझे शिक्षक बनना बिल्कुल पसंद नहीं होता। इसलिए मैंने पुस्तकालय को ही चुना।”

मैंने सिगरेट का धुआं छत की ओर उड़ाया और उसे दूर जाते हुए देखा।

“तुम मेरे बारे में जानना चाहते हो?” उसने पूछा। “मेरा जन्म कहाँ हुआ था, मैं बचपन में कैसी थी, मैं कहाँ पढ़ी, मैंने अपना कौमार्य कब खोया, मेरा पसंदीदा रंग क्या है—ये सब?”

“नहीं,” मैंने कहा। “तुम जैसी हो वैसी ही ठीक हो। समय आने पर मैं और सीख लूंगी।”

"मैं आपके बारे में धीरे-धीरे और अधिक जानना चाहूंगा।"

मैंने कहा, “मेरा जन्म समुद्र के किनारे हुआ था। मैं तूफ़ान के बाद अगली सुबह समुद्र तट पर जाता और वहाँ लहरों द्वारा बहाकर लाई गई तरह-तरह की चीज़ें पाता। वहाँ बोतलें, लकड़ी के गट्टे, टोपियाँ, गिलास रखने के डिब्बे, मेज़ें और कुर्सियाँ होतीं, ऐसी चीज़ें जिनका पानी के आसपास कहीं कोई अस्तित्व नहीं होता। मुझे उन चीज़ों को खंगालना अच्छा लगता था, इसलिए मैं हमेशा अगले तूफ़ान का इंतज़ार करता रहता था।”

मैंने अपनी सिगरेट बुझा दी।
“अजीब बात यह है कि समुद्र से बहकर आई हर चीज़ शुद्ध थी। बेकार का कचरा, लेकिन एकदम साफ। उसमें एक भी गंदी चीज़ नहीं थी। समुद्र इस मामले में खास है। जब मैं अब तक के अपने जीवन पर नज़र डालता हूँ, तो मुझे समुद्र तट पर पड़ा वह सारा कचरा दिखाई देता है। मेरा जीवन हमेशा से ऐसा ही रहा है। कचरा इकट्ठा करना, उसे छाँटना और फिर कहीं और फेंक देना। सब कुछ व्यर्थ, बस उसे बह जाने के लिए छोड़ देना।”
“क्या यह आपके गृहनगर में था?”
“यही मेरा पूरा जीवन है। मैं बस एक समुद्र तट से दूसरे समुद्र तट पर जाता रहता हूँ। बीच में जो कुछ घटित होता है, वो मुझे याद तो रहता है, लेकिन बस इतना ही। मैं उन्हें कभी आपस में जोड़ता नहीं। बहुत सारी चीजें हैं, साफ-सुथरी लेकिन बेकार।”
उसने मेरे कंधे को छुआ, फिर रसोई में चली गई। वह अपने लिए वाइन और मेरे लिए बीयर लेकर लौटी।
“मुझे भोर से पहले के अंधेरे के पल अच्छे लगते हैं,” उसने कहा। “शायद इसलिए क्योंकि यह एक साफ स्लेट की तरह होता है। बिल्कुल साफ और अप्रयुक्त।”
वह सोफे पर मेरे बिल्कुल पास आकर चिपक गई, कंबल को अपने स्तनों तक खींच लिया और फिर शराब का एक घूंट पिया। मैंने अपने लिए बीयर डाली और हाथ में गिलास लिए मेज पर रखी खोपड़ी को देखने लगा, जिसकी धुंधली चमक बोतल में झलक रही थी। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया।
मैंने कहा, "मैंने अभी-अभी आपको रसोई से वापस आते हुए देखा।"
“क्या मैं पास हो गया?”
तुम्हारे पैर बहुत खूबसूरत हैं।
"आप उन्हें पसंद करते हो?"
"बहुत ज़्यादा।"
उसने अपना गिलास मेज पर रख दिया और मेरे कान के नीचे चुंबन किया।
“क्या मैंने तुम्हें कभी बताया है?” उसने कहा। “मुझे तारीफें बहुत पसंद हैं।”
जैसे-जैसे भोर नजदीक आती गई, सूरज की रोशनी धीरे-धीरे खोपड़ी की लालिमा को कम करती गई, और खोपड़ी अपनी मूल, साधारण अस्थि-पदार्थ अवस्था में लौट आई। हमने सोफे पर फिर से प्रेम किया, उसकी गर्म सांसें मेरे कंधे पर नम थीं, उसके स्तन छोटे और कोमल थे। फिर, जब सब समाप्त हो गया, तो उसने अपना शरीर मेरे शरीर से सटा लिया और सो गई।
आस-पड़ोस के घरों की छतों पर सूरज की तेज़ रोशनी पड़ रही थी, पक्षी आ-जा रहे थे। मुझे टीवी न्यूज़ की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, किसी के कार स्टार्ट करने की आवाज़ आ रही थी। मैं कितने घंटे सोई थी? मैंने उसका सिर अपने कंधे से हटाया और रसोई में चली गई। मैंने दरवाज़ा बंद किया और रेडियो की आवाज़

धीमी कर दी। एक एफएम स्टेशन, धीमी आवाज़ में, रोजर विलियम्स 'ऑटम लीव्स' बजा रहे थे, साल के उस समय के हिसाब से।

उसकी रसोई मेरी रसोई जैसी ही थी। उपकरण, व्यवस्था, बर्तन, घिसावट, सब कुछ सामान्य था। अलग-अलग कामों के लिए चाकू तो थे, लेकिन उनकी धार उतनी अच्छी नहीं थी। बहुत कम महिलाएं चाकू को ठीक से तेज कर पाती हैं।

पता नहीं क्यों मैं किसी और की रसोई में तांक-झांक कर रही थी। मेरा इरादा तांक-झांक करने का नहीं था, लेकिन हर चीज़ अर्थपूर्ण लग रही थी। रेडियो पर फ्रैंक चैक्सफील्ड ऑर्केस्ट्रा का 'ऑटम इन न्यूयॉर्क' बजने वाला था। मैं बर्तनों और मसालों की बोतलों से भरी अलमारियों की ओर बढ़ी। रसोई अपने आप में एक अलग ही दुनिया थी।

संगीत की मधुर धुनें खत्म होने के बाद, एफएम की होस्टेस ने अपनी रेशमी आवाज़ में कहा: "हाँ, स्वेटर निकालने का समय आ गया है।" मुझे लगभग उनकी खुशबू महसूस हो रही थी। मानो अपडाइक के किसी उपन्यास के दृश्य हों। वुडी हरमन 'अर्ली ऑटम' में झूम रहे हों। घड़ी में सात बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे। सोमवार, 3 अक्टूबर, सुबह 7 बजकर 25 मिनट पर।

आकाश फट गया था, एकदम साफ और गहरा, मानो किसी तेज चाकू से तराशा गया हो। इस जीवन को अलविदा कहने के लिए बुरा दिन नहीं था।

मैंने पानी उबालने के लिए गैस पर रखा, फ्रिज से टमाटर निकाले और उन्हें उबालकर छिलका उतार दिया। मैंने कुछ सब्जियां और लहसुन काटकर टमाटरों में मिला दिए, फिर उसमें थोड़ा सा सॉसेज डालकर धीमी आंच पर पकने के लिए छोड़ दिया। जब तक वह पक रहा था, मैंने सलाद के लिए पत्ता गोभी और शिमला मिर्च को बारीक काट लिया और कॉफी गर्म की। मैंने फ्रेंच ब्रेड के एक टुकड़े पर थोड़ा पानी छिड़का, उसे फॉयल में लपेटा और टोस्टर ओवन में डाल दिया। खाना तैयार होने के बाद, मैंने बैठक से खाली बोतलें और गिलास हटा दिए और उसे जगा दिया।

“हम्म। कुछ अच्छी खुशबू आ रही है,” उसने कहा।

“क्या मैं अब कपड़े पहन सकता हूँ?” मैंने पूछा। “मेरी आदत है कि मैं किसी महिला से पहले कपड़े नहीं पहनता। अगर मैं ऐसा करता हूँ तो सब कुछ अशुभ हो जाता है। शायद यह सिर्फ एक शिष्टाचार है।”

“आपकी विनम्रता तो देखिए!” उसने अपनी टी-शर्ट उतारते हुए कहा। सुबह की नई रोशनी उसके स्तनों और पेट पर पड़ रही थी, जिससे उसकी त्वचा पर मौजूद बारीक बाल और भी निखर रहे थे। वह खुद को निहारने के लिए कुछ देर रुकी।

“बुरा नहीं।” यह उनका विनम्र मूल्यांकन था।

मैंने कहा, "बिल्कुल भी बुरा नहीं है। चलो खाना खाते हैं।"

उसने एक पीली स्वेटशर्ट और एक फीकी जींस पहनी। हम रसोई की मेज पर आमने-सामने बैठ गए और नाश्ता शुरू किया।

“शेफ को बधाई,” उसने कहा। “स्वादिष्ट खाना है,” उसने कहा। “अकेले रहते हुए आप इतना अच्छा खाना कैसे बना सकते हैं? क्या आपको इससे कोई परेशानी नहीं होती?”
“नहीं, ऐसा नहीं है। मेरी शादी को पाँच साल हो गए थे, लेकिन अब मुझे मुश्किल से ही याद है कि वह कैसा था। ऐसा लगता है जैसे मैं हमेशा से अकेली ही रही हूँ।”
“क्या आपने कभी दोबारा शादी करने के बारे में नहीं सोचा?”
"क्या इससे कोई फर्क पड़ेगा?"
वह हंस पड़ी। मैंने घड़ी देखी। साढ़े आठ बज रहे थे।
“आज के लिए आपकी क्या योजनाएँ हैं?” उसने पूछा।
मैंने कहा, “चलो यहाँ से नौ बजे निकलते हैं और पार्क चलते हैं। मैं धूप में बैठना चाहता हूँ। शायद दो-चार बियर पी लूँ। फिर लगभग साढ़े दस बजे, मैं गाड़ी चलाने का सोच रहा हूँ। उसके बाद मैं निकल जाऊँगा। तुम्हारा क्या ख्याल है?”
“मैं घर आऊँगी, कपड़े धोऊँगी, घर साफ करूँगी, और फिर लेटकर सेक्स के बारे में सोचूँगी। क्या यह ठीक रहेगा?”
"मुझे तुमसे ईर्ष्या है।"
जब मैं बर्तन धो रही थी, वह शावर में गाना गा रही थी। बर्तन धोने वाला साबुन पर्यावरण के अनुकूल वनस्पति-आधारित था, जिसमें न के बराबर झाग बनता था। मैंने बर्तन पोंछे और मेज पर रख दिए। फिर मैंने एक टूथब्रश उधार लिया। क्या उसके पास शेव करने के लिए कुछ था?
“अलमारी के ऊपरी दाहिने कोने में,” उसने कहा। “उसका सामान अभी भी वहीं होना चाहिए।”
मुझे एक शिख रेज़र और जिलेट लेमन-लाइम फोमी शेविंग क्रीम का एक डिब्बा मिला, जिसके नोजल के आसपास सफेद रंग की सूखी फुहारें थीं। मौत के बाद शेविंग क्रीम के डिब्बे आधे इस्तेमाल किए हुए ही मिलते हैं।
“मिल गया?” उसने पुकार कर पूछा।
“हाँ,” मैंने कहा और उसके पति का सामान और एक तौलिया लेकर रसोई में लौट आई। मैंने पानी गर्म किया और दाढ़ी बनाई। बाद में मैंने रेज़र को धोया, और मृत व्यक्ति की कुछ दाढ़ी मेरी दाढ़ी के साथ धुल गई।
वह अभी भी कपड़े पहन रही थी, इसलिए मैंने बैठक में बैठकर सुबह का अखबार पढ़ा। मेरे आखिरी कुछ घंटों में मुझे दिलचस्पी लेने लायक कुछ भी नहीं था।
वह बेज रंग की पैंट और भूरे रंग की चेक वाली ब्लाउज पहने, अपने बालों में कंघी करते हुए बाहर आई। मैंने अपनी टाई बांधी और ब्लेज़र पहन लिया।
“तुम इस यूनिकॉर्न की खोपड़ी का क्या करना चाहते हो?” उसने पूछा।
मैंने कहा, "यह तुम्हारे लिए एक तोहफा है। इसे कहीं ऐसी जगह रख दो, जहाँ से लोग इसके बारे में बातें करें।"

"क्या लगता है यह फिर से चमकेगा?"
“मुझे पूरा यकीन है ऐसा ही होगा,” मैंने कहा। फिर मैंने उसे एक बार और गले लगाया, ताकि उसकी गर्माहट मेरे मन में हमेशा के लिए बस जाए।

38

पलायन

भोर की रोशनी के साथ खोपड़ियों की चमक फीकी पड़ने लगती है। धुंधली धूसर रोशनी धीरे-धीरे कम होती जाती है, जैसे-जैसे एक-एक करके चिंगारियां बुझती जाती हैं।

जब तक आखिरी अंगारा भी बुझ न जाए, मेरी उंगलियां खोपड़ियों पर दौड़ती रहेंगी, उनकी चमक को महसूस करती रहेंगी। इस एक रात में मैं कुल रोशनी का कितना हिस्सा पढ़ पाऊँगी? खोपड़ियाँ बहुत हैं, समय कम है। मैं समय की परवाह किए बिना एक-एक खोपड़ी पर अपना ध्यान केंद्रित करती रहती हूँ। उसका मन मेरी उंगलियों पर पल-पल, ताप के अलग-अलग चरणों में प्रकट होता है। यह मात्रा का प्रश्न नहीं है। न संख्या का, न आयतन का, न अनुपात का। मन की हर बात को पढ़ना संभव नहीं है।

आखिरी खोपड़ी के वापस शेल्फ पर रखे जाने के साथ ही मैं गिर पड़ा। बाहर के मौसम का मुझे कुछ भी पता नहीं चल रहा था। एक हल्की सी उदासी चुपचाप खोपड़ियों के ढेर में समा गई, मानो उन्हें एक बार फिर गहरी नींद में सुला रही हो। फिर भी, जब मैंने अपनी उंगलियों को अपने गालों पर रखा, तो मुझे उनकी गर्माहट का हल्का सा एहसास हुआ।

मैं तब तक बैठा रहता हूँ जब तक शांति और शीतलता मेरे विचारों को शांत नहीं कर देती। समय अनियमित गति से आगे बढ़ रहा है, फिर भी एक निरंतर सुबह का एहसास होता है, परछाइयाँ स्थिर हैं। उसके मन के क्षणिक अंश मेरे मन में घूमते हैं, मेरे भीतर समा जाते हैं, और मेरे अस्तित्व में अपना स्थान बना लेते हैं। इन्हें एक सुसंगत रूप देने में कितना समय लगेगा? और फिर, इसे उस तक पहुँचाने में, इसे जड़ जमाने देने में कितना समय लगेगा? मैं जानता हूँ कि मुझे उसके मन को उसे वापस लौटाना होगा।

मैं किताबों के ढेर से उठकर उसे पढ़ने के कमरे में अकेली बैठी हुई पाती हूँ। धुंधली रोशनी में उसकी आकृति कुछ धुंधली सी दिखती है। उसके लिए भी वह रात लंबी रही है। बिना कुछ कहे, वह उठती है और कॉफ़ी पॉट को चूल्हे पर रख देती है। मैं खुद को गर्म करने के लिए चली जाती हूँ।

“तुम थके हुए हो,” वह कहती है।

मेरा शरीर एक जड़ पिंड की तरह है; मैं मुश्किल से हाथ उठा पा रही हूँ। मैं पूरी रात सपनों को पढ़ती रही हूँ, और अब थकान हावी होने लगी है। जैसा कि उसने मुझे पहले दिन बताया था: शरीर चाहे कितना भी थक जाए, थकान को कभी भी विचारों पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

मैंने उससे कहा, "तुम्हें घर जाकर आराम करना चाहिए था। तुम्हें यहाँ रुकने की ज़रूरत नहीं थी।"

वह एक कप कॉफी डालती है और मुझे देती है।

“तुम मेरे मन की बात पढ़ रहे थे। मैं कैसे जा सकता था?”

मैं कृतज्ञता से सिर हिलाता हूँ और कॉफी की एक घूंट लेता हूँ। पुरानी दीवार घड़ी में आठ बजकर पंद्रह मिनट हो रहे हैं।
"क्या मैं नाश्ता बना दूं?"
“नहीं, धन्यवाद,” मैंने कहा।
“तुमने कल से कुछ नहीं खाया है।”
मुझे भूख नहीं लग रही। मुझे नींद चाहिए। क्या आप मुझे ढाई बजे जगा सकते हैं? तब तक, क्या आप कृपया यहीं बैठेंगे और मेरी देखभाल करेंगे? क्या मैं आपसे ऐसा करने का अनुरोध कर सकता हूँ?
वह दो कंबल निकालती है और मुझे ओढ़ा देती है। पहले की तरह—कब हुआ था?—उसके बाल मेरे गालों को छूते हैं। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और चूल्हे में जलते कोयलों की चटकने की आवाज़ सुनता हूँ।
मैंने उससे पूछा, "सर्दी कितने दिन चलेगी?"
“मुझे नहीं पता,” वह जवाब देती है। “कोई नहीं कह सकता। मुझे लगता है, शायद, यह ज्यादा समय तक नहीं चलेगा।”
मैंने उसका गाल छूने के लिए हाथ बढ़ाया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, वह मेरे स्पर्श का आनंद ले रही थी।
"क्या यह गर्माहट मेरे दिमाग से आ रही है?"
आपको इसमें कैसा महसूस होता है?
वह कहती हैं, "यह वसंत ऋतु जैसा है।"
“यह तुम्हारा वसंत है, तुम्हें विश्वास करना होगा। तुम्हारा मन फिर से तुम्हारा हो जाएगा।”
“हां,” वह मेरी आंखों पर हाथ रखते हुए कहती है। “अब सो जाओ।”
वह मुझे ठीक ढाई बजे जगाती है। मैं अपना कोट, स्कार्फ, दस्ताने और टोपी पहन लेता हूँ।
मैंने उससे कहा, "अकॉर्डियन की रक्षा करो।"
वह मेज से अकॉर्डियन को ऐसे उठाती है मानो उसे अपने हाथों में तौल रही हो, फिर उसे वापस नीचे रख देती है।
वह कहती है, "यह मेरे पास सुरक्षित है।"
बाहर हवा धीमी हो रही है, बर्फ़बारी कम होकर हल्की फुहारों में बदल गई है। पिछली रात का बर्फीला तूफान थम गया है, हालांकि आसमान में अभी भी घने बादल छाए हुए हैं। यह शांति बस कुछ समय के लिए ही है।
मैं पुराने पुल को पार करके दक्षिण की ओर जाता हूँ, फिर पश्चिमी पुल को पार करके उत्तर की ओर। मुझे दीवार के उस पार से धुआँ उठता दिखाई देता है। पहले रुक-रुक कर सफेद धुएँ के गुच्छे दिखाई देते हैं, जो धीरे-धीरे घने होकर जलते हुए शवों से निकलने वाले काले, उठते हुए भूरे धुएँ के गुच्छों में बदल जाते हैं।
द्वारपाल सेब के बाग में है। मैं द्वार-भवन की ओर तेज़ी से बढ़ता हूँ। सब कुछ थम सा गया है, शहर की सारी

आवाज़ें बर्फ में दब गई हैं। मेरे बर्फीले जूतों की नुकीली नोकें नई गिरी बर्फ पर असामान्य रूप से तेज़ आवाज़ करती हैं।

द्वारगृह सुनसान है। चूल्हा बुझ चुका है, लेकिन अंदर अभी भी गर्मी है। मेज पर गंदी प्लेटें बिखरी पड़ी हैं। द्वारपाल का पाइप भी वहीं पड़ा है। ऐसा लगता है कि किसी भी क्षण वह प्रकट होगा और अपना विशाल हाथ मेरे कंधे पर रख देगा। ब्लेडों की कतारें, केतली, उसकी गंध, सब कुछ मेरे आत्मविश्वास को कमज़ोर कर रहा है।

मैंने दीवार पर लगे हुक से चाबियाँ सावधानी से उठाईं और चुपके से पिछले दरवाजे से शैडो ग्राउंड्स की ओर निकल गया। वहाँ एक भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहा था। चारों ओर सफेद चादर फैली हुई थी, बीच में खड़े इकलौते गहरे रंग के एल्म के पेड़ की सीधी शाखा तक। यह बहुत ही परिपूर्ण, बहुत ही पवित्र था। बर्फ पर हवा की लहरों की आकृतियाँ बनी हुई थीं, एल्म का पेड़ सफेद आवरण में लिपटी हुई अपनी टेढ़ी शाखाओं को फैलाए खड़ा था। कुछ भी नहीं हिल रहा था। बर्फ गिरना बंद हो गया था, हवा में बस एक हल्की सी सरसराहट थी, मानो हवा का एक झोंका हो। अब वह क्षण आ गया है जब मैं इस शांत लेकिन क्षणभंगुर अनंत काल को अपवित्र कर दूंगा।

अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है। मैं चाबियाँ निकालता हूँ और चारों को एक-एक करके आज़माता हूँ; कोई भी फिट नहीं बैठती। मेरी बगलों से ठंडा पसीना टपकने लगता है। मुझे द्वारपाल की छवि याद आती है जो इस लोहे के द्वार को खोल रहा था। ये चार चाबियाँ ही थीं, इसमें कोई गलती नहीं हो सकती। मुझे याद है मैंने उन्हें गिना था। उनमें से कोई एक तो सही चाबी होगी ही।

मैंने चाबियों को हाथ से गर्म करने के लिए अपनी जेब में रख लिया; फिर मैंने दोबारा कोशिश की। इस बार, तीसरी चाबी पूरी तरह अंदर चली गई और एक तेज़, सूखी खनखनाहट के साथ घूमी। धातु की वह आवाज़ सुनसान इलाके में गूंज उठी, इतनी तेज़ कि कस्बे में सभी लोग सतर्क हो गए। मैंने घबराकर चारों ओर देखा। किसी का कोई निशान नहीं था। मैंने भारी गेट को धीरे से खोला और अंदर घुस गया, चुपचाप उसे अपने पीछे बंद कर लिया।

बाड़े में जमी बर्फ नरम और गहरी है। मेरे पैर बाड़े में आगे बढ़ते हैं, बेंच के पास से गुजरते हुए। एल्म के पेड़ की शाखाएँ धमकी भरे अंदाज़ में नीचे झुकी हुई हैं। कहीं दूर से एक पक्षी की तीखी आवाज़ आती है।

झोपड़ी के अंदर की हवा बाहर से भी ज़्यादा ठंडी है। मैं गुप्त दरवाज़ा खोलता हूँ और सीढ़ी से तहखाने में उतरता हूँ।

मेरी परछाई उसकी चारपाई पर बैठी मेरा इंतजार कर रही है।

"मुझे लगा था कि तुम कभी नहीं आओगे," उसकी सफेद सांसों के गुबार कहते हैं।

“मैंने वादा किया था, है ना?” मैं कहती हूँ। “हमें यहाँ से जल्दी निकलना होगा। यहाँ की बदबू असहनीय है।”

“मैं सीढ़ी नहीं चढ़ सकता,” परछाई आह भरते हुए कहती है। “मैंने अभी कोशिश की, पर नहीं चढ़ पाया। लगता है मेरी हालत जितनी मैंने सोची थी उससे भी बदतर है। विडंबना है ना? इतने समय तक कमज़ोर होने

का नाटक करते-करते मुझे पता ही नहीं चला कि मैं सच में कमज़ोर हो रहा हूँ। कल रात की ठंड ने मेरी हड्डियों तक को जकड़ लिया है।"
मैं तुम्हें उठने में मदद करूँगा।
मेरी परछाई अपना सिर हिलाती है। "इससे कोई फायदा नहीं होगा। मैं भाग नहीं सकता। मेरे पैर कभी भी भागने में सक्षम नहीं होंगे। यह मेरा अंत है।"
"तुमने ही इसकी शुरुआत की है। अब तुम पीछे नहीं हट सकते," मैंने कहा। "अगर मुझे तुम्हें अपनी पीठ पर उठाकर भी यहाँ से निकालना पड़े, तो मैं निकाल लूँगा।"
मेरी परछाई धंसी हुई आँखों से ऊपर देखती है। "अगर तुम इतना मजबूत महसूस करते हो, तो बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ," वह कहता है। "लेकिन मुझे बर्फ में ले जाना आसान नहीं होगा।"
मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह योजना इसके विपरीत होगी।
मैं अपने थके हुए साथी को सीढ़ी पर खींचता हूँ, फिर उसे सहारा देकर बाड़े के पार ले जाता हूँ। दीवार की अँधेरी ऊँचाइयाँ हम दोनों भागते हुए लोगों को नीचे देख रही हैं। एल्म के पेड़ की शाखाएँ बर्फ का भारी बोझ गिराकर वापस अपनी जगह आ जाती हैं।
मेरी परछाई कहती है, "मेरे पैर लगभग सुन्न हो गए हैं। मैंने व्यायाम किया ताकि लगातार लेटे रहने से वे सूख न जाएं, लेकिन कमरा बहुत तंग था।"
मैं अपनी परछाई को बाड़े से बाहर ले जाता हूँ और फाटक बंद कर देता हूँ। अगर सब ठीक रहा, तो द्वारपाल को पता भी नहीं चलेगा कि हम भाग गए हैं।
"अब यहाँ से कहाँ जाएँ?" मैंने पूछा।
"दक्षिणी तालाब," परछाई कहती है।
"दक्षिणी पूल?"
"हां। हम पानी में कूदकर बच निकलते हैं।"
"ये तो आत्महत्या है। पानी का बहाव बहुत तेज़ है। हम नीचे खिंच जाएंगे और डूब जाएंगे।"
मेरी परछाई कांपती है और खांसती है। "शायद। लेकिन यही एकमात्र रास्ता है। मैंने हर बात पर विचार कर लिया है; आपको मुझ पर विश्वास करना होगा। मैं इस पर अपनी जान दांव पर लगा रहा हूँ। मैं आपको रास्ते में सारी बातें बता दूंगा। द्वारपाल एक घंटे में वापस आने वाला है, और बैल हमारा पीछा ज़रूर करेगा। हमारे पास समय नहीं है।"
आस-पास कोई नज़र नहीं आ रहा। बस दो पैरों के निशान हैं—एक मेरे, जो द्वार की ओर आ रहे हैं, और दूसरा द्वारपाल के, जो वहाँ से जा रहा है। साथ ही, गाड़ी के पहियों के निशान भी हैं। मैं अपनी परछाई को अपनी पीठ पर लाद लेता हूँ। हालाँकि उसका वज़न लगभग कम हो चुका है, फिर भी उसका बोझ हल्का नहीं होगा। पश्चिमी और दक्षिणी पहाड़ियों तक का रास्ता बहुत लंबा है। मुझे परछाई के बिना जीने की आदत हो गई है, और अब मुझे नहीं पता कि मैं परछाई का सामना कर पाऊँगा या नहीं।

हम बर्फ से ढकी सड़कों पर पूरब की ओर बढ़ते हैं। मेरे पहले के पदचिह्नों के अलावा, अब केवल जानवरों के बेतरतीब निशान ही दिखाई देते हैं। मेरे कंधे के ऊपर, दीवार के उस पार से घना धूसर धुआँ उठ रहा है, एक भयावह मीनार जिसका शिखर बादलों में खो गया है। द्वारपाल कई शवों को जला रहा है। कल रात के बर्फीले तूफान ने दर्जनों जानवरों को मार डाला है। उन सभी को जलाने में लगने वाला समय हमें कुछ दूरी प्रदान करेगा। मैं जानवरों के इस मौन षड्यंत्र के लिए उनका आभारी हूँ।

बर्फ मेरे बूटों की कीलों में जम गई है। इससे मेरा हर कदम रुक रहा है और मैं फिसल रहा हूँ। काश मैंने किसी तरह की स्लेज (बस्ती गाड़ी) ढूंढी होती! कस्बे में ऐसी कोई गाड़ी तो जरूर होगी। हम पश्चिम पुल तक पहुँच चुके हैं और वापस जाना अब मुमकिन नहीं। इस कठिन यात्रा से मुझे पसीना आ रहा है।

“तुम्हारे पदचिह्न हमारी पोल खोल रहे हैं,” मेरी परछाई ने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा। मैं कल्पना करता हूँ कि द्वारपाल हमारे पीछे पड़ा है, पूरी ताकतवर, बिना किसी को उठाए, बर्फ पर दौड़ता हुआ। हमें उसके वापस द्वारगृह लौटने से पहले जितनी दूर भाग सकते हैं, भागना होगा।

मैं उसके बारे में सोचता हूँ, जो पुस्तकालय में मेरा इंतज़ार कर रही है। मेज पर अकॉर्डियन रखा है, अंगारे सुलग रहे हैं, कॉफी पॉट से भाप निकल रही है। मुझे उसके लंबे बाल अपने गालों को छूते हुए महसूस होते हैं, उसकी उंगलियाँ मेरे कंधे पर टिकी हैं। मैं अपनी परछाई को यहाँ मरने नहीं दे सकता, मैं द्वारपाल को उसे तहखाने में मरने के लिए वापस फेंकने नहीं दे सकता। मुझे आगे बढ़ते रहना होगा, आगे बढ़ते रहना होगा, जबकि दीवार के उस पार से अभी भी धुआँ उठ रहा है।

यात्रा के दौरान हमें कई जानवर दिखाई देते हैं। वे बर्फ के नीचे बचे थोड़े से भोजन की व्यर्थ खोज में भटकते रहते हैं। उनकी निर्मल नीली आँखें हमारे संघर्ष को देखती रहती हैं। क्या वे हमारे कार्यों का अर्थ समझते हैं?

हम पहाड़ी पर चढ़ना शुरू करते हैं। मेरी सांस फूल रही है। मैंने खुद भी काफी समय से व्यायाम नहीं किया है। मेरी हांफती सांसों से गर्म बर्फ के नए-नए टुकड़े निकल रहे हैं।

"क्या तुम आराम करना चाहते हो?" मेरी परछाई ने मेरे कंधे के ऊपर से पूछा।

"बस पांच मिनट, कृपया।"

“बिल्कुल, कोई बात नहीं। चलने में असमर्थ होना मेरी गलती है। मैंने सब कुछ तुम पर थोप दिया है।”

लेकिन यह मेरे अपने भले के लिए भी है। है ना?

आपको इस बात पर कभी संदेह नहीं करना चाहिए।

मैंने अपनी परछाईं को नीचे कर दिया। मुझे इतनी गर्मी लग रही है कि मुझे ठंड भी महसूस नहीं हो रही। लेकिन जांघ से लेकर पैर की उंगलियों तक, मेरी टांगें पत्थर जैसी सख्त हैं।

“और फिर भी,” मेरी परछाई सोचती है, “अगर मैंने तुमसे कुछ नहीं कहा होता और चुपचाप मर गया होता, तो तुम खुश होते। अपने तरीके से।”

“शायद ऐसा हो,” मैंने कहा। “लेकिन मुझे यह जानकर कोई अफसोस नहीं है। मुझे जानना जरूरी था।”

परछाई मुट्ठी भर ढीली बर्फ उठाती है और उसे बिखरने देती है।

“शुरू में तो मुझे सिर्फ अंतर्ज्ञान से ही यह एहसास हुआ कि शहर से बाहर निकलने का रास्ता है,” वे कहते हैं। “क्योंकि शहर की पूर्णता में सभी संभावनाएं शामिल होनी चाहिए। इसलिए, अगर बाहर निकलने का रास्ता हमारी इच्छा है, तो हमें वही मिलेगा। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?”

“हां। मुझे यह बात कल ही समझ में आई। कि यहां सब कुछ है और यहां कुछ भी नहीं है।”

मेरी परछाई मुझे एक दृढ़, समझदारी भरी नज़र से देखती है। बर्फ़बारी तेज़ हो रही है। एक और बर्फीला तूफान आ रहा है।

“अगर निकलने का कोई रास्ता निकालना ही है, तो उसे एक-एक करके ढूँढ़ा जा सकता है,” उसने आगे कहा। “हम गेट को तो छोड़ ही सकते हैं, जहाँ गेटकीपर हमें ज़रूर पकड़ लेगा। वैसे भी, गेट ही वो पहली जगह है जहाँ से कोई भी भागने की सोचेगा; शहर इतने खुले रास्ते से निकलने की इजाज़त नहीं देगा। दीवार पर चढ़ना नामुमकिन है। पूर्वी गेट ईंटों से बंद है, और पता चला है कि जहाँ नदी प्रवेश करती है वहाँ लोहे की जाली लगी है। तो बस दक्षिणी तालाब ही बचता है। हम वहीं से निकलेंगे जहाँ से नदी निकलती है।”

आप इस बारे में कैसे निश्चित हो सकते हैं?

मुझे बस इतना पता है। केवल दक्षिणी तालाब ही असुरक्षित और अछूता बचा है। वहाँ कोई बाड़ नहीं है, बाड़ की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने उस जगह को भय से घेर लिया है।

आपको यह कब पता चला?

“जब मैंने पहली बार नदी देखी, तो मैं द्वारपाल के साथ पश्चिमी पुल पर गया। मैंने पानी की ओर देखा। नदी जीवन से भरपूर थी। मैं इसे महसूस कर सकता था। इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। मेरा मानना है कि अगर हम खुद को पानी के हवाले कर दें, तो नदी का प्रवाह हमें बाहर ले जाएगा। शहर से बाहर और एक वास्तविक दुनिया में वापस। आपको मुझ पर भरोसा करना होगा।”

“आपकी बात में दम है,” मैंने जवाब दिया। “नदी बाहर मौजूद हर चीज़ से, हमारी पुरानी दुनिया से जुड़ती है। पता नहीं क्यों, आजकल मुझे उस दुनिया की कुछ बातें याद आने लगी हैं। छोटी-छोटी बातें। हवा, आवाज़ें, रोशनी। गाने मुझे फिर से जीवंत कर देते हैं।”

“यह दुनिया सबसे अच्छी नहीं है,” मेरी परछाई कहती है। “मैं कोई वादा नहीं करती, लेकिन यही वह दुनिया है जहाँ हम रहते हैं। यहाँ अच्छा और बुरा दोनों होगा। यहाँ न अच्छा होगा और न बुरा। यहीं तुम्हारा जन्म हुआ है, यहीं तुम रहोगे और यहीं तुम्हारी मृत्यु होगी। और जब तुम मरोगे, तो मैं भी मर जाऊँगी। यही प्रकृति का नियम है।”

हम शहर की ओर देखते हैं। घंटाघर, नदी, पुल, दीवार और धुआँ। सब कुछ बर्फ से ढके विशाल आकाश के नीचे सिमटा हुआ है, मानो दुनिया के छोर पर एक विशाल झरना गिर रहा हो।

मेरी परछाई कहती है, "हमें चलना चाहिए। जिस तरह से बर्फ गिर रही है, हो सकता है द्वारपाल को रुकना पड़े और जल्दी लौटना पड़े।"

मैं खड़ा हो जाता हूँ और अपनी टोपी के किनारे से बर्फ झाड़ता हूँ।

39

पॉपकॉर्न, लॉर्ड जिम, विलुप्ति

पार्क जाते समय, हम रास्ते में एक सुविधा स्टोर पर रुके और कुछ बीयर खरीदी। मैंने उससे उसकी पसंद पूछी, और उसने कहा कि कोई भी ब्रांड जिसमें झाग हो और जिसका स्वाद बीयर जैसा हो।

मेरे पास कुछ अतिरिक्त पैसे थे, लेकिन मिलर हाई लाइफ ही एकमात्र आयातित शराब थी जो मुझे मिल सकी।

शरद ऋतु का आकाश इतना साफ था मानो उसी सुबह बना हो। ड्यूक एलिंगटन के संगीत के लिए एकदम सही मौसम। हालांकि, ड्यूक एलिंगटन तो अंटार्कटिका के किसी सैन्य अड्डे पर नए साल की पूर्व संध्या के लिए भी बिल्कुल उपयुक्त होते। मैं गाड़ी चला रहा था और लॉरेंस ब्राउन के गीत "डू नथिंग टिल यू हियर फ्रॉम मी" में ट्रॉम्बोन सोलो की धुन गुनगुना रहा था, उसके बाद जॉनी हॉजेस के गीत "सोफिस्टिकेटेड लेडी" की धुन भी बज रही थी।

हिबिया पार्क के पास गाड़ी रोककर हम कार से उतरे और अपने छह पैक बियर के साथ घास पर लेट गए। सोमवार की सुबह पार्क इतना सुनसान था मानो सारे विमानों के उड़ जाने के बाद किसी विमानवाहक पोत का डेक सुनसान हो।

मैंने कहा, "एक भी बादल नहीं है।"

"वहाँ एक है," उसने हिबिया हॉल के ऊपर लगे एक रुई के गुच्छे की ओर इशारा करते हुए कहा।

मैंने कहा, "इसका कोई खास महत्व नहीं है।"

उसने बेहतर ढंग से देखने के लिए अपने हाथों से अपनी आँखों को ढका। "खैर, मुझे नहीं लगता। शायद इसे वापस फेंक देना चाहिए।"

हमने कुछ देर तक उस छोटे बादल को देखा। मैंने बीयर का दूसरा कैन खोला।

“आपने तलाक क्यों लिया?” उसने पूछा।

"क्योंकि वह मुझे यात्राओं के दौरान कभी खिड़की के पास नहीं बैठने देती थी।"

वह हंस पड़ी। "सच में, क्यों?"

"दरअसल, यह बहुत सरल है। पांच या छह साल पहले, वह अचानक चली गई। फिर कभी वापस नहीं आई।"

और फिर आपने उसे दोबारा नहीं देखा?

“नहीं,” मैंने कहा, फिर बीयर का एक बड़ा घूंट लिया। “कोई खास वजह नहीं है।”

"शादी इतनी मुश्किल थी?"

मैंने कहा, "विवाहित जीवन बहुत अच्छा था। लेकिन असल सवाल तो यह है ही नहीं, है ना? दो लोग एक ही बिस्तर पर सो सकते हैं और आंखें बंद करते ही अकेलेपन का अनुभव कर सकते हैं, अगर आप मेरी बात समझ रहे हों तो।"
"हां, मुझे ऐसा ही लगता है।"
“कुल मिलाकर, मानवता को सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। लेकिन मेरी राय में, दो प्रकार के लोग होते हैं: व्यापक दृष्टि वाले और सीमित दृष्टि वाले। मैं, शायद, बाद वाली श्रेणी में आता हूँ। ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी सीमाओं को सही ठहराने में कभी कोई खास समस्या हुई हो। हर इंसान को कहीं न कहीं सीमाएँ तो तय करनी ही पड़ती हैं।”
"लेकिन जो लोग इस तरह सोचते हैं, उनमें से ज्यादातर अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाते रहते हैं, है ना?"
“मैं नहीं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि हर किसी को हाई-फाई में रिकॉर्ड सुनने की ज़रूरत हो। वायलिन को बाईं ओर और बास को दाईं ओर रखने से संगीत अधिक गंभीर नहीं हो जाता। यह तो बस एक ऊबी हुई कल्पना को जगाने का एक अधिक जटिल तरीका है।”
"क्या आप कुछ ज्यादा ही कट्टरपंथी नहीं हो रहे हैं?"
"बिल्कुल वही जो उसने कहा।"
"आपकी पत्नी?"
“हाँ। ‘स्पष्ट सोच वाली, लेकिन अडिग’। उसके ठीक यही शब्द थे। एक और बियर?”
“कृपया,” उसने कहा।
मैंने मिलर के कैन पर लगी रिंग को खींचा और उसे उसे दे दिया।
“लेकिन आप खुद को कैसे देखते हैं?” उसने पूछा।
मैंने पूछा, "क्या तुमने कभी 'द ब्रदर्स करामाज़ोव' पढ़ी है?"
"बहुत समय पहले की बात है।"
“खैर, अंत में, अलेयोशा एक युवा छात्र कोलिया क्रासोटकिन से बात कर रहा है। और वह कहता है, कोलिया, तुम्हारा भविष्य दुखमय होगा। लेकिन कुल मिलाकर, तुम्हारा जीवन सुखमय होगा।”
दो बियर पीने के बाद, मैंने तीसरी बियर खोलने से पहले हिचकिचाया।
मैंने कहा, "जब मैंने पहली बार इसे पढ़ा, तो मुझे समझ नहीं आया कि अलेयोशा का क्या मतलब था। दुखों से भरा जीवन कुल मिलाकर सुखी कैसे हो सकता है? लेकिन फिर मुझे समझ आया कि दुख भविष्य तक ही सीमित हो सकता है।"
मुझे बिलकुल भी समझ नहीं आ रहा कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।
मैंने कहा, "मुझे भी नहीं पता। अभी नहीं।"
वह हंस पड़ी और खड़ी हो गई, अपनी पैंट से घास झाड़ते हुए बोली, "मैं जा रही हूँ। वैसे भी लगभग समय हो ही गया है।"

मैंने अपनी घड़ी देखी। दस बजकर बाईस मिनट हो रहे थे।
मैंने कहा, "मैं तुम्हें घर छोड़ दूंगा।"
“कोई बात नहीं,” उसने कहा। “मुझे कुछ खरीदारी करनी है। मैं मेट्रो से वापस आ जाऊंगी। मुझे लगता है कि यही बेहतर रहेगा।”
मैं यहाँ थोड़ी देर और रुकूँगा। यहाँ का मौसम बहुत अच्छा है।
"नेल क्लिपर के लिए धन्यवाद।"
"मुझे खुशी हुई।"
"वापस आने पर मुझे फोन कर देना, ठीक है?"
मैंने कहा, "मैं पुस्तकालय जाऊंगी। मुझे काम पर लोगों से मिलना-जुलना अच्छा लगता है।"
“तब तक,” उसने कहा।
* * *
मैंने उसे पार्क से सीधे बाहर जाते देखा, ठीक वैसे ही जैसे 'द थर्ड मैन' में जोसेफ कॉटन चलता है। पेड़ों की छाँव में गायब होने के बाद, मेरी नज़र एक सलीके से कपड़े पहनी महिला और उसकी बेटी पर पड़ी, जो घास पर पॉपकॉर्न फेंक रही थीं और कबूतर उनकी तरफ उड़ रहे थे। तीन-चार साल की छोटी बच्ची ने दोनों हाथ ऊपर उठाए और पक्षियों के पीछे दौड़ पड़ी। ज़ाहिर है, वह एक भी कबूतर नहीं पकड़ पाई। कबूतर अपनी कबूतरी के दम पर ही ज़िंदा रहते हैं। उस फैशनेबल युवा माँ ने बस एक बार मेरी तरफ देखा। उसे यह तय करने में ज़रा भी देर नहीं लगी कि सोमवार की सुबह पाँच खाली बीयर के डिब्बे लेकर इधर-उधर पड़े रहने वाले किसी भी व्यक्ति से उसका कोई वास्ता नहीं है।
मैंने अपनी आँखें बंद कीं और करामाज़ोव भाइयों के नाम याद करने की कोशिश की। मित्या, इवान और अलेयोशा—और फिर वो हरामखोर स्मरद्याकोव भी था। टोक्यो में कितने लोग इन सभी के नाम जानते होंगे?
मैंने आसमान की ओर देखा। मैं एक छोटी सी नाव में, विशाल सागर पर था। न हवा, न लहरें, बस मैं वहाँ तैर रहा था। खुले समुद्र में बहता हुआ। हे भगवान! जहाज़ डूबने का दृश्य।
आकाश गहरा और चमकीला था, एक ऐसी अटल अवधारणा जो मानवीय संदेह से परे थी। ज़मीन पर खड़े होकर, आकाश मुझे समस्त अस्तित्व का तार्किक चरमोत्कर्ष प्रतीत होता था। समुद्र के साथ भी ऐसा ही था। अगर आप दिनों तक समुद्र को देखते रहें, तो समुद्र ही सब कुछ है। जोसेफ कॉनरैड ने कहा था। एक छोटी सी नाव, जहाज़ के काल्पनिक संसार से मुक्त। लक्ष्यहीन, अपरिहार्य, अनिवार्य।
साहित्य का तो बस इतना ही। मैंने बियर का आखिरी कैन पी लिया और एक सिगरेट पी ली। मुझे कुछ और व्यावहारिक बातों पर ध्यान देना था। अब बस एक घंटे से थोड़ा ज़्यादा समय बचा था।
मैंने खाली डिब्बे कूड़ेदान में फेंक दिए। फिर मैंने अपने क्रेडिट कार्ड निकाले और उन्हें माचिस से जला दिया। मैंने प्लास्टिक को मुड़ते, चटकते और काला होते देखा। अपने क्रेडिट कार्ड जलाने में मुझे इतना

आनंद आया कि मैंने अपनी पॉल स्टुअर्ट टाई को भी जलाने का सोचा। लेकिन फिर मैंने अपना इरादा बदल दिया। अच्छे कपड़े पहनी हुई वह युवती मुझे घूर रही थी।

मैं एक स्टॉल पर गया और पॉपकॉर्न के दस पैकेट खरीदे। मैंने नौ पैकेट कबूतरों के लिए ज़मीन पर बिखेर दिए और आखिरी पैकेट खुद खाने के लिए एक बेंच पर बैठ गया। इतने सारे कबूतर पॉपकॉर्न पर टूट पड़े कि मानो अक्टूबर क्रांति का नाट्य रूपांतरण हो रहा हो। मैंने बहुत दिनों से पॉपकॉर्न नहीं खाया था। स्वाद अच्छा था।

वह फैशनेबल माँ और उसकी छोटी बच्ची अब एक फव्वारे के पास थीं। न जाने क्यों, उन्हें देखकर मुझे अपनी बहुत पुरानी सहपाठी की याद आ गई, जिसने क्रांतिकारी से शादी की, दो बच्चे हुए और फिर गायब हो गई। वह अपने बच्चों को कभी पार्क में नहीं ला पाई। बेशक, इस बारे में उसकी अपनी भावनाएँ रही होंगी, लेकिन मेरे खुद के गायब हो जाने से मुझे उसके लिए दुख हुआ। शायद—बहुत संभव है—वह इस बात से इनकार करती कि हम दोनों में कोई समानता थी। उसने अपनी मर्जी से जीवन त्याग दिया था; मेरे साथ तो नींद में ही ऐसा हुआ था जैसे चादरें खींच ली गई हों।

वो शायद मुझे खरी-खोटी सुना देती। आखिर तुमने कभी चुना ही क्या है? वो कहती। और वो सही होती। मैंने कभी भी अपनी मर्ज़ी से कोई काम नहीं किया था। मैंने बस दो ही काम चुने थे: प्रोफ़ेसर को माफ़ करना और उनकी पोती के साथ संबंध न बनाना। और इससे मुझे क्या फ़र्क पड़ता था? क्या मेरा अस्तित्व अपने ही अंत को रोक सकता था?

इस समय फ्रेम में लगभग कुछ भी नहीं बचा था। वाइड शॉट: कबूतर, फव्वारा, माँ और बच्चा। मैं इस दृश्य को छोड़ना नहीं चाहता था। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि आगे कौन सी दुनिया आने वाली है। मुझे नहीं पता कि मुझे ऐसा क्यों महसूस हुआ, लेकिन मैं जीवन को यूँ ही कैसे छोड़ सकता था? यह करना ज़िम्मेदारी भरा काम नहीं लग रहा था।

भले ही कोई मुझे याद न करे, भले ही मैं किसी के जीवन में कोई खालीपन न छोड़ूँ, भले ही किसी ने ध्यान न दिया हो, मैं स्वेच्छा से नहीं जा सकती थी। हानि कोई कौशल नहीं है, जीवन का कोई मापदंड नहीं है। फिर भी मुझे लगता था कि मेरे पास खोने के लिए कुछ है।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, मुझे अपने मन में एक लहर सी दौड़ती हुई महसूस हुई। यह लहर उदासी या अकेलेपन से कहीं बढ़कर थी; यह एक गहरी, भयानक आह थी जो मेरी हड्डियों तक गूंज रही थी। यह शांत नहीं हो रही थी। मैंने खुद को संभाला, कोहनियों को पार्क की बेंच के पीछे टिका दिया। कोई मेरी मदद नहीं कर सकता था, और न ही मैं किसी और की मदद कर सकता था।

मुझे सिगरेट पीने की इच्छा हो रही थी, लेकिन मुझे सिगरेट नहीं मिल रही थी। मेरी जेब में सिर्फ माचिस थी और वो भी सिर्फ तीन बची थीं। मैंने उन्हें एक-एक करके जलाया और ज़मीन पर फेंक दिया।

मैंने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं। कराहट बंद हो गई थी। मेरे दिमाग में सन्नाटे की एक उड़ती हुई धूल के सिवा कुछ नहीं था। न उठती, न डूबती, एक गति जिसका कोई आयाम नहीं था। मैंने एक फूँक मारी; धूल नहीं हटी। तेज़ हवा भी उसे उड़ा नहीं सकती थी।

मैंने अपनी लाइब्रेरियन के बारे में सोचा। उसकी मखमली पोशाक, मोज़े और कालीन पर फिसलती चप्पल के बारे में। क्या मैंने उसे न बताकर सही किया? शायद नहीं। आख़िर सही क्या होना चाहता है? फिर भी, अगर कुछ भी सही नहीं है, अगर कुछ भी निष्पक्ष नहीं है, तो जीवन का क्या अर्थ हो सकता है?

निष्पक्षता एक ऐसी अवधारणा है जो केवल सीमित परिस्थितियों में ही लागू होती है। फिर भी हम चाहते हैं कि यह अवधारणा हर चीज़ पर लागू हो, चाहे वह प्रासंगिक हो या नहीं। घोंघे से लेकर हार्डवेयर स्टोर तक और वैवाहिक जीवन तक। शायद कोई इसे न पाए, या इसकी कमी महसूस भी न करे, लेकिन निष्पक्षता प्रेम के समान है। जो दिया जाता है उसका हमारी चाहत से कोई संबंध नहीं होता।

मुझे अफसोस जरूर था। निष्पक्षता दिखाने का, सही ढंग से हिसाब लगाने का एक और तरीका। लेकिन अफसोस क्यों? क्या यह उन सभी चीजों के साथ न्यायसंगत था जिन्हें मैं पीछे छोड़ रहा था? क्या यही मेरी इच्छा नहीं थी?

मैंने सिगरेट का एक पैकेट खरीदा, फिर अपने अपार्टमेंट में फोन किया। मुझे उम्मीद नहीं थी कि कोई जवाब देगा, लेकिन मुझे यह सोचकर अच्छा लग रहा था कि यह मेरा आखिरी काम होगा। मैंने कल्पना की कि खाली अपार्टमेंट में फोन लगातार बज रहा है। तस्वीर एकदम साफ थी।

हालांकि, केवल तीन घंटी बजने के बाद ही, गुलाबी कपड़े पहनी हुई गोल-मटोल लड़की ने फोन उठाया।

“तुम अभी भी वहीं हो?” मैंने हैरानी से कहा।

“मज़ाक कर रहे हो क्या?” उसने कहा। “मैं गई और वापस भी आ गई। मैं जो किताब पढ़ रही थी उसे खत्म करना चाहती थी।”

“बाल्ज़ाक?”

“बिल्कुल सही। यह वाकई बेहद दिलचस्प है। यह मेरे भाग्य में लिखा था।”

"बताओ, क्या तुम्हारे दादाजी ठीक हैं?"

“बिल्कुल। इसमें कोई मुश्किल नहीं है। दादाजी बहुत खुश थे। उन्होंने अपना नमस्कार भेजा है।”

“बिल्कुल वैसे ही,” मैंने कहा। “तो आपके दादाजी ने क्या करने का फैसला किया?”

“वह फिनलैंड चला गया है। जापान में रहने पर उसे बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता। वह कभी कोई शोध कार्य पूरा नहीं कर पाता। वह तुर्कू में एक प्रयोगशाला स्थापित करने जा रहा है। उसका कहना है कि वहां का माहौल शांत और सुखद है। वहां बारहसिंगे भी हैं।”

और तुम उसके साथ नहीं गए?

मैंने यहीं रुकने और आपके अपार्टमेंट में रहने का फैसला किया है।

“मेरे अपार्टमेंट में?”

“जी हाँ, बिल्कुल सही। मुझे यह जगह बहुत पसंद है। मैं दरवाज़ा ठीक करवा दूँगा, नया फ्रिज और वीडियो वगैरह लगवा दूँगा। यहाँ बहुत सी चीज़ें टूटी-फूटी हैं। अगर मैं चादरें और पर्दे गुलाबी रंग के लगवा दूँ तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?”
"मेरे मेहमान हो।"
मुझे लगता है मैं एक अखबार की सदस्यता ले लूंगा। मैं जानना चाहता हूं कि टीवी पर क्या चल रहा है।
"पता नहीं, वहां खतरा हो सकता है। सिस्टम के लोग और सेमियोटेक्स वहां आ सकते हैं।"
“वे मुझे डराते नहीं हैं। वे सिर्फ दादाजी और तुम्हारे पीछे पड़े हैं। मैं उनके लिए क्या हूँ? अभी-अभी मैंने एक गोरिल्ला और उसके छोटे से बेवकूफ ट्रेनर को भगाया है। अजीब जोड़ी है।”
आपने यह कैसे किया?
मैंने उस बड़े आदमी का कान गोली से उड़ा दिया। शायद उसका कान का पर्दा फट गया होगा।
"क्या लोग गोली चलने की आवाज सुनकर भागकर नहीं आए थे?"
“नहीं,” उसने कहा। “एक गोली तो कार के बैकफायर जैसी आवाज़ कर सकती है। एक से ज़्यादा गोलियां लोगों का ध्यान खींच लेंगी, लेकिन मुझे अपने काम की अच्छी जानकारी है। मुझे बस एक गोली की ज़रूरत है।”
"ओह।"
"वैसे, एक बार जब आप बेहोश हो जाएं, तो मैं आपको डीप फ्रीजर में डालने की सोच रहा हूं।"
“जैसा आपको ठीक लगे। मुझे तो पता नहीं होगा,” मैंने कहा। “मैं हारुमी पियर जा रहा हूँ, आप मुझे वहाँ से लेने आ सकते हैं। मैं एक सफेद कैरिना 1800 जीटी ट्विन-कैम टर्बो चला रहा हूँ। मैं मॉडल का नाम तो नहीं बता सकता, लेकिन स्टीरियो पर बॉब डायलन के गाने बज रहे होंगे।”
“बॉब डायलन?”
“वो खिड़की पर खड़े होकर बारिश देख रहे हैं—” मैंने उन्हें बताना शुरू किया, लेकिन फिर बात अधूरी छोड़ दी। “एक गायक जिसकी आवाज़ कर्कश है।”
“तुम जब इतनी गहरी ठंड में हो, तो कौन जाने? समय के साथ, शायद दादाजी तुम्हें वापस लाने का कोई रास्ता निकाल लें। मुझे बहुत उम्मीदें नहीं रखनी चाहिए, लेकिन यह असंभव भी नहीं है।”
मैंने कहा, "जब मैं बेहोश हो जाऊँगा, तो मुझे किसी चीज़ की उम्मीद नहीं होगी। लेकिन मुझे जमा देने का काम कौन करेगा? तुम?"
“कोई बात नहीं। डीप फ्रीजिंग मेरी खासियत है। मैंने दर्जनों ज़िंदा कुत्तों और बिल्लियों को फ्रीज़ किया है। मैं तुम्हें अच्छे से फ्रीज़ कर दूंगी और ऐसी जगह रख दूंगी जहाँ कोई तुम्हें ढूंढ न सके,” उसने कहा। “और अगर सब ठीक रहा और तुम्हें होश आ गया, तो क्या तुम मेरे साथ सोओगे?”
“ज़रूर,” मैंने कहा। “अगर तब तक भी तुम्हारा मन मेरे साथ सोने का हो तो।”
"क्या तुम सचमुच ऐसा करोगे?"

मैंने कहा, "जरूरत पड़ने पर सभी उपलब्ध तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए। हालांकि मुझे नहीं पता कि ऐसा कितने साल बाद होगा।"
"अच्छा, कम से कम मैं सत्रह साल का तो नहीं होऊंगा।"
"लोग बूढ़े हो जाते हैं, चाहे उन्हें कितनी भी ठंड में रखा जाए।"
“अपना ख्याल रखना,” उसने कहा।
मैंने कहा, "आप भी। अच्छा हुआ आपसे बात करने का मौका मिला।"
क्या मैंने तुम्हें इस दुनिया में लौटने की उम्मीद दी है?
नहीं, ऐसा नहीं है। बेशक, मैं आभारी हूँ, लेकिन मेरा मतलब वो नहीं था। मुझे बस आपसे बात करके, आपकी आवाज़ दोबारा सुनकर खुशी हुई।
हम और देर तक बात कर सकते हैं।
नहीं, मेरे पास ज्यादा समय नहीं बचा है।
“सुनो,” उसने कहा। “भले ही हम तुम्हें हमेशा के लिए खो दें, मैं तुम्हें हमेशा याद रखूंगी, अपनी मृत्यु तक। तुम मेरे मन से कभी नहीं विलीन होगे। यह मत भूलना।”
मैंने कहा, "मैं नहीं करूँगा।" फिर मैंने फोन काट दिया।
ग्यारह बजे, मैं पार्क के शौचालय में गया और अपना काम निपटाकर पार्क से निकल गया। मैंने कार स्टार्ट की और खाड़ी की ओर चल पड़ा, यह सोचते हुए कि कहीं मैं ठंड से जम न जाऊँ। गिन्ज़ा पार करते हुए, मैंने खरीदारी करने वालों की भीड़ में अपनी लाइब्रेरियन दोस्त को ढूँढा। वह कहीं नज़र नहीं आई।
जब मैं तट पर पहुँचा, तो मैंने एक सुनसान गोदाम के बगल में कार खड़ी की, एक सिगरेट पी और बॉब डायलन के गाने ऑटो-रिपीट पर लगा दिए। मैंने सीट को पीछे झुकाया, दोनों पैर स्टीयरिंग व्हील पर रखे और शांति से साँस ली। मुझे बीयर पीने का मन कर रहा था, लेकिन बीयर खत्म हो चुकी थी। सूरज की किरणें विंडशील्ड से अंदर आ रही थीं, मानो मुझे रोशनी में घेर रही हों। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और पलकों पर गर्माहट महसूस की। सूरज की रोशनी इस ग्रह तक पहुँचने के लिए बहुत लंबी दूरी तय करती है; उस ऊर्जा का एक नगण्य अंश ही मेरी पलकों को गर्म करने के लिए काफी था। मैं भावुक हो गया। यह सोचकर कि पलक जैसी तुच्छ चीज का भी ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली में अपना स्थान है, कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था इस क्षणिक तथ्य को अनदेखा नहीं करती। क्या मैं अलेयोशा की अंतर्दृष्टि को समझने के करीब पहुँच पाया? इस सीमित जीवन में कुछ सीमित सुख तो मिला था।
मैं यह सोचना चाहती थी कि मैंने प्रोफेसर, उनकी गोल-मटोल पोती और अपनी लाइब्रेरियन दोस्त को थोड़ी खुशी दी। क्या मैं किसी और को खुशी दे सकती थी? समय बहुत कम बचा था, और मुझे शक था कि मेरे जाने के बाद कोई भी इन अधिकारों पर सवाल उठाएगा, लेकिन पुलिस-रेगे संगीत बजाने वाले टैक्सी ड्राइवर के बारे में क्या? उसने हमें अपनी टैक्सी में सवारी करने दी, चाहे कीचड़ ही क्यों न हो। वह भी खुशी का हकदार था। शायद वह अभी गाड़ी चला रहा होगा, अपने रॉक कैसेट सुनते हुए।

सामने ही समुद्र था। मालवाहक जहाज पानी में ऊँचे-ऊँचे तैर रहे थे, अपना माल उतार रहे थे। हर जगह सीगल पक्षी थे, मानो सफेद धब्बे हों। मैंने घोंघे, मक्खन की चटनी में सुजुकी चिकन, शेविंग क्रीम और 'ब्लोइंग इन द विंड' के बारे में सोचा। दुनिया रहस्यों से भरी है।

शरद ऋतु की शुरुआत में सूरज की किरणें पानी पर चमक रही थीं, मानो एक विशाल दर्पण चूर-चूर होकर बिखर गया हो।

डायलन के गाने सुनकर मुझे कार किराए पर देने वाली दुकान की उस लड़की की याद आ गई। क्यों न, उसे भी थोड़ी खुशी दे दो। मैंने उसे कंपनी के ब्लेज़र में देखा—हरा, बेसबॉल के मैदान के रंग जैसा—सफेद ब्लाउज़ और काली बो टाई पहने। वह डायलन को सुन रही थी और बारिश के बारे में सोच रही थी।

मैंने खुद बारिश के बारे में सोचा। एक ऐसी हल्की धुंध, जो लगभग बारिश जैसी नहीं थी। गिरती हुई, सदा कोमल, सदा समान, वह धीरे-धीरे मेरी चेतना को एक पतले, रंगहीन पर्दे में ढक लेती थी।

नींद आ गई थी।

अब मैं अपना खोया हुआ सब कुछ वापस पा सकता था। जो खो जाता है, वह कभी नष्ट नहीं होता। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और नींद के हवाले हो गया।

बॉब डायलन बार-बार 'ए हार्ड रेन्स ए-गोना फॉल' गाना गा रहे थे।

40

पक्षियों

जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचे, तब तक भारी बर्फबारी हो रही थी। आसमान हम पर घना और ठोस दबाव डाल रहा था। बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े घूमते हुए दक्षिणी तालाब की ओर खिंचे चले जा रहे थे, मानो सफेदी से घिरी दुनिया में एक स्थिर आँख की तरह। या फिर क्या तालाब बर्फ के टुकड़ों को नीचे बुला रहा था, और फिर उन्हें अपने अंदर समा रहा था?

मैं और मेरी परछाईं अवाक हैं। हम कितनी देर तक इस दृश्य को निहारते रहे, पता नहीं। पिछली बार जब मैं यहाँ आया था, तब जो बेचैन कर देने वाली गड़गड़ाहट सुनाई दी थी, वह नम हवा में दब गई है। बादलों की छत इतनी नीचे लटकी हुई है कि बर्फ के पीछे दीवार की काली आकृति और भी ऊँची, भयावह दिखाई दे रही है। यह परिदृश्य सचमुच 'दुनिया का अंत' कहलाने के योग्य है।

वहाँ खड़े-खड़े मेरे कंधे सफेद पड़ गए। अब तक बर्फ हमारे पदचिह्नों को ढक चुकी होगी। मेरी परछाई समय-समय पर बर्फ को छूकर पानी की सतह पर केंद्रित हो जाती है।

“यही निकास द्वार है। यही होना चाहिए,” मेरी परछाई कहती है। “अब कोई भी हमें इस शहर में नहीं रोक सकता। हम पक्षियों की तरह आज़ाद हैं।”

मेरी परछाई ऊपर देखती है, फिर बर्फ के टुकड़ों का आशीर्वाद पाने के लिए अपनी आँखें बंद कर लेती है। और मानो भारी बेड़ियाँ हट गई हों, मैं अपनी परछाई को फिर से ताकत पाते हुए देखता हूँ। वह अपनी धीमी चाल से ही सही, मेरी ओर चलने लगती है।

“इस पूल के दूसरी तरफ एक पूरी दुनिया है,” वह कहता है। “क्या आप डुबकी लगाने के लिए तैयार हैं?”

जब वह साया झुककर अपने जूते के फीते खोलने लगा तो मैंने कुछ नहीं कहा।

“हम यहाँ खड़े-खड़े ठंड से जम जाएँगे, तो बेहतर यही होगा कि हम ऐसा कर लें। चलो अपनी बेल्टों को एक साथ बाँध लेते हैं। अगर हममें से एक भी नहीं बचा तो इसका कोई फायदा नहीं होगा।”

मैंने अपनी टोपी उतारी, जो मुझे किसी पुराने अभियान के दौरान कर्नल ने रेजिमेंट से दी थी। कपड़ा घिसा-पिटा और बुरी तरह फीका पड़ चुका था। मैंने टोपी के किनारे से धूल झाड़ी और फिर उसे सिर पर पहन लिया।

“मैं इस बारे में सोच रहा था...,” मैंने जैसे-तैसे ये शब्द कहे। “मैं नहीं जा रहा हूँ।”

परछाई मुझे खाली निगाहों से देखती है।

“मुझे माफ कर दो,” मैं अपनी परछाई से कहती हूँ। “मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि यहाँ रहने का क्या मतलब है। मैं समझती हूँ कि जैसा तुमने कहा, हम दोनों का अपनी पुरानी दुनिया में वापस लौटना बिल्कुल सही है। लेकिन मैं खुद को यहाँ से जाने के लिए तैयार नहीं कर पा रही हूँ।”
परछाई ने अपने दोनों हाथ जेब में डाल लिए। “तुम क्या बात कर रहे हो? हमने जो वादा किया था कि हम यहाँ से भाग जाएँगे, वो क्या था? मैंने तुम्हें मुझे इतनी दूर तक यहाँ लाने के लिए क्यों कहा? मुझे पता था, ये उस औरत की वजह से है।”
“बेशक, वह इसमें शामिल है,” मैंने कहा। “कुछ हद तक, लेकिन पूरी तरह नहीं। मुझे यहाँ कुछ ऐसा पता चला है जो मुझे मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा बांधे रखता है। मुझे यहीं रुकना होगा।”
मेरी परछाई आह भरती है, फिर से आकाश की ओर देखती है।
“तुमने उसका दिमाग खोज लिया, है ना? और अब तुम उसके साथ जंगल में रहना चाहते हो। तुम मुझे भगाना चाहते हो, क्या यही बात है?”
“नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है, पूरी बात तो यह है ही नहीं,” मैंने कहा। “मैंने इस कस्बे के अस्तित्व का कारण खोज लिया है।”
“मैं जानना नहीं चाहता,” वह कहता है, “क्योंकि मैं पहले से ही जानता हूँ। तुमने खुद इस शहर को बनाया है। तुमने यहाँ सब कुछ बनाया है। दीवार, नदी, जंगल, पुस्तकालय, द्वार, सब कुछ। यहाँ तक कि यह तालाब भी। मुझे हमेशा से पता था।”
"तो फिर आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"
“क्योंकि तुम मुझे यहाँ ऐसे ही छोड़ देते। क्योंकि तुम्हारी असली दुनिया बाहर है।” मेरी परछाई बर्फ में बैठ जाती है और अपना सिर अगल-बगल हिलाती है। “लेकिन तुम सुनोगे नहीं, है ना?”
“मेरी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं,” मैं कहती हूँ। “मैं उन लोगों, जगहों और चीज़ों को नहीं छोड़ सकती जिन्हें मैंने बनाया है। मुझे पता है कि मैं तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय कर रही हूँ। और हाँ, शायद मैं खुद के साथ भी अन्याय कर रही हूँ। लेकिन मुझे अपने कर्मों के परिणामों का सामना करना ही होगा। यही मेरी दुनिया है। यह दीवार मुझे रोके रखने के लिए है, नदी मेरे भीतर से बहती है, धुआँ मेरे जलने का प्रतीक है। मुझे जानना ही होगा कि ऐसा क्यों हो रहा है।”
मेरी परछाई उठती है और तालाब की शांत सतह को निहारती है। वह गिरती बर्फ के बीच स्थिर खड़ा है। हम दोनों में से कोई एक शब्द भी नहीं बोलता। हमारे मुंह से सफेद धुएं के गुबार निकलते हैं।
“मैं तुम्हें रोक नहीं सकता,” मेरी परछाई स्वीकार करती है। “हो सकता है तुम यहाँ मर न सको, लेकिन तुम जी भी नहीं पाओगे। तुम बस अस्तित्व में रहोगे। एक ऐसी दुनिया में जहाँ सब कुछ परिपूर्ण हो, वहाँ ‘क्यों’ का कोई मतलब नहीं होता। और न ही जंगल में जीवित रहना वैसा है जैसा तुम कल्पना करते हो। तुम अनंत काल तक फँसे रहोगे।”

“मुझे इतना यकीन नहीं है,” मैं कहता हूँ। “और न ही हो सकता है। धीरे-धीरे मुझे चीजें याद आ जाएँगी। हमारे पुराने संसार के लोग और स्थान, प्रकाश के विभिन्न रूप, विभिन्न गीत। और जैसे-जैसे मुझे याद आएगा, शायद मुझे अपनी रचना और उसके विनाश की कुंजी मिल जाए।”

“नहीं, मुझे शक है। जब तक तुम अपने भीतर ही सिमटे रहोगे, तब तक नहीं। चाहे तुम कितना भी खोज लो, मेरे बिना तुम्हें दूरी की स्पष्टता कभी नहीं मिलेगी। फिर भी, तुम यह नहीं कह सकते कि मैंने कोशिश नहीं की,” मेरी परछाई कहती है, फिर रुक जाती है। “मैंने तुमसे प्यार किया।”

“मैं तुम्हें नहीं भूलूंगा,” मैंने जवाब दिया।

जब तालाब मेरी परछाई को निगल लेता है, तब भी मैं पानी को तब तक देखता रहता हूँ, जब तक कि एक भी लहर बाकी न रह जाए। पानी उतना ही शांत और नीला है, जितना कि जानवरों की आँखें। मैं अस्तित्व के सबसे दूर किनारे पर अकेला हूँ। यहाँ दुनिया थम जाती है और स्थिर हो जाती है।

मैं पूल से मुंह मोड़कर वापस चलने लगता हूँ। पश्चिमी पहाड़ी के उस पार कस्बा है। मुझे पता है कि वह पुस्तकालय में अकॉर्डियन के साथ मेरा इंतज़ार कर रही होगी।

तेज़ बर्फ़बारी के बीच, मुझे एक सफ़ेद पक्षी उड़ता हुआ दिखाई देता है। पक्षी दीवार के ऊपर से उड़कर दक्षिणी आकाश के घने बादलों में समा जाता है। अब मेरे पास केवल पैरों के नीचे बर्फ़ की आवाज़ ही रह जाती है।

******* समाप्त *******

sjeet

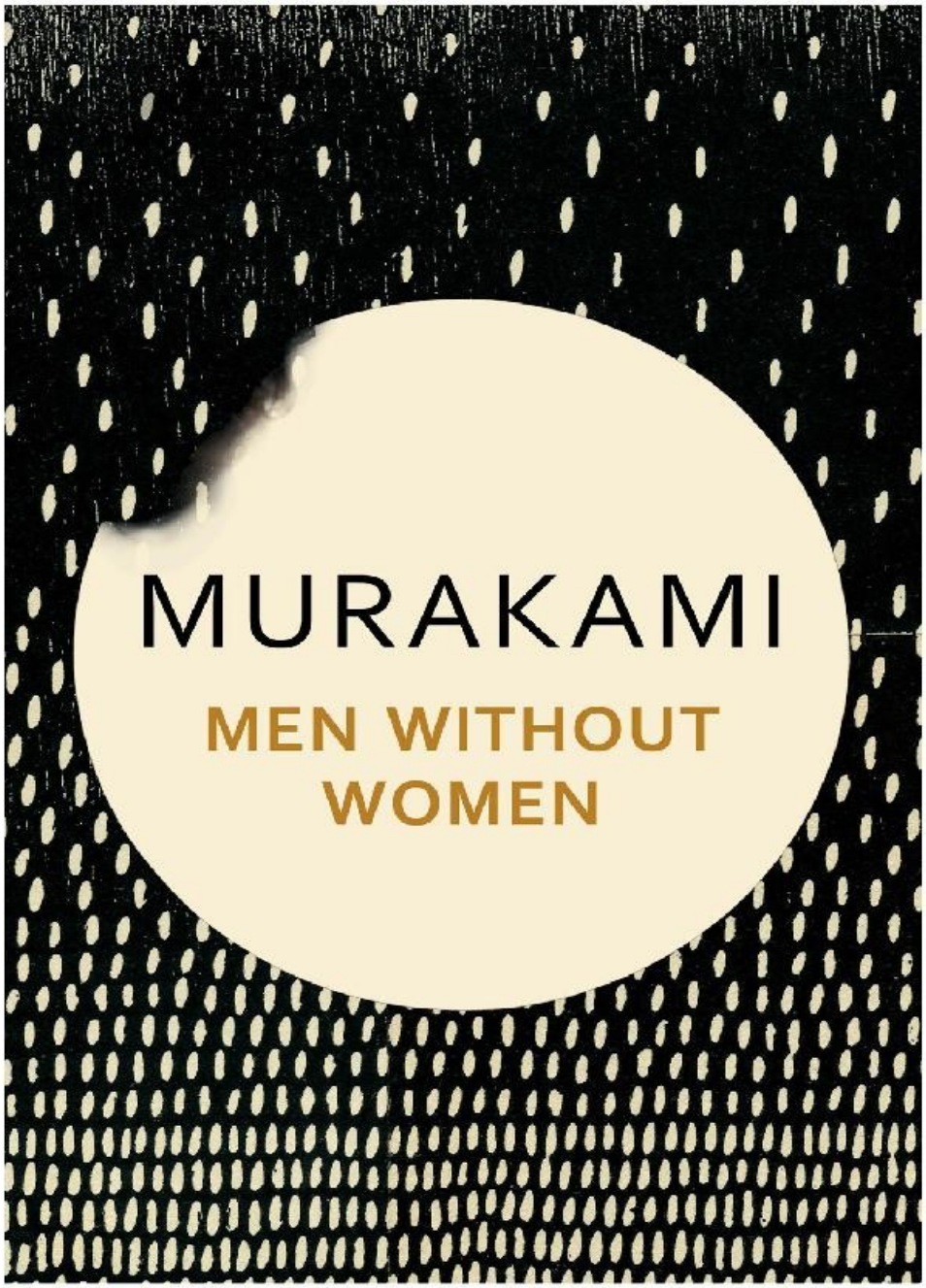

A DAZZLING NEW COLLECTION
OF SHORT STORIES – OUT NOW

ACKROYD ALLENDE ALLINGHAM AMIS ATWOOD
AUSTEN BARNES BARRY BINET BOLAÑO BORGES
BULGAKOV BURNSIDE BYATT CALVINO CARROLL CARTER
CARVER CHANG CHATWIN CHEEVER CLEGG COETZEE
CONRAD DARWIN DE BERNIÈRES DE WAAL DIAMOND
DI LAMPEDUSA DICKENS DOSTOEVSKY DOYLE ECO
ENRIGHT FAULKNER FAULKS FIELDING FITZGERALD
FLANAGAN FORSTER FOULDS GIBBONS GRASS GREENE
GROSSMAN GROSZ HADDON HARDY HARARI HELLER
HEMINGWAY HIGHSMITH HILL HOUELLEBECQ HUXLEY
ISHERWOOD JACOBSON JONES JOYCE KAFKA KENNEDY
KNAUSGAARD KUSHNER NESBO LEE LENNON LOMAX
MACDONALD MAK MANKELL MARÍAS MATTHIESSEN
MAXWELL McCARTHY McEWAN MISHIMA MOGGACH
MORGENSTERN MOORE MORRISON MUNRO MUKHERJEE
MURAKAMI MURDOCH MYSERSON NADAS NÉMIROVSKY
NESBO NIFFENEGGER O'CONNOR OGAWA OKRI
ONDAATJE OZ PASTERNAK PENROSE PEREC PETTERSON
POLITKOVSKAYA PROUST PYNCHON QUINN REMARQUE
RIVAS ROTH RUSHDIE SARAMAGO SCHAMA SEBALD
SHUTE SNYDER SOLZHENITSYN STEVENSON STYRON
TAN TANIZAKI THIONG'O THIRLWELL THORPE THUBRON
TOLSTOY TREMAIN TYLER VARGAS **VINTAGE** VONNEGUT
WARHOL WELSH WESLEY WHEELER WILLIAMS WEIR
WINTERSON WOLFE WOOLF WYLD XIAOLU YATES ZOLA

यह ईबुक कॉपीराइट सामग्री है और प्रकाशकों द्वारा लिखित रूप में विशेष अनुमति के अलावा, इसे खरीदने की शर्तों और नियमों के तहत अनुमति के अलावा, या लागू कॉपीराइट कानून द्वारा सख्ती से अनुमत होने के अलावा, इसकी प्रतिलिपि बनाना, पुनरुत्पादन करना, स्थानांतरण करना, वितरण करना, पट्टे पर देना, लाइसेंस देना, सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करना या किसी भी तरह से इसका उपयोग करना प्रतिबंधित है। इस पाठ का कोई भी अनधिकृत वितरण या उपयोग लेखक और प्रकाशक के अधिकारों का प्रत्यक्ष उल्लंघन हो सकता है और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति कानून के अनुसार उत्तरदायी हो सकते हैं।
विंटेज द्वारा 2003 में प्रकाशित

14 16 18 20 19 17 15
कॉपीराइट © हारुकी मुराकामी 1985 | अंग्रेजी अनुवाद © हारुकी मुराकामी 1991
लेखक की सहभागिता के साथ अल्फ्रेड बिर्नबाम द्वारा अनुवादित और रूपांतरित। अनुवादक संपादक एल्मर ल्यूक की सहायता के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

संस्करण 1.0

ईपब ISBN 9781448103683
हारुकी मुराकामी ने कॉपीराइट, डिज़ाइन और पेटेंट अधिनियम 1988 के तहत इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार का दावा किया है।

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है, और बाद के खरीदार पर भी इसी प्रकार की शर्त लागू होगी।
पहली बार 1985 में शिनचोशा, टोक्यो द्वारा "सेकाई नो ओवरी टू हाडो-बोइरुडो वांडारांडो" शीर्षक से प्रकाशित किया गया था।

यह पुस्तक सर्वप्रथम ग्रेट ब्रिटेन में 2001 में द हार्विल प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी।

विंटेज, रैंडम हाउस, 20 वॉक्सहॉल ब्रिज रोड, लंदन SW1V 2SA

www.vintage-books.co.uk

रैंडम हाउस ग्रुप लिमिटेड के अंतर्गत आने वाली कंपनियों के पते

www.randomhouse.co.uk/offices.htm पर देखे जा सकते हैं।

रैंडम हाउस ग्रुप लिमिटेड, पंजीकरण संख्या 954009

इस पुस्तक का सीआईपी कैटलॉग रिकॉर्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी से प्राप्त किया जा सकता है।

ISBN 9780099448785

[redacted]